		कुवैत	.१३०	
		केनिया (पू. अफ्रीका)	+२१३०	
	३०	टांगानिका (पू. अफ्रीका)	+२१३०	जापान
	+२१३०	युगांडा (पू. अफ्रीका)	+२१३०	स्विट्जरलैंड इंगलैंड
	+३१३०	मिस्र	+३१३०	फ्रांस

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक-शब्द

अ.—अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.—अंग्रेजी (तारीख—मास), अश।
आव.—आवश्यकता में।
उ.—उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ.गो.—उत्तर गोल।
क.—करण, कर्क, कला।
कृ.—कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां.सा.—क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.—गोधूली (लग्न)
घ.—घड़ी।
घ.—घण्टा।
चौ.—चौर (बाण)
ति.—तिथि।
[illegible]—दक्षिण।
द.गो.—दक्षिण गोल।
दा.—दान पूजन।
दि.—दिन।
दि.मा.—दिनमान।
दि.ल.—दिन का लग्न।
न.—नक्षत्र।
नि.—निम्बार्कों के लिए।
ने.—नेप्च्यून।
नृ.—नृप (बाण)।
प.—पल, परिघ (योग), [illegible]श्चिम।
प्र.—प्रविष्टा (पजाबी ता[illegible]
[illegible]—प्र[illegible]।
भा.—भाद्रपद।
मा.—मार्गी।
मि.—मिनट, मिथुन।
मृ.—मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.—यावत् (=तक)।
रा.—रात्रि, राशि।
रो.—रोग (बाण), रोहिणी।
ल.—लग्न।
व.—वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.—वार
वि.—विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.—विवाहमुहूर्त।
वैं.—वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.स.—व्रत सबके लिए।
शु.—शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
श.—भारत सरकार द्वारा संचालित तारीख-मास, शक संवत्।
स.—समाप्त।
सं.—संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.—साम्पातिक काल।
सा.—सायन।
[illegible]स्मार्तों के लिए।

डा. शक्तिधर शर्मा

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' उत्तर एवं अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदय-व्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चन्द्र-संचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। ये घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या)के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र (जिस में ग्रह है) उसका निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०।०) लिखा है, उस
तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे(......)
ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा.स्टै.टा. (I.S.T.) ८२°।३०' पूर्व-रेखांश के स्थल
का स्थानीयमध्यमकाल ((L.M.T.) है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां च[illegible]गढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय
निरयणलग्नों का समाप्तिकाल (I.S.T.) बतलाती हैं।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं,
पूर्णभोग. नहीं।

—लाभ-व्यय-चक्र, (विंशोत्तरी-मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अङ्कों को जोड़कर फिर उसमें से १ घटा कर शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचें तो लाभ बहुत कम हो और चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादितिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ॥"

आपका वर्तमान-वर्ष कैसा रहेगा ?

आयु के वर्तमान वर्ष की संख्या, जन्म-राशि की संख्या तथा जन्म नक्षत्र की संख्या—इन तीनों को जोड़कर तीन अलग-अलग स्थानों पर रखकर उन्हें क्रमशः २, ४ एवं ३ से गुणा करके इन गुणनफलों को क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग दें। भाग देने पर यदि पहिले और तीसरे स्थान पर शून्य बचे, तो वर्ष दुःखमय बीते। दूसरे स्थान पर शून्य शेष बचे, तो उस वर्ष धन-हानि हो। तीनों स्थानों पर शून्य बचे, तो मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। यदि तीनों स्थानों पर शून्य के अतिरिक्त और कोई अङ्क बचे तो वह वर्ष विजय देने वाला समझना चाहिए।

(पृष्ठ ६१ का शेष)

घण्टा मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्र-स्पष्ट करने का उदाहरण

[illegible] (अर्थात् २९ घं. ३० मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट [illegible] ९ [illegible] १९७० को प्रातः ५ घं. ३० मि. [illegible] श्रवण है, श्रवण के घं. मिनटों में २४ घं. जोड़ [illegible] उ. षा. के घं. मि. (२७।४२) घटाने पर [illegible] (२९ घं. ३० मि.) पर और गत नक्षत्र उ. षा. २१ घं. ८ मि. [illegible] २४ घं. जोड़े ही गत नक्षत्र के घं. मि. को [illegible] इसके १०८ मिनटों को [illegible] (१२६४) [illegible] ५१६ [illegible] ५३० को ६० से गुणा करके पुनः [illegible] ८ [illegible] को ६० से गुणा करके पुनः [illegible] (१४ अं. ८ क. ८ वि.) [illegible] के सम्पात [illegible] पृ. ६८ पर दी गई है), जोड़ने पर [illegible] ही लिखा है।

५ घं. ३० मि. पर स्पष्ट चन्द्रमा [illegible]

ध्यान रहे,—कई स्थलों पर नक्षत्र से स्पष्ट [illegible] अन्तर रहता है। सूक्ष्मता के लिए [illegible]

(पृ. ६८ का शेष) विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह [illegible]

किसी भारतीय पञ्चाङ्ग द्वारा विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने [illegible] विदेशीय स्टैं. टा. को भा. स्टैं. टा. में बदलें और बाद में पृ. ६८ पर दी गई [illegible] अनुसार लघुरिक्थ कोष्ठक की सहायता से उस भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट कर लें, [illegible] यही विदेशी स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रह होंगे। विदेशी स्टैं. टा. को स्वदेशी (भा. स्टैं. टा.) में बदलने के लिए नीचे सारणी में विभिन्न देशों के स्टैं. टा. एवं भारतीय स्टैं. टा. का अन्तर घन्टा मिनटों में – या + चिह्न के साथ दिया गया है। इन घन्टा मिनटों को चिह्न के अनुसार अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में जोड़ने या घटाने से भा. स्टैं टा. बन जाएगा। (– यह चिह्न घटाने और + यह चिह्न जोड़ने की क्रिया को बतलाता है।)

उदाहरण—१५ जून १९६९ को बर्मा स्टैं. टा. [illegible] प्रातः ९ बजकर ३७ मिनट पर रंगून (बर्मा) में कोई बच्चा पैदा हुआ। इस समय श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह स्पष्ट करने हैं। सारणी में बर्मा के आगे बर्मा के स्टै. टाईम का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर —१ घं. ० मि. लिखा है। अतः अभीष्ट बर्मा स्टैं. टा. ९ घं. ३७ मि. में से चिह्न के अनुसार १ घ. ० मि. घटाने पर ८ घं. ३७ मि. प्राप्त हुआ, जो कि रंगून में उस बच्चे के पैदा होने का भा. स्टैं. टा है। अर्थात् वह बच्चा रंगून में बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार तो प्रातः ९ घं. ३७ मि. पर पैदा हुआ है, परन्तु उस समय भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ३७ मिनट हुए हैं। अब पृष्ठ ६८ पर बतलाई गई इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने की विधि से १५ जून १९६९ को प्रातः ८ घं. ३७ मि. के ग्रह स्पष्ट कर लें। ये उस बच्चे के जन्म-कालिक स्पष्ट ग्रह हो जाएंगे।

नीचे सारणी में कुछ देशों के स्टैं. टाईमों का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घन्टा मिनटों में दिया जा रहा है—

देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+१।०	इराक	+२।३०	सीलोन	०। ०
प. पाकिस्तान	+०।३०	ईरान	+२।०	नेपाल	०। ०
पू. पाकिस्तान	–०।३०	इथोपिया	+२।३०	इटली	+४।३०[illegible]
बर्मा	–१। ०	कुवैत	+२।३०	जर्मनी	+४।३[illegible]
मलाया	–२। ०	केनिया (पू. अफ्रीका)	+२।३०	हांगकांग	–२।३[illegible]
न्यूजीलैण्ड	–६।३०	टांगानिका (पू. अफ्रीका)	+२।३०	जापान	–३[illegible]
अदन	+२।३०	युगांडा (पू. अफ्रीका)	+२।३०	स्विट्जरलैंड	+[illegible]
				इंग्लैण्ड	[illegible]
टर्की	+२।३०	मिश्र	+२।३०	फ्रांस	[illegible]

[illegible] पृ. १०० पर अक्षांशादि सारणी में भी अमेरिका रूस आदि के प्र[illegible] [illegible] दिया गया है, उसे यहां चिह्न बदल[illegible]

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक-शब्द

अ.--अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.—अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।
आव.—आवश्यकता में।
उ.—उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ.गो.—उत्तर गोल।
क.—करण, कर्क, कला।
कृ.—कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां.सा.—क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.—गोधूली (लग्न)
घ.—घड़ी।
घ.—घण्टा।
चौ.—चौर (बाण)
ति.—तिथि।
[illegible]—दक्षिण।
द.गो.—दक्षिण गोल।
दा.—दान पूजन।
दि.—दिन।
दि.मा.—दिनमान।
दि.ल.—दिन का लग्न।
न.—नक्षत्र।
नि.—निम्बार्कों के लिए।
ने.—नेप्च्यून।
नृ.—नृप (बाण)।
प.—पल, परिघ (योग), [illegible]श्चिम।
प्र.—प्रविष्टा (पंजाबी ता[illegible]
[illegible]—प्रा[illegible]।

भा.—भाद्रपद।
मा.—मार्गी।
मि.—मिनट, मिथुन।
मृ.—मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.—यावत् (=तक)।
रा.—रात्रि, राशि।
रो.—रोग (बाण), रोहिणी।
ल.—लग्न।
व.—वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.—वार
वि.—विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.—विवाहमुहूर्त।
वै.—वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.स.—व्रत सबके लिए।
शु.—शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
ग.—भारत सरकार द्वारा संचालित तारीख-मास, शक संवत्।
स.—समाप्त।
सं.—संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.—साम्पातिक काल।
सा.—सायन।
[illegible]स्मार्तों के लिए।

[illegible] डा. शक्तिधर शर्मा

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्वरेखांश ७६°।५२' उत्तर एवं
अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया
गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।
(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की
गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस
पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।
(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से
समाप्तिकाल बतलाते हैं।
(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदय-व्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।
(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा
के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।
(६) चन्द्र-संचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा
में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल
किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं
एवं सूर्यास्त में जोड़ें।
(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति,
ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों
में ही हैं। ये घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।
(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या)के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति,
उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र (जिस
में ग्रह है) उसका निर्देश किया गया है।
(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।
(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म
दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।
(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।
(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०।०) लिखा है, उस
तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे(......)
ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।
(१३) यहां दिया गया भा.स्टै.टा. (I.S.T.) ८२°।३०' पूर्व-रेखांश के स्थल
का स्थानीयमध्यमकाल ((L.M.T.) है।
(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय
निरयणलग्नों का समाप्तिकाल (I.S.T.) बतलाती हैं।
(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं,
पूर्णभोग. नहीं।

—लाभ-व्यय-चक्र, (विंशोत्तरी-मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अङ्कों को जोड़कर फिर उनमें से १ घटा कर शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचें तो लाभ बहुत कम हो और चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादितिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

आपका वर्तमान-वर्ष कैसा रहेगा?

आयु के वर्तमान वर्ष की संख्या, जन्म-राशि की संख्या तथा जन्म नक्षत्र की संख्या—इन तीनों को जोड़कर तीन अलग-अलग स्थानों पर रखकर उन्हें क्रमशः २, ४ एवं ३ से गुणा करके इन गुणनफलों को क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग दें। भाग देने पर यदि पहिले और तीसरे स्थान पर शून्य बचे, तो वर्ष दुःखमय बीते। दूसरे स्थान पर शून्य शेष बचे, तो उस वर्ष धन-हानि हो। तीनों स्थानों पर शून्य बचे, तो मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। यदि तीनों स्थानों पर शून्य के अतिरिक्त और कोई अङ्क बचे तो वह वर्ष विजय देने वाला समझना चाहिए।

(पृष्ठ ६९ का शेष)

घण्टा मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्र-स्पष्ट करने का उदाहरण

९ जनवरी १९७० को प्रातः ५ घं. ३० मि. (अर्थात् २९ घं. ३० मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। इस समय वर्तमान नक्षत्र श्रवण है, श्रवण के घं. मिनटों में २४ घं. जोड़ [illegible] गत नक्षत्र उ. षा. के घं. मि. (२७।४२) घटाने पर [illegible] पर और गत नक्षत्र उ. षा. [illegible] जोड़े ही गत नक्षत्र के घं. मि. [illegible] इसके १०८ मिनटों को [illegible] (१२६८) को [illegible] गुणा करने पर [illegible] शेष ५१६ [illegible] शेष ५३० [illegible] शेष को [illegible] से वर्तमान नक्षत्र श्रवण [illegible] पृ. ७८ पर भी प्रातः [illegible] जोड़ने पर [illegible] ही लिखा है।

५ घं. ३० मि पर स्पष्ट चन्द्रमा [illegible]

ध्यान रहे,—कई स्थलों पर नक्षत्र से [illegible] अन्तर रहता है। सूक्ष्मता के लिए [illegible]

(पृ. ६८ का शेष) **विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह [illegible]**

किसी भारतीय पञ्चाङ्ग द्वारा विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने [illegible] विदेशीय स्टैं. टा. को भा. स्टैं. टा. में बदलें और बाद में पृ. ६८ पर दी गई [illegible] अनुसार लघुरिक्थ कोष्ठक की सहायता से उस भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट कर लें [illegible] यही विदेशी स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रह होंगे। विदेशी स्टैं. टा. को स्वदेशी (भा. स्टैं. [illegible] में बदलने के लिए नीचे सारणी में विभिन्न देशों के स्टैं. टा. एवं भारतीय स्टैं. टा. का अन्तर घन्टा मिनटों में — या + चिह्न के साथ दिया गया है। इन घन्टा मिनटों को चिह्न के अनुसार अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में जोड़ने या घटाने से भा. स्टैं टा. बन जाएगा। (— यह चिह्न घटाने और + यह चिह्न जोड़ने की क्रिया को बतलाता है।)

उदाहरण—१५ जून १९६९ को बर्मा स्टैं. [illegible] प्रातः ९ बजकर ३७ मिनट पर रंगून (बर्मा) में कोई बच्चा पैदा हुआ। इस समय श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह स्पष्ट करने हैं। सारणी में बर्मा के आगे बर्मा के स्टैं. टाईम का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर —१ घं. ० मि. लिखा है। अतः अभीष्ट बर्मा स्टैं. टा. ९ घं. ३७ मि. में से चिह्न के अनुसार १ घं. ० मि. घटाने पर ८ घं. ३७ मि. प्राप्त हुआ, जो कि रंगून में उस बच्चे के पैदा होने का भा. स्टैं. टा है। अर्थात् वह बच्चा रंगून में बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार तो प्रातः ९ घं. ३७ मि. पर पैदा हुआ है, परन्तु उस समय भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ३७ मिनट हुए हैं। अब पृष्ठ ६८ पर बतलाई गई इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने की विधि से १५ जून १९६९ को प्रातः ८ घं. ३७ मि. के ग्रह स्पष्ट कर लें। ये उस बच्चे के जन्म-कालिक स्पष्ट ग्रह हो जाएंगे।

नीचे सारणी में कुछ देशों के स्टैं. टाईमों का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घन्टा मिनटों में दिया जा रहा है—

देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+१।०	इराक	+२।३०	सीलोन	०। ०
प. पाकिस्तान	+०।३०	ईरान	+२।०	नेपाल	०। ०
पू. पाकिस्तान	—०।३०	इथोपिया	+२।३०	इटली	+४।३०
बर्मा	—१। ०	कुवैत	+२।३०	जर्मनी	+४।३
मलाया	—२। ०	केनिया (पू. अफ्रीका)	+२।३०	हांगकांग	—२।३
न्यूजीलैण्ड	—६।३०	टांगानिका (पू. अफ्रीका)	+२।३०	जापान	—३
अदन	+२।३०	युगांडा (पू. अफ्रीका)	+२।३०	स्विट्जरलेंड	+
				इंगलैण्ड	५.
टर्की	+३।३०	मिश्र	+२।३०	फ्रांस	[illegible]

नोट—आगे पृ. १०० पर अक्षांशादि सारणी में भी अमेरिका रूस आदि के [illegible] दिया गया है, उसे यहां चिह्न बदल [illegible]

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक-शब्द

अ.—अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.—अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।
आव.—आवश्यकता में।
उ.—उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ.गो.—उत्तर गोल।
क.—करण, कर्क, कला।
कृ.—कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां.सा.—क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.—गोधूली (लग्न)
घ.—घड़ी।
घ.—घण्टा।
चौ.—चौर (बाण)
ति.—तिथि।
[illegible].—दक्षिण।
द.गो.—दक्षिण गोल।
दा.—दान पूजन।
दि.—दिन।
दि.मा.—दिनमान।
दि.ल.—दिन का लग्न।
न.—नक्षत्र।
नि.—निम्बार्कों के लिए।
ने.—नेप्च्यून।
नृ.—नृप (बाण)।
प.—पल, परिघ (योग), [illegible]श्चिम।
प्र.—प्रविष्टा (पञ्जाबी ता[illegible]
[illegible]—प्रा[illegible]।
भा.—भाद्रपद।
मा.—मार्गी।
मि.—मिनट, मिथुन।
मृ.—मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.—यावत् (=तक)।
रा.—रात्रि, राशि।
रो.—रोग (बाण), रोहिणी।
ल.—लग्न।
व.—वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.—वार
वि.—विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.—विवाहमुहूर्त।
वै.—वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.स.—व्रत सबके लिए।
शु.—शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
श.—भारत सरकार द्वारा संचालित तारीख-मास, शक संवत्।
स.—समाप्त।
सं.—संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.—साम्पातिक काल।
सा.—सायन।
[illegible]स्मार्तों के लिए।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व-रेखांश ७६°।५२' उत्तर एवं
अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया
गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।
(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की
गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस
पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।
(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से
समाप्तिकाल बतलाते हैं।
(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदय-व्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।
(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा
के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।
(६) चन्द्र-संचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा
मे हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल
किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं
एवं सूर्यास्त में जोड़ें।
(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति,
ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों
में ही हैं। ये घडीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।
(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या)के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति,
उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र (जिस
में ग्रह है) उसका निर्देश किया गया है।
(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।
(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म
दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।
(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।
(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०।०) लिखा है, उस
तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे(……)
ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।
(१३) यहां दिया गया भा.स्टै.टा. (I.S.T.) ८२°।३०' पूर्व-रेखांश के स्थल
का स्थानीयमध्यमकाल ((L.M.T.) है।
(१४) दैनिक लग्न सारणियां च[illegible]गढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय
निरयणलग्नों का समाप्तिकाल (I.S.T.) बतलाती हैं।
(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणति[illegible] नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं,
पूर्णभोग. नहीं।

[illegible] डा. शक्तिधर शर्मा

—लाभ-व्यय-चक्र, (विंशोत्तरी-मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अङ्कों को जोड़कर फिर उसमें से १ घटा कर शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचें तो लाभ बहुत कम हो और चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादितिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ॥"

आपका वर्तमान-वर्ष कैसा रहेगा ?

आयु के वर्तमान वर्ष की संख्या, जन्म-राशि की संख्या तथा जन्म नक्षत्र की संख्या—इन तीनों को जोड़कर तीन अलग-अलग स्थानों पर रखकर उन्हें क्रमशः २, ४ एवं ३ से गुणा करके इन गुणनफलों को क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग दें। भाग देने पर यदि पहिले और तीसरे स्थान पर शून्य बचे, तो वर्ष दुःखमय बीते। दूसरे स्थान पर शून्य शेष बचे, तो उस वर्ष धन-हानि हो। तीनों स्थानों पर शून्य बचे, तो मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। यदि तीनों स्थानों पर शून्य के अतिरिक्त और कोई अङ्क बचे तो वह वर्ष विजय देने वाला समझना चाहिए।

(पृष्ठ ६१ का शेष)

घण्टा मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्र-स्पष्ट करने का उदाहरण

१ जनवरी १९७० को प्रातः ५ घं. ३० मि. (अर्थात् २९ घं. ३० मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। इस समय वर्तमान नक्षत्र श्रवण है, श्रवण के घं. मिनटों में २४ घं. जोड़ कर [illegible] में गत नक्षत्र उ. षा. के घं. मि. (२७।४२) घटाने पर [illegible] (२९ घं. ३० मि.) पर और गत नक्षत्र उ. षा. [illegible] २४ घं. जोड़े ही गत नक्षत्र के घं. मि. [illegible] मिला। इसके १०८ मिनटों को [illegible] (१३६८) को [illegible] गुणा करने पर [illegible] शेष ५१६ [illegible] शेष ५३० [illegible] ८ [illegible] प्राप्त हुई। शेष को [illegible] में वर्तमान नक्षत्र श्रवण [illegible] लिए [illegible] पृ. ७४ पर भी प्रातः [illegible] गए हैं), जोड़ने पर [illegible] ही लिखा है।

५ घं. ३० मि. पर स्पष्ट चन्द्रमा [illegible]

ध्यान रहे,—[illegible] अन्तर रहता है। सूक्ष्मता के लिए [illegible] इस पंचांग में बतलाई गई विधि के अनुसार [illegible] स्पष्ट करना चाहिए।

(पृ. ६८ का शेष) विदेशी स्टैं. टा. [illegible]

किसी भारतीय पञ्चाङ्ग द्वारा विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने [illegible] विदेशीय स्टैं. टा. को भा. स्टैं. टा. में बदलें और बाद में पृ. ६८ पर दी गई [illegible] अनुसार लघुरिक्थ कोष्ठक की सहायता से उस भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट कर लें, [illegible] वही विदेशी स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रह होंगे। विदेशी स्टैं. टा. को स्वदेशी (भा. स्टैं. टा.) में बदलने के लिए नीचे सारणी में विभिन्न देशों के स्टैं. टा. एवं भारतीय स्टैं. टा. का अन्तर घन्टा मिनटों में — या + चिह्न के साथ दिया गया है। इन घन्टा मिनटों को चिह्न के अनुसार अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में जोड़ने या घटाने से भा. स्टैं टा. बन जाएगा। (— यह चिह्न घटाने और + यह चिह्न जोड़ने की क्रिया को बतलाता है।)

उदाहरण—१५ जून १९६९ को बर्मा स्टैं. टा. [illegible] प्रातः ९ बजकर ३७ मिनट पर रंगून (बर्मा) में कोई बच्चा पैदा हुआ। इस समय श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह स्पष्ट करने हैं। सारणी में बर्मा के आगे बर्मा के स्टैं. टाईम का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर —१ घं. ० मि. लिखा है। अतः अभीष्ट बर्मा स्टैं. टा. ९ घं. ३७ मि. में से चिह्न के अनुसार १ घं. ० मि. घटाने पर ८ घं. ३७ मि. प्राप्त हुआ, जो कि रंगून में उस बच्चे के पैदा होने का भा. स्टैं. टा है। अर्थात् वह बच्चा रंगून में बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार तो प्रातः ९ घं. ३७ मि. पर पैदा हुआ है, परन्तु उस समय भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ३७ मिनट हुए हैं। अब पृष्ठ ६८ पर बतलाई गई इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने की विधि से १५ जून १९६९ को प्रातः ८ घं. ३७ मि. के ग्रह स्पष्ट कर लें। ये उस बच्चे के जन्म-कालिक स्पष्ट ग्रह हो जाएंगे।

नीचे सारणी में कुछ देशों के स्टैं. टाईमों का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घन्टा मिनटों में दिया जा रहा है—

देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+१।०	इराक	+२।३०	सीलोन	०।०
प. पाकिस्तान	+०।३०	ईरान	+२।०	नेपाल	०।०
पू. पाकिस्तान	—०।३०	इथोपिया	+२।३०	इटली	+४।३०
बर्मा	—१।०	कुवैत	+२।३०	जर्मनी	+४।३[illegible]
मलाया	—२।०	केनिया (पू. अफ्रीका)	+२।३०	हांगकांग	—२।३[illegible]
न्यूजीलैण्ड	—६।३०	टांगानिका (पू. अफ्रीका)	+२।३०	जापान	—३[illegible]
अदन	+२।३०	युगांडा (पू. अफ्रीका)	+२।३०	स्विट्जरलैण्ड	[illegible]
				इंगलैण्ड	[illegible]
टर्की	+३।३०	मिस्र	+३।३०	फ्रांस	[illegible]

नोट—आगे पृ. १०० पर अक्षांशादि सारणी में भी अमेरिका रूस आदि के प्र[illegible] के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर दिया गया है, उसे यहां चिह्न बदल[illegible]

...-सरकार के अवकाश (सं० २०२६ वि०)
(सन् १९६९-७०)

	अवकाश	तारीख	वार
	चैत्र शुक्लादि (गुड़ी पड़वा)	१९ मार्च (१९६९)	बु.
	रामनवमी	२७ मार्च	गु.
	मुहर्रम	२९ मार्च	श.
	महावीर (जैन) जयन्ती	३१ मार्च	चं.
	गुड-फ्राईडे	४ अप्रै.	शु.
	वैशाखी	१३ अप्रै.	र.
	बुद्ध-जयन्ती	२ मई	शु.
	ईद-ए-मिलाद	२९ मई	गु.
	स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	शु.
	तिरु-ओनम्-दिवस	२६ अग.	मं.
	जन्माष्टमी (वैष्णव)	४ सितं.	गु.
	जन्मदिन म. गान्धी	२ अक्तू.	गु.
	दुर्गाष्टमी	१८ अक्तू.	श.
	महानवमी	१९ अक्तू.	र.
	दशहरा	२० अक्तू.	च.
६	वाल्मीकि-जयन्ती	२५ अक्तू.	श.
७	दीपावली	९-१० नवं.	र., चं.
८	गोवर्धन पूजा	१० नवं.	चं.
९	जन्मदिन श्री गु. नानकदेवजी	२३ नवं.	रवि.
०	जमत-उल-विदा	५ दिसं.	शु.
१	×इदुल फित्र	१२ दिसं.	शु.
२	शहीदी दिन गुरु तेगबहादुर	१३ दिसं.	श.
३	क्रिसमस डे	२५ दिसं.	गु.
४	इंग्लिश नववर्ष दिन	१ जन. (१९७०)	गु.
२५	जन्मदिन गु. गोविन्दसिंह जी	१३ जन.	मं.
२६	पोंगल (द. भारत)	१४ जन.	बु.
२७	गणतन्त्र दिवस	२६ जन.	चं.
२८	इदुज्जुहा (बकरीद)	१७ फर्व.	मं.
२९	जन्मदिन भक्त रविदास	२१ फर्व.	श.
३०	श्री महाशिव-रात्रि	६ मार्च	शु.
३१	मुहर्रम	१९ मार्च	गु.
३२	होली-होला	२२-२४ मार्च	र., मं.
३३	गुड-फ्राइडे	२७ मार्च	शु.

×दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन १० दिस. को होने से वहां इदुलफित्र ११ दिसं. को मनाया जाएगा।

प्रसिद्ध कुछ मेले (सं० २०२६)

मेला (सन् १९६९-७०)	तारीख
मेला माई सरखाना	२४ मार्च (१९६९)
श्री मनसादेवी	२६ मार्च
वैशाखी	१३ अप्रै.
मेला पिंजौर	१६ अप्रै.
श्री नयनादेवी व चिन्तपूरणी	२१ अग.
श्री अमरनाथ (काश्मीर)	२७ अग.
बाबा गोसाईं आणां (कुराली)	१३ सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	२२ सितं.
मेला छपार	२४ सितं.
ज्वालामुखी व तारादेवी	१८ अक्तू.
दशहरा	२० अक्तू.
दीवाली	९ नवं.
बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना)	१९ नवं.
कपाल-मोचन, रामतीर्थ, पुष्कर	२३ नवं.
पुरमण्डल	८ दिसं.
जोड़ मेला फतहगढ़ साहिब	२६ से २८ दि.
बाबा हरवल्लभ जी (जालन्धर)	२७ दिसं. से
मेला मुक्तसर	१३ जन. '७०
माघ मेला प्रयाग	६ फर.
जयन्ती देवी	२० फर.
श्री शिवरात्रि (मण्डी, हि. प्र.)	६ मार्च
होला (आनन्दपुर साहब)	२४ मार्च
शीतला माता (कुराली)	२६ मार्च
मेला पिहोवा	५ अप्रै.

नोट—भारत सरकार के अवकाश की सूची को गजट से मिला लेना चाहिए।

दृक्पक्ष ही शास्त्रीय है

काञ्ची कामकोटि पीठम् (मद्रास) के जगद्गुरु श्री १०८ शंकराचार्य जी द्वारा दृक्पक्ष का समर्थन

सन् १९६४ में सौर एवं दृक्पक्ष के विषय पर काञ्ची कामकोटि पीठम् (मद्रास) के जगद्गुरु श्री १००८ शंकराचार्य जी से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ। श्री शंकराचार्य जी ने पत्र द्वारा स्पष्ट किया कि वे दृक्पक्ष को ही मानते हैं, एवं उनके मठ (आश्रम) में दृक्पक्षीय पञ्चांग के अनुसार ही सभी धार्मिक कार्यकलाप का अनुष्ठान होता है। अपने इस पत्र के साथ ही उन्होंने दक्षिण-भारत में हुए एक वाद-विवाद का निर्णय-पत्र भी भेजा, जिसमें श्री शंकराचार्य जी ने भूमध्य-दृक्तुल्य गणित द्वारा तिथ्यादि-साधन को शास्त्रीय प्रमाणित किया है। जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के पत्र एवं उस वाद-विवाद के निर्णय पत्र की अनुकृति हम यहां दे रहे हैं;—(प्रियव्रत शर्मा)

जगद्गुरु १००८ श्री शंकराचार्य जी के पत्र की प्रतिलिपि

श्रीमत्परम हंस-परिव्राजकाचार्य-वर्य श्री काञ्ची कामकोटि-पीठाधिप-जगद्गुरु श्री शंकराचार्य श्रीमठ-संस्थानात् (ता. २१-११-६४)

श्री प्रियव्रत शर्म महोदय ! नमांसि भूयांसि।

भवतां ५-११-६४ दिनांकितं पत्रं प्राप्तं श्री चरण-सन्निधौ विज्ञापितं च। ज्योतिश्शास्त्रान्तर्गत-गणित-विषये अस्मदाचार्य-पाद-परमेष्ठि-गुरुभिः अनुगृहीतस्य निर्णय पत्रात्मकस्य श्रीमुखस्य-अनुवादः अनेन लेखेन साकं प्रेषितो विद्यते। अस्मन्मठेऽपि दृक्सिद्धान्तानुसारि-पञ्चाङ्गमेवानुष्ठीयते—इति, श्रीचरणाज्ञानुसारेण निवेद्यते। नमांसि,

म. वि. कृष्णमूर्तिः (श्रीमठीय निर्वाहकः)

दक्षिण भारत में हुए वाद-विवाद पर जगद्गुरु श्री १००८ शंकराचार्य जी का निर्णय-पत्र

स्वस्ति श्रीमदखिल भूमण्डलालंकार.....कांची दिव्यक्षेत्रे शारदामठसुस्थितानां.....षण्मठ-प्रतिष्ठापकाचार्याणां श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्री जगद्गुरु श्रीमच्छंकर भगवत्पादाचार्याणामधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्त श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती संयमीन्द्राणां अन्तेवासि-वर्य श्रीमन्महादेवेन्द्र सरस्वती श्रीपादैः अस्मदत्यन्त-प्रिय शिष्यभूत श्री वेंकटेश्वर दीक्षित-सुन्दरेश्वर श्रौतिभ्यां सर्वाभीष्टप्रदेयं नारायण-स्मृतिः

ज्योतिश्शास्त्रान्तर्गत-गणन-विषये तिथ्यादीना विषये भू पृष्ठ-दृक्-भ मध्यस्थ-भूमध्य-दृक्सिद्धम्, ग्रहणादि विषये भू पृष्ठ-दृक्सिद्धम् च ग्राह्यमिति श्री वेंकटेश-दीक्षित श्री सुन्दरेश श्रौतिनो राशयः। भूमध्यं भमध्यं च पृथक्, तिथ्यादि-विषये भमध्य-दृक्तुल्यता ग्राह्या, प्रत्यक्षं न, —इति तिरुवेल्वेलि श्रीकृष्ण ज्यौतिषिकस्य आशयः। एतयोः कक्ष्ययोः श्रीमदप्पु शास्त्रि-श्रीमदप्पा दीक्षित-श्री श्री निवासार्य नामक पण्डितानां माध्यस्थ्ये विवादे जाते श्री वेंकटेश दीक्षित सुन्दरेश श्रौतिनोराशयः सिद्धान्तत्वेन स्थापि... गए हैं, प्रमाणत्वेन एषा योग्यता पत्रिका दत्ता...

ईश्वर संव...

(१९ मार्च से २ अप्र. तक सन् १९६९ ई.)

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, चैत्र शुक्ल पक्ष १

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीखें प्र.अं. चैत्र	माघ	फाल्गुन	ज़िल्हिज मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टें. टा. चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अ.	क.	वि.
२९	५०	१	बु.	७	४५	उ.भा.	६	२१	ब्र.	५६	१७	ब.	७	४५	६	१९	२८	२९	मीन	६	३२	६	२८	११	४	४९	४४
२९	५५	२	गु.	७	२०	रे.	७	३५	ऐं.	५४	१०	कौ.	७	२०	७	२०	२९	मु १	मे.७।३५	६	३१	६	२९	११	५	४९	२०
३०	०	३	शु.	८	३३	अश्वि.	१०	१७	वै.	५३	१८	ग.	८	३३	८	२१	३०	२	मेष	६	२९	६	२९	११	६	४८	५२
३०	६	४	श.	११	३०	भर.	१४	३५	वि.	५३	३५	वि.	११	३०	९	२२	चै.१	३	वृ.३०।५७	६	२८	६	३०	११	७	४८	२४
३०	११	५	र.	१५	२५	कृ.	२०	५	प्री.	५४	४५	बा.	१५	२५	१०	२३	२	४	वृष	६	२६	६	३१	११	८	४७	५२
३०	१६	६	चं.	२०	४२	रो.	२६	४५	आ.	५६	३५	तै.	२०	४२	११	२४	३	५	वृष	६	२५	६	३२	११	९	४७	१८
३०	२०	७	मं.	२६	४०	मृ.	३३	५७	सौ.	५८	५०	व.	२६	४०	१२	२५	४	६	मि. ०।२१	६	२४	६	३३	११	१०	४६	४३
३०	२५	८	बु.	३२	४७	आर्द्रा.	४१	२०	शो.	६०	०	व.	३२	४७	१३	२६	५	७	मिथुन	६	२३	६	३४	११	११	४६	७
३०	२९	९	गु.	३८	३२	पुन.	४८	१३	शो.	०	५८	बा.	५	४०	१४	२७	६	८	क.३१।३०	६	२२	६	३४	११	१२	४५	२७
३०	३४	१०	शु.	४३	२५	पु.	५४	१५	अ.	२	३५	तै.	१०	५८	१५	२८	७	९	कर्क	६	२१	६	३५	११	१३	४४	४६
३०	३९	११	श.	४६	५२	आश्ले.	५८	५०	सु.	३	२५	व.	१५	८	१६	२९	८	१०	सि.५८।५०	६	१९	६	३५	११	१४	४४	१
३०	४४	१२	र.	४८	५०	म.	६०	०	धृ.	३	१३	ब.	१७	५१	१७	३०	९	११	सिंह	६	१८	६	३६	११	१५	४३	१५
३०	४८	१३	चं.	[illegible]	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	शू.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१८	५८	१८	३१	१०	१२	सिंह	६	१७	६	३६	११	१६	४२	२८
३०	५३	१४	मं.	[illegible]	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	गं.	[illegible]	[illegible]	ग.	१८	२५	१९	अ१	११	१३	[illegible] १८।३०	६	१६	६	३७	११	१७	४१	३६
३०	५८	१५	बु.	[illegible]	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	वृ.	[illegible]	[illegible]	वि.	१६	२०	२०	२	१२	१४	कन्या	६	१५	६	३८	११	१८	४०	४५

ग्रह-दर्शन—बुध २० मार्च को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम-कपाल में होगा। सायं गुरु पूर्व-क्षितिज से और शुक्र-शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर परस्पर समीपस्थ दीखेंगे। शुक्र*

चन्द्र-दर्शन, मु. ३०, नव रात्रारम्भ, चान्द्र-संवत्सर प्रा., वर्ष%
मुहर्रम मु. १, हिजरीसन् १३८९ प्रा., पञ्चक स. ७।३५, सायन मेष में+
भ. ४०।२ उ., पू. भा. में बुध ✓
भ. ११।३० या., शक चैत्र १८९१★
★प्रा., ज्येष्ठा में मंगल ३०।५८

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्यमान से 'दुन्दुभि' नामक संवत्सर है, अतः वर्षान्त तक इसी नाम को संकल्प में प्रयुक्त करना चाहिये

मेला माईसरखाना,
भ. २६।४० उ., ५९।४३ या; +सूर्य ४५।२२, उत्तरगोल प्रा., बुधपूर्व में§
मीन में बुध ४८।२७, श्री दुर्गाष्टमी मेला श्री मनसा ॰ जी,
श्री राम नवमी (पुनर्वसु युता महापुण्यदा), उ. भा. १ में राहु उ.=
उ. भा. में बुध ३८।२०, =फा. ३ में केतु १९।१३, नवरात्र स;
भ. १५।८ उ., ४६।५२ या., कामदा ११ व्र. स., मुहर्रम (ताजिया)
रेव. में सूर्य ५७।३०, व. गु. उ. फा. ३ में ७।१०, §अस्त ५७।५०
सोम प्रदोष व्र., श्री जैन महावीर जयन्ती, अनङ्ग १३, व. शुक्र [illegible]
भ. ४७।४५ उ., अप्रैल प्रा., [illegible] रेव. ४ मीन में २४।२५,
भ. १६।२० या., सत्य व्र., वैशाख स्ना. प्रा., शुक्र वार्धक्य प्रा....
...२१।३७, *शनि से लगभग १० अंश उत्तर में होगा।

(वसन्त ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल)

कुं. सूर्योदये

चैत्र कृ. ८ बुध इष्ट [illegible]

[illegible]

इस पक्ष में सुवर्ण के भाव में घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। २० मार्च से एक मास के भीतर अनाज घी आदि के भाव मन्दे हों और रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी और फिर मन्दी आवे, अन्त में फिर से तेजी का वातावरण बने। २२ मार्च से १२ दिन के अन्दर चांदी में मन्दी और अफीम में तेजी होगी। २२ मार्च से गुड़ खाण्ड-शक्कर में मन्दी का वातावरण बने और [illegible] तेज हों। इस वक्त के शुरू में गुड़-खाण्ड-घी-तेल-तिलहन और [illegible] खरीद कर स्टाक करने से श्रावण-भाद्रपद की तेजी में बेचने से लाभ हो। शकुन से [illegible] विचार—यदि २२ मार्च को सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त आकाश [illegible] रहे, [illegible] वर्षा न हो तो गेहूं का संग्रह करें; श्रावण की तेजी में बेचने से अच्छा लाभ हो। यदि इसी तारीख को दक्षिण-पूर्व की वायु चले और वर्षा भी हो, तो [illegible] में अन्न भारी तेज हों। यदि २५ मार्च के दिन वर्षा हो तो आगे वर्षाकाल में वायु के जोर से [illegible] वर्षा की कमी रहे। आकाश-लक्षण—१९ मार्च से २४ मार्च तक शनैः शनैः [illegible] बादल कहीं-कहीं बूंदा-बांदी हो। विशेषकर पूर्वी पाकिस्तान, [illegible] २६ मार्च से २ अप्रै. तक [illegible] %पुत्र श्रवण, पट-स्थापन, छवारोपण, तैलाभ्यङ्ग, अन्नप्राशन, [illegible]

कुं. सूर्योदये

१ श. | ११ | २ | १० | सू. चं. १२ | बु. | शु. | ९ | गु. | चं. ६ के. | ४ | ५ | ७ | ८

चैत्र शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५८।७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	५	११	०	११	
१९	२०	१३	६	२८	३	६	
३८	१	२७	११	३७	९	१	
३	५९	२५	८	२१	३३	५	
५९	१४	११८	७	३४	७	११	
७	५३	१७	२०	५३	३		
	मा.	मा.	व.	व.		व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.			

भारत-सरकार के अवकाश (वि० सं० २०२६ वि०)
(सन् १९६९-७०)

संख्या	अवकाश	तारीख	वार
१	चैत्र शुक्लादि (गुड़ी पड़वा)	१९ मार्च (१९६९)	बु.
२	रामनवमी	२७ मार्च	गु.
३	मुहर्रम	२९ मार्च	श.
४	महावीर (जैन) जयन्ती	३१ मार्च	चं.
५	गुड-फ्राईडे	४ अप्रै.	शु.
६	वैशाखी	१३ अप्रै.	र.
७	बुद्ध-जयन्ती	२ मई	शु.
८	ईद-ए-मिलाद	२९ मई	गु.
९	स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	शु.
१०	तिरु-ओनम्-दिवस	२६ अग.	मं.
११	जन्माष्टमी (वैष्णव)	४ सितं.	गु.
१२	जन्मदिन म. गान्धी	२ अक्तू.	गु.
१३	दुर्गाष्टमी	१८ अक्तू.	श.
१४	महानवमी	१९ अक्तू.	र.
१५	दशहरा	२० अक्तू.	च.
१६	वाल्मीकि-जयन्ती	२५ अक्तू.	श.
१७	दीपावली	९-१० नवं.	र., चं.
१८	गोवर्धन पूजा	१० नवं.	चं.
१९	जन्मदिन श्री गु. नानकदेवजी	२३ नवं.	रवि.
२०	जमत-उल-विदा	५ दिसं.	शु.
२१	×इदुल फित्र	१२ दिसं.	शु.
२२	शहीदी दिन गुरु तेगबहादुर	१३ दिसं.	श.
२३	क्रिसमस डे	२५ दिसं.	गु.
२४	इंग्लिश नववर्ष दिन	१ जन. (१९७०)	गु.
२५	जन्मदिन गु. गोविन्दसिंह जी	१३ जन.	मं.
२६	पोंगल (द. भारत)	१४ जन.	बु.
२७	गणतन्त्र दिवस	२६ जन.	चं.
२८	इदुज्जुहा (बकरीद)	१७ फर्व.	मं.
२९	जन्मदिन भक्त रविदास	२१ फर्व.	श.
३०	श्री महाशिव-रात्रि	६ मार्च	शु.
३१	मुहर्रम	१९ मार्च	गु.
३२	होली-होला	२२-२४ मार्च	र., म.
३३	गुड-फ्राइडे	२७ मार्च	शु.

×दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन १० दिस. को होने से वहां इदुलफित्र ११ दिसं. को मनाया जाएगा।

प्रसिद्ध कुछ मेले (वि०सं० २०२६)

मेला (सन् १९६९-७०)	तारीख
मेला माई सरखाना	२४ मार्च (१९६९)
श्री मनसादेवी	२६ मार्च
वैशाखी	१३ अप्रै.
मेला पिंजौर	१६ अप्रै.
श्री नयनादेवी व चिन्तपूरणी	२१ अग.
श्री अमरनाथ (काश्मीर)	२७ अग.
बाबा गोसाईं आणां (कुराली)	१३ सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	२२ सितं.
मेला छपार	२४ सितं.
ज्वालामुखी व तारादेवी	१८ अक्तू.
दशहरा	२० अक्तू.
दीवाली	९ नवं.
बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना)	१९ नवं.
कपाल-मोचन, रामतीर्थ, पुष्कर	२३ नवं.
पुरमण्डल	८ दिसं.
जोड़ मेला फतहगढ़ साहिब	२६ से २८ दि.
बाबा हरवल्लभ जी (जालन्धर)	२७ दिसं. से १३ जन.'७०
मेला मुक्तसर	६ फर.
माघ मेला प्रयाग	२० फर.
जयन्ती देवी	६ मार्च
श्री शिवरात्रि (मण्डी, हि. प्र.)	२४ मार्च
होला (आनन्दपुर साहब)	२६ मार्च
शीतला माता (कुराली)	५ अप्रै.
मेला पिहोवा	

नोट—भारत सरकार के अव[illegible] की सूची को गजट से मिला लेना चाहिए।

दृक्पक्ष ही शास्त्रीय है

काञ्ची कामकोटि पीठम् (मद्रास) के जगद्गुरु श्री १०८ शंकराचार्य जी द्वारा दृक्पक्ष का समर्थन

सन् १९६४ में सौर एवं दृक्पक्ष के विषय पर काञ्ची कामकोटि पीठम् (मद्रास) के जगद्गुरु श्री १००८ शंकराचार्य जी से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ। श्री शंकराचार्य जी ने पत्र द्वारा स्पष्ट किया कि वे दृक्पक्ष को ही मानते है, एव उनके मठ (आश्रम) में दृक्पक्षीय पञ्चांग के अनुसार ही सभी धार्मिक कार्यकलाप का अनुष्ठान होता है। अपने इस पत्र के साथ ही उन्होंने [illegible] [illegible], जिसमें श्री शंकराचार्य जी ने भूमध्य-दृक्तुल्य गणित द्वारा तिथ्यादि-साधन को शास्त्रीय प्रमाणित किया है। जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के पत्र एवं उस वाद-विवाद के निर्णय पत्र की अनुकृति हम यहां दे रहे हैं;—(प्रियव्रत शर्मा)

जगद्गुरु १००८ श्री शंकराचार्य जी के पत्र की प्रतिलिपि

श्रीमत्परम हंस-परिव्राजकाचार्य-वर्य श्री काञ्ची कामकोटि-पीठाधिप-जगद्गुरु श्री शंकराचार्य श्रीमठ-संस्थानात् (ता. २१-११-६४)

श्री प्रियव्रत शर्म महोदय ! नमांसि भूयांसि।

भवतां ५-११-६४ दिनांकितं पत्रं प्राप्तं श्री चरण-सन्निधौ विज्ञापितं च। ज्योतिश्शास्त्रान्तर्गत-गणित-विषये अस्मदाचार्य-पाद-परमेष्ठि-गुरुभिः अनुगृहीतस्य निर्णय पत्रात्मकस्य श्रीमुखस्य-अनुवादः अनेन लेखेन साकं प्रेषितो विद्यते। अस्मन्मठेऽपि दृक्सिद्धान्तानुसारि-पञ्चाङ्गमेवा-नुष्ठीयते—इति, श्रीचरणाज्ञानुसारेण निवेद्यते। नमांसि,

म.वि. कृष्णमूर्तिः (श्रीमठीय निर्वाहकः)

दक्षिण भारत में हुए वाद-विवाद पर जगद्गुरु श्री १००८ शंकराचार्य जी का निर्णय-पत्र

स्वस्ति श्रीमदखिल भूमण्डलालंकार.....कांची दिव्यक्षेत्रे शारदामठसुस्थितानां... षण्मठ-प्रतिष्ठापकाचार्याणां श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्री जगद्गुरु श्रीमच्छंकर भगवत्पादाचार्याणामधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्तां श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती संयमीन्द्राणां अन्तेवासि-वर्य श्रीमन्महादेवेन्द्र सरस्वती श्रीपादैः अस्मदत्यन्त-प्रिय शिष्यभूत श्री वेंकटेश्वर दीक्षित-सुन्दरेश्वर श्रौतिभ्यां सर्वाभीष्टप्रदेय नारायण-स्मृतिः

ज्योतिश्शास्त्रान्तर्गत-गणन-[illegible] वये तिथ्यादीना विषये भू पृष्ठ-दृक्-भ मध्यस्थ-भूमध्य-दृक्सिद्धम्, ग्रहणादि विषये भू पृष्ठ-दृक्-सिद्धम् च ग्राह्यमिति श्री वेंकटेश-दीक्षित श्री सुन्दरेश श्रौतिनो राशयः। भूमध्यं भमध्यं च पृथक्, तिथ्यादि-विषये भमध्य-दृक्तुल्यता ग्राह्या, प्रत्यक्षं न, —इति तिरुवेल्वेलि श्रीकृष्ण ज्योतिषिकस्य आशयः। एतयोः कक्ष्ययोः श्रीमदप्पु[illegible] शास्त्रि-श्रीमदप्पा दीक्षित-श्री श्री निवासार्य नामक[illegible] पण्डितानां माध्यस्थ्ये विवादे जाते श्री वेंकटेश दीक्षि[illegible] सुन्दरेश श्रौतिनोराशयः सिद्धान्तत्वेन स्था[illegible] प्रमाणत्वेन एषा योग्यता पत्रिका दत्ता इ[illegible]।

ईश्वर संव[illegible]

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, चैत्र शुक्ल पक्ष १ (१९ मार्च से २ अप्रै. तक सन् १९६९ ई.)

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टं. टा. चण्डीगढ़ सू.उ. घं. मि.	सू.अ. घं. मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अ.	क.	वि.
२९ ५०	१	बु.	७ ४५	उ.भा.	६ २१	ब्र.	५६ १७	ब.	७ ४५	६	१९	२८	२९	मीन	६ ३२	६ २८	११	४	४९	४४
२९ ५५	२	गु.	७ २०	रे.	७ ३५	ऐं.	५४ १०	कौ.	७ २०	७	२०	२९	मु१	मे.७।३५	६ ३१	६ २९	११	५	४९	२०
३० ०	३	शु.	८ ३३	अश्वि.	१० १७	वै.	५३ १८	ग.	८ ३३	८	२१	३०	२	मेष	६ २९	६ २९	११	६	४८	५२
३० ६	४	श.	११ ३०	भर.	१४ ३५	वि.	५३ ३५	वि.	११ ३०	९	२२	चै.'	३	वृ.३०।५७	६ २८	६ ३०	११	७	४८	२४
३० ११	५	र.	१५ २५	कृ.	२० ५	प्री.	५४ ४५	बा.	१५ २५	१०	२३	२	४	वृष	६ २६	६ ३१	११	८	४७	५२
३० १६	६	चं.	२० ४२	रो.	२६ ४५	आ.	५६ ३५	तै.	२० ४२	११	२४	३	५	वृष	६ २५	६ ३२	११	९	४७	१८
३० २०	७	मं.	२६ ४०	मृ.	३३ १७	सौ.	५८ ५०	व.	२६ ४०	१२	२५	४	६	मि. ०।२१	६ २४	६ ३३	११	१०	४६	४३
३० २५	८	बु.	३२ ४७	आर्द्रा.	४१ २०	शो.	६० ०	ब.	३२ ४७	१३	२६	५	७	मिथुन	६ २३	६ ३४	११	११	४६	७
३० २९	९	गु.	३८ ३२	पुन.	४८ १३	शो.	० ५८	बा.	५ ४०	१४	२७	६	८	क.३१।३०	६ २२	६ ३४	११	१२	४५	२७
३० ३४	१०	शु.	४३ २५	पु.	५४ १५	अ.	२ ३५	तै.	१० ५८	१५	२८	७	९	कर्क	६ २१	६ ३५	११	१३	४४	४६
३० ३९	११	श.	४८ [illegible]	आश्ले.	५८ ५०	सु.	३ २५	व.	१५ ८	१६	२९	८	१०	सि.५८।५०	६ १९	६ ३५	११	१४	४४	१
३० ४४	१२	र.	४८ १०	म.	६० ०	धृ.	३ १३	ब.	१७ ५१	१७	३०	९	११	सिंह	६ १८	६ ३६	११	१५	४३	१५
३० ४९	१३	चं.	[illegible]	म.	[illegible]	शू.	[illegible]	तै.	१८ ५८	१८	३१	१०	१२	सिंह	६ १७	६ ३६	११	१६	४२	२८
३० ५३	१४	मं.	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	गं.	[illegible]	ग.	१८ २५	१९	अ१	११	१३	क. १८।३०	६ १६	६ ३७	११	१७	४१	३६
३० ५८	१५	बु.	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	वृ.	[illegible]	वि.	१६ २०	२०	२	१२	१४	कन्या	६ १५	६ ३८	११	१८	४०	४५

ग्रह-दर्शन—बुध २० मार्च को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम-कपाल में होगा। सायं गुरु पूर्व-क्षितिज से और शुक्र-शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर परस्पर समीपस्थ दीखेंगे। शुक्र*

चन्द्र-दर्शन, मु. ३०, नव रात्रारम्भ, चान्द्र-संवत्सर प्रा., वर्ष%
मुहर्रम मु. १, हिजरी सन् १३८९ प्रा., पञ्चक स.७।३५, सायन मेष में+
भ. ४०।२ उ., पू. भा. में बुध ✓
भ. ११।३० या., शक चैत्र १८९१★
★प्रा., ज्येष्ठा में मंगल ३०।५८
मेला माईसरखाना,

%वर्षारम्भ में बार्हस्पत्यमान से 'दुन्दुभि' नामक संवत्सर है, अतः वर्षान्त तक इसी नाम को संकल्प में प्रयुक्त करना चाहियें

भ. २६।४० उ., ५९।४३ या; +सूर्य ४५।२२, उत्तरगोल प्रा., बुध पूर्व में§
मीन में बुध ४८।२७, श्री दुर्गाष्टमी मेला श्रीमनसा देवी,
श्री राम नवमी (पुनर्वसु युता महापुण्यदा), उ. भा. १ में राहु उ.=
उ. भा. में बुध ३८।२०, =फा. ३ में केतु १९।१३, नवरात्र स;
भ. १५।८ उ., ४६।५२ या., कामदा ११ व्र. स., मुहर्रम (ताजिया)
रेव. में सूर्य ५७।३०, व.गु. उ.फा. ३ में ७।१०, §अस्त ५७।५०
सोम प्रदोष व्र., श्री जैन महावीर जयन्ती, अनङ्ग १३, व. शुक्र [illegible]
भ. ४७।४५ उ., अप्रैल प्रा., [illegible] रेव. ४ मीन में २४।२५,
भ. १६।२० या., सत्य व्र., वैशाख स्ना. प्रा., शुक्र वार्धक्य प्रा....
...२१।३७, *शनि से लगभग १० अंश उत्तर में होगा।

(वसन्त ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल)

चैत्र शु. ८ बुध इष्ट [illegible]

कुं. सूर्योदये

इस पक्ष में सुवर्ण के भाव में घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। २० मार्च से एक मास के भीतर अनाज घी आदि के भाव मन्दे हों और रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी और फिर मन्दी आवे, अन्त में फिर से तेजी का वातावरण बने। २२ मार्च से १२ दिन के अन्दर चाँदी में मन्दी और अफीम में तेजी होगी। २६ मार्च से गुड़ खाण्ड-शक्कर में मन्दी का वातावरण बने और बिनौला तेज हो। इस संवत् के शुरू में गुड़-खाण्ड-घी-तेल-बिनौला और नमक खरीद कर स्टाक करने से श्रावण-भाद्रपद की तेजी में बेचने से लाभ हो। शकुन से संक्षिप्त विचार—यदि २३ मार्च को सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त आकाश [illegible] अच्छा लाभ हो। यदि इसी तारीख [illegible] वर्षा न हो तो गेहूँ का संग्रह करें, श्रावण की तेजी में बेचने से अच्छा लाभ हो। यदि २५ मार्च के दिन वर्षा हो तो आगे [illegible] में अन्न भारी तेज हो। [illegible] १९ मार्च से २४ मार्च तक शनैः शनैः को दक्षिण-पूर्व की वायु चले और वर्षा भी हो, तो [illegible] वर्षा की कमी रहे। आकाश-लक्षण—[illegible] विशेषकर पूर्वी पाकिस्तान, वर्षाकाल में वायु के जोर से [illegible] कहीं-कहीं बादल [illegible] बूंदा-बांदी हो। [illegible] गर्मी बढ़ने लगेगी। २६ मार्च से २ अप्रै. तक [illegible] %फल [illegible], घट-स्थापन, ध्वजारोपण, तैलाभ्यङ्ग, अनाज, [illegible]

कुं. सूर्योदये

चैत्र शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५८।७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	५	११	०	११	
१९	२०	१३	६	२८	३	६	
३८	१	२७	११	३७	९	१	
३	५९	२५	८	२१	३३	५	३
५९	१४	११८	७	३४	७	११	
७	५३	१७	२०	५३	३	व.	व.
	भा.	भा.	ब.	च.		भ.	अ.
	उ.	उ.	उ.	उ.			

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१ वैशाख शुक्ल पक्ष २ | तारीख | चन्द्र | चण्डीगढ़ | (१७ अप्रैल से २ मई तक सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. वैशा.	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु.	संचार घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३२ ४	१	गु.	४६ ५	अश्वि	३२ ४०	वि.	१५ २०	कि.	१५ १५	५	१७	२७	२१	मेष	५ ५८	६ ४७	०	३	२३	५०
३२ ९	२	शु.	४८ ५२	भर.	३६ ४२	प्री.	१४ २७	बा.	१७ २८	६	१८	२८	३०	वृ.५२।५९	५ ५७	६ ४७	०	४	२२	२८
३२ १३	३	श.	५२ ५०	कृ.	४१ ५२	आ.	१४ ३०	तै.	२० ५१	७	१९	२९	स.	वृष	५ ५६	६ ४८	०	५	२१	३
३२ १८	४	र.	५७ ५२	रो.	४८ १३	सौ.	१५ २५	ग.	२५ २१	८	२०	३०	२	वृष	५ ५५	६ ४९	०	६	१९	३७
३२ २२	५	चं.	६० ०	मृ.	५५ १३	शो.	१७ ३	व.	३० ४४	९	२१	वै १	३	मि.२१।४३	५ ५४	६ ५०	०	७	१८	८
३२ २६	५	मं.	३ ३३	आर्द्रा	६० ०	अ.	१९ १५	बा.	३ ३७	१०	२२	२	४	मिथुन	५ ५२	६ ११	०	८	१६	३७
३२ ३०	६	बु.	९ ४५	आर्द्रा	२ ४०	सु.	२१ ३०	तै.	९ ४५	११	२३	३	५	क.५३।१०	५ ५१	६ ५२	०	९	१५	६
३२ ३४	७	गु.	१५ ४५	पुन.	१० ०	धृ.	२३ ३८	व.	१५ ४५	१२	२४	४	६	कर्क	५ ५०	६ ०२	०	१०	१३	३१
३२ ३८	८	शु.	२० ५७	पु.	१६ ४२	शू.	२५ १५	व.	२० ५७	१३	२५	५	७	कर्क	५ ४९	६ ५३	०	११	११	५४
३२ ४२	९	श.	२५ ७	आश्ले.	२२ २०	गं.	२५ ५५	कौ.	२५ ७	१४	२६	६	८	सिं.२२।२०	५ ४८	६ ५३	०	१२	१०	१५
३२ ४६	१०	र.	२७ ३७	म.	२६ २५	वृ.	२५ २०	ग.	२७ ३७	१५	२७	७	९	सिंह	५ ४७	६ ५४	०	१३	८	३४
[illegible]	११	चं.	२८ १३	पू. फा.	२८ ३८	ध्रु.	२३ २०	वि.	२८ १३	१६	२८	८	१०	क.४३।४४	५ ४६	६ ५४	०	१४	६	५०
[illegible]	१२	मं.	२६ ५२	उ. फा.	२९ ०	व्या.	१९ ४२	बा.	२६ ५२	१७	२९	९	११	कन्या	५ ४५	६ ५५	०	१५	५	६
[illegible]	१३	बु.	२३ ३८	ह.	२६ ३०	ह.	१४ ३०	तै.	२३ ३८	१८	३०	१०	१२	तु.५५।५६	५ ४५	६ ५५	०	१६	३	२०
[illegible]	१४	गु.	[illegible]	चि.	[illegible]	व.	८ १३	व.	१८ ४०	१९	म.१	११	१३	तुला	५ ४४	६ ५६	०	१७	१	३२
[illegible]	१५	शु.	[illegible]	स्वा.	[illegible]	सि.	[illegible]	ब.	१३ ३०	२०	२	१२	१४	तुला	५ ४३	६ ५७	०	१७	५९	४१

ग्रह-दर्शन—शनि अस्त है। बुध १७ अप्रैल को पश्चिम में उदित होगा। प्रातः मंगल पश्चिम-कपाल में और शुक्र पूर्व क्षितिज के ऊपर होगा। सायंकाल को गुरु पूर्व-कपाल में चमक रहा होगा।

बुध पश्चिम में उदित ५७।०, भर. में बुध २८।२५,
चन्द्र दर्शन मु. १५, + (वि. मु. रोहि.) (वि. मु. रोहि.)
सफर मु. २ प्रा., अक्षय ३, श्री परशुराम जयन्ती, अगस्त्य अस्त+
भ. २५।२१ उ., ५७।५२ या., सायन वृष में सूर्य १९।१५,
आद्य जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य जयन्ती, शक वैशाख प्रा.,
∴ (वि. मु. मृग.)
श्री गङ्गा जन्म,
भ. १५।४५ उ. ४८।२१ या., कृत्ति. में बुध २१।२५,
(वि. मु. मघा), व. गुरु उ. फा. २ में २५।५८
वृष में बुध १९।१५, श्री जानकी जयन्ती, (वि. मु. मघा)
भ. ५७।५५ उ., भर. में सूर्य ११।४७, मंगल वक्री २७।४५
भ. २८।१३ या., मोहिनी ११ व्र. स.,
शुक्र मार्गी ४७।५०, भौम प्रदोष व्र.,
श्री नृसिंह जयन्ती अश्वि. ३ में शनि ४०।५०
भ. १८।४२ उ. ४५।३६ या., सत्यव्रत, मई प्रा., (वि.मु.स्वा.)
श्री बुद्ध जयन्ती, यम प्रीत्यर्थ जलकुम्भ दान, वैशाख स्नान स.

(वसन्त ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण, उत्तरगोल)

वैशा. शु. ८ बुध, इष्ट [illegible] | कुं. सूर्योदय

इस पक्ष में १७ अप्रैल से गेहूं आदि अन्न के भावों में तेजी। [illegible] के भावों में १५ दिन के अन्दर मन्दी आवे। [illegible] ये भी तेज हों। चांदी [illegible] २६ अप्रैल से १५ दिन [illegible] तेजी आवे। अन्य सब के अन्दर [illegible] में मन्दी होकर पीछे तेजी आवे। [illegible] गेहूं-जौ-चना-चावल-मटर-[illegible] आदि के भावों में तेजी का वातावरण [illegible] चांदी सोना तेज हों। गुड़ घी के [illegible]

[illegible] १८ अप्रैल को यदि बादल हों तो प्रजा में सुख और सुभिक्ष [illegible] जलपूर्ण पात्र में सूर्यदेव के स्वरूप [illegible] एवं अकाल्पि आवे, यदि नील व पीत रंग [illegible] टिड्डी आदि का भय हो। २२ अप्रैल [illegible] संग्रह करना चाहिए, क्योंकि आगे समय अच्छा न [illegible] २० अप्रैल से २ मई तक कहीं-कहीं [illegible]

कुं. सूर्योदय वैशा. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९।[illegible]

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	१	५	११	०	११	५
१८	२३	९	३	१३	६	४	[illegible]
[illegible]	८	३६	१७	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	३४	२२	५५	४८	[illegible]	२७	२७
५८	४	६१	३	८	[illegible]	३	३
७	३०	३२	३३	२८	३१	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

वि. सं. …०२६, शाक १८९१, ज्येष्ठ … पक्ष ४

सू. उ. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	वैशा.	मई	[illegible]	[illegible]	चन्द्र सञ्चार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३३	१०	१	श.	५	१७	वि.	१४	३५	व.	४३	२	कौ.	५	१७	२१	३	१३	१५	वृ.११।११	५	४२	६	५७	०	१८	१७	४९
अव	म	२	श.	५७	३०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	१४	३	र.	४९	३०	अनु.	८	४५	प.	३३	४५	व.	२३	३०	२२	४	१४	१६	वृश्चिक	५	४१	६	५८	०	१९	५५	५४
३३	१७	४	चं.	४१	४०	ज्ये.	५७	४५	शि.	२४	३०	ब.	१५	३५	२३	५	१५	१७	ध.२।४५	५	४०	६	५८	०	२०	५३	५९
३३	२१	५	मं.	३४	२०	पू. षा.	५१	५५	सि.	१५	३८	कौ.	७	०	२४	६	१६	१८	धनु	५	४०	६	५९	०	२१	५२	१
३३	२४	६	बु.	२७	१५	उ. षा.	४७	४५	सा.	२१	५०	ग.	१	७	२५	७	१७	१९	म. १६।२	५	३९	७	०	०	२२	५०	४
३३	२७	७	गु.	२२	३०	श्र.	४४	४०	शु.	५३	१८	ब.	२२	३०	२६	८	१८	२०	मेष	५	३८	७	१	०	२३	४८	६
३३	३१	८	शु.	१८	१५	ध.	४२	५०	ब्र.	४७	४५	कौ.	१८	१५	२७	९	१९	२१	कुं.१३।४५	५	३७	७	२	०	२४	४६	५
३३	३४	९	श.	१५	१५	श.	४२	१२		४३	१५	ग.	११	१५	२८	१०	२०	२२	कुम्भ	५	२९	७	२	०	२५	४४	३
३३	३८	१०	र.	१२	३०	पू.भा.	४२	५०	वै.	३९	४२	वि.	१३	३०	२९	११	२१	२३	मी.२७।४१	५	३०	७	३	०	२६	४१	५८
३३	४१	११	चं.	१२	५५	उ. भा.	४४	३०	वि.	३७	३	बा.	१२	१५	३०	१२	२२	२४	मीन	५	३१	७	३	०	२७	३९	५४
३३	४५	१२	मं.	१३	२७	रे.	४७	१८	प्री.	३५	१५	तै.	१३	२७	३१	१३	२३	२५	मे.४७।१८	५	३१	७	४	०	२८	३७	४९
३३	४८	१३	बु.	१५	३	अश्वि.	५०	५७	आ.	३४	१७	व.	१५	३	ज्ये	१४	२४	२६	मेष	५	३३	७	५	०	२९	३५	४२
३३	५२	१४	गु.	१७	३५	भ.	५५	३५	सौ.	२३	५७	श.	१७	३५	२	१५	२५	२७	मेष	५	३२	७	५	१	०	३३	३३
३३	५५	३०	शु.	२१	२	कृ.	६०	०	शो.	३४	२३	ना.	२१	२	३	१६	२६	२८	वृ.४२।५३	५	३२	७	५	१	१	३१	२२

ग्रह-दर्शन शनि ११ मई को पूर्व में उदय … प्रातः … पश्चिम कपाल में और गुरु पूर्व में दीखेगा … शनि शुक्र से नीचे होगा। साथ गुरु याम्योत्तर-वृत्त को+…

रोहिणी में बुध १९।५५,
द्वितीया का क्षय, +ओर झुका होगा और बुध … दि…
भ. २३।३० उ. ४९।३० या.,
श्रीगंगे १४व्र., श्री१००८ आनन्दमयी मातृ जन्मोत्सव-…
(वि. मु. …
भ. २७।५५ उ. ५५।१३ या., जन्म दिन श्री रवीन्द्रनाथ …
…टैगोर, चेल्हम, (वि. मु. उ. पा.),
पञ्चक प्रा. १३।४५,
भ. ४४।२२ उ., कृत्ति. में सूर्य ५७।५७,
भ. १…३० या., शनि उदित ३।२
अपरा ११ व्र. स.,
पञ्चक समाप्त ४७।१८, भौम प्रदोष व्र.,
भ. १५।३ उ., ४६।१९ या., स. वृष में सूर्य २५।१३ मु. ()
यूरेनस उ. फा. ३ में २१।७,
भावुका ३०, वट-सावित्री व्र.,
() ३०, पुण्य ९।१३ बाद,

ज्येष्ठ कृ. ८ शुक्र. इष्ट ५९।४३, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	१	५	११	०	११	५
२५	२२	१६	२	१८	७	४	४
४३	२१	५	५६	५८	४९	२१	२१
४७	१०	१	४१	१९	४४	११	११
५७	९	३६	२	२२	७	३	३
५८	४८	१४	२०	२०	२३	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२	२	२	२	२	३	२	३
[illegible]	ज्ये.	रो.	उ.फा.	रेव.	अश्वि.	उ.भा.	उ.फा.

२बु. १२ ११ शु. ३ १सू.श. १० ४ चं.१० ५ ७ ९ ६गु.के ८मं

(ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण उत्तर गोल)

इस पक्ष में ३ मई से ८ दिन के अन्दर रूई-कपास-सूत-सोना-चांदी-तिल-तेल-सरसों-चावल-गुड़-खाण्ड में तेजी आवे। राई-सूत-सण-तुअर व रेशमी वस्त्रों में मन्दी आवे। ११ मई से व्यापार में भारी उथल-पुथल होगी। व्यापार की अनेक वस्तुओं में एकाएक मन्दी की आशा है। अलसी, सरसों मूंगफली, एरण्ड के भाव में मन्दी आवे। लोहा-जस्ता और काले-रंग के पदार्थ घास-लकड़ी और चावल, गुड़-खाण्ड में तेजी का वातावरण बने।

कुं. सूर्योदये, ज्येष्ठ कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५९।५५,

३ १श.चं. सू.बु.२ रा.१२ ११ ४ ५ ८मं १० ६गु. के. ७ ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	५	११	०	११	५
२	२०	१८	२	२२	८	३	३
२९	५७	३३	४४	८	४०	५८	५८
७	२७	४१	८	३२	५४	५६	५६
५७	१४	१	१	६३	७	३	३
४८	४१	२४	४	५	१३	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	२	२	३	२	३
कृत्ति.	ज्ये.	रो.	उ.फा.	रेव.	अश्वि.	उ.भा.	उ.फा.

शकुन से भविष्य-विचार—६ मई को यदि दक्षिण का पवन चले तो आगे आश्विन में इन उपरोक्त वस्तुओं के संग्रह से भविष्य में उत्तम लाभ मिले ? १२-१३ मई को बादल गरजें, बिजली चमके तथा वर्षा भी हो तो वहां आगे अन्न की पैदावार अच्छी हो। १६ मई दिन तथा रात को यदि आकाश मेघाच्छन्न दिखाई दे तो वहां आगे अनावृष्टि का भय है।

आकाश-लक्षण—३ मई से ५ मई तक कहीं-कहीं बादल चाल बूंदा-बांदी के योग हैं। ६ मई से ९ मई तक गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। १०-११ मई को बादल चाल एवं बूंदा-बांदी हो। १२ मई से १६ मई तक गर्म वायु चले।

ज्योति.सं. २०२६, सं. २०२६, शाक १८९१, . ज्येष्ठ [illegible] तारीख | चान्द्र [illegible]

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	प.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	५८	१	श.	२५	१७	कृ.	१	५	अ.	३५	२७	ब.	२५	१७	४	१७	२७	२९	वृष	५	३१	७	७	१	२	२९	१०
[illegible]	१	२	र.	३०	२७	रो.	७	१६	सु.	३७	५	कौ.	३०	२७	५	१८	२८	र.	मि. ४०।४७	५	३१	७	७	१	३	२६	५७
३४	४	३	चं.	३६	२	मृ.	१४	१७	धृ.	३९	१०	तै.	३	१५	६	१९	२९	२	मिथुन	५	३०	७	८	१	४	२४	४२
३४	७	४	मं.	४२	१०	आर्द्रा	२१	४०	शू.	४१	३५	ब.	९	६	७	२०	३०	३	मिथुन	५	३०	७	८	१	५	२२	२८
३४	१०	५	बु.	४८	१५	पुन.	२९	१०	गं.	४४	५	ब.	१५	१२	८	२१	३१	४	क. १२।१७	५	२९	७	९	१	६	२०	१२
३४	१३	६	गु.	५४	०	पु.	३६	३०	वृ.	४६	१५	कौ.	२१	७	९	२२	ज.	५	कर्क	५	२९	७	९	१	७	१७	५४
३४	१६	७	शु.	५८	४७	आश्ले.	४३	०	ध्रु.	४७	४५	ग.	२६	३३	१०	२३	२	६	सि. ४३।०	५	२८	७	१०	१	८	१५	३४
३४	१९	८	श.	६०	०	म.	४८	२०	व्या.	४८	२०	वि.	३०	५	११	२४	३	७	सिंह..	५	२७	७	११	१	९	१३	१३
३४	२२	८	र.	२	२२	पू. फा.	५१	५५	ह.	४७	३१	ब.	२	२२	१२	२५	४	८	सिंह	५	२६	७	१२	१	१०	१०	५०
३४	२४	९	चं.	३	४८	उ.फा.	५३	३५	व.	४५	६	कौ.	३	४८	१३	२६	५	९	क. ७।२०	५	२६	७	१३	१	११	८	२६
३४	२६	१०	मं.	३	२३	ह.	५३	१३	सि.	४१	५	ग.	३	२३	१४	२७	६	१०	कन्या	५	२६	७	१४	१	१२	६	१
४४	२९	११	बु.	०	५०	चि.	५०	५०	व्य.	३५	१७	वि.	०	५०	१५	२८	७	११	तु. २२।२	५	२६	७	१४	१	१३	३	३३
अवम		१२	[illegible]	५६	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	३१	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब.	२८	३	कौ.	२३	[illegible]	५	१६	२९	८	१२	तुला	५	२५	७	१५	१	१४	१	५
[illegible]	[illegible]	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग.	१६	८	१७	३०	९	१३	वृ. २७।२०	५	२५	७	१५	१	१४	५८	३५
३४	३६	१५	श.	[illegible]	[illegible]	अनु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि.	७	५०	१८	३१	१०	१४	वृश्चिक	५	२५	७	१६	१	१५	५६	२

ग्रह-दर्शन—२१ मई को बुध पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम में डूबता होगा और शुक्र-शनि पूर्व में परस्पर समीपस्थ दीखेंगे। साय गुरु याम्योत्तर-वृत्त से कुछ पूर्व की ओर होगा।

चन्द्र-दर्शन मु- ४५, बुध वक्री ४७.५७, (वि. मु. रोहि.),

रवि उल अव्वल मु. ३ प्रा., (वि. मु. मृग.).

श्री प्रताप जयन्ती, रम्भा व्रत, (वि. मु. मृग.)

भ. ९।६ उ. ४२।१० या., बलिदान दिवस श्री गुरु अर्जुनदेव

बुध पश्चिम में अस्त १६।३५, सायन मिथुन में सूर्य १४।४०,

इ.क ज्येष्ठ प्रा.,

भ. ५८।४७ उ., गुरु मार्गी २२।१०

भ. ३०।३५ या., रोहिणी में सूर्य ४८।४५, (वि. म. मघा)

अश्वि. ४ में शनि १५।२७

९ निर्णय" पृ. १६) अश्वि. मेष में शक ५७।४५.

भ. ३२।७ उ., श्री गङ्गा दशहरा निर्जला ११ व्र. स्मा,

भ. ०।५० या., निर्जला ११ व्र. वै. (देखें—"सन्दिग्ध त पर्व%

द्वादशी का क्षय, ()ईद-ए-मिलाद, (वि. मु. स्वा.),

पू. भा. ४ में राहु उ. फा. २ में केतु १४।४०, प्रदो र व्र.,()

भ. ४२।३२ उ., (वि. मु. अनु.) —वि. म. अनु.)

भ. ७।५० या., व. मंगल अनु. ४ में २२।३२, सत्य व्र., मन्वादि,

ज्येष्ठ शु. १५ शनि, इष्ट ०।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	५	०	०	११	५
१५	१६	१३	२	१	१०	३	३
५६	४७	३१	४५	३४	१८	१४	१४
१४	३२	१५	४१	२१	३१	२४	२४
५७	२०	३२	१	४७	६	३	३
३०	१५	४५	२८	३०	४०	११	११
	व.	प.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये,

ज्येष्ठ कृ. ८ रवि, इष्ट ०।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	व.	प.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुं. सूर्योदय

(ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण उत्तर गोल)

[illegible] १८ मई से २४ दिन के अन्दर सोना, चांदी में [illegible] में घटाबढ़ी चले। घी-गुड़-खाण्ड-शक्कर [illegible] अनाजों में मन्दी का वातावरण [illegible] २१ मई से चौपाए पशुओं में तेजी [illegible] की मन्दी आवे, साथ ही [illegible] में भी मन्दा आवे। ता. २९ मई से [illegible] में तेजी आवे, सोना एव चान्दी [illegible] गुड़-खाण्ड-शक्कर में, २९ [illegible] तिल-तेल सरसों अलसी और अण्डी में कुछ मन्दी रहेगी। [illegible] आकाश मेघाच्छन्न रहे और मेघ-गर्जना भी हो तो [illegible] ऊपर वाली स्थिति बने तो तिल का स्टाक [illegible] तो आगामी मासों में वायु-प्रकोप से वृक्षों को [illegible] बादल फटने व बूंदा-बांदी के योग हैं। खासकर [illegible] हानि पहुंचे। आकाश लक्षण—[illegible] मई को बादल छाए हों। [illegible] बम्बई, मद्रास एव पूर्वी आकाश में वृष्टि के योग बनते हैं। [illegible]

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घं.	प.	क.	घं.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	३८	१	र.	२४	१२	ज्ये.	२७	५	सा.	४९	२३	कौ.	२४	१२	१९	१	११	१५	घ. २७।५	५	२४	७	१६	१	१६	५३	३१
३४	४०	२	चं.	१४	५०	मू.	१९	४७	शु.	३९	३	ग.	१४	५०	२०	२	१२	१६	धनु.	५	२४	७	१७	१	१७	५०	५९
३४	४१	३	मं.	५	५०	पू. षा.	१२	५५	शु.	२९	१०	वि.	५	५०	२१	३	१३	१७	म. २६।२५	५	२४	७	१७	१	१८	४८	२५
अव	म	४	मं.	५७	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	४३	५	बु.	५०	३२	उ.षा.	६	५५	ब्र.	२०	१०	कौ.	२४	४	२२	४	१४	१८	मकर	५	२४	७	१८	१	१९	४५	५१
३४	४५	६	गु.	४४	५३	श्र.	५८	४५	ऐं.	१२	१२	ग.	१७	४२	२३	५	१५	१९	कुं. ३०।२५	५	२३	७	१८	१	२०	४३	१६
३४	४७	७	शु.	४०	५०	श.	५७	५	वै.	५	३२	वि.	१२	५१	२४	६	१६	२०	कुम्भ	५	२३	७	१९	१	२१	४०	४१
३४	४८	८	श.	३८	२७	पू. भा.	५७	०	वि.	५६	५८	बा.	९	३९	२५	७	१७	२१	मी. ४२।१	५	२३	७	१९	१	२२	३८	५
३४	५०	९	र.	३७	४५	उ. भा.	५८	३२	आ.	५३	२२	तै.	८	६	२६	८	१८	२२	मीन	५	२३	७	२०	१	२३	३५	२८
३४	५१	१०	चं.	३८	३२	रे.	६०	०	सौ.	५१	४७	व.	८	८	२७	९	१९	२३	मीन	५	२३	७	२०	१	२४	३२	५१
३४	५२	११	मं.	४०	३८	रे.	१	३३	शो.	५१	१५	ब.	९	३५	२८	१०	२०	२४	मे. १।३३	५	२३	७	२०	१	२५	३०	१३
३४	५३	१२	बु.	४३	५०	अश्वि.	५	४२	अ.	५१	३०	कौ.	१२	१४	२९	११	२१	२५	मेष	५	२३	७	२१	१	२६	२७	३५
३४	५४	१३	गु.	४८	०	भर.	१०	५५	सु.	५२	३०	ग.	१५	५५	३०	१२	२२	२६	वृ. २७।२४	५	२३	७	२१	१	२७	२४	५६
३४	५६	१४	शु.	५२	४७	कृ.	१६	५०	धृ.	५३	५७	वि.	२०	२३	३१	१३	२३	२७	वृष	५	२२	७	२१	१	२८	२२	१७
३४	५७	३०	श.	५८	१०	रो.	२३	२५	शू.	५५	५०	च.	२५	२८	आ	१४	२४	२८	मि ५६।५७	५	२२	७	२२	१	२९	१९	३६

(१ से १४ जून तक ...)

ग्रह दर्शन— ... पूर्व में उदित होगा । सायं मंगल पूर्व में उदित होता हुआ, गुरु याम्योत्तर-वृत्तासन्न दीखेगा । प्रातः शुक्र-शनि पूर्व में परस्पर समीपस्थ होंगे ।

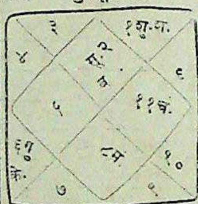
जून प्रा., (वि. मु. मूल),
भ. ४०।२० उ., (वि. मु. मूल),
भ. ५।५० या., श्री गणेश ४ व्र.,
चतुर्थी का क्षय,

भ. ४४।५३ उ, पञ्चक प्रा. ३०।२५,
भ. १२।५१ या.,
मृग. में सूर्य ४३।५०, यूरेनस मार्गी १५।१७,
(वि. मु. उ. भा.),
भ. ८।८ उ. ३८।३२ या., व. नेपच्यून विशा. ४ में ३४।५८,
पंचक स. १।३३, बुध पूर्व में उदित २७।४२, बुध मार्गी ५९।४० ...
रोहिणी मे बुध १।५१,
भ. ४८।० उ., प्रदीप व्र., ×शनैश्चरी ३०,
भ. २०।२३ या., उ. फा. ३ में गुरु ३०।३५, भर. में शुक्र ३९।३,
सं. मिथुन मे सूर्य ४२।२०, मु. ३०, पुण्य १७।२९ बाद, ×
... व. बुध कृति. ४ में ५१।४२, योगिनी ११ व्र. स.

(ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण, उत्तर गोल)

प्र. आषा. कृ. ८ शनि, इष्ट ०।१७, कुं. सूर्योदये

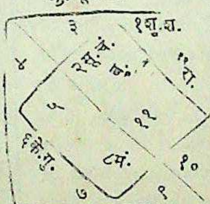
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	५	०	०	११	५
२२	१४	१०	२	७	११	२	२
३८	२५	२८	५९	२२	४	५२	५२
२०	१	३०	३५	१	१५	९	९
५७	२०	१३	२	५२	६	३	३
२४	६	२७	४०	१८	२१	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	रो.	उ. फा.	कृत्ति.	[illegible]	पू. भा.	उ. भा.



इस पक्ष में चना, गेहूं आदि अनाज तथा सोना-चांदी आदि धातु, मशीनरी व मशीनरी के पुर्जे और गुड़-खाण्ड-घी इनमें तेजी रहे । यहां आषाढ़ कृष्ण नवमी रविवार को है, अतः दक्षिण और पूर्वी इलाकों में कुछ अकाल की स्थिति बने ।

शकुन से भविष्य विचार—यदि एक जून को बिजली चमके, मेघ गरजें तथा वर्षा भी हो तो वहां दो मास तक वर्षा की कमी अनुभव हो । यदि ८ जून के दिन बादल हों, बिजली चमके तो उस प्रदेश में वर्षा अच्छी हो सुभिक्ष रहे । अतः संग्रह किया हुआ अन्न बेचकर खेतियों के लिए यत्न करें । ता. ६ जून को चन्द्रोदय बादलों मे हो तो वहां अच्छी वर्षा और सुभिक्ष होगा । "**काला बादल करबरा धौला करे सुकाल । चन्दा उगे निर्मला तो पड़े अचिन्त्ला-काल ॥**" ता. १३ जून को रात के समय आकाश में चन्द्रमा को देखें, यदि वह रोहिणी नक्षत्र (गाड़ी के आकार के पांच तारों) के बीच में दीखे तो दुर्भिक्ष हो, यदि इस दिन बादलों के कारण चन्द्रमा और रोहिणी न दीखें, तो वर्षा अच्छी होकर सुभिक्ष हो परन्तु प्रजा में रोग भय व्यापे । आकाश-लक्षण—३ जून से ५ जून तक कहीं बादल-चाल और कहीं बूंदाबांदी हो, ६ से ९ जून तक गर्म वायु का प्रकोप हो, वृद्ध व बालकों को कष्ट हो । १० जून+

कृ. सूर्योदये प्र. आषा. कृ. ३० शनि, इष्ट ०।२०



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	५	०	०	११	५
२९	१२	१०	३	१३	११	२	२
१९	१०	२४	२१	३९	४७	२९	२९
५४	१६	५१	४०	४३	२९	५३	५३
५७	१७	१७	२	५५	५	३	३
१९	४२	२५	४९	५९	५७	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... में कहीं कहीं बूंदाबांदी और बादल चाल के योग ।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जून	शा.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	प.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५८	१	र.	६०	०	मृ.	३०	३०	गं.	५८	३	कि.	३१	४	२	१५	२५	२९	मिथुन	५	२२	७	२२	२	०	१६	५४
३४	५९	१	चं.	३	५९	आर्द्रा	३७	५३	वृ.	६०	०	ब.	३	५९	३	१६	२६	३०	मिथुन	५	२२	७	२२	२	१	१४	१४
३५	०	२	मं.	१०	०	पुन.	४५	२५	वृ.	०	२६	कौ.	१०	०	४	१७	२७	र.'	क.२८।३२	५	२२	७	२२	२	२	११	३१
३५	०	३	बु.	१६	७	पु.	५२	४७	ध्रु.	३	०	ग.	१६	७	५	१८	२८	२	कर्क	५	२२	७	२३	२	३	८	४९
३५	०	४	गु.	२२	०	आश्ले.	५९	४७	ह.	५	२१	वि.	२२	०	६	१९	२९	३	सिं.५९।४७	५	२२	७	२३	२	४	६	७
३५	१	५	शु.	२७	१०	म.	६०	०	ह.	७	१८	बा.	२७	१०	७	२०	३०	४	सिंह..	५	२३	७	२३	२	५	३	२५
३५	१	६	श.	३१	१५	म.	५	५८	व.	८	३२	तै.	३१	१५	८	२१	३१	५	सिंह	५	२३	७	२३	२	६	०	४०
३५	१	७	र.	३३	५७	पू. फा.	१०	५०	सि.	८	४६	ग.	२	३६	९	२२	जु.'	६	क.२६।३७	५	२३	७	२३		६	५७	५६
३५	१	८	चं.	३४	४५	उ.फा.	१४	०	व्य.	७	३७	वि.	४	२१	१०	२३	२	७	कन्या	५	२३	७	२३	२	७	५५	११
३५	०	९	मं.	३३	३२	ह.	१५	१५	व.	४	५९	बा.	४	८	११	२४	३	८	तु.४४।५२	५	२३	७	२३	२	८	५२	२५
३५	०	१०	बु.	३०	१७	चि.	१४	२८	प.	[illegible]	[illegible]	तै.	१	५५	१२	२५	४	९	तुला	५	२४	७	२४	२	९	४९	३९
४५	०	११	गु.	२५	०	स्वा.	११	४०	शि.	४७	०	वि.	२५	०	१३	२६	५	१०	वृ.५३।१४	५	२४	७	२४	२	१०	४६	५३
३४	५२	१२	शु.	१८	०	वि.	७	५	सा.	३८	०	बा.	१८	०	१४	२७	६	११	वृश्चिक	५	२४	७	२४	२	११	४४	५
३४	[illegible]	१३	श.	[illegible]	[illegible]	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	१५	तै.	०	३५	१५	२८	७	१२	ध.५३।४५	५	२५	७	२५	२	१२	४१	१८
३४	[illegible]	१४	र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब.	०	१५	१६	२९	८	१३	धनु	५	२५	७	२५	२	१३	३८	२९
४	म	१५	[illegible]										०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रह-दर्शन—प्रातः पूर्व में बुध, शुक्र-शनि उत्तरोत्तर क्रमशः एक-दूसरे के ऊपर चमकते दीखेंगे। सायं मंगल पूर्व-कपाल में एवं गुरु याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा।

पुरुषोत्तम (मल) मास प्रा.,
चन्द्र दर्शन मु. १५,
रवि उस्सानी मु. ४ प्रा.
भ. ४९।४ उ.,
भ. २२।० या.,
दक्षिणायन प्रा.,
आर्द्रा में सूर्य ४१।१०, सायन कर्क में सूर्य ३५।५, वर्षर्तु-
भ. ३३।५७ उ., [illegible] आषाढ़ प्रा.,
भ. ४।२१ या.,
भ. ५७।३८ उ., मन्वादि,
भ. २५।० या., पुरुषोत्तमा [illegible]स.,
कृत्ति. में शुक्र २१।२५, प्रदा[illegible]
%मन्वादि, उ. फा. ४ में यूरेनस ५३।५७
भ. ०।३५ उ. २५।१८ या., मृग में बुध ४९।७, सत्य व्र.,%
पूर्णिमा का क्षय,

(ग्रीष्म-वर्षा ऋतु, उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल)

इस पक्ष में १५ जून से अलसी, खल, ऐरण्ड, रूई, सूत, कपास, गेहूं, चावल, चना, जौ में तेजी आवे। मोती और [illegible] के भाव में कुछ तेजी चले। सुवर्ण के भाव में घटाबढ़ी [illegible]। लाल-मिर्च, लाल रंग, लाल चन्दन आदि लाल-वस्तुओं [illegible]। [illegible] प्रतिपदा की वृद्धि हुई है, अतः शासक- के भाव तेज हों। [illegible] प्रजा में सुख-वृद्धि हो।

शकुन से भविष्य-विचार—इस पक्ष में वर्षाकाल में [illegible] हुआ है, तो वर्षा अच्छी होगी।

[illegible] एक करन्त ॥"

"[illegible] दक्षिण की ओर से हो तो [illegible] और बिना वर्षा [illegible] ॥"

"[illegible] शान्तदवाल्यवर्णो रविः ॥"

[illegible]—१५ जून से २० जून तक, [illegible], [illegible] वायु चले तथा आकाश मेघाच्छन्न रहे।

[illegible] सूरत की ओर वर्षा के योग हैं। [illegible]

कुं. सूर्योदयं, प्र. आषा. शु. १४ रवि, इष्ट ०।१३

४, ३, २ बु. शु., १ श. रा., ५, ६ के. गु., १२ सू., ७, १ चं., ११, ८ म., १०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	७	१	५	०	०	११	५
१३	८	२२	४	२८	१३	१	१
३८	५१	१५	३५	२०	१०	४२	४२
४२	३७	२६	४९	२६	०	१०	१०
५७	७	७६	६	६१	४	३	३
११	१६	१२	५	२३	१६	११	११
	व.	मा.	मा	मा	मा.	व.	व.
	उ	उ.	उ.	उ.	उ.	व	म.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०२६, शाक १८९१, द्वि. (अधिक) आषाढ़कृष्णपक्ष८ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. | उदयकालिक | (३० जून से १४ जुला. तक सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	सञ्चार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५८	१	चं.	४०	२८	पू. षा.	३८	१३	ब्र.	५५	५६	बा.	१५	२५	१७	३०	९	१४	म.५१।२२	५	२५	७	२५	२	१४	३५	४१
३४	५७	२	मं.	३०	५७	उ. षा.	३०	५०	वं.	४५	४०	तै.	५	४२	१८	जु१	१०	१५	मकर	५	२६	७	२५	२	१५	३२	५३
३४	५६	३	बु.	२२	२५	श्र.	२४	२०	वि.	३६	१०	वि	२२	२५	१९	२	११	१६	कुं.५१।४५	५	२६	७	२५	२	१६	३०	५
३४	५५	४	गु.	१५	५	ध.	१९	१०	प्री.	२७	५५	बा.	१५	५	२०	३	१२	१७	कुम्भ	५	२७	७	२५	२	१७	२७	१७
३४	५४	५	शु.	९	२०	श.	१५	३५	आ.	२०	५७	तै.	९	२०	२१	४	१३	१८	मी.५९।१४	५	२७	७	२५	२	१८	२४	२९
३४	५३	६	श.	५	२७	पू.भा.	१३	४७	सौ.	१५	३२	व.	५	२७	२२	५	१४	१९	मीन	५	२८	७	२५	२	१९	२१	४२
३४	५२	७	र.	३	२५	उ. भा.	१४	१	शो.	११	४५	ब.	३	२५	२३	६	१५	२०	मीन	५	२८	७	२५	२	२०	१८	५४
३४	५१	८	चं.	३	२७	रे.	१६	२	अ.	९	२०	कौ.	३	२७	२४	७	१६	२१	मे. १६।२	५	२९	७	२५	२	२१	१६	८
३४	४९	९	मं.	५	७	अश्वि.	१९	४२	सु.	८	२३	ग.	५	७	२५	८	१७	२२	मेष	५	२९	७	२५	२	२२	१३	२०
३४	४६	१०	बु.	८	१५	भ.	२४	४७	धृ.	८	३३	वि.	८	१५	२६	९	१८	२३	वृ. ४।१८	५	३०	७	२४	२	२३	१०	३३
३४	४४	११	गु.	१२	३३	कृ.	३०	५०	शू.	९	३४	बा.	१२	३३	२७	१०	१९	२४	वृष	५	३१	७	२४	२	२४	७	४६
३४	४२	१२	शु.	१७	४२	रो.	३७	४१	मं.	११	१५	तै.	१७	४२	२८	११	२०	२५	वृष	५	३१	७	२४	२	२५	४	५९
३४	४०	१३	श.	२३	२२	मृ.	४४	५२	वृ.	१३	२०	व.	२३	२२	२९	१२	२१	२६	मि११।१६	५	३२	७	२४	२	२६	२	१४
३४	३८	१४	र.	२९	२१	आर्द्रा.	५२	१७	ध्रु.	१५	४१	श.	२९	२१	३०	१३	२२	२७	मिथुन	५	३२	७	२४	२	२६	५९	३०
३४	३६	३०	चं.	३५	२३	पुन.	५९	४५	व्या	१८	६	च.	२	२२	३१	१४	२३	२८	क.४२।५३	५	३३	७	२३	२	२७	५६	४५

ग्रह दर्शन—१३ जुलाई को बुध पूर्व में अस्त होगा। प्रातः पूर्व कपाल में शुक्र एवं उसके ऊपर शनि होगा। सायं गुरु याम्योत्तर-वृत्त से पश्चिम की ओर ढुलका हुआ तथा मंगल+ +पूर्व कपाल में दीखेगा।

वृष में शुक्र ३७।२०,
भ. ५६।४१ उ., जुलाई प्रा.
भ. २२।२५ या., पञ्चक प्रा. ५१।४५, श्री गणेश ४ व्र.,

मथुन में बुध २०।३,
भ. ५।२७ उ. ३४।२६ या., पुन. में सूर्य ४०।१०,

पञ्चक स. १६।२,
भ. ३६।४१ उ., आर्द्रा में बुध १३।२, मंगल मार्गी १५।२२,
भ. ८।१५ या.,
रोहिणी में शुक्र ८।५५, वत्सला ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र.,
भ. २३।२२ उ., ५६।२१ या.,
बुध पूर्व में अस्त २५।७
पुन. में बुध ५९।५०, पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त, सोमवती ३०

द्वि. आषा. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ०।२, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	२	५	१	०	११	५
२१	८	४	५	६	१३	१	१
१६	१६	२९	२८	३९	४७	१६	१६
११	३८	८	३३	१५	२७	४४	४४
५७	०	१०७	७	६३	४	३	३
११	३७	०	११	३०	२०	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	कृ. १	म. ४	उ.फा. ३	[illegible] ३	[illegible] २	पू.भा. ४	उ.फा. १

४ २शु. ५ ३बु. १श. ६गु.के. चं.रा. १२ ७ ९ ११ १० ८मं.

(वर्षा ऋतु, दक्षिणायन, उत्तर गोल)

इस पक्ष में ३० जून से रूई, कपास के भावों में अच्छी मन्दी आवे। सोना-चांदी के भावों में पहले घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। अनाज के भावों में मन्दे का रुख रहे। ता. ४ जुलाई से सरसों तारामीरा में घटाबढ़ी चले। पशुओं के भाव तेज होकर ४ दिन बाद मन्दे हों। तिल-तेल-सरसों-गुड़-खाण्ड-चावल-गेहूं-जौ-ज्वार-बाजरा तेज हों। साथ ही सुपारी- सुण्ड, हींग, हल्दी, ऊनी-वस्त्र- सण में भी तेजी हो।

शकुन से भविष्य-विचार—१४ जुलाई को यदि सूर्य पर परिवेष दिखाई दे, या वर्षा के साथ ओले गिर वा भयंकर वायु चले तो हर प्रकार के रस-गुड़-खाण्ड-नमक का संग्रह करने से छठे मास में उत्तम लाभ मिले। "सूर्योदय के साथ ही मेघ गर्जना होय। प्रहर दो या एक में अच्छी वर्षा होय ॥
दो दो कुण्डल-सूरज-शशि एक नजीक एक दूर। वर्षा झड़ी लगावसी नदी चले भरपूर ॥"
यदि चन्द्रमा और सूर्य के चारों ओर प्रतिदिन परिवेष दिखाई दे तो चूहा-टिड्डियों से खेती को हानि पहुंचे :

आकाश-लक्षण--३० जून से १२ जुलाई तक देहली आदि उत्तर भारत के स्थानों में वर्षागमन के योग हैं। १३-१४ जुलाई को वायु-प्रकोप और दुर्दिन रहे।

कुं. सूर्योदये, द्वि. आषा. कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५९।५३,

४ २शु. ५ ३सू.बु.चं. १श. ६गु.के. १२रा. ७ ९ ११ १० ८मं.

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	२	५	१	०	११	५
२८	८	२०	६	१५	१४	०	०
५३	३४	०	२९	१३	१९	५१	५१
५३	४५	७	३१	६	४९	१७	१७
५७	५	१२५	८	६५	३	३	३
१६	५५	३७	१०	८	३९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ३	कृ. १	पुन. २	उ.फा. ३	रो. १	म. २	पू.भा. ४	उ.फा. १

श्री वि. सं. २०२६, शाके १८९१, द्वि. (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९ — (१५ से २९ जुला. तक सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं. मि. (चण्डीगढ़)	सू. अ. घं. मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४ ३४	१	मं.	४१ २२	पु.	६० ०	ह.	२० २७	कि.	८ २३	३२	१५	२४	२९	कर्क	५ ३३	७ २३	२	२८	५४	१
३४ ३२	२	बु.	४६ ५२	पु.	६ ५८	व.	२२ ४०	बा.	१४ ७	श्रा.१	१६	२५	३०	कर्क	५ ३४	७ २३	२	२९	५१	१८
३४ ३०	३	गु.	५१ ५२	आ.	१३ ५०	सि.	२४ ३०	तै.	१९ २२	२	१७	२६	ज.१	सि१३।५०	५ ३४	७ ३३	३	०	४८	३५
३४ २७	४	शु.	५६ ३	म.	२० ५	व्य.	२५ ४५	व.	२३ ५९	३	१८	२७	२	सिंह	५ ३५	७ २२	३	१	४५	५३
३४ २५	५	श.	५९ १०	पू. फा.	२५ २१	व.	२६ १७	ब.	२७ ३६	४	१९	२८	३	कं.४१।२२	५ ३५	७ २१	३	२	४३	९
३४ २३	६	र.	६० ०	उ. फा.	२३ २५	व.	२५ ५१	कौ.	३० ०	५	२०	२९	४	कन्या	५ ३६	७ २१	३	३	४०	२९
३४ २०	६	च.	० ५०	ह.	३१ ५७	शि.	२४ १०	तै.	० ५०	६	२१	३०	५	कन्या	५ ३६	७ २०	३	४	३७	४६
३४ १७	७	मं.	० ४५	चि.	३२ ४७	सि.	२१ ७	व.	० ४५	७	२२	३१	६	तु.२।२२	५ ३७	७ २०	३	५	३५	४
अवम	८	मं.	५८ ५७	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०
३४ ११	९	बु.	५५ ५५	स्वा.	३१ ४५	सा.	१६ २५	बा.	२७ ६	८	२३	श्रा.१	७	तुला	५ ३८	७ १९	३	६	३२	२४
३४ [illegible]	१०	गु.	[illegible]	वि.	२८ ५५	शु.	१० ३५	तै.	२२ ३०	९	२४	२	८	वृ.१४।३८	५ ३९	७ १८	३	७	२९	४३
३४ ६	११	शु.	[illegible]	अ.	२६ ३०	शु.	[illegible]	व.	१६ १६	१०	२५	३	९	वृश्चिक	५ ३९	७ १८	३	८	२७	२
३४ २	१२	श.	[illegible]	ज्ये.	[illegible]	ऐं.	[illegible]	ग.	८ ३९	११	२६	४	१०	ध.१८।३७	५ ४०	७ १७	३	९	२४	२२
३३ ५९	१३	र.	[illegible]	मू.	[illegible]	वै.	[illegible]	कौ.	० १	१२	२७	५	११	धनु	५ ४१	७ १७	३	१०	२१	४३
३३ ५५	१४	च.	[illegible]	पू.षा.	[illegible]	वि.	[illegible]	व.	२५ ५५	१३	२८	६	१२	म.१७।३५	५ ४१	७ १६	३	११	१९	३
३३ ५३	१५	मं.	[illegible]	श्रव.	[illegible]	प्री.	[illegible]	ब.	६ २४	१४	२९	७	१३	मकर	५ ४२	७ १६	३	१२	१६	२४

(वर्षा ऋतु, दक्षिणायन, उत्तर गोल)

ग्रह-दर्शन—बुध अस्त है। प्रातः शुक्र पूर्व में एवं शनि याम्योत्तर वृत्त से कुछ पूर्व की ओर होगा। सायं गुरु पश्चिम कपालमें और मंगल याम्योत्तर वृत्त से कुछ पूर्व की ओर झुका होगा।

+तक उ. फा. ४ में गुरु १६।३७, पुरी में जगदीश रथोत्सव,
चन्द्र दर्शन, मु. १५, सं. कर्क में सूर्य ९।८, मु. १५, पुण्य २५।८+
जमद-उल-अव्वल मु. प्रा.,
भ. २३।५९ उ. ५६।३ या.,
पुष्य में सूर्य ३८।३५, कर्क में बुध ४२।२२,
(वि. मु. ह.)
पुष्य में बध १६।२५,
भ. ०।४५ उ. २९।५१ या., मृग में शुक्र २४।५२,
अष्टमी का क्षय,
शाक श्रावण प्रा., सायन सिंह में सूर्य १।४२,
मन्वादि, ⊂वै., चातुर्मास्य व्र. प्रा.,
भ. १६।१६ उ. ४२।४७ या., देवशयनी ११ व्र. स्मा:⊃
शनि प्रदोष व्र. देवशयनी ११ व्र. नि.,
आश्ले. में बुध ३९।२०, +व्र.,वायु परीक्षा,
भ. १५।५५ उ. ४१।१० या., मिथुन में शुक्र २३।४३, सत्य+
मन्वादि, श्री गुरु व्यास पूजा, साधुओं का चातुर्मासारम्भ,

द्वि. (शुद्ध) आषा. शु. [illegible], इष्ट [illegible], कुं. सूर्योदय

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

१९ जुलाई से १४ दिन के अन्दर तिल-तेल-सरसों-गुड़-खाण्ड, चावल-गेहूं-घी-ज्वार-बाजरा-सुपारी-सुण्ठ, गुग्गल-हल्दी-नमक-रूई वस्त्र सोना चांदी में तेजी हो ।

शकुन से भविष्य विचार—१९ जुलाई को यदि पश्चिम का वायु चले, बादल गर्जें, वर्षा हो एवं इन्द्र धनुष भी दिखाई दे तो अन्न संग्रह से कार्तिक में बेचने से लाभ मिले । यदि इसी दिन पूर्व या उत्तर की पवन चले तो वर्षा अच्छी हो, अन्न [illegible] हो । २८ जुलाई सायंकाल सूर्यास्त के समय पूर्व-पश्चिम, [illegible] कोण दक्षिण की वायु चले तो दुर्भिक्ष एवं रोगभय [illegible] उत्तर ईशान की वायु चले, तो प्रजा में सुभिक्ष, अग्नि-कोण [illegible] वायु चले तो खण्ड-वृष्टि हो कहीं सूखा पड़े, [illegible] वायु-कोण की चले तो वर्षा मध्यम हो । यदि चारों ही ओर से वायु चले तो [illegible] यदि बादलों से ढका रहे तो वर्षा अच्छी हो । अन्न तेज रहे, अग्नि भय [illegible] पक्षियों का नाश हो ।

जुलाई के अन्त का भाव तेज, वायु अधिक चले, [illegible] पंजाब-हरियाणा, विन्ध्य प्रदेश, हिमाचल में वर्षा के योग हैं ।

आकाश-लक्षण—१९ जुलाई से २९ जुलाई [illegible]

कुं. सूर्योदये, द्वि. (शुद्ध) आषा. शु. १५ मंगल, इष्ट ५९।३०,



सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	३	५	२	०	११	५
१३	११	२१	८	१	१५	०	०
१३	२१	२०	४३	४७	४	३	३
१८	४४	१८	२४	३१	५९	३७	३७
५७	१६	[illegible]	९	६७	२	३	३
२१	३४	१८	४२	३०	१६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, श्रावण कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र- | ना. स्टैं. टा. | उदयकालिक | (३० जला. से १३ अग. तक सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. जुला.	रा. श्राव.	मु. ज.ऊ.	संचार घं. मि.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि
अव	म	१	मं.	५७	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	५०	२	बु.	४९	१०	ध.	४३	४०	आ.	[illegible]	[illegible]	तै.	२३	१६	१५	३०	८	१४	कुं १६।४८	५	४२	७	१५	३	१३	१३	४७
३३	४७	३	गु.	४२	१२	श.	३८	३६	शो.	४५	५८	व.	१५	४१	१६	३१	९	१५	कुम्भ	५	४३	७	१५	३	१४	११	१०
३३	४४	४	शु.	३६	५५	पू. भा.	३५	१६	अ.	३९	२	ब.	९	३३	१७	अ.	१०	१६	मी. २१।६	५	४४	७	१४	३	१५	८	३४
३३	४१	५	श.	३३	२६	उ. भा.	३३	४०	सु.	३३	४६	कौ.	५	१०	१८	२	११	१७	मीन	५	४४	७	१३	३	१६	५	५९
३३	३७	६	र.	३१	५७	रे.	३३	५८	धृ.	३०	०	ग.	२	४१	१९	३	१२	१८	मे ३३।५८	५	४५	७	१२	३	१७	३	२६
३३	३३	७	चं.	३२	३०	अ.	३६	१५	शू.	२७	४५	वि.	२	१३	२०	४	१३	१९	मेष	५	४६	७	११	३	१८	०	५२
३३	२९	८	मं.	३४	४७	भ.	४०	२०	गं.	२७	२	बा.	३	३८	२१	५	१४	२०	वृ ५६।४३	५	४६	७	१०	३	१८	५८	२१
३३	२६	९	बु.	३८	३७	कृ.	४५	५२	वृ.	२७	२९	तै.	६	४२	२२	६	१५	२१	वृष	५	४७	७	९	३	१९	५५	५०
३३	२२	१०	गु.	४३	३९	रो.	५२	२५	ध्रु.	२८	५५	व.	११	८	२३	७	१६	२२	वृष	५	४७	७	९	३	२०	५३	२१
३३	१८	११	शु.	४९	२७	मृ.	५९	३५	व्या.	३०	५५	ब.	१६	३३	२४	८	१७	२३	मि.२६।०	५	४८	७	८	३	२१	५०	५५
३३	१५	१२	श.	५५	२५	आ.	६०	०	ह.	३३	२०	कौ.	२२	२६	२५	९	१८	२४	मिथुन	५	४८	७	७	३	२२	४८	२३
३३	११	१३	र.	६०	०	आ.	७	५	व.	३५	४२	ग.	२८	२३	२६	१०	१९	२५	क.५७।३५	५	४९	७	६	३	२	४६	४
३३	७	१३	चं.	१	२०	पुन.	१४	२५	सि.	३७	५८	व.	१	२०	२७	११	२०	२६	कर्क	५	५०	७	५	३	२४	४३	४०
३३	३	१४	मं.	७	१०	पु.	२१	३०	व्य.	३९	५०	श.	७	१०	२८	१२	२१	२७	कर्क	५	५१	७	४	३	२५	४१	१७
३२	५९	३०	बु.	१२	१५	आ.	२८	०	व.	४१	१८	ना.	१२	१५	२९	१३	२२	२८	सि.२८।०	५	५२	७	३	३	२६	३८	५५

ग्रह-दर्शन—बुध ३ अगस्त को पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में और शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। मंगल याम्योत्तर वृत्त से कुछ पूर्व की ओर तथा गुरु पश्चिम कपाल में चमक रहा होगा।

एकम् तिथि-क्षय,

पञ्चक प्रा. १६।४८, १ सिंह में केतु ७।५७,

भ. १५।४१ उ. ४२।१२ या., पू.भा. ३ कुम्भ में राहु उ.फा.

अगस्त प्रा., जन्म दिन लोकमान्य तिलक, श्रीगणेश ४ व्रत,

आश्ले. में सूर्य ३५।३३,

भ. ३१।५७उ., पञ्चक स. ३३।५८, बुध पश्चिम में उदित,

भ. २।१३ या.,

× १७।३०, मघा सिंह में बुध ३१।३७, आर्द्रा में शुक्र १८।२५

हस्त १ मे गुरु ३८।०,

भ. ११।८ उ. ४३।३९ या, नेप्च्यून मार्गी ३७।१२,

कामिका ११ व्र. स.,

प्रदोष व्र.,

भ. १।२० उ. ३४।१५ या., पू. फा. में बुध ८।४२,

हरियाली ३०,

श्राव. कृं. ८ मंगल, इष्ट ५९।२०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	५	२	०	१०	४
१९	१३	४	९	९	१५	२९	२९
१५	३०	२८	५३	४३	१८	४१	४१
९	८	३९	२०	३	४०	२२	२२
५७	१०	१०६	१०	६८	१	३	३
३०	३७	१७	२०	२८	३४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	अनु. ४	म. २	उ.फा. ४	आर्द्रा १	भ. १	पू.भा. ३	उ.फा. १

५बु.के.
३शु.
६गु.
४सू.
२
७
चं.१श.
मं.
१०
१२
९
११रा.

(वर्षा-ऋतु, दक्षिणायन, उत्तर गोल)

३ अगस्त से सोना, चांदी, सूत, ऊनी वस्त्र, देवदारु एवं खट्टे पदार्थ तेज हों। कपूर, गुड़, खाण्ड, आदि रस-पदार्थों में मन्दी का वातावरण बने। गेहूँ जौ, चना, चावल में तेजी का रुख रहे। यहां राई के व्यापारी राई का स्टाक करें, आगे अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

शकुन से भविष्य-विचार—२ अगस्त को यदि बादल हों, पर वर्षा न हो, तो हर तरह का अनाज आगे तेज रहे; यदि वर्षा हो तो मन्दा रहे। ४ अगस्त को जिस जगह वर्षा हो वहां कुयोग होने पर भी भारी सुभिक्ष रहे, वर्षा अच्छी हो। यदि इस दिन आकाश में बादल-बिजुली कुछ न हों, परन्तु जोर का वायु चले तो दुर्भिक्ष का भय व्यापे। श्रावण-कृष्ण एकादशी को यदि वर्षा हो तो आगे सुभिक्ष एवं संवत अच्छा रहे। यदि मध्य-रात्रि को मेघ गरजें तो दुर्भिक्ष हो। **श्रावण बदी एकादशी गर्भा भानु उगन्त। लोक-सुखी सुभिक्ष वर्षा चार मास बरसन्त॥"** ३अगस्त से ५ अगस्त तक यदि चन्द्रमा पर परिवेष दिखाई दे, तो आगे अन्न तेज हो।

आकाश-लक्षण—इस पक्ष में बहुत से स्थानों पर वायु के प्रभाव से बादल उड़ते रहेंगे। ३१ जुलाई से १३ अगस्त तक कहीं-कहीं [illegible] के योग हैं। बुध-शुक्र के मध्य सूर्य होने से बहुत जगह सूखा पड़ने से फसलों को नुकसान पहुंचे।

कुं. सूर्योदये, श्राव. कृ. ३० बुध इष्ट ५९।५

५.केबु.
३शु.
६गु.
४सू.चं.
२
७
१श.
८मं.
१०
१२
९
११रा.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	५	२	०	१०	४
२७	१६	१७	११	१८	१५	२५	२९
३५	२९	५५	१८	५४	२८	५५	१५
४३	४१	१४	२१	९	८		५५
५७	२४	९३	१०	६९	०	३	३
३८	३९	५४	५९	२२	४२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	अनु. ४	पू.फा. २	ह. १	आर्द्रा ४	भ. १	पू.भा. ३	उ.फा. १

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, श्रावण शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक | (१४ से २७ अग. तक सन् १९६९ ई.) + दीखेगा।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. आग.	श. श्राव.	सु. भा.	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	५५	१	गु.	१६	४७	म.	३३	४५	प.	४२	७	ब.	१६	४७	३०	१४	२३	२९	सिंह.	५	५२	७	३	३	२७	३६	३३
३२	५१	२	शु.	२०	२४	पू. फा.	३८	३५	शि.	४२	१३	कौ.	२०	२४	३१	१५	२४	३०	कं. ५४।३५	५	५३	७	२	३	२८	३४	१२
३२	४७	३	श.	२३	०	उ. फा.	४२	३४	सि.	४१	३३	ग.	२३	०	भा'	१६	२५	ज.'	कन्या	५	५३	७	१	३	२९	३१	५२
३२	४३	४	र.	२४	२७	ह.	४५	१६	सा.	३९	५५	वि.	२४	२७	२	१७	२६	२	कन्या	५	५४	७	०	४	०	२९	३६
३२	३९	५	चं.	२४	४१	चि.	४६	४५	शु.	३७	१७	बा.	२४	४१	३	१८	२७	३	तु. १६।०	५	५४	६	५९	४	१	२७	२१
३२	३५	६	मं.	२३	३२	स्वा.	४६	४६	शु.	३३	३२	तै.	२३	३२	४	१९	२८	४	तुला	५	५५	६	५८	४	२	२५	७
३२	३१	७	बु.	२०	४५	वि.	४५	२६	ब्र.	२८	४०	व.	२०	४५	५	२०	२९	५	वृ. ३०।४६	५	५५	६	५७	४	३	२२	५४
३२	२७	८	गु.	१६	५७	अनु.	४२	४७	ऐं.	२२	३४	ब.	१६	१७	६	२१	३०	६	वृश्चिक	५	५६	६	५६	४	४	२०	४२
३२	२३	९	शु.	११	३०	ज्ये.	३८	४५	वै.	१५	२७	कौ.	११	३०	७	२२	३१	७	ध. ३८।४५	५	५७	६	५४	४	५	१८	३२
३२	१९	१०	श.	५	५	मू.	३३	४७	वि.	[illegible]	[illegible]	ग.	५	५	८	२३	भा'	८	धनु	५	५८	६	५३	४	६	१६	२०
[illegible]	[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	९	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	१५	१२	र.	४९	२७	पू. षा.	२७	५५	आ.	४९	१७	न.	२३	३६	९	२४	२	०	म. ४१।१८	५	५८	६	५२	४	७	१४	१३
३२	११	१३	चं.	४२	१२	उ. षा.	२१	३५	सौ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१५	२५	१०	२५	३	१०	मकर	५	५९	६	५१	४	८	१२	५
३२	[illegible]	१४	मं.	[illegible]	[illegible]	श्रव.	१५	२०	[illegible]	३०	[illegible]	ग.	७	४	११	२६	४	११	कुं. ४२।२०	५	५९	६	५०	४	९	९	५९
३२	[illegible]	१५	बु.	[illegible]	[illegible]	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०	२८	ब.	२५	६	१२	२७	५	१२	कुम्भ	६	०	६	४९	४	१०	७	५४

ग्रह-दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में एवं शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। सायं मंगल याम्योत्तर वृत्तासन्न, बुध पश्चिम में डूबता हुआ तथा गुरु पश्चिम क्षितिज के ऊपर चमकता+

ज्येष्ठा में मंगल २४।१२, पुन. में शुक्र ५६।५, नक्त व्रत प्रा.,
चन्द्र दर्शन मु ३०, (दक्षिण भारत में चन्द्र दर्शन १४ अगस्त ×
भ. ५३।४४ उ., सं. मघासिंह में सूर्य २९।१२, मु. ४५, पुण्य ✓
भ. २४।२७ या., ×को होगा) भारत स्वातन्त्र्य-दिवस
नाग पञ्चमी ✓१३।१२ बाद, जमद उस्सानी मु. प्रा.,
उ. फा. में बुध ४८।२, मन्वश्रवा ३, सन्धारा ३, वरद ४,
भ. २०।४५ उ. ४८।५१ या., **श्री तुलसी जयन्ती,**
शनि वक्री १२।४३, **श्री दुर्गाष्टमी,** मेला श्री नयनादेवी-
कन्या में बुध ११,७ में शुक्र ३०।५८ पवित्रा ११व्र. स्मा.
भ. ३१।२० उ. ५७।३५ या., शाक भाद्रपद प्रा., सायन कन्या
एकादशी तिथि क्षय, चिन्तपूरणी
हस्त २ में गुरु ४४।२१, पवित्रा ११ व्र. वै.,
सोम प्रदोष व्र., में सूर्य १८।१७ शरद ऋतु प्रा., कर्क
भ. ३२।५५ उ. ५९।०१ या., पञ्चक प्रा. ४२।२० पुण्य=
सत्य व्र., रक्षाबन्धन (रखड़ी), मेला श्री अमरनाथ काश्मीर+
+शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म, ऋषि तर्पण

(वर्षा-शरद् ऋतु, दक्षिणायन, उत्तर गोल)

श्राव. शु. ८ गु., इष्ट ५८।५८. कुं. सूर्योदय

[illegible]

१५ अगस्त से २० अगस्त के अन्दर तेल, चावल, उड़द, गेहूं, चना, व ऊनी वस्त्र व ऊन इनमें मन्दी रहे। रूई, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी हो। २१ अगस्त से एक मास के अन्दर [illegible], [illegible], घी, तेल, अलसी, सरसों, तम्बाकू, गेहूं, चावल, गुड़, [illegible], हल्दी व वस्त्रों में तेजी का वातावरण बने। [illegible] में घटाबढ़ी रहे, रूई चांदी में कुछ मन्दी का रुख हो।

शकुन से वर्षा विचार—१६ अगस्त को वर्षा हो तो ऊन व ऊनी वस्त्र तथा [illegible] के संग्रह से [illegible] मास में अच्छा लाभ हो। यदि इस दिन वर्षा हो जाय; तो आगे [illegible] के लिए शुभ नहीं। १९ अगस्त की शाम को सूर्यास्त के समय मेघ न दीखें तो आगे वहां वर्षा की भारी कमी रहे। २७ अगस्त की सन्ध्या के समय [illegible] चन्द्र बादलों से आच्छादित हो तो वर्षा अधिक हो; शासक-वर्ग एवं प्रजा में सुख-समृद्धि हो।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में भी बहुत स्थानों पर वर्षा की कमी रहे; फिर भी उड़ीसा, मद्रास, हिमाचल, पंजाब, हरयाणा आदि में १९ अगस्त से २७ अगस्त तक कहीं-कहीं वर्षा होने के योग हैं।

कुं. सूर्योदये, श्राव. शु. १५ बुध, इष्ट ५८।४५

६ बु. गु. | ५ | ४ श. | ३ | ७ | ८ के. | २ | ९ | ११ चं. रा. | १ सू. | १० | १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	५	३	०	१०	४
११	२२	७	१३	५	१५	२८	२८
४	१३	२५	५८	१४	२८	३१	३१
३९	५५	४०	२	५४	२७	२४	२४
५७	३०	७०	११	७०	०	३	३
१९	१९	३२	५०	४७	४६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

—शुक्र २१।१२, [illegible] का उपाकर्म,

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष [illegible] (२८ अग. से ११ सितं. तक सन् १९६९ ई.)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प. (चण्डीगढ़)	सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३१	५८	१	गु.	१८	१२	श.	५६	४०	सु.	१२	२८	को.	१८	१२	१३	२८	६	१३	मी४५।५३	६	०	६	४७	४	११	५	५२
३१	५४	२	शु.	१२	२०	उ. भा.	५७	८	धृ.	५६	४४	ग.	१२	२०	१४	२९	७	१४	मीन	६	१	६	४६	४	१२	३	५३
३१	४९	३	श.	८	०	रेव.	५६	५	शू.	५३	३२	वि.	८	०	१५	३०	८	१५	मे. ५६।५	६	१	६	४५	४	१३	१	५३
३१	४५	४	र.	५	२६	अश्वि.	५६	५०	वृ.	५०	०	बा.	५	२६	१६	३१	९	१६	मेष	६	२	६	४४	४	१३	५९	५६
३१	४१	५	चं.	४	४५	भर.	५९	२७	ध्रु.	४८	३	तै.	४	४५	१७	सि'	१०	१७	मेष	६	२	६	४३	४	१४	५८	०
३१	३६	६	मं.	६	०	कृ.	६०	०	व्या	३७	२५	व.	६	०	१८	२	११	१८	वृ.१५।२३	६	३	६	४२	४	१५	५६	६
३१	३२	७	बु.	९	३	कृ.	३	५०	ह.	४८	३	ब.	९	३	१९	३	१२	१९	वृष	६	३	६	४१	४	१६	५४	१३
३१	२७	८	गु.	१३	२१	रो.	९	३६	व.	४९	३७	को.	१३	२१	२०	४	१३	२०	मि. ४३।०	६	४	६	४०	४	१७	५२	२३
३१	२३	९	शु.	१८	५४	मृ.	१६	२५	सि.	५१	४२	ग.	१८	५४	२१	५	१४	२१	मिथुन	६	५	६	३८	४	१८	५०	३४
३१	१९	१०	श.	२४	५३	आ.	२३	४७	व्य.	५४	४	वि.	२४	५३	२२	६	१५	२२	मिथुन	६	५	६	३७	४	१९	४८	४८
३१	१५	११	र.	३०	५८	पुन.	३१	१२	व.	५६	१७	बा.	३०	५८	२३	७	१६	२३	क.१४।२१	६	६	६	३५	४	२०	४७	४
३१	१०	१२	चं.	३६	३५	पु.	३८	१५	प.	५८	३	को.	३	४७	२४	८	१७	२४	कर्क	६	७	६	३४	४	२१	४५	२१
३१	६	१३	मं.	४१	३०	आश्ले.	४४	३०	शि.	५९	१२	ग.	९	२	२५	९	१८	२५	सिं४४।३०	६	७	६	३३	४	२२	४३	४०
३१	१	१४	बु.	४५	२५	म.	४९	४७	सि.	५९	३३	वि.	१३	२८	२६	१०	१९	२६	सिंह	६	८	६	३२	४	२३	४२	२
३०	५७	३०	गु.	४८	१२	पू. फा.	५४	२	सा.	५८	५९	च.	१६	४८	२७	११	२०	२७	सिंह	६	८	६	३०	४	२४	४०	२४

ग्रह-दर्शन—प्रातः पूर्व क्षितिज से कुछ ऊपर शुक्र, एवं याम्योत्तर-वृत्त से कुछ पश्चिम की ओर शनि होगा। सायं मंगल याम्योत्तर वृत्तासन्न दीखेगा। इसी समय बुध एवं गुरु दोनों पश्चिम में काफी समीपस्थ होंगे।

भ. ४०।१० उ., ✲में बुध १२।३२, श्री गणेश ४ व्र.,
भ. ८।० या. पञ्चक स. ५६।५, पू.फा. में सूर्य १८।४५, हस्त ✲
✲स्मार्तों के लिए चन्द्रोदय रात्रि १० घं. ५६ मि., मन्वादि,
चन्द्र ६, सितम्बर प्रा.,
भ. ६।० उ. ३७।३२ या.,
अगस्त्य उदित, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्र. (जयन्तीयोग) ✲
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्र. वै. (देखें 'सन्दिग्ध व्रतोत्सव ()
भ. ५१।५३ उ.,
भ. २४।५३ आश्ले. में शुक्र ३५।५२
अजा ११ व्र. स.,
()निर्णय' पृष्ठ १६) चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. ४३ मि.
भ. ४१।३० उ., भौम प्रदोष व्र.
भ. १३।२८ या., मूल-धनु में मंगल ११।५, हस्त ३ में गुरु१७।३५
पिठोरी ३०, कुशोत्पाटनी ३०, (ओं हूं फट मन्त्र से)

भाद्र.कृ. ८ गुरु, इष्ट ५८।३५ कुं. सूर्योदये

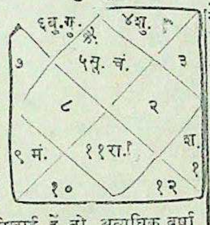
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	५	३	०	१०	४
१८	२७	१५	१५	१४	१५	२८	२८
४९	५	४६	३४	४३	१९	५	५
९	३५	१५	११	५३	२१	५८	५८
५८	३२	५०	१२	७१	१	३	१
१२	५२	४२	१४	३३	३५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. २	ज्ये. ४	हस्त २	हस्त २	पुष्य ४	अ. १	पू. भा. ३	उ. फा. १



(शरद्-ऋतु, दक्षिणायन; उत्तर गोल)

२८ अगस्त से रूई, सूत, सण, रेशम, ऊन, लाख, कपूर, पारा, शिगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में कुछ मन्दा आवे। ३० अगस्त से १५ दिन में सोना, चांदी, बिनौला गेहूं, चावल, उड़द, चना, घी, तेल सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ और नील का भाव तेज हो। ६ सितं. से १२ दिन के अन्दर रूई में कुछ मन्दी, तूअर और चावल में भी मन्दी का वातावरण बने। शकुन से भविष्य विचार—यदि २८ अगस्त को चन्द्रमा सारी रात बादलों से ढका रहे, दिखाई न दे, तो आगे वर्षा अच्छी हो, अन्न मन्दा हो, भाद्रपद में यदि सूर्य व चन्द्रमा के चारों ओर तीन-तीन परिवेष दिखाई दें तो अत्यधिक वर्षा के कारण फसल को नुकसान पहुंचे। यदि चन्द्र-सूर्य के चारों ओर प्रतिदिन नए नए परिवेष दीखें तो फसल के लिए हानिकर चूहा-टिड्डी आदि की संख्या बढ़े। यदि चन्द्रमा का परिवेष बहुत बड़ा हो और उस परिवेष के मध्य कोई तारा भी दिखाई दे तो वायु बहुत चले; परन्तु वर्षा न हो। यदि वर्षा होने लगे तो जोरदार झड़ी लगे।

आकाश-लक्षण—इस पक्ष में बुध-शुक्र के मध्य सूर्य होने के कारण कई प्रदेशों में वर्षा की कमी रहेगी। फिर भी २८ से ३१ अगस्त तक ६ सित. से १० सित. तक कहीं कहीं वर्षा के योग पाए जाते हैं।



कुं. सूर्योदये, भाद्र. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५८।२५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	५	५	३	०	१०	४
२५	१	२०	१७	२३	१५	२७	२७
३७	१	२५	०	६	६	४३	४३
१४	३५	२८	४४	२३	८	४३	४३
५८	३४	२२	१२	७२	२	३	३
२५	४९	५४	३२	६	१७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. ४	मूल १	हस्त ४	हस्त ३	आश्ले. २	भ. १	पू. भा. ३	उ. फा. १

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	यु.	चन्द्र संचार घ. प.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	५२	१	शु.	४९	५०	उ. फा.	५७	५	शु.	५७	२९	कि.	१९	१	२८	१२	२१	२८	कं. ९।४८	६	९	६	२९	४	२५	३८	४९
३०	४९	२	श.	५०	१५	ह.	५९	१	शु.	५५	८	बा.	२०	३	२९	१३	२२	२९	कन्या	६	९	६	२८	४	२६	३७	१५
३०	४२	३	र.	४९	३३	चि.	५९	४६	ब्र.	५१	५०	तै.	१९	५४	३०	१४	२३	२१	तु.२९।२४	६	१०	६	२७	४	२७	३५	४३
३०	३८	४	चं.	४७	४७	स्वा.	५९	३७	ऐं.	४७	३९	ब.	१८	४०	३१	१५	२४	२	तुला	६	१०	६	२५	४	२८	३४	१३
३०	३३	५	मं.	४५	२	वि.	५८	२७	वैं.	४२	४७	ब.	१६	२५	आ'	१६	२५	३	वृ.४३।५४	६	११	६	२४	४	२९	३२	४४
३०	२८	६	बु.	४१	२०	अनु.	५६	२०	वि.	३७	२	कौ.	१३	११	२	१७	२६	४	वृश्चिक	६	११	६	२३	५	०	३१	१९
३०	२४	७	गु.	३६	४८	ज्ये.	५३	२६	प्री.	३०	३९	ग.	९	४	३	१८	२७	५	ध.५३।२६	६	१२	६	२२	५	१	२९	५३
३०	१९	८	शु.	३१	३५	मू.	४९	५१	आ.	२३	४४	वि.	४	११	४	१९	२८	६	धनु	६	१२	६	२१	५	२	२८	२८
३०	१४	९	श.	२५	४०	पू. षा.	४५	४५	सौ.	१६	१६	कौ.	२५	४०	५	२०	२९	७	म.५९।३८	६	१३	६	२०	५	३	२७	६
३०	९	१०	र.	१९	२६	उ. षा.	४१	१८	शो.	८	२५	ग.	१९	१६	६	२१	३०	८	मकर	६	१३	६	१८	५	४	२५	४५
३०	४	११	सं.	१२	५१	श्रव.	३६	२५	अ.	[illegible]	[illegible]	वि.	१२	५१	७	२२	३१	९	मकर	६	१४	६	१७	५	५	२४	२७
३०	०	१२	मं.	६	१८	ध.	३२	०	सु.	४४	६	बा	६	१८	८	२३	आ'	१०	कुं. ४।१७	६	१५	६	१५	५	६	२३	१०
[illegible]	[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	५५	१४	गु.	५४	८	श.	३७	४	[illegible]	३६	१७	ग.	२५	३	९	२४	२	११	कुम्भ	६	१५	६	१४	५	७	२१	५६
२९	[illegible]	१५	शु.	४८	५५	पू. भा.	२४	[illegible]	[illegible]	२६	[illegible]	वि.	२१	४१	१०	२५	३	१२	मी. १०।३	६	१६	६	१२	५	८	२०	४३

ग्रह-दर्शन—बुध १७ सित. को और गुरु २४ सित. को पश्चिम में अस्त, शुक्र पूर्व में एवं शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं मंगल याम्योत्तर वृत्त में लगा दीखेगा।

नक्तव्रत स., हस्त १ में यूरेनस १०।४७,
चन्द्र दर्शन, मु. ३०, उ. फा. में सूर्य २।५०, मेला बाबा गोसाई★
रजब मु. प्रा., हरितालिका व्र., मन्वादि, ✗आणां, कुराली,
भ. १८।४० उ. ४७।४७ या., कलंक ४ (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध) ✓
सं. कन्या, में सूर्य २७।५५ मु. ४५, पुष्य ११।५५ बाद, बुध
बुध पश्चिम में अस्त ३०।३, मघा सिंह में शुक्र ४१।३८. सूर्यषष्ठी व्र.,
भ. ३६।४८ उ., ✓जन्म दिन बघाट नरेश जी,
भ. ४।११ या., वक्री २९।५२, ऋषि ५,
श्री चन्द्र ९ (उदासीन-सम्प्रदाय-महोत्सव)
भ. ४६।९ उ., गुरु वार्द्धक्य प्रा., ३४।४८
भ. १२।५१ या., पद्मा ११ व्र. स., श्री वामन १२,
पञ्चक प्रा. ४।१७, शक आश्विन प्रा., सायन तुला में सूर्य+

भ. ५४।८ उ., गुरु अस्त ३४।४८ अनन्त १४, [गु. अ.]
भ. २१।३१ या., सत्य व्र., प्रौष्ठपदी १५,
१०।५८ दक्षिण गोल प्रा., भौम प्रदोष व्र.,

भाद्र शु. ८ शुक्र, इष्ट [illegible]

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	८	५	[illegible]	४	०	१०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुं. सूर्योदये

(शरद् ऋतु, दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल)

इस पक्ष में १५ सितम्बर से रुई, सूत, बिनौला, अलसी, [illegible] उड़द, मसूर, मक्का, गेहूँ, तांबा, लोहा, पीतल, नमक, हल्दी, धनिया, जीरा में तेजी का वातावरण बने। नारियल [illegible] में मन्दी का रुख रहे। लाल-मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुएँ घृत तथा रसादि पदार्थ तेज हों, पशुओं के भाव भी तेज ही रहें। चांदी में २० सित. तक २-३ रुपए की मन्दी आवे। २३ सित. के बाद रुई और शेयरों के सट्टे [illegible] और सोना चांदी के व्यापार में मन्दी आवे।

शकुन से भविष्य विचार—१८ सितम्बर को सूर्य चन्द्र बराबर निर्मल हों, आकाश निरभ्र रहे तो अन्न, सेना-नायक के सुख [illegible] में [illegible] हों। इस पक्ष में चित्रा-स्वाती-विशाखा इन तीनों नक्षत्रों में बूंदाबांदी न हो तो अधिक वर्षा न होकर ही [illegible] २५ सित. को बिजली चमके, बादल गरजें तो अन्न का [illegible] से आगे लाभ मिले।
[illegible]; यदि आकाश निर्मल रहे तो अन्न के संग्रह से [illegible] लाभ मिले।

आकाश-लक्षण—इस पक्ष में १९ सित. से २५ सित. तक बहुत स्थानों पर खण्ड-वृष्टि हो।



भाद्र शु. १५ गुरु, इष्ट ५८।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	५	४	०	१०	४
९	९	१६	१९	१०	१४	२६	२६
१७	३०	२१	५८	२	२५	५९	५९
३९	३१	१८	३६	१७	५७	११	११
५८	३७	६३	१२	७३	३	३	३
५०	५५	२०	५२	४	३०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, आश्विन ... (२६ सितं. से ११ अक्तू. तक, सन १९६९ ई.)

दि. मा. घ. प.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		प्र. आश्विन	म. सितं.	श. आश्विन	मु. रजब	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२९	४७	१	शु.	४४	५८	उ.भा.	२१	२६	वृ.	२२	४२	बा.	१६	५६	११	२६	४	१३	मीन	६	१६	६	११	५	९	१९	३१
२९	४२	२	श.	४२	१५	रे.	१९	५५	ध्रु	१७	१५	तै.	१३	३६	१२	२७	५	१४	मे.१९।५५	६	१७	६	१०	५	१०	१८	२२
२९	३७	३	र.	४१	५	अ.	१९	५२	व्या	१३	२	व.	११	४०	१३	२८	६	१५	मेष	६	१८	६	९	५	११	१७	१५
२९	३३	४	चं.	४१	३५	भ.	२१	२७	ह.	१०	४	ब.	११	२०	१४	२९	७	१६	वृ.३७।१५	६	१८	६	८	५	१२	१६	१०
२९	२८	५	मं.	४३	४८	कृ.	२४	४०	व.	८	२४	कौ.	१२	४१	१५	३०	८	१७	वृष.	६	१९	६	७	५	१३	१५	१०
२९	२४	६	बु.	४७	३८	रो.	२९	२८	सि	८	५	ग.	१५	४३	१६	अ१	९	१८	वृष	६	१९	६	५	५	१४	१४	१०
२९	१९	७	गु.	५२	४६	मृ.	३५	३८	व्य	८	५२	वि	२०	१२	१७	२	१०	१९	मि.२।३३	६	२०	६	४	५	१५	१३	१३
२९	१४	८	शु.	५८	३९	आ.	४२	४१	व	१०	३०	बा.	२५	४३	१८	३	११	२०	मिथुन	६	२०	६	३	५	१६	१२	१७
२९	९	९	श.	६०	०	पुन.	५०	५	प.	१२	३९	तै.	३१	४५	१९	४	१२	२१	क.३३।१४	६	२१	६	२	५	१७	११	२४
२९	५	९	र.	४	५१	पु.	५७	२१	शि.	१४	५५	ग.	४	५१	२०	५	१३	२२	कर्क	६	२२	६	०	५	१८	१०	३२
२९	०	१०	चं.	१०	४४	आ.	६०	०	सि	१६	५०	वि.	१०	४४	२१	६	१४	२३	कर्क	६	२२	५	५९	५	१९	९	४३
२८	५६	११	मं.	१५	४३	आ.	३	५०	सा.	१८	२	बा.	१५	४३	२२	७	१५	२४	सिं. ३।५०	६	२३	५	५७	५	२०	८	५६
२८	५२	१२	बु	१९	२८	म.	९	१२	शु.	१८	२२	तै.	१९	२८	२३	८	१६	२५	सिंह	६	२३	५	५६	५	२१	८	१२
२८	४७	१३	गु.	२१	५१	पू.फा.	१३	८	शु.	१७	३३	व.	२१	५१	२४	९	१७	२६	कं.२८।४६	६	२४	५	५५	५	२२	७	३०
२८	४२	१४	शु.	२२	३३	उ.फा.	१५	४१	ब्र.	१५	२९	श.	२२	३३	२५	१०	१८	२७	कन्या	६	२५	५	५४	५	२३	६	४९
२८	३८	३०	श.	२१	५०	ह.	१६	४३	ऐं.	१२	१४	ना.	२१	५०	२६	११	१९	२८	तु.४६।३३	६	२५	५	५३	५	२४	६	८

ग्रह-दर्शन—गुरु अस्त है। बुध ५ अक्तू. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः शुक्र को पूर्व में एवं शनि को पश्चिम-कपाल में देखें; सायं मंगल याम्योत्तर-वृत्त में होगा।

हस्त में सूर्य ४१।१७, हस्त ४ में गुरु ७।७, महालय (श्राद्ध) प्रा.,
पञ्चक स. १९।५५, शुक्र ४०।१५,
भ. ११।४० उ., ४१।५ या., हस्त में बुध ४४।३, पू. फा. में
श्री गणेश ४ व्र., ४८।७, अक्तूबर प्रा.
जन्म दिन म. गान्धी,
भ. ४७।३८ उ., पू. षा. में मंगल ५६।४७, व बुध उ. फा. में
भ. २०।१२ या., पू. भा. २ में राहु पू.फा. ४ में केतु ०।८,
नेप्च्यून अनु. १ में ५।२,

भ. ३७।४७ उ., बुध पूर्व में उदित ८।१०,
भ. १०।४४ या.,
इन्दिरा ११ व्र. स.,
बुध मार्गी २२।३२, प्रदोष व्र., समाप्त,
भ. २१।५१ उ. ५२।१२ या., उ. फा. में शुक्र ३२।३०,
चित्रा में सूर्य १३।१७, शस्त्र-विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध,
चित्रा १ में गुरु २९।४०, महालय ३०, शनैश्चरी ३०, श्राद्ध

(शरद् ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गोल)

आश्वि. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५७।५५, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के
५	८	५	५	४	०	१०	४
१७	१४	८	२१	१९	१३	२६	२६
९	३८	६	४२	४८	५५	३३	३३
१८	५४	४६	१	४७	५८	४५	४५
५९	३९	४०	१२	७३	४	३	३
७	१९	४	५९	३५	३	११	११
	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ	उ.	अ.	अ.
हस्त	पू. षा.	उ. फा.	ह.	पू. फा.	अ.	पू. भा.	पू. फा.

७ | ५शु के. | ८ | ६सू. | गु. बु. | ४ | ३चं. | ९मं. | १२ | २ | १० | ११रा. | १श.

२६ सितं. से १५ दिन के भीतर गेहूँ, जौ ज्वार गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग धनिया, हल्दी, सण और खारी वस्तुओं में तेजी हो। ५ अक्तूबर से तिल-घी-पाट-हैसियन और लाल मिर्च में तेजी का रुख रहे। रूई में पहले मन्दी होकर बाद में १५ टका के करीब तेजी हो। ८ सितं. से रेशम, मूंगफली, कपूर, बिनौला, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी का वातावरण रहे।

कुं. सूर्योदये, आश्वि. कृ. ३० शनि, इष्ट ५७।४३

७ | ५के.शु | ६बु.सू. गु. चं. | ८ | ४ | ९मं. | ३ | १२ | २ | १० | ११रा. | श.१

सू.	म.	बु	गु	शु	श	रा.	के.
५	८	५	५	४	०	१०	४
२५	१९	७	३	२९	१३	२६	२६
३	५७	३२	२६	३९	२२	८	८
१९	५३	१	५	४	०	१९	१९
५९	४०	४०	१३	७४	४	३	३
२३	३३	५५	१	२	२८	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा	पू. षा.	उ. फा.	चित्रा	उ. फा.	मृग.	पू. भा.	पू. फा.

शकुन से भविष्य विचार—आश्विन कृष्ण दशमी, एकादशी, द्वादशी इन तीनों दिनों में बराबर बिजली चमके तथा मेघ गरजे तो आगे गेहूं की हानि से अन्न तेज हो। यहां आश्विन कृष्ण अमावस को शनिवार है; अतः वर्ष मध्यम वा कहीं दुर्भिक्ष संभाव्य है।

"आश्विनस्यामावस्यां शनिवारो यदा भवेत्। मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खण्ड-मण्डले॥"

आकाश लक्षण—इस पक्ष में २६ सितं. से ८ अक्तू. तक नेपाल-मध्यभारत-यू. पी., पञ्जाब एवं हरयाणा के कुछ भागों में खण्ड-वृष्टि हो एवं वायु का जोर रहे।

श्री वि. संवत् २०२६, शाक १८९१, अश्विन शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक | (१२ से २६ अक्तू. सन् १९६९ ई.)

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. आश्विन	अं. अक्टू.	श. आश्विन	मु.	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.
२८ ३३	१	र.	१९ ४२	चि.	१६ २२	वं.	७ ५९	व.	१९ ४२	२७	१२	२०	२९	तुला	६ २६	५ ५२	५ २५ ५ ३६
२. २८	२	चं.	१६ ३१	स्वा.	१४ ५६	वि.	२/५८ ४४/४४	कौ.	१६ ३१	२८	१३	२१	३०	वृ.५८।११	६ २७	५ ५१	५ २६ ५ १
२८ २४	३	मं.	१२ २३	वि.	१२ ३६	आ.	५० ९	ग.	१२ २३	२९	१४	२२	शा'	वृश्चिक	६ २७	५ ५०	५ २७ ४ ३०
२८ १९	४	बु.	७ ३८	अ.	९ ३७	सौ.	४३ १०	वि.	७ ३८	३०	१५	२३	२	वृश्चिक	६ २८	५ ४९	५ २८ ४ ०
२८ १४	५	गु.	२ २६	ज्ये.	६ १६	शो.	३५ ५८	बा.	२ २६	का'	१६	२४	३	ध. ६।१६	६ २९	५ ४८	५ २९ ३ ३३
ववम	६	गु.	१७ ०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२८ ९	७	शु.	११ ३३	मू.	५६/५६ ३७/४०	अ.	२८ ३५	ग.	२४ १६	२	१७	२५	४	धनु	६ २९	५ ४७	६ ० ३ ७
२८ ५	८	श.	४६ ६	उ.षा.	५५ २५	सु.	२१ १४	वि	१८ ५०	३	१८	२६	५	म. १३।१४	६ ३०	५ ४५	६ १ २ ४४
२८ १	९	र.	४० ५५	श्र.	१२ २	धृ.	१४ २	बा.	१३ ३०	४	१९	२७	६	मकर	६ ३१	५ ४४	६ २ २ २२
२७ ५७	१०	चं.	३५ ५५	ध.	४८ ५५	शू.	७ ०	तै.	८ २५	५	२०	२८	७	कुं.२०।२८	६ ३२	५ ४३	३ ३ २ १
२७ ५२	११	मं.	३१ २१	श.	४६ १२	गं.	५/३ १२/४४	व.	३ २८	६	२१	२९	८	कुम्भ	६ ३३	५ ४२	६ ४ १ ४३
२७ ४८	१२	बु.	२७ १२	पू.भा.	४२ ५८	वृ.	४७ ४२	बा.	२७ १२	७	२२	३०	९	मी२९।३१	६ ३३	५ ४१	६ ५ १ २४
२७ ४३	१३	गु.	२३ ४०	उ. भा.	४२ २३	व्या	४२ ९	तै.	२३ ४०	८	२३	का'	१०	मीन	६ ३४	५ ४०	६ ६ १ ९
२७ ३८	१४	शु.	२० ५६	रे.	४१ ४१	ह.	३७ १६	व.	२० ५६	९	२४	२	११	मे.४१।४१	६ ३४	५ ३९	६ ७ ० ५४
२७ ३४	१५	श.	१९ ९	अ.	४१ [illegible]	व.	३३ १२	ब.	१९ ९	१०	२५	३	१२	मेष	६ ३५	५ ३८	६ ८ ० ४३

ग्रह-दर्शन—गुरु २१ अक्तू. को पूर्व में उदित होगा। २५ अक्तू. के आसन्न गुरु एवं बुध दोनों प्रातः पूर्व में परस्पर काफी समीप२ दीखेंगे। इस समय शुक्र इन दोनों से कुछ ऊपर होगा, +

कन्या में शुक्र १४।३७, व. शनि अश्वि.४ में २४।३३, मातामह
चन्द्र दर्शन मु. ४५, श्राद्ध, शारद नवरात्र प्रा., घट-स्थापन,
भ. ४०।१ उ., हस्त में बुध ५८।१२, शावान मु. प्रा.,
भ. ७।३८ या., उपाङ्ग ललिता व्र., से पूर्व, सरस्वती आवाहन
सं. तुला में सूर्य ५६।५०, मु. ३०, पुण्य अगले दिन मध्याह्न
तिथिक्षय ४३।५५, पापांकुशा ११ व्र. स., भरत मिलाप
भ. ५१।३३ उ., सरस्वती पूजन, × ज्वालामुखी व तारादेवी
भ. १८।५० या., सरस्वती बलिदान, श्री दुर्गाष्टमी मेला, ×
सरस्वती विराजन, मन्वादि, (दशहरा) नीलकंठ दर्शन
पंचक प्रा. २०।२८, हस्त में शुक्र १९।३७ विजयादशमी
भ. ३।३८ उ.,३१।२१या., गुरु उदित ५०।२४ उ. पा. में मंगल
प्रदोष व्र., शरत्पूर्णिमा, कोजागरी व्र.,
शक कार्त्तिक प्रा., स्वाती में सूर्य ३८।५८[गु.उ.],सायनवृश्चिक
भ. २०।५६ उ. ५०।२ या., गुरु बाल्य समाप्त ५०।२४,()
कार्तिक स्नान प्रा., म. श्री वाल्मीकि जयन्ती
()पञ्चक स. ४१।४१ चित्रा में बुध ३६।४३, सत्य व्र.,

(शरद्-हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन दक्षिण गोल)

इस पक्ष में १२ अक्तू. से चान्दी में घटाबढ़ी चलकर तेजी आवे। गेहूं आदि सब अनाज, गुड़, खाण्ड, घास व ऊनी रेशमी वस्त्र इनमें तेजी का रुख बने। चावलों में खासकर तेजी का झटका लगे। १६ अक्तूबर से सरसों, अलसी, तिल, तेल, नारियल, सोना एवं ताम्बा तेज हों। रुई सूत, सण में पहले तेजी बाद में मन्दी का वातावरण बने। ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ के भावों में मन्दी का वातावरण बने।

शकुन से भविष्य विचार—१७-१८ अक्तूबर को यदि वर्षा हो तो अति सुभिक्ष, अन्न सस्ता, शासक एवं प्रजा में सुख-शान्ति रहे। २४ अक्तूबर को यदि आकाश निरभ्र हो तो प्रजा के लिए शुभ है। यदि बादल हों तो अन्न का स्टाक करने से वैश्य में लाभ मिले। रात्रि में चन्द्रमा के चारों ओर कुछ वर्ण के दो परिवेष एक समीप तथा एक दूर दिखाई दें तो वर्षा न हो, परन्तु वायु अधिक चलेगी।

आकाश-लक्षण—इस पक्ष में १७ से २१ अक्तूबर तक पंजाब-हरियाणा, यू. पी. राजस्थान हिमाचल आदि में अच्छी वर्षा के योग हैं। यह वर्षा आगामी फसल के लिए लाभदायक सिद्ध होगी।

+और शनि पश्चिम में डूब रहा होगा। सायं मंगल को याम्योत्तर वृत्त के समीप दीखेंगे।

आश्वि. शु. ८ शनि, इष्ट [illegible] कुं. सूर्योदय

[illegible]

कुं. सूर्योदये आश्वि. शु. १५ शनि, इष्ट ५७।१८,

८ | बु.गु.शु. | ९ मं. | ७ | ५ के. | १० | ११ | रा. | १२ | २

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	५	५	५	०	१०	४
८	२९	२५	२६	१६	१२	२५	२५
५७	३७	२९	२७	५९	१६	२३	२३
५१	७	५३	३०	१५	२९	४८	४८
५९	४२	९७	१२	[illegible]	[illegible]	३	३
५०	१२	५३	५२	[illegible]	४५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, कार्तिक कृष्णपक्ष २६ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | ... सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. अक्तू.	श. कार्ति.	मु. शाबा.	चन्द्र सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि
२७	३०	१	र.	१८	२८	भ.	४३	१०	सि.	३०	४	कौ.	१८	२८	११	२६	४	३	.५८।५२	६	३६	५	३७	६	९	०	३३
२७	२६	२	चं.	१९	१०	कृ.	४६	०	व्य.	२७	५९	ग.	१९	१०	१२	२७	५	१४	वृष	६	३७	५	३६	६	१०	०	२६
२७	२२	३	मं.	२१	१६	रो.	५०	१३	व.	२७	०	वि.	२१	१६	१३	२८	६	१५	वृष	६	३७	५	३५	६	११	०	२१
२७	१८	४	बु.	२४	५०	मृ.	५५	४२	प.	२७	४	बा.	२४	५०	१४	२९	७	१६	मि२२।५८	६	३८	५	३४	६	१२	०	१७
२७	१४	५	गु.	२९	४२	आ.	६०	०	शि.	२८	१०	तै.	२९	४२	१५	३०	८	१७	मिथुन	६	३९	५	३३	६	१३	०	१५
२७	१०	६	शु.	३५	३३	आ.	२	१५	सि.	२९	५८	ग.	२	३८	१६	३१	९	१८	क.५२।४७	६	४०	५	३२	६	१४	०	१५
२७	६	७	श.	४१	५८	पुन.	९	३८	सा.	३२	१२	वि.	८	४५	१७	न.१	१०	१९	कर्क	६	४१	५	३१	६	१५	०	१८
२७	२	८	र.	४८	१३	पु.	१७	११	शु.	३४	२४	बा.	१५	५	१८	२	११	२०	कर्क	६	४२	५	३०	६	१६	०	२३
२६	५८	९	चं.	५३	४६	आश्ले.	२४	१७	शु.	३६	१२	तै.	२१	०	१९	३	१२	२१	सि२४।१७	६	४२	५	२९	६	१७	०	३०
२६	५४	१०	मं.	५७	५७	म.	३०	२२	ब्र.	३७	२	व	२५	५१	२०	४	१३	२२	सिंह	६	४३	५	२९	६	१८	०	३९
२६	५०	११	बु.	६०	०	पू.फा.	३५	१	ऐं.	३६	४५	ब.	२९	१४	२१	५	१४	२३	कं.५०।४४	६	४४	५	२८	६	१९	०	५१
२६	४६	११	गु.	०	३०	उ. फा.	३७	५२	वै.	३५	२	बा.	०	३०	२२	६	१५	२४	कन्या	६	४५	५	२७	६	२०	१	५
२६	४२	१२	शु.	१	७	ह	३८	५१	वि.	३१	४८	तै.	१	७	२३	७	१६	२५	कन्या	६	४६	५	२६	६	२१	१	२१
अव	म	१३	शु.	५९	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	३८	१४	श.	५६	४७	चि.	३८	०	प्री.	२७	७	वि.	२८	१८	२४	८	१७	२६	तु. ८।२६	६	४६	५	२६	६	२२	१	४०
२६	३४	३०	र.	५२	२३	स्वा.	३५	३७	आ.	२१	८	चं.	२४	३५	२५	९	१८	२७	तुला	६	४७	५	२५	६	२३	१	५९

ग्रह-दर्शन—बुध ३१ अक्तू. को पूर्व में अस्त होगा। ३ नवं. के करीब प्रातः पूर्वमें गुरुशुक्र दोनों चमकते परस्पर काफी समीप दीखेंगे। सायं मंगल पश्चिम कपाल में तथा शनि √

मकर में मंगल २९।४८, चित्रा २ में गुरु ५५।३२,
भ. ५०।१३ उ., √पूर्व में उदित होता दीखेगा।
भ. २१।१६ या., तुला में बुध ४१।५०, शब-ए-बरात,
श्रीगणेश ४ व्र., करक ४ (करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि ७ घं. २७ मि.
भ. ३५।३३ उ., बुध पूर्व में अस्त १०।२५, चित्रा में शुक्र ३।५,
भ. ८।४५ या, स्वाती में बुध ४३।०, नवम्बर प्रा.,
अहोई ८,
भ. २५।५१ उ. ५७।५७ या.,
विशाखा में सूर्य ५८।५७, तुला में शुक्र २३।३२,
रमा ११ व्र. स. हस्त २, में यूरेनस ३।४७,
भ. ५९।५० उ., प्रदोष व्र., यम के लिए दीप दान, धन १३
दीपावली महालक्ष्मी पूजन
भ. २८।१८ या., नरक १४, हनुमान जयन्ती
विशाखा में बुध ४९।३ श्रवण में मंगल ३०।१५,

कार्ति. कृ. ८ रवि, इष्ट ५७।०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	५	५	०	१०	४
१६	५	८	२८	२६	११	२४	२४
५७	१७	४२	९	५६	३७	५८	५८
३१	१०	४०	४३	५९	५४	२२	२२
६०	४२	९९	१२	७४	४	३	३
७	५५	१३	३९	५३	४०	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	३	२	२	२	४	२	४
स्वा.	उ. षा.	स्वा.	चित्रा	चित्रा	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

८ ६ गु शु. ९ ७ सू. बु. ५ के. १० मं. ४ चं. ११ रा. १ श. ३ १२ २

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गाल)

इस पक्ष में २६ अक्तूबर से रूई, सोना, चांदी तांबा गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी एव ऊन में तेजी का वातावरण बने। अनाजों में कुछ मन्दी का रुख आता है। रूई में घटा-बढ़ी के बाद मन्दी आवे। ३१ अक्तूबर से एक मास के भीतर अनाज, घी आदि में मन्दी का रुख बने। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। ५ नवं. से गुड़, खाण्ड, मसूर, चावल जौ, में तेजी का वातावरण बने। अलसी एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे।

कुं. सूर्योदय

९ ६ गु ७ सू. शु. चं. बु. ५ के. ८ १० मं. ४ १ श. रा. ११ १२ ३ २

शकुन से भविष्य विचार—इस पक्ष में यदि मेघ की गर्जना सुनाई दे, तो अन्न की उपज अच्छी होने पर भी अन्न महंगे हों। इस पक्ष में किसान पशुओं के लिए चारा-संग्रह कर लें। अन्यथा आगे चारे की समस्या बन सकती है। यदि ५ नवं. को आकाश में मेघ हों तो निस्संदेह वर्षा अच्छी हो। यहां दीपावली रविवार को है; अतः स्टाक वाले लाभ में रहें।

आकाश-लक्षण—२६–२७ एवं ३० अक्तूबर से ४ नवंबर तक पूर्वी-पाकिस्तान, पंजाब, हिमाचल की तलहटी वाले भाग में बादल चाल एव बूंदाबांदी के योग हैं।

ति. कृ. ३० रवि, इष्ट ५६।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	९	६	५	६	०	१०	४
२३	१०	२०	२९	५	११	२४	२४
५९	१९	११	३७	४१	४	३६	३६
३	१०	३६	३५	४१	४६	६	६
६०	४३	९७	१२	७५	४	३	३
२०	२७	१३	२५	३	३८	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	२	३	४	४	३	४
विशा.	श्रव.	विशा.	चित्रा.	चित्रा.	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, कार्तिक शुक्लपक्ष १७ | तारीख | चन्द्र. | भा. स्टै. टा. | [illegible] सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. नव.	श. कार्ति.	मु. शाबा.	सञ्चार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	३१	१	चं.	४६	३२	वि.	३१	५७	सौ.	१३	५९	किं.	१९	२८	२६	१०	११	२८	वृ.१७।५२	६	४८	५	२५	६	२४	२	२०
२६	२७	२	मं.	४०	५	अनु.	२७	२९	शो.	५७	४२	बा.	१३	१८	२७	११	२०	२९	वृश्चिक	६	४९	५	२४	६	२५	२	४२
२६	२३	३	बु.	३३	१५	ज्ये.	२२	२९	सु.	४९	४	तै.	६	४०	२८	१२	२१	र.१	ध.२२।२९	६	४९	५	२४	६	२६	३	६
२६	२०	४	गु.	२६	२०	मू.	१७	२५	धृ.	४०	३२	वि.	२६	२०	२९	१३	२२	२	धनु	६	५०	५	२३	६	२७	३	३२
२६	१६	५	शु.	१९	४६	पू. षा.	१२	३१	शू.	३२	१३	बा.	१९	४६	३०	१४	२३	३	म.२६।२७	६	५१	५	२३	६	२८	३	५९
२६	१३	६	श.	१३	४०	उ. षा.	८	१४	गं.	२४	२२	तै.	१३	४०	मा	१५	२४	४	मकर	६	५२	५	२२	६	२९	४	२८
२६	१०	७	र.	८	१९	श्र.	४	३३	वृ.	१७	९	व.	८	१९	२	१६	२५	५	कुं. ३३।५	६	५३	५	२१	७	०	४	५८
२६	७	८	चं.	३	४४	ध.	५९	३५	ध्रु.	१०	३५	व.	३	४४	३	१७	२६	६	कुंभ	६	५४	५	२०	७	१	५	३०
२६	३	९	मं.	०	२	पू.भा.	५८	२५	व्या.	५६	२५	कौ.	०	२	४	१८	२७	७	मी४३।४३	६	५५	५	२०	७	२	६	२
अव	म	१०	मं.	५७	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	०	११	बु.	५५	१५	उ. भा.	५८	१	व.	५४	५५	व.	२६	१५	५	१९	२८	८	मीन	६	५६	५	१९	७	३	६	३५
२५	५७	१२	गु.	५४	५	रे.	५८	३०	सि.	५१	०	व.	२४	४०	६	२०	२९	९	मे.५८।३०	६	५६	५	१९	७	४	७	९
२५	५४	१३	शु.	[illegible]	[illegible]	अ.	[illegible]	[illegible]	व्य.	४७	४४	कौ.	२३	५६	७	२१	३०	१०	मेष	६	५७	५	१९	७	५	७	४५
२५	५१	१४	श.	[illegible]	[illegible]	भ.	६०	०	प.	४५	१३	ग.	२४	५	८	२२	मा	११	मेष	६	५८	५	१९	७	६	८	२२
२५	४८	१५	र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४३	२८	वि.	२५	१३	९	२३	२	१२	वृ.१७।४२	६	५९	५	१९	७	७	९	२

चण्डीगढ़

ग्रह-दर्शन--बुध अस्त है, प्रातः पूर्व में गुरु-शुक्र ऊपरनीचे दिखाई देंगे। सायं मंगल पश्चिम कपाल में, एवं शनि पूर्व कपाल में होगा।

स्वाती में शुक्र ४३।२२, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, वष्टिका कर्षण,
चन्द्रदर्शन मु. ३०, चित्रा ३ तुला में गुरु ४५।१३, यम २, भाई %
भ. ५९।४८ उ., **रमजान मु.प्रा.,**
भ. २६।२० या., %टिक्का दूज विश्वकर्मा की पूजा,
जन्मदिन श्री जवाहरलाल नेहरू (बाल-दिवस)
सं. वृश्चिक में सूर्य ५५।७, मु. ३०, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व
भ. ८।१९ उ., ३६।२ या., पञ्चक प्रा. ३३।५, वृश्चिक में बुध
कूष्माण्ड ९, २।४५, **गोपाष्टमी,**
अनुराधा में बुध ८।४२,
दशमी तिथि-क्षय, ╤व्र.स., मेला पुष्कर, श्रीनिम्बार्कजयन्ती, मन्वादि
भ. २६।१५ उ. ५५।१५ या., अनु. में सूर्य १३।१७, प्रबोधिनी ११
पञ्चक स. ५८।३०, मन्वादि, प्रबोधिनी ११ व्र. वै. नि.
विशाखा में शुक्र २१।४२, प्रदोष व्र., वैकुण्ठ १४,
भ. ५४।२३ उ., शक मार्गशीर्ष प्रा., सायन धनु में सूर्य २५।१०
भ. २५।१३ या., भीष्म पञ्चक स., कार्तिक स्नान स., √
√सत्य व्रत, मेला रामतीर्थ, श्रीगुरु नानक जयन्ती, चातुर्मास्य ╤

कृ. स्मा. इक्षुरस प्राशन, भीष्म पञ्चक प्रा., तुलसी विवाह

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गोल)

१० नवम्बर से ११ दिन में गुड़ खाण्ड में कुछ तेजी और [illegible] रहे। १५ नवं. से सोना, चांदी, अन्न में कुछ मन्दी का रुख रहे। [illegible] इलायची और लकड़ी इनके भाव कुछ मन्दे रहें। [illegible] रूई, लोहा, जस्ता, पीतल, मक्का, ज्वार, बाजरा इनमें तेजी रहे। गेहूं, जौ, चना के भाव में घटा-बढ़ी होकर फिर मन्दी रहे। रुई के भाव भी कुछ मन्दे रहें। तिल, तेल, अलसी, सरसों के भाव सम रहेंगे।

शकुन से भविष्य विचार—१९ नवं. को बादल हों [illegible] होगी। यदि २० नवं. की सारी रात निर्मल रहे तो अग्रिम संवत् [illegible] रहे तो अन्न-संग्रह लाभप्रद नहीं है। [illegible] रहे। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा की रात को यदि चन्द्र निर्मल रहे [illegible]

"कार्तिक पूनम निर्मल चन्द। अन्न खरीदे सो मतिमन्द।"

[illegible] पूर्णिमा की कुंडली से शासकों का विशेष महत्त्व है। अतः [illegible], शासकों में शान्ति के प्रयत्न हों। आकाश-लक्षण—१४ से १६ नवंबर तक कहीं-कहीं बूंदाबांदी १९ से २३ नवंबर तक कहीं-कहीं वर्षा और बूंदाबांदी के योग हैं। विशेषकर मद्रास, मैसूर एवं हिमालय की तलहटी वाले भागों में कहीं कहीं बूंदाबांदी के योग हैं।

कुं. सूर्योदये

कार्ति. शु. १५ रवि., इष्ट ५६।१८

१ | गु. ७ | शु. ६ | १० म. | सू. बु. | ११ रा. | ५ के. | ४ | १२ | ० | ३ | १ श. चं.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	६	६	०	१०	४
८	२०	१२	२	२३	१०	२३	२३
५	३२	२६	२६	१४	४	५१	५१
५५	४०	४२	५५	७	४	३५	३५
६०	४४	९३	११	७५	३	३	३
४०	११	४५	४२	१७	५५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कार्ति. शु. ८ [illegible] कुं. सूर्योदये [illegible]

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, कार्तिक कृष्णपक्ष १६ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | उदयकालिक | (२६ अक्टू. से ९ नव. तक, सन् १९६९ ई.)

ग्रह-दर्शन—बुध ३१ अक्तू. को पूर्व में अस्त होगा । ३ नव. के करीब प्रातः पूर्वमें गुरुशुक्र दोनों चमकते परस्पर काफी समीप दीखेंगे । सायं मंगल पश्चिम कपाल में तथा शनि √

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. अक्टू.	श. कार्ति.	मु.	चन्द्र सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि	
२७	३०	१	र.	१८	२८	भ.	४३	१०	सि.	३०	४	कौ.	१८	२८	११	२६	४	३	.५८।५२	६	३६	५	३७	६	९	०	३३	मकर में मंगल २९।४८, चित्रा २ में गुरु ५५।३२,
२७	२६	२	चं.	१९	१०	कृ.	४६	०	व्य.	२७	५९	ग.	१९	१०	१२	२७	५	१४	वृष	६	३७	५	३६	६	१०	०	२६	भ. ५०।१३ उ., √पूर्व में उदित होता दीखेगा ।
२७	२२	३	मं.	२१	१६	रो.	५०	१३	व.	२७	०	वि.	२१	१६	१३	२८	६	१५	वृष	६	३७	५	३५	६	११	०	२१	भ. २१।१६ या., तुला में बुध ४१।५०, शब-ए-बरात,
२७	१८	४	बु.	२४	५०	मृ.	५५	४२	प.	२७	४	बा.	२४	५०	१४	२९	७	१६	मि२२।५८	६	३८	५	३४	६	१२	०	१७	श्रीगणेश ४ व्र., करक ४ (करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि
२७	१४	५	गु.	२९	४२	आ.	६०	०	शि.	२८	१०	तै.	२९	४२	१५	३०	८	१७	मिथुन	६	३९	५	३३	६	१३	०	१५	७ घं. २७ मि.
२७	१०	६	शु.	३५	३३	आ.	२	१५	सि.	२९	५८	ग.	२	३८	१६	३१	९	१८	क.५२।४७	६	४०	५	३२	६	१४	०	१५	भ. ३५।३३ उ., बुध पूर्व में अस्त १०।२५, चित्रा में शुक्र ३।५,
२७	६	७	श.	४१	५८	पुन.	९	३८	सा.	३२	१२	वि.	८	४५	१७	न.१	१०	१९	कर्क	६	४१	५	३१	६	१५	०	१८	भ. ८।४५ या, स्वाती में बुध ४३।०, नवम्बर प्रा.,
२७	२	८	र.	४८	१३	पु.	१७	११	शु.	३४	२४	बा.	१५	५	१८	२	११	२०	कर्क	६	४२	५	३०	६	१६	०	२३	अहोई ८,
२६	५८	९	चं.	५३	४६	आश्ले.	२४	१७	शु.	३६	१२	तै.	२१	०	१९	३	१२	२१	सि२४।१७	६	४२	५	२९	६	१७	०	३०	
२६	५४	१०	मं.	५७	५७	म.	३०	२२	ब्र.	३७	२	व	२५	५१	२०	४	१३	२२	सिंह	६	४३	५	२९	६	१८	०	३९	भ. २५।५१ उ. ५७।५७ या.,
२६	५०	११	बु.	६०	०	पू.फा.	३५	१	ऐं.	३६	४५	व.	२९	१४	२१	५	१४	२३	कं.५०।४४	६	४४	५	२८	६	१९	०	५१	विशाखा में सूर्य ५८।५७, तुला में शुक्र २३।३२,
२६	४६	११	गु.	०	३०	उ. फा.	३७	५२	वै.	३५	२	बा.	०	३०	२२	६	१५	२४	कन्या	६	४५	५	२७	६	२०	१	५	रमा ११ व्र. स. हस्त २, मे यूरेनस १।४७,
२६	४२	१२	शु.	१	७	ह	३८	५१	वि.	३१	४८	तै.	१	७	२३	७	१६	२५	कन्या	६	४६	५	२६	६	२१	१	२१	भ. ५९।५० उ., प्रदोष व्र., यम के लिए दीप दान, धन १३
अव	म	१३	श.	५९	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	दीपावली महालक्ष्मी पूजन
२६	३८	१४	श.	५६	४७	चि.	३८	०	प्री.	२७	७	वि.	२८	१८	२४	८	१७	२६	तु. ८।२६	६	४६	५	२६	६	२२	१	४०	भ. २८।१८ या., नरक १४, ी हनुमान जयन्ती
२६	३४	३०	र.	५२	२३	स्वा.	३५	३७	आ.	२१	८	चं.	२४	३५	२५	९	१८	२७	तुला	६	४७	५	२५	६	२३	१	५९	विशाखा में बुध ४९।३ श्रवण में मंगल ३०।१५,

कार्ति. कृ. ८ रवि, इष्ट ५७।०, कुं. सूर्योदय

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	५	५	०	१०	४
१६	५	८	२८	२६	११	२४	२४
५७	१७	४२	९	५६	३७	५८	५८
३१	१०	४०	४३	५९	५४	२२	२२
६०	४२	३९	१२	७४	४	३	३
७	५५	१३	३९	५३	४०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	३	२	२	२	४	८	४
स्वा.	उ. षा.	विशा.	चित्रा	चित्रा	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गाल)

इस पक्ष में २६ अक्तूबर से रूई, सोना, चांदी तांबा गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी एवं ऊन में तेजी का वातावरण बने । अनाजों में कुछ मन्दी का रुख आता है । रूई में घटा-बढ़ी के बाद मन्दी आवे । ३१ अक्तूबर से एक मास के भीतर अनाज, घी आदि में मन्दी का रुख बने । सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे । ५ नवं. से गुड़, खाण्ड, मसूर, चावल जी, में तेजी का वातावरण बने । अलसी एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे ।

कुं. सूर्योदय ति. कृ. ३० रवि, इष्ट ५६।४८

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	९	६	५	६	०	१०	४
२३	१०	२०	२९	५	११	२४	२४
५९	१९	११	३७	४१	४	३६	३६
३	१०	३६	३५	४१	४६	६	६
६०	४३	३७	१२	७५	४	३	३
२०	२७	१२	२५	३	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	२	२	४	४	८	४
विशा.	श्रव.	विशा.	चित्रा.	चित्रा.	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

शकुन से भविष्य विचार—इस पक्ष में यदि मेघ की गर्जना सुनाई दे, तो अन्न की उपज अच्छी होने पर भी अन्न महंगे हों । इस पक्ष में किसान पशुओं के लिए चारा-संग्रह कर लें । अन्यथा आगे चारे की समस्या बन सकती है । यदि ५ नवं. को आकाश में मेघ हों तो निस्संदेह वर्षा अच्छी हो । यहां दीपावली रविवार को है; अतः स्टाक वाले लाभ में रहें ।

आकाश-लक्षण—२६-२७ एवं ३० अक्तूबर से ४ नवंबर तक पूर्वी-पाकिस्तान, पंजाब, हिमाचल की तलहटी वाले भाग में बादल चाल एवं बंदाबांदी के योग हैं ।

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, कार्तिक शुक्लपक्ष १७ | तारीखें | चन्द्र. | भा. स्ट. टा. | उदयकालिक | (१० से २४ नवं. तक, सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्तिक	अं. नवं.	श. कार्तिक	मु. शाबान	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	३१	१	चं.	४६	३२	वि.	३१	५७	सौ.	१३	५९	किं.	१९	२८	२६	१०	१९	२८	वृ.१७।५२	६	४८	५	२५	६	२४	२	२०
२६	२७	२	मं.	४०	५	अनु.	२७	२९	शो.	५७	४२	वा.	१३	१८	२७	११	२०	२९	वृश्चिक	६	४९	५	२४	६	२५	२	४२
२६	२३	३	बु.	३३	१५	ज्ये.	२२	२९	सु.	४९	४	तै.	६	४०	२८	१२	२१	र.१	ध.२२।२९	६	४९	५	२४	६	२६	३	६
२६	२०	४	गु.	२६	२०	मू.	१७	२५	धृ.	४०	३२	वि.	२६	२०	२९	१३	२२	२	धनु	६	५०	५	२३	६	२७	३	३२
२६	१६	५	शु.	१९	४६	पू. षा.	१२	३१	शू.	३२	१३	बा.	१९	४६	३०	१४	२३	३	म.२६।२७	६	५१	५	२३	६	२८	३	५९
२६	१३	६	श.	१३	४०	उ. षा.	८	१४	गं.	२४	२२	तै.	१३	४०	मा[1]	१५	२४	४	मकर	६	५२	५	२२	६	२९	४	२८
२६	१०	७	र.	८	१९	श्र.	४	३३	वृ.	१७	९	व.	८	१९	२	१६	२५	५	कुं. ३३।५	६	५३	५	२१	७	०	४	५८
२६	७	८	चं.	३	४४	ध.	५६	३५	ध्रु.	१०	३५	व.	३	४४	३	१७	२६	६	कुंभ	६	५४	५	२०	७	१	५	३०
२६	३	९	मं.	०	२	पू.भा.	५८	२५	व्या.	५६	२५	कौ.	०	२	४	१८	२७	७	मी४३।४३	६	५५	५	२०	७	२	६	२
अव	म	१०	मं.	५७	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	०	११	बु.	५५	१५	उ. भा.	५८	१	व.	५४	१५	व.	२६	१५	५	१९	२८	८	मीन	६	५६	५	१९	७	३	६	३५
२५	५७	१२	गु.	[illegible]	[illegible]	रे.	५८	३०	सि.	५१	०	ब.	२४	४०	६	२०	२९	९	मे.५८।३०	६	५६	५	१९	७	४	७	९
२५	५४	१३	शु.	[illegible]	[illegible]	अ.	[illegible]	४७	व्य.	[illegible]	४४	कौ.	२३	५६	७	२१	३०	१०	मेष	६	५७	५	१९	७	५	७	४५
२५	५१	१४	श.	[illegible]	[illegible]	भ.	६०	[illegible]	व.	[illegible]	१३	ग.	२४	५	८	२२	मा[1]	११	मेष	६	५८	५	१९	७	६	८	२२
२५	४८	१५	र.	[illegible]	[illegible]	कृ.	[illegible]	[illegible]	व.	[illegible]	२८	वि.	२५	१३	९	२३	२	१२	वृ.१७।४२	६	५९	५	१९	७	७	९	२

ग्रह-दर्शन—बुध अस्त है, प्रातः पूर्व में गुरु-शुक्र ऊपरनीचे दिखाई देंगे। सायं मंगल पश्चिम कपाल में, एवं शनि पूर्व कपाल में होगा।

स्वाती में शुक्र ४३।२२, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, वष्टिका कर्षण,
चन्द्रदर्शन मु. ३०, चित्रा ३ तुला में गुरु ४५।१३, यम २, भाई %
भ. ५९।४८ उ., रमजान मु.प्रा.,
भ. २६।२० या., %टिक्का दूज विश्वकर्मा की पूजा,
जन्मदिन श्री जवाहरलाल नेहरू (बाल-दिवस)
सं. वृश्चिक में सूर्य ५५।७, मु. ३०, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व
भ. ८।१९ उ., ३६।२ या., पञ्चक प्रा. ३३।५, वृश्चिक में बुध ✉
कूष्माण्ड ९, ✉२।४५, गोपाष्टमी,
अनुराधा में बुध ८।४२,
दशमी तिथि-क्षय, ╤व्र.स., मेला पुष्कर, श्रीनिम्बार्कजयन्ती, मन्वादि
भ.२६।१५ उ. ५५।१५ या., अनु. में सूर्य १३।१७, प्रबोधिनी ११ ✲
पञ्चक स. ५८।३०, मन्वादि, प्रबोधिनी ११ व्र. वैं. नि.
विशाखा में शुक्र २१।४२, प्रदोष व्र., ✲वैकुण्ठ १४,
भ. ५४।२३ उ., शक मार्गशीर्ष प्रा., सायन धनु में सूर्य २५।१० ✲
भ. २५।१३ या., भीष्म पञ्चक स., कार्तिक स्नान स., √
√सत्य व्रत, मेला रामतीर्थ, श्रीगुरु नानक जयन्ती, चातुर्मास्य ╤

[illegible] भीष्म पञ्चक प्रा., तुलसी विवाह

कार्ति. शु. ८ [illegible] कुं. सूर्योदये

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गोल)

१० नवम्बर से ११ दिन में गुड़ खाण्ड में कुछ तेजी और [illegible] में कुछ मन्दी का रुख रहे। १५ नवं. से सोना, चांदी, लौंग, [illegible] और लकड़ी इनके भाव कुछ मन्दे रहें। [illegible] सूत, लोहा, जस्ता, पीतल, मक्का, ज्वार, बाजरा इनमें तेजी रहे। गेहूं, जौ, चना के भाव में घटा-बढ़ी होकर फिर मन्दे रहें। रुई के भाव भी कुछ मन्दे रहें। तिल, तेल, अलसी, सरसों के भाव सम रहेंगे।

शकुन से भविष्य विचार—१९ नवं. को बादल हों [illegible] वर्षा काल में [illegible] अच्छी होगी। यदि २०नवं. की सारी रात निर्मल रहे तो अग्रिम संवत् [illegible] कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा की रात को यदि चन्द्र निर्मल रहे, तो अन्न-संग्रह लाभप्रद नहीं है।

"कार्तिक पूनम निर्मल चन्द। अन्न खरीदे सो मतिमन्द।"

[illegible] पूर्णिमा की पड़वा से [illegible] का विशेष सम्बन्ध है; अतः फसल अच्छी, शासकों में शान्ति के प्रयत्न हों। [illegible] १९ से २३ नवंबर तक कहीं-कहीं वर्षा और [illegible] १८ नवंबर तक कहीं कहीं बूंदाबांदी [illegible] मद्रास, मैसूर एवं हिमाचल की तरहटी वाले भागों में कहीं कहीं बूंदाबांदी के योग हैं।

कुं. सूर्योदये — कार्ति. शु. १५ रवि., इष्ट ५६।१८

(कुण्डली: ९, गु. ७, शु. ६, १० मं., बु., ११ श., सू., चं., १२, १, २, ४, १ रा. बं.)

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	६	६	०	१०	४
८	२०	१२	२	२३	१०	२३	२३
५	३२	२६	२६	१४	४	५१	५१
५५	४०	४२	५५	७	४	३५	३५
६०	४८	९३	११	७५	३	३	३
४०	११	४५	४२	१७	५५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	व.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री. वि. सं. २०२६, शाक १८९१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टं.टा. | उदयकालिक | (२४ नवंबर से ९ दिसं. तक, सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. मार्गं.	अं. नवं.	श. मार्गं.	मु. रम.	संचार घ. प.	सू. उ. चण्डीगढ़ घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	४५	१	चं.	५८	४५	कृ.	५	५	शि.	४२	३०	बा.	२७	२३	१०	२४	३	१३	वृष	७	०	५	१८	७	८	९	४१
२५	४२	२	मं.	६०	०	रो.	९	१७	सि.	४२	२२	तै.	३०	४०	११	२५	४	१४	मि४१।५६	७	१	५	१८	७	९	१०	२३
२५	३९	२	बु.	२	३४	मृ.	१४	३६	सा.	४३	१०	ग.	२	३४	१२	२६	५	१५	मिथुन	७	१	५	१८	७	१०	११	६
२५	३६	३	गु.	७	३२	आर्द्रा.	२०	५९	शु.	४४	३९	वि.	७	३२	१३	२७	६	१६	मिथुन	७	२	५	१८	७	११	११	५०
२५	३४	४	शु.	१३	३०	पुन.	२८	१	शु.	४६	४५	बा.	१३	३०	१४	२८	७	१७	क.११।१५	७	३	५	१८	७	१२	१२	३६
२५	३२	५	श.	२०	१	पु.	३५	५१	ब्र.	४९	८	तै.	२०	१	१५	२९	८	१८	कर्क	७	४	५	१८	७	१३	१३	२३
२५	३०	६	र.	२६	४२	आ.	४३	२७	ऐं.	५१	२२	व.	२६	४२	१६	३०	९	१९	सि४३।३७	७	५	५	१८	७	१४	१४	११
२५	२७	७	चं.	३२	५२	म.	५०	३०	वै.	५३	७	ब.	३२	५२	१७	दि'	१०	२०	सिंह	७	६	५	१७	७	१५	१५	१
२५	२५	८	मं.	३७	५६	पू.फा.	५६	२२	वि.	५३	४९	बा.	५	२४	१८	२	११	२१	सिंह	७	६	५	१७	७	१६	१५	५३
२५	२३	९	बु.	४१	२०	उ.फा.	६०	०	प्री.	५३	२०	तै.	९	३८	१९	३	१२	२२	कं.१२।२३	७	७	५	१७	७	१७	१६	४६
२५	२१	१०	गु.	४२	४५	उ. फा.	०	२७	आ.	५१	९	व.	१२	२	२०	४	१३	२३	कन्या	७	८	५	१७	७	१८	१७	४०
२५	१९	११	शु.	४१	५५	ह.	२	३४	सौ.	४७	१८	ब.	१२	२०	२१	५	१४	२४	तु.३२।३४	७	९	५	१७	७	१९	१८	३६
२५	१७	१२	श.	३९	०	चि.	२	३३	शो.	४१	४५	कौ.	१०	२८	२२	६	१५	२५	तुला	७	९	५	१७	७	२०	१९	३३
२५	१५	१३	र.	३४	४	स्वा.	० / ५६	३२ / ४२	अ.	३४	४३	ग.	६	३२	२३	७	१६	२६	वृ.४२।४०	७	१०	५	१७	७	२१	२०	३२
२५	१४	१४	चं.	२७	३७	अनु.	५१	३२	सु.	२६	२२	वि.	०	५१	२४	८	१७	२७	वृश्चिक	७	११	५	१७	७	२२	२१	३२
२५	१२	३०	मं.	२०	०	ज्ये.	४५	२१	धृ.	१७	७	ना.	२०	०	२५	९	१८	२८	ध.४५।२१	७	१२	५	१७	७	२३	२२	३२

ग्रह-दर्शन—बुध ८ दिसंबर को पश्चिममें उदित होगा। प्रातः गुरु पूर्व में होगा और शुक्र पूर्व-क्षितिज से ऊपर उठ रहा होगा। सायं मंगल पश्चिम-कपालमें एवं शनि पूर्वमें दीखेगा।

व. शनि अश्वि. ३ में ५८।३५ (वि.मु.रोहि.)
(वि.मु.मृग.)
भ. ३५।३ उ., ज्येष्ठा में बुध ३८।३०,
भ. ७।३२ या., धनि में मंगल ४३।७, श्री गणेश ४ व्र.,
चित्रा ४ में गुरु ३३।५२,
वृश्चिक में शुक्र १९।२३,
भ. २६।४२ उ. ५९।४७ या.,
दिसम्बर प्रा., अनु. में शुक्र ५८।३२,
ज्येष्ठा में सूर्य २३।४५, श्री महाकाल भैरव ८,
पू. भा. १ में राहु पू.फा. ३ में केतु ५१।५२,
भ. १२।२ उ. ४२।४५ या., (वि.मु.हस्त) ✻ उलविदा,
मल—धनु में बुध १३।५२, उत्पन्ना ११ व्र.स्मा. वै., जमत-✻
कुम्भ में मंगल ४३।०, मल्ल १२, उत्पन्ना ११ व्र. नि. ...
भ. ३४।४ उ., प्रदोष व्र., ...[वि.मु.स्वा.]
भ. ०।५१ या., बुध पश्चिम में उदित ९।५, मेला पुर +
+मण्डल (देविका स्नान)

मार्ग. कृ. ८ मंगल, इष्ट ५६।०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	६	७	०	१०	४
१७	२७	२६	४	४	९	२३	२३
१२	११	२६	९	३२	३१	२२	२२
४२	३१	२६	४३	११	२६	५८	५८
६०	४४	९२	११	७५	३	३	३
५२	२८	५३	४	२५	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	४	२	३	२	४
ज्येष्ठा	धनि.	ज्येष्ठा	चित्रा	अनु.	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गोल)

२६ नवं. से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी, २९ नवं. से रूई, सूत, वस्त्र, शयर और चांदी में पहले कुछ मन्दी होकर पीछे कुछ तेजी हो। गुड़ में घटाबढ़ी चले। गेहूँ, जौ, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ आदि में, मन्दी एवं अलसी तेज हो। २ दिसं. से अलसी, सरसों, गुग्गुल, पारा, हींग में तेजी हो। ६ दिसं. के करीब सूत, गेहूँ, खरीदने से छ मास में विशेष लाभ मिले। यहां कृष्ण-पक्ष में तिथि वृद्धि है, जो युद्ध की सूचक है

कुं. सूर्योदये, मार्ग. कृ. ३० मंगल, इष्ट ५५।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	६	७			
२४	२	७	५	१३	९	२३	२३
१९	२३	१४	२५	२०	१०	०	०
१४	२६	३९	३२	१६	४२	४२	४२
६१	४४	९२	१०	७२	२	३	३
१	३९	१	३०	२८	३६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	३	४	४	३	२	३
ज्येष्ठा	धनि.	मृग.	चित्रा	अनु.	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

"मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथि–वृद्धिर्भवेद्यदि। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रन्दति नित्यशः॥"

शकुन से भविष्य विचार—२८-२९ नवं. को जहां आकाश बादलों से ढका रहे तो आगामी चौमासे में वहां वर्षा अच्छी रहेगी। १ दिसं. को आकाश दिन-रात मेघ रहित रहे, तो आगे वैशाखमें अन्न सस्ता हो यदि मघ हों तो मंहगा हो।

आकाश लक्षण—२४ नवं. को तथा २७ नवं. से १ दिसं. तक कहीं-कहीं बादल चाल और बूंदाबांदी के योग हैं ६ से ९ दिस. तक वर्षा-वायु के योग हैं। उत्तर-पूर्वी लंका, पूर्वी-पाकिस्तान में विशेषकर वर्षा के योग हैं; अन्यत्र कहीं कहीं

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | उदयकालिक (१० से २३ दिसम्बर तक, सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. रम.	चन्द्र सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	११	१	बु.	११	४३	मू.	३८	४०	शू.	[illegible]	[illegible]	ब.	११	४३	२६	१०	१९	२९	धनु	७	१२	५	१७	७	२४	२३	३३
२५	९	२	गु.	३	८	पू. षा.	३२	२	वृ.	४७	१२	कौ.	३	८	२७	११	२०	३०	म ४५।२८	७	१३	५	१७	७	२५	२४	३६
अव	म	३	गु.	५४	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	७	४	शु.	४६	५९	उ. षा.	२५	४५	ध्रु.	३७	३९	व.	२०	५३	२८	१२	२१	श१	मकर	७	१४	५	१७	७	२६	२५	३९
२५	६	५	श.	४०	४	श्र.	२०	१७	व्या	२८	५०	व.	१३	३२	२९	१३	२२	२	कुं.४८।५	७	१५	५	१८	७	२७	२६	४३
२५	५	६	र.	३४	२७	ध.	१५	५४	ह.	२०	५४	कौ.	७	१५	३०	१४	२३	३	कुम्भ	७	१५	५	१८	७	२८	२७	४७
२५	४	७	चं.	३०	४	श.	१२	४८	व.	१४	२	ग.	२	१६	पौ१	१५	२४	४	मी५६।२९	७	१६	५	१८	७	२९	२८	५२
२५	३	८	म.	२७	९	पू. भा.	११	२	सि.	८	१५	ब.	२७	९	२	१६	२५	५	मीन	७	१७	५	१८	८	०	२९	५८
२५	२	९	बु.	२५	३०	उ. भा.	१०	४०	व्य.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२५	३०	३	१७	२६	६	मीन	७	१८	५	१९	८	१	३१	३
२५	१	१०	गु.	२५	१७	रे.	११	३५	प.	१७	१२	ग.	२५	१७	४	१८	२७	७	मे.११।३५	७	१८	५	१९	८	२	३२	८
२५	[illegible]	११	शु.	२६	७	अ.	१३	३८	शि.	२५	१८	वि.	२६	७	५	१९	२८	८	मेष	७	१९	५	१९	८	३	३३	१२
२५	[illegible]	१२	श.	२८	३	भ.	१६	३९	सि	२४	१४	बा.	२८	३	६	२०	२९	९	वृ.३२।४०	७	१९	५	१९	८	४	३४	१७
[illegible]	[illegible]	१३	र.	३०	५४	कृ.	२०	४२	सा	[illegible]	[illegible]	तै.	३०	५४	७	२१	३०	१०	वृष	७	२०	५	२०	८	५	३५	२३
२४	[illegible]	१४	चं.	[illegible]	[illegible]	रो.	२४	२५	शु.	१४	३	ग.	३	४४	८	२२	पौ१	११	मि५८।२९	७	२०	५	२०	८	६	३६	२८
२५	[illegible]	१५	मं.	२९	१२	मृ.	[illegible]	[illegible]	शु.	१५	०	वि.	६	५४	९	२३	२	१२	मिथुन	७	२१	५	२१	८	७	३७	३५

ग्रह-दर्शन—प्रातः पूर्व कपाल में गुरु और उससे काफी नीचे पूर्व क्षितिज से थोड़ा ही ऊपर शुक्र झांक रहा होगा। सायं पश्चिम कपालमें मंगल तथा याम्योत्तर-वृत्त से कुछ पूर्व की + और शनि होगा, इस समय बुध पश्चिम में डूबने को होगा।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, (दक्षिण भारत में चन्द्र दर्शन १० दिसं. को होगा),

तृतीया तिथि-क्षय,

भ. २०।५३ उ., ४६।५९ या., ज्येष्ठा मे शुक्र ३४।३० शाबान,

पचक प्रा. ४८।५, पू. षा. में बुध ५५।०, बलिदान दिवस श्री गुरु तेगबहादुर

चम्पा ६, गुह ६,

भ. ३०।४ उ. ५८।३६ या., सं. मूल-धनु में सूर्य ३०।३५ मु. ३०, पुण्य १२।३२ बाद, खर मास प्रा. शत. में मंगल ३९।५८

स्वाती १ में गुरु १३।४७, मु. प्रा., इदुल फित्र (देखें— "सन्दिग्ध व्रत पर्व निर्णय" पृष्ठ १६),

भ. ५५।४२ उ., पंचक स. ११।३५,

भ. २६।७ या., मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीता जयन्ती,

सायन मकर में सूर्य ५७।१५, शिशिर ऋतु एवं उत्तरायण प्रा., प्रदोष व्र.

भ. ३४।४३ उ., शक पौष प्रा., पिशाच-मोचन श्राद्ध,

भ. ६।५८ या, उ.षा. में बुध ९।२५, मूल-धनमें शुक्र १०।५, सत्यव्र. श्री दत्त जयन्ती

मार्ग. शु. ८ मंगल, इष्ट [illegible], कुं. सूर्योदये,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	६	७	०	१०	४
१	७	१५	[illegible]	६	२२	८	२२
२६	३६	५०	३७	८	५६	२८	२८
२९	२९	४८	[illegible]	०	३३	३३	३३
६१	४४	८८	९	७१	१	३	३
४	४६	२७	५१	[illegible]	[illegible]	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(हेमन्त-शिशिर ऋतु, दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल)

११ दिसं. से रुई, सूत, सूती, ऊनी एवं रेशमी-वस्त्र, तेल, घी तेज हों। सोना, चांदी, खांड, गुड़, में मन्दी का वातावरण बने। १५ दिसं. से तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च तथा अन्य लाल-रंग की वस्तुएँ लोहा तथा लोह-निर्मित मशीनरी में तेजी का वातावरण रहे। उड़द, मूंग मोठ, ज्वार, मक्की, बाजरा का भाव सम रहे। जिन व्यापारियों ने पिछली संक्रांति में गेहूं आदि अनाज खरीदे हों, उन्हें इस संक्रान्ति में बेचने पर हानि होगी। अतः अन्न के स्टाक को एक मास के बाद बेचें। १७ दिसं. से रुई, कपास, सोना, चांदी, अलसी आदि सावदे के व्यापार में तेजी के बाद कुछ मन्दी का वातावरण बने।

शकुन से भविष्य विचार—१६ दिसं. को वर्षा हो जाए तो आगे गेहूं, चने की उपज अच्छी हो। २३ दिसं. को यदि चांद के चारों ओर परिवेष दिखाई दे और आगे पढ़े तो मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ खरीद कर रखने से छठे मास में अच्छा लाभ मिल सकता है। इस पक्ष में तिथि-क्षय छत्र भङ्ग प्रजापीड़ा, दुर्भिक्ष का सूचक है। आकाश-लक्षण—११ से १४ दिसंबर तक और १७ से २१ दिस. तक मद्रास, पूर्वी पाकिस्तान

कुं. सूर्योदये



मार्ग. शु. १५ मंगल, इष्ट ५५।२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	१०	८	६	८	०	१०	४
८	१२	२७	७	०	८	२२	२२
३४	४१	४०	४३	५६	४३	१६	१६
१	४७	१०	३९	५७	२९	११	११
६१	४४	७५	९	७५	१	३	३
६	४७	४०	५	२९	९	११	११
	मा.	मा	मा	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री. वि. सं. २०२६, शाक १८९१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८ | तारीखें, चन्द्र | भा.स्टं.टा. | उदयकालिक | (२४ नवंबर से ९ दिसं. तक सन् १९६९ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	सू. उ. चण्डीगढ़ घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	४५	१	चं.	५८	४५	कृ.	५	५	शि.	४२	३०	बा.	२७	२३	१०	२४	३	१३	वृष	७	०	५	१८	७	८	९	४१
२५	४२	२	मं.	६०	०	रो.	९	१७	सि.	४२	२२	तै.	३०	४०	११	२५	४	१४	मि४१।५६	७	१	५	१८	७	९	१०	२३
२५	३९	२	बु.	२	३४	मृ.	१४	३६	सा.	४३	१०	ग.	२	३४	१२	२६	५	१५	मिथुन	७	१	५	१८	७	१०	११	६
२५	३६	३	गु.	७	३२	आर्द्रा.	२०	५९	शु.	४४	३९	वि.	७	३२	१३	२७	६	१६	मिथुन	७	२	५	१८	७	११	११	५०
२५	३४	४	शु.	१३	३०	पुन.	२८	१	शु.	४६	४५	बा.	१३	३०	१४	२८	७	१७	क.११।१५	७	३	५	१८	७	१२	१२	३६
२५	३२	५	श.	२०	१	पु.	३५	५१	ब्र.	४९	८	तै.	२०	१	१५	२९	८	१८	कर्क	७	४	५	१८	७	१३	१३	२३
२५	३०	६	र.	२६	४२	आ.	४३	२७	ऐं.	५१	२२	व.	२६	४२	१६	३०	९	१९	सिं४३।३७	७	५	५	१८	७	१४	१४	११
२५	२७	७	चं.	३२	५२	म.	५०	३०	वं.	५३	७	ब.	३२	५२	१७	दि	१०	२०	सिंह	७	६	५	१७	७	१५	१५	१
२५	२५	८	मं.	३७	५६	पू.फा.	५६	२२	वि.	५३	४९	बा.	५	२४	१८	२	११	२१	सिंह	७	६	५	१७	७	१६	१५	५३
२५	२३	९	बु.	४१	२०	उ.फा.	६०	०	प्री.	५३	२०	तै.	९	३८	१९	३	१२	२२	कं.१२।२३	७	७	५	१७	७	१७	१६	४६
२५	२१	१०	गु.	४२	४५	उ. फा.	०	२७	आ.	५१	९	व.	१२	२	२०	४	१३	२३	कन्या	७	८	५	१७	७	१८	१७	४०
२५	१९	११	शु.	४१	५५	ह.	२	३४	सौ.	४७	१८	व.	१२	२०	२१	५	१४	२४	तु.३२।३४	७	९	५	१७	७	१९	१८	३६
२५	१७	१२	श.	३९	०	चि.	२	३३	शो.	४१	४५	कौ.	१०	२८	२२	६	१५	२५	तुला	७	९	५	१७	७	२०	१९	३३
२५	१५	१३	र.	३४	४	स्वा.	०/५६	३२/४२	अ.	३४	४३	ग.	६	३२	२३	७	१६	२६	वृ.४२।४०	७	१०	५	१७	७	२१	२०	३२
२५	१३	१४	चं.	२७	३७	अनु.	५१	३२	सु.	२६	२२	वि.	०	५१	२४	८	१७	२७	वृश्चिक	७	११	५	१७	७	२२	२१	३२
२५	१२	३०	मं.	२०	०	ज्ये.	४५	२१	धृ.	१७	७	ना.	२०	०	२५	९	१८	२८	ध.४५।२१	७	१२	५	१७	७	२३	२२	३२

ग्रह-दर्शन—बुध ८ दिसंबर को पश्चिममें उदित होगा। प्रातः गुरु पूर्व में होगा और शुक्र पूर्व-क्षितिज से ऊपर उठ रहा होगा। सायं मंगल पश्चिम-कपालमें एवं शनि पूर्वमें दीखेगा।

व. शनि अश्वि. ३ में ५८।३५ (वि.मु.रोहि.)
(वि.मु.मृग.)
भ. ३५।३ उ., ज्येष्ठा में बुध ३८।३०,
भ. ७।३२ या., धनि में मंगल ४३।७, श्री गणेश ४ व्र.,
चित्रा ४ में गुरु ३३।५२,
वृश्चिक में शुक्र १९।२३,
भ. २६।४२ उ. ५९।४७ या.,
दिसम्बर प्रा., अनु. में शुक्र ५८।३२,
ज्येष्ठा में सूर्य २३।४५, श्री महाकाल भैरव ८,
पू. भा. १ में राहु पू.फा. ३ में केतु ५१।५२,
भ. १२।२ उ. ४२।४५ या., (वि.मु.हस्त) ॐ उलविदा,
मूल-धनु में बुध १३।५२, उत्पन्ना ११ व्र.स्मा. वै., जगत-ॐ
कुम्भ में मंगल ४३।०, मल्ल १२, उत्पन्ना ११ व्र. नि. ...
भ. ३४।४ उ., प्रदोष व्र., ...[वि.मु.स्वा.]
भ. ०।५१ या., बुध पश्चिम में उदित ९।५, मेला पुर +
+मण्डल (देविका स्नान)

मार्ग. कृ. ८ मंगल, इष्ट ५६।०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	६	७	०	१०	४
१७	२७	२६	४	४	९	२३	२३
१२	११	२६	९	३२	३१	२२	२२
४२	३१	२६	४३	११	२६	५८	५८
६०	४४	९२	११	७५	३	३	३
५२	२८	५३	४	२५	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	२	३	४	१	३	१	४
ज्येष्ठा	धनि.	ज्येष्ठा	चित्रा	अनु.	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

९ | ७ गु. | मं. | ८ सू. बु. शु. | ६ | १० | ११ रा. | ५ के. चं. | १२ | २ | ४ | १ श. | ३

(हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण गोल)

२६ नवं. से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी, २९ नवं. से रूई, सूत, वस्त्र, शयर और चांदी में पहले कुछ मन्दी होकर पीछे कुछ तेजी हो। गुड़ में घटाबढ़ी चले। गेहूँ, जौ, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ आदि में, मन्दी एवं अलसी तेज हो। २ दिसं. से अलसी, सरसों, गुग्गुल, पारा, हींग में तेजी हो। ६ दिसं. के करीब सूत, गेहूँ, खरीदने से छ मास में विशेष लाभ मिले। यहां कृष्ण-पक्ष में तिथि वृद्धि है, जो युद्ध की सूचक है

कुं. सूर्योदये, मार्ग. कृ. ३० मंगल, इष्ट ५५।४५

९ ब. | ७ गु. | १० | ८ सू. बु. शु. | ६ | ११ मं. रा. | ५ के. | १२ | २ | ४ | १ श. | ३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	६	७			
२४	२	७	५	१३	९	२३	२३
१९	२३	१४	२५	२०	१०	०	०
१४	२६	३९	३२	१६	४२	४२	४२
६१	४४	९२	१०	७२	२	३	३
१	३९	१	३०	२८	३६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	३	४	४	३	१	३
ज्येष्ठा	धनि.	मूल	चित्रा	अनु.	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

"मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथि—वृद्धिर्भवेद्यदि। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रन्दति नित्यशः ॥"

शकुन से भविष्य विचार—२८-२९ नवं. को जहां आकाश बादलों से ढका रहे तो आगामी चौमासे में वहां वर्षा अच्छी रहेगी। १ दिसं. को आकाश दिन-रात मेघ रहित रहे, तो आगे वैशाखमें अन्न सस्ता हो यदि मघ हों तो मंहगा हो।

आकाश लक्षण—२४ नवं. को तथा २७ नवं. से १ दिसं. तक कहीं-कहीं बादल चाल और बूंदाबांदी के योग हैं ६ से ९ दिस. तक वर्षा-वायु के योग हैं। उत्तर-पूर्वी लंका, पूर्वी-पाकिस्तान में विशेषकर वर्षा के योग हैं; अन्यत्र कहीं कहीं [illegible]

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. | उदयकालिक (१० से २३ दिसम्बर तक, सन् १९६९ ई.)

वि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	११	१	बु.	११	४३	मू.	३८	४०	शू.	५७	१४	व.	११	४३	२६	१०	१९	२९	धनु	७	१२	५	१७	७	२४	२३	३३
२५	९	२	गु.	३	८	पू. षा.	३२	२	वृ.	४७	१२	कौ.	३	८	२७	११	२०	३०	म ४५।२८	७	१३	५	१७	७	२५	२४	३६
अव	म	३	गु.	५४	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	७	४	शु.	४६	५९	उ. षा.	२५	४५	ध्रु.	३७	३९	व.	२०	१३	२८	१२	२१	श १	मकर	७	१४	५	१७	७	२६	२५	३९
२५	६	५	श.	४०	४	श्र.	२०	१७	व्या	२८	५०	ब.	१३	३२	२९	१३	२२	२	कुं.४८।५	७	१५	५	१८	७	२७	२६	४३
२५	५	६	र.	३४	२७	ध.	१५	५४	ह.	२०	५४	कौ.	७	१५	३०	१४	२३	३	कुम्भ	७	१५	५	१८	७	२८	२७	४७
२५	४	७	चं.	३०	४	श.	१२	४८	व.	१४	२	ग.	२	१६	पौ	१५	२४	४	मी५६।२९	७	१६	५	१८	७	२९	२८	५२
२५	३	८	मं.	२७	९	पू. भा.	११	२	सि.	८	१५	व.	२७	९	२	१६	२५	५	मीन	७	१७	५	१८	८	०	२९	५८
२५	२	९	बु.	२५	३०	उ. भा.	१०	४०	व्य	[illegible]	[illegible]	कौ.	२५	३०	३	१७	२६	६	मीन	७	१८	५	१९	८	१	३१	३
२५	१	१०	गु.	२५	१७	रे.	११	३५	प.	१७	१२	ग.	२५	१७	४	१८	२७	७	मे.११।३५	७	१८	५	१९	८	२	३२	८
२५	[illegible]	११	शु.	२६	७	अ.	१३	३८	शि.	५५	१८	वि.	२६	७	५	१९	२८	८	मेष	७	१९	५	१९	८	३	३३	१२
२५	[illegible]	१२	श.	२८	३	भ.	१६	३९	सि.	१६	१९	बा.	२८	३	६	२०	२९	९	वृ.३२।४०	७	१९	५	१९	८	४	३४	१७
[illegible]	[illegible]	१३	र.	३०	५४	कृ.	२०	४०	सा	[illegible]	४७	तै.	३०	५४	७	२१	३०	१०	वृष	७	२०	५	२०	८	५	३५	२२
२६	[illegible]	१४	चं.	[illegible]	४३	रो.	२५	३५	शु.	[illegible]	४	ग.	[illegible]	४८	८	२२	पौ	११	मि५८।२६	७	२०	५	२०	८	६	३६	२८
२५	[illegible]	१५	मं.	[illegible]	[illegible]	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	वि.	६	५८	९	२३	२	१२	मिथुन	७	२१	५	२१	८	७	३७	३५

ग्रह-दर्शन—प्रातः पूर्व कपाल में गुरु और उससे काफी नीचे पूर्व क्षितिज से थोड़ा ही ऊपर शुक्र झांक रहा होगा। सायं पश्चिम कपालमें मंगल तथा याम्योत्तर-वृत्त से कुछ पूर्व की+

+ओर शनि होगा, इस समय बुध पश्चिम में डूबने को होगा।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, (दक्षिण भारत में चन्द्र दर्शन १० दिसं. ✱

✱को होगा),

तृतीया तिथि-क्षय,

भ. २०।५३ उ., ४६।५९ या., ज्येष्ठा में शुक्र ३४।३० शाबान

पचक प्रा. ४८।५, पू. षा. में बुध ५५।०, बलिदान दिवस £

चम्पा ६, गुह ६, £श्री गुरु तेगबहादुर

भ. ३०।४ उ. ५८।३६ या., सं. मूल-धनु में सूर्य ३०।३५ मु.

३०, पुण्य १२।३२ बाद, खर मास प्रा. शत. में मंगल ३९।५८

स्वाती १ में गुरु १३।४७, मु. प्रा., इदुल फित्र (देखें—

भ. ५५।४२ उ., पंचक स. ११।३५,

भ. २६।७ या., मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीता जयन्ती,

•"सन्दिग्ध व्रत पर्व निर्णय" पृष्ठ १६),

सायन मकर में सूर्य ५७।१५, शिशिर ऋतु एवं उत्तरायण=

भ. ३४।४३ उ., शक पौष प्रा., पिशाच-मोचन श्राद्ध,

भ. ६।५८या, उ.षा. में बुध ९।२५, मूल-धनमें शुक्र १०।५,

सत्यव्र. श्री दत्त जयन्ती =प्रा., प्रदोष व्र.

मार्ग. शु. ८ मंगल, इष्ट ५५।२२, कुं. सूर्योदये,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	८	६	७	०	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	१	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

(हेमन्त-शिशिर ऋतु, दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल)

११ दिसं. से रूई, सूत, सूती, ऊनी एवं रेशमी-वस्त्र, तेल, घी तेज हों। सोना, चांदी, खांड, गुड़, में मन्दी का वातावरण बने। १५ दिसं. से तिल, तेल, सरसों, लाल रंग की वस्तुएँ लोहा तथा लोह- [illegible] तथा अन्य [illegible] में तेजी का वातावरण रहे। उड़द, मूंग [illegible] ज्वार, मक्की, बाजरा का भाव सम रहे। जिन व्यापारियों ने पिछली संक्रांति में गेहूँ आदि अनाज खरीदे हों, उन्हें इस संक्रांति में बेचने पर हानि होगी। अतः अन्न के स्टाक को एक मास के बाद [illegible]। २५ दिसं. से रूई, कपास, सोना, चांदी, अलसी आदि वायदे के व्यापार में तेजी के बाद कुछ मन्दी का वातावरण बने।

शकुन से भविष्य विचार—१९ दिसं. को वर्षा हो जाए तो आगे गेहूँ, चने की उपज अच्छी हो। २३ दिसं. को यदि चांद के चारों ओर परिवेष दिखाई दे और [illegible] तो मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ खरीद कर रखने से छठे मास में अच्छा लाभ मिल सकता है। इस पक्ष में तिथि-क्षय छत्र भङ्ग प्रजापीड़ा, दुर्भिक्ष का सूचक है। आकाश-लक्षण—११ से १४ दिसम्बर तक और १७ से २१ दिसं. तक मद्रास, पूर्वी पाकिस्तान ✱

कुं. सूर्योदये मार्ग. शु. १५ मंगल, इष्ट ५५।२३

१० ८ ११ रा.मं. ७गु. १२ ६ १श. ५के. ३ २ ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	८	६	८	०	१०	४
८	१२	२७	७	०	८	२२	२२
३४	४९	४०	४३	५६	४३	१६	१६
१	४७	१०	३९	५७	२९	११	११
६१	४४	७५	९	७५	१	३	३
६	४७	४०	५	२९	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, पौष कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टें. टा. | उदयकालिक | (२४ दिसं. सन् १९६९ [illegible] जन. सन् १९७० ई. तक)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. पौष	अं. दिसं.	रा. पौष	सु. शव्वा.	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१	१	बु.	४४	४७	आर्द्रा	३७	४५	ब्र.	५६	२८	बा.	१२	०	१०	२४	३	१३	मिथुन	७	२१	५	२२	८	८	३८	४२
२५	२	२	गु.	५०	५५	पुन.	४४	५३	ऐं.	५८	२७	तै.	१७	५१	११	२५	४	१४	क. २८।६	७	२२	५	२३	८	९	३९	४९
२५	४	३	शु.	५७	२२	पु.	५२	२९	वै.	६०	०	व.	२४	१३	१२	२६	५	१५	कर्क	७	२२	५	२३	८	१०	४०	५७
२५	५	४	श.	६०	०	आ.	६०	०	.	०	४४	ब.	३०	५५	१३	२७	६	१६	कर्क	७	२२	५	२४	८	११	४२	६
२५	६	४	र.	४	१९	आ.	०	१९	वि.	३	१०	श.	४	१९	१४	२८	७	१७	सि. ०।१९	७	२३	५	२५	८	१२	४३	१५
२५	७	५	चं.	१०	५२	म.	७	५४	प्री.	५	२२	तै.	१०	५२	१५	२९	८	१८	सिंह	७	२३	५	२५	८	१३	४४	२४
२५	८	६	मं.	१६	३५	पू. फा.	१४	४३	आ.	७	०	व.	१६	३५	१६	३०	९	१९	कं. ३१।६	७	२४	५	२६	८	१४	४५	३२
२५	९	७	बु.	२०	५४	उ. फा.	२०	१५	सौ.	७	४४	व.	२०	५४	१७	३१	१०	२०	कन्या	७	२४	५	२७	८	१५	४६	४१
२५	११	८	गु.	२३	२५	ह.	२४	४	शो.	७	१०	कौ.	२३	२५	१८	ज.	११	२१	तु. ५४।५८	७	२४	५	२८	८	१६	४७	४९
२५	१२	९	शु.	२३	४९	चि.	२५	५२	अ.	४	५८	ग.	२३	४९	१९	२	१२	२२	तुला	७	२४	५	२८	८	१७	४८	५९
२५	१३	१०	श.	२२	०	स्वा.	२५	२५	सु.	५५	२८	वि.	२२	०	२०	३	१३	२३	तुला	७	२४	५	२९	८	१८	५०	१०
२५	१४	११	र.	१७	५८	वि.	२२	५४	शू.	४८	१३	बा.	१७	५८	२१	४	१४	२४	वृ. ८।३२	७	२५	५	३०	८	१९	५१	२१
२५	१५	१२	चं.	१२	२	अनु.	१८	३८	गं.	३९	३५	तै.	१२	२	२२	५	१५	२५	वृश्चिक	७	२५	५	३१	८	२०	५२	३१
२५	१६	१३	मं.	४	३५	ज्ये.	१२	४५	वृ.	२९	४८	व.	४	३५	२३	६	१६	२६	ध. १२।४५	७	२५	५	३२	८	२१	५३	४३
अव	म	१४	मं.	५५	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	१७	३०	बु.	४६	४१	मू.	५/४८	४६/१६	ध्रु.	१९	१९	च.	२१	१९	२४	७	१७	२७	धन	७	२५	५	३३	८	२२	५४	५४

ग्रह-दर्शन—२८ दिसं. को शुक्र पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु पूर्व कपाल में काफी ऊपर होगा। सायं मंगल-बुध पश्चिम कपाल में ऊपर नीचे दीखंगे। इसी समय शनि याम्योत्तर-वृत्त की ओर लपक रहा होगा।

क्रिस्मस ईव.

शुक्र वार्द्धक्य प्रा. ५१।३६, मकर में बुध ४८।३७, क्रिस्मसडे,

भ. २४।१३ उ. ५७।३२ या, जोड़ मेला शुरू,

मेला श्री फतेहगढ़ साहब, मेला बाबा हरबल्लभ प्रा. श्रीगणेश व्रत

शुक्र पूर्व में अस्त ५१।३६, पू. षा. में सूर्य ३६।३, जोड़ मेला स. [शु. अ.]

भ. १६।३५ उ. ४८।४५ या.,

ईस्वी सन् १९६९ समाप्त, न्यू. इयर ईव.

जनवरी ईस्वी सन् १९७० प्रा.,

भ. ५२।१५ उ., पू. भा. में मंगल ३२।५, पू. षा. में शुक्र ४५।५२

भ. २२।० या., शनि मार्गी ४८।१०,

बुध वक्री १५।२५, सफला ११ व्र. स.,

सोम प्रदोष व्र.,

भ. ४।३५ उ. ३०।१६ या.,

चतुर्दशी-तिथि-क्षय,

(शिशिर ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण गोल)

पौष कृ. ८ गुरु, इष्ट ५५।१५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	९	६	८	०	१०	४
१७	१९	६	९	१२	८	२१	२१
४४	३२	४	१	१६	३७	४७	४७
९	३२	१०	१७	१८	६	३३	३३
६१	४४	१९	८	७५	०	३	३
१०	४५	४१	१	३०	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२	४	३	२	४	३	२	३
पू. षा.	शत.	उ. षा.	स्वा.	मूल.	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

१० बु. | ८ | ११ रा. म. | सू. ९ श. | ७ गु. | १२ | ६ चं. | १ श. | ५ के. | २ | ४

२४ दिसं. से गेहूँ, जौ, चना आदि अन्न तथा चांदी, सोना, ताम्बा आदि धातु, वस्त्र तथा शेयरों में तेजी हो। सूत-कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी आवे। २९ दिसं. से रूई के वायदे के व्यापार में मन्दी आवे, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बने। अनाज तेज होकर मन्दा हो। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर और सोनामक्खी में कुछ तेजी का वातावरण बने। ३ जन. से ६ दिन में रूई के वायदे में मन्दी होकर फिर तेजी आवेगी। २ मास में तिल, तेल, सरसों, हींग, और मिर्च तेज हों। वायदे के व्यापार में बहुत उथल पुथल होगी; सावधानी से काम लें।

कुं. सूर्योदये

१० बु. | ८ | मं. रा. | ९ सू. शु. | ७ गु. | ६ | १ श. | ३ | ५ के. | २ | ४

पौष कृ. ३० बुध इष्ट, ५५।१३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	९	६	८	०	१०	४
२३	२४	५	९	११	८	२१	२१
५१	०	१५	४७	४९	३७	२८	२८
१२	५३	२७	२५	१८	५२	२८	२८
६१	४४	४८	७	७५	०	३	३
१०	४२	१३	१३	२९	३१	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४	२	३	२	२	३	२	३
पू. षा.	पू. भा.	उ. षा.	स्वा.	पू. षा.	अश्वि.	पू. भा.	पू. फा.

[symbol]प्र., पूर्वी पंजाब एवं राजस्थान में बूंदाबांदी और वर्षा के योग हैं।

शकुन से भविष्य विचार—यदि ३१दिसं. को मेघ गर्जना के साथ वर्षा भी हो, तो वहां वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो, यदि २ जून को पूर्व दिशा में बादल गरजें तो आगे घास और अन्न तेज हों। ७ जनवरी को अधिक वायु चले, ओले गिरें, गर्जना सहित कहीं बिजली गिरे, तो मोती, मूंगा, हीरा आदि जवाहरात खरीदने से पांचवें मास अच्छा लाभ हो। [illegible]—२४ से २७ दिसं. तक और ३० दिसं. से ७ जून तक लंका के पूर्वी छोर, शिलांग हि.[symbol]

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, पौष शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टें.टा. | उदयकालिक | (८ से २२ जन. तक सन् १९७० ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.अं. पौष	जन.	श.मु. पौष	जन.	सङ्क्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१९	१	गु.	३७	१३	उ.षा.	५०	४३	व्या.	[illegible]	[illegible]	कि.	११	५७	२५	८	१८	२८	म.११।२५	७	२५	५	३४	८	२२	५६	५
२५	२१	२	शु.	२८	१	श्र.	४३	३२	व.	४७	११	बा.	२	३७	२६	९	१९	२९	मकर	७	२५	५	३४	८	२४	५७	१५
२५	२३	३	श.	१९	२९	ध.	३७	११	सि.	३७	२३	ग.	१९	२९	२७	१०	२०	जि'	कुं.१०।२२	७	२५	५	३५	८	२५	५८	२५
२५	२५	४	र.	१२	६	श.	३२	०	व्य.	२८	३७	वि.	१२	६	२८	११	२१	२	कुम्भ	७	२५	५	३६	८	२६	५९	३४
२५	२७	५	चं.	६	५	पू.भा.	२८	२१	व.	२१	२	बा.	६	५	२९	१२	२२	३	मी१४।१६	७	२५	५	३६	८	२८	०	४३
२५	३०	६	मं.	१	४२	उ.भा.	२६	२०	प.	१४	४७	तै.	१	४२	मा'	१३	२३	४	मीन	७	२५	५	३७	८	२९	१	५२
अवम		७	मं.	५९	५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३२	८	बु.	५८	१५	रे.	२६	२	शि.	१०	१	वि.	२८	४०	२	१४	२४	५	मे. २६।२	७	२५	५	३८	९	०	३	०
२५	३४	९	गु.	५९	५	अ.	२७	३०	सि.	६	२७	बा.	२८	४०	३	१५	२५	६	मेष	७	२५	५	३९	९	१	४	७
२५	[illegible]	१०	शु.	६०	०	भ.	३०	२६	सा.	४	१७	तै.	३०	१३	४	१६	२६	७	वृ.४६।३०	७	२५	५	४०	९	२	५	१४
२५	४०	१०	श.	१	२२	कृ.	३४	४१	शु.	३	१५	ग.	१	२२	५	१७	२७	८	वृष	७	२४	५	४१	९	३	६	२०
२५	[illegible]	११	र.	५	१	रो.	४०	६	शु.	३	७	वि.	५	१	६	१८	२८	९	वृष	७	२४	५	४२	९	४	७	२३
२५	[illegible]	१२	चं.	९	४०	मृ.	४६	२१	ब्र.	३	५१	बा.	३	४०	७	१९	२९	१०	मि१३।१४	७	२४	५	४३	९	५	८	२७
२५	[illegible]	१३	मं.	१५	६	आ.	५३	१४	ऐं.	५	७	तै.	१५	६	८	२०	३०	११	मिथुन	७	२४	५	४४	९	६	९	२९
२५	५१	१४	बु.	२१	७	पुन.	[illegible]	[illegible]	वै.	६	५२	व.	२१	७	९	२१	मा'	१२	क.१।४५	७	२४	५	४५	९	७	१०	३०
२५	[illegible]	१५	गु.	[illegible]	[illegible]	पुन.	[illegible]	[illegible]	वि.	[illegible]	[illegible]	ब.	[illegible]	[illegible]	१०	[illegible]	२	१३	कर्क	७	२४	५	४६	९	८	११	३१

ग्रह-दर्शन—शुक्र अस्त है। बुध १८ जन. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः गुरु याम्योत्तर-वृत्त के समीप होगा। सायं मंगल पश्चिम-कपाल में और शनि याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा।

बुध पश्चिम मे अस्त ०।४२, अनु. २ में नेपच्यून २८।१२,
चन्द्र-दर्शन, मु. ३०, स्वाती में गुरु ४।१०,
भ. ४५।४७ उ., पञ्चक प्रा. १०।२२, उ. षा. में सूर्य ४०।४७, +
भ. १२।६ या., + जिल्काद मु. प्रा.
व. बुध धनु में ४८।१५, लोहड़ी (पंजाब), खर-मास स.,
भ. ५९।५ उ., स. मकर में सूर्य ५७।५, मु. ३० पुण्य अगले
सप्तमी-तिथि सक्षय, दिन ३७।५ तक, उ.षा. में शुक्र
भ. २८।४० या., पञ्चक स. २६।२,
मीन में मंगल ५७।५२, २१।४०, यूरेनस वक्री १२।५,*
मकर में शुक्र ०।४५, *जन्म दिन श्री गुरु गोविन्दसिंह जी
भ. ३३।१२ उ., मन्वादि (देखें "सन्दिग्धव्रत पर्व-निर्णय पृ. १६)
भ. ५।१ या., बुध पूर्व में उदित २।३२, पुत्रदा ११ व्र. स.,
सोम-प्रदोष व्र., कुम्भ में सूर्य २३।४२,
उ. भा. में मंगल २७।२५, सूर्य अभिजित् में ३०।२, सायन
भ. २१।७ उ., ५४।२० या., शक माघ प्रा.,
सत्य व्र., माघ-स्नान प्रा.,

पौष शु. ८ बुध, इष्ट [illegible] कुं. सूर्योदय

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(शिशिर-ऋतु, उत्तरायण दक्षिण-गोल)

१५ जन से सोना, रुई, लकड़ी, घास और काष्ठ-निर्मित वस्तुएँ तेज हों। चांदी में घटाबढ़ी से पूर्व मन्दी, बाद में तेजी आवे। चौपाए पशुओं के भाव भी तेज रहें। १८ जनवरी से गेहूँ, चना, तिल और लाल मिर्च में तेजी का रुख रहे।

शकुन से भविष्य विचार—८-९ जन. को यदि बादल हों, बिजली चमके, तो वर्षा अच्छी हो, अन्न भी पर्याप्त हो। यदि १३-१४ जन. को मेघ गर्जें, बिजली चमके वा सूर्य के चारों ओर परिवेष दीखे, तो अगले चौमासे में वर्षा अच्छी हो। यदि पूर्वलिखित तीनों बातों में से कोई भी बात न हो तो आगामी वर्ष में दुर्भिक्ष का भय है। यदि २० जन. को वर्षा हो तो गेहूँ के स्टाक से आगे लाभ मिले। यदि २१-२२ जन. को भयंकर बिजली चमके, मेघ गर्जें, वायु अधिक चले, सूर्य चांद के चारों तरफ परिवेष दीखे तो उड़द, मूंग, जौ, चना खरीद कर रखने से दुगने दाम में लाभ मिले।

आकाशलक्षण—१० से १४ जनवरी तक और २० से २४ जनवरी तक लंका, हिमाचल-प्रदेश एवं पूर्वी-पञ्जाब में खण्ड-वृष्टि के योग हैं।

कुं. सूर्योदय — पौष शु. १५ गुरु, इष्ट ५५।१५

११रा. ९बु. ८
१२ मं. १०गु.सू. ७श.
१शु. ४चं.
२ ३ ५के. ६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	६	९	०	१०	४
९	५	२०	११	८	८	२०	२०
७	९	३७	२०	४१	५७	४०	४०
४३	२८	३०	०	०	१९	४६	४६
६१	४४	१०	४	७५	२	३	३
१	२४	०	५६	२३	१२	११	११
	म	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

ग्रह-दर्शन—शुक्र अस्त है। प्रातः बुध पूर्व में एवं गुरु याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा। सायं मंगल पश्चिम-कपाल में और शनि याम्योत्तर-वृत्त से पश्चिम की ओर ढुलका दीखेगा।

दि. मा. घ.	प.	ति.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अं. फाल्गुन	श. माघ	मु. फाल्गुन	सञ्चार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५७	१	शु.	३४	१२	पु.	८	१२	प्री.	११	१६	बा.	०	५२	११	२३	३	१४	कर्क	७	२३	५	४६	९	९	१२	३२	श्रव. में सूर्य ४६।४२, श्रव. में शुक्र ५८।१० जन्मदिन श्रीसुभाषचन्द्र
२६	१	२	श.	४०	५१	आ.	१५	५२	आ.	१३	३६	तै.	७	३२	१२	२४	४	१५	सि१५।५२	७	२३	५	४७	९	१०	१३	३२	बुध-मार्गी ३७।२२, सूर्य अभिजित् से निवृत्त ३९।१०,
२६	३	३	र.	४७	५	म.	२३	२२	सौ.	१५	४५	व.	१३	५८	१३	२५	५	१६	सिंह	७	२३	५	४८	९	११	१४	३१	भ. १३।५८ उ. ४७।५ या.,
२६	६	४	चं.	५२	४३	पू. फा.	३०	२३	शो.	१७	३५	व.	१९	५४	१४	२६	६	१७	कं.२३।१९	७	२२	५	४९	९	१२	१५	२७	श्री गणेश ४ व्र. (संकट-हारिणी), भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	१०	५	मं.	५७	११	उ.फा.	३६	३२	अ.	१८	५०	कौ.	२४	५७	१५	२७	७	१८	कन्या	७	२२	५	५०	९	१३	१६	२४	
२६	१३	६	बु.	६०	०	ह.	४१	२५	सु.	१९	११	ग.	२८	५१	१६	२८	८	१९	कन्या	७	२१	५	५०	९	१४	१७	२०	जन्म-दिन ला. लाजपतराय,
२६	१६	६	गु.	०	३०	चि.	४४	४७	धृ.	१८	२१	व.	०	३०	१७	२९	९	२०	तु. १३।६	७	२१	५	५१	९	१५	१८	१५	भं. ०।३० उ. ३१।१५ या.,
२६	२०	७	शु.	२	०	स्वा.	४६	२०	शू.	१६	७	व.	२	०	१८	३०	१०	२१	तुला	७	२०	५	५२	९	१६	१९	१०	जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, जन्म दिन स्वा.
२६	२३	८	श.	१	३०	वि.	४५	५२	ग.	१२	२५	कौ.	१	३०	१९	३१	११	२२	वृ.३०।५९	७	२०	५	५३	९	१७	२०	४	में राहु पू. फा. २ में केतु ४५।३०, प्रदोष व्र.,
मन्व	म	९	श.	५८	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथि-क्षय, विवेकानन्द, बलिदान दिन श्री म. गान्धी'
२६	२७	१०	र.	५४	३४	अनु.	४३	३१	वृ.	७	७	व.	२६	४५	२०	फ.	१२	२३	वृश्चिक	७	१९	५	५३	९	१८	२०	५८	भ. २६।४५ उ. ५४।३४ या. फरवरी प्रा.,
२६	३१	११	चं.	४८	२३	ज्ये.	३९	२६	ध्रु.	४ ३	२० ७	ब.	२१	२८	२१	२	१३	२४	ध.३९।२६	७	१९	५	५४	९	१९	२१	५०	षट् तिला ११ व्र. स्मा. वै.
२६	३५	१२	मं.	४०	५२	मू.	३३	५२	ह.	४२	५०	कौ.	१४	३७	२२	३	१४	२५	धनु	७	१८	५	५५	९	२०	२२	४२	धनि. में शुक्र ३५।२७, षट् तिला ११ व्र. नि.,
२६	३९	१३	बु.	३२	१३	पू.षा.	२७	११	व.	३२	४२	ग.	६	३३	२३	४	१५	२६	म.४०।२२	७	१७	५	५६	९	२१	२३	३२	भ. ३२।१३ उ. ५७।३७ या., उ. षा. में बुध ४४।४७, शत. ४
२६	४३	१४	गु.	२३	१	उ.षा	१९	५५	सि.	२२	५	श.	२३	१	२४	५	१६	२७	मकर	७	१७	५	५७	९	२२	२४	२१	धनि में सूर्य ५४।५२,
२६	४७	३०	शु.	१३	३३	श्रव.	१२	२३	व्य.	११	१७	ना.	१३	३३	२५	६	१७	२८	कुं.३८।४३	७	१६	५	५८	९	२३	२५	१०	पञ्चक प्रा. ३८।४३, मौनी ३०, प्रयाग-स्नान महोदय-पर्व

माघ कृ. ८ शनि, इष्ट ५५।२५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	६	९	०	१०	४
१८	११	२३	११	१९	९	२०	२०
१६	४८	२३	५८	५९	२०	१२	१२
१९	२	४४	२२	१५	३६	१०	१०
६०	४४	४६	३	७५	३	३	३
५४	९	१०	२५	१९	६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
३	३	४	३	३	३	२	३
श्रव.	उ. भा.	पू. षा.	स्वा.	श्रव.	आश्लि.	पू. भा.	पू. फा.

११रा. ९बु. मं. १२ १० सू. श. ८ १श. ७गु. चं. २ ६ ३ के. ५

(शिशिर-ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण गोल)

२४ जन. से रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन-अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी और ८ दिन में गेहूँ, जौ, चना में कुछ तेजी आवे। २८ जन. से चावल, रूई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग एवं पीपल तेज हों। ३ फरवरी से ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, मूंग, मोठ, रूई, कपास में तेजी का रुख बने।

शकुन से भविष्य विचार—२३ जनवरी को यदि अधिक वायु चले परन्तु बादल न हों तो तेल व सुगन्धित द्रव्य तेज होंगे। २५ जनवरी को यदि मेघ गरजें परन्तु वर्षा न हो, तो गेहूँ एवं जौ के स्टाक से आगे लाभ मिले। यदि २७ जनवरी को वर्षा हो तो आगे नारियल, खोपा वगैरहा तेज हों यदि २८ जन. को आकाश बिल्कुल निर्मल हो, तो आगे कपास में तेजी आवेगी।

आकाश-लक्षण—२६ जनवरी से ३ फरवरी तक कहीं कहीं बादल चाल एवं वर्षा हो।

कुं. सूर्योदये, माघ कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५५।३५,

११रा. १ बु. १२ मं. ८ ६ १० सू. चं. शु. ९श. ७गु. २ ६ ३ ५के.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	६	९	०	१०	४
२४	१६	२८	१२	२७	९	१९	१९
२१	१२	५२	१६	३१	४०	५३	५३
३०	३५	११	७	५	४२	६	६
६०	४४	६४	२	७५	३	३	३
४७	०	४९	१९	१६	४१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
१	४	२	२		३	४	३
धनि.	उ. भा.	पू. षा.	स्वा.	धनि.	आश्लि.	पू. भा.	पू. फा.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, माघ शुक्ल पक्ष २३ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (७ फर. से २१ फर. तक, सन् १९७० ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अं. फर.	श. माघ	मु. जिल्हिज्ज	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	५१	१	श.	४	२८	ध.	[illegible]	[illegible]	व.	[illegible]	[illegible]	व.	४	२८	२६	७	१८	२९	कुम्भ	७	१५	५	५९	९	२४	२५	५७
अव	म	२	श.	५५	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	५५	३	र.	४८	३१	पू. भा.	५२	५८	शि.	४१	२५	तै.	२२	१२	२७	८	१९	जि	मी३९।२०	७	१४	५	५९	९	२५	२६	४२
२६	५९	४	चं.	४२	३५	उ.भा	४८	५६	सि.	३३	२१	व.	१५	३३	२८	९	२०	२	मीन	७	१३	६	०	९	२६	२७	२५
२७	३	५	मं.	३८	२१	रे.	४६	३७	सा.	२६	२७	ब.	१०	२८	२९	१०	२१	३	मे. ४६।३७	७	१३	६	१	९	२७	२८	७
२७	७	६	बु.	३६	०	अ.	४६	११	शु.	२१	२२	कौ.	७	१०	३०	११	२२	४	मेष	७	१२	६	२	९	२८	२८	४८
२७	११	७	गु.	३५	४०	भ.	४७	४०	शु.	१७	४२	ग.	५	५०	फ१	१२	२३	५	मेष	७	११	६	३	९	२९	२९	२६
२७	१५	८	शु.	३७	१७	कृ.	५१	६	ध्रु.	१५	३३	वि.	६	२८	२	१३	२४	६	वृ. ३।३१	७	१०	६	३	१०	०	३०	३
२७	२०	९	श.	४०	३३	रो.	५५	५७	व्या.	१४	४६	बा.	८	५५	३	१४	२५	७	वृष	७	९	६	४	१०	१	३०	३९
२७	२४	१०	र.	४५	१६	मृ.	६०	०	ह.	१५	१०	तै.	१२	५५	४	१५	२६	८	मि. २९।४	७	८	६	५	१०	२	३१	१२
२७	२९	११	चं.	५१	०	मृ.	२	१०	वि.	१६	३१	व.	१८	८	५	१६	२७	९	मिथुन	७	७	६	६	१०	३	३१	४५
२७	३३	१२	मं.	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा.	९	१५	प्री.	१८	२७	ब.	२४	११	६	१७	२८	१०	क. ५९।५७	७	६	६	७	१०	४	३२	१६
२७	३७	१२	बु.	६०	०	पुन.	[illegible]	[illegible]	आ.	२०	[illegible]	कौ.	३०	[illegible]	७	१८	२९	११	कर्क	७	५	६	८	१०	५	३३	४३
२७	४२	१३	गु.	४	८	पु.	[illegible]	[illegible]	सौ.	[illegible]	[illegible]	तै.	८	४	८	१९	३०	१२	कर्क	७	४	६	९	१०	६	३३	१०
२७	४६	१४	शु.	[illegible]	[illegible]	आ	[illegible]	[illegible]	शो.	[illegible]	[illegible]	व.	१०	४०	९	२०	फा	१३	सि२२।१५	७	३	६	१०	१०	७	३३	३५
२७	५१	१५	श.	[illegible]	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	अ.	[illegible]	[illegible]	ब.	[illegible]	[illegible]	१०	२१	२	१४	सिंह	७	२	६	११	१०	८	३३	४८

ग्रह-दर्शन—शुक्र १७ फर. को पश्चिम में उदित होगा। प्रातः गुरु याम्योत्तर-वृत्त से पश्चिम की ओर तथा बुध पूर्व में होगा। सायं मंगल-शनि पश्चिम कपाल में दीखेंगे।

चन्द्र दर्शन मु. १५, रेव. में मंगल ३३।३, मकर में बुध ५८।१८,
द्वितीया तिथि क्षय,
कुम्भ में शुक्र ५४।२५, जिल्हिज मु. प्रा.,
भ. १५।३३ उ. ४२।३५ या., तिल ४,
पञ्चक स. ४६।३७, वसन्त (श्री) पञ्चमी,
अश्वि. ४ मे शनि ५५।१५, रथ-सप्तमी,
भ. ३५।४० उ. सं. कुम्भ में सूर्य ३०।१५, मु. १५, पुण्य
भ. ६।२८ या., भीष्माष्टमी, १३।३५ बाद, मन्वादि,
शत में शुक्र १३।४५. ईदुज्जुहा (बकरीद),
मेला जयन्ती देवी, (वि.मु.मघा) (शु. उ.)
भ. १८।८ उ. ५१।० या., श्रवण में बुध ७।५, जया ११ व्र.स्मा.वै.
शुक्र पश्चिम में उदित ५१।०, जया ११ व्र. नि., भीष्म-द्वादशी,
प्रदोष व्र., ०।२०, वसन्त ऋतु प्रा.,
रात में सूर्य ६।४५, गुरु-वक्री ५१।०, सायन मीन में सूर्य
भ. १०।४० उ. ४३।४६ या., शुक्र बाल्यसमाप्त ५१।०, शक फाल्गुन
माघ-स्नान स., जन्मदिन भक्त-रविदास, (वि.मु.मघा.)

(शिशिर-वसन्त ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण गोल)

७ फर्वरी से पशमीना-ऊन में मन्दी और रुई, कपास, गुड़, राजमाष, मूंग, मोठ, चना एवं अरहर तेज हों। १२ फर्वरी से [illegible], कपूर, [illegible], नमक, मिर्च एवं मसालों का भाव कम, केसर, दाख, [illegible], काजू, छुहारा आदि में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का वातावरण बने।

शकुन से अधिक विचार—१० फर्वरी को यदि उत्तर की वायु चले और गर्मी भी हो तो आगे भाद्रपद में अनावृष्टि हो, अन्न तेज हो। [illegible] फर्वरी को यदि आकाश बादलों से आच्छादित रहे, पूर्वोत्तर की वायु चले, पश्चिम में बिजली की कड़क सुनाई दे, तो आगे अन्न काफी मन्दा होकर फसल अच्छी हो। यदि आकाश निर्मल रहे तो अन्न तेज होगा। १४ फर्वरी को यदि चन्द्रमा के चारों ओर परिवेष दिखाई दे, तो आषाढ़ में अच्छी वर्षा हो। यदि २०-२१ फर्वरी को बादल हों तो अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिले। यदि आकाश बिल्कुल निर्मल हो तो आने वाले आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अन्न सस्ता रहेगा, और वर्षा खूब होगी।

आकाश-लक्षण—७-८ फर. को तथा १६ से २१ फरवरी तक राजस्थान, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, पूर्वी पञ्जाब, पूर्वी हिमाचल प्रदेश में कहीं कहीं वर्षा और बूंदाबांदी के योग हैं।

माघ शु. शुक्र इष्ट [illegible], कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.

कुं. सूर्योदये माघ शु. १५ शनि, इष्ट ५६।१०,

१२म.
१०वृ.
१शु.
११सू. रा.बु.
९
२
८
३
५के.च.
७गु.
४
६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	९	६	१०	०	१०	४
९	२७	१८	१२	१६	१०	१९	१९
३०	८	६	३१	१८	४५	५	५
३३	५०	४४	१७	२५	२३	२३	२३
६०	४३	८७	०	७५	५	३	३
२३	२७	४१	२९	१	१	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीख प्र. फाल्गु.	अं. फर.	रा. फाल्गु.	मु. जिल्हिज	चन्द्र संचार	भा. स्टै. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
२७	५५	१	र.	३०	३२	पू.फा.	४५	५५	सु.	२९	११	कौ.	२२	३२	११	२२	३	१५	सिंह	७	१	६	११	१०	९	३४	२१	+ में डूब रहा होगा।
२८	०	२	चं.	२७	२७	उ.फा.	५१	४६	धृ.	३०	१०	ग.	२७	२७	१२	२३	४	१६	कं. २।२३	७	०	६	१२	१०	१०	३४	४२	भ. ५९।२५ उ.,
२८	४	३	मं.	३१	२३	ह.	५६	३८	शू.	३०	२५	वि.	३१	२३	१३	२४	५	१७	कन्या	६	५९	६	१३	१०	११	३५	२	भ. ३१।२३ या., पू. भा. में शुक्र ५३।३५, श्री गणेश ४ व्र.,
२८	९	४	बु.	३४	११	चि.	६०	०	गं.	२९	५०	ब.	२	४७	१४	२५	६	१८	तु. २८।२७	६	५८	६	१४	१०	१२	३५	१९	अश्वि. मेष में मंगल ५२।५७, धनि में बुध २७।२०,
२८	१३	५	गु.	३५	३७	चि.	०	१५	व.	२८	१२	कौ.	४	५४	१५	२६	७	१९	तुला	६	५७	६	१४	१०	१३	३५	३६	
२८	१८	६	शु.	३५	४१	स्वा.	२	३७	ध्रु.	२५	३३	ग.	५	३९	१६	२७	८	२०	वृ. ४८।१७	६	५६	६	१५	१०	१४	३५	५०	भ. ३५।४१ उ.,
२८	२३	७	श.	३४	१०	वि.	३	३०	व्या	२१	४१	वि.	४	५५	१७	२८	९	२१	वृश्चिक	६	५५	६	१६	१०	१५	३६	३	भ. ४।५५ या., (वि. मु. अनु.)
२८	२७	८	र.	३१	८	अनु.	२	५५	ह.	१६	३५	वा.	२	३९	१८	मा. १	१०	२२	वृश्चिक	६	५४	६	१७	१०	१६	३६	१४	कुम्भ में बुध ४५।०, मार्च प्रा.,
२८	३२	९	चं.	२६	३७	ज्ये.	२७	५१/५७	व.	१०	२०	ग.	२६	३७	१९	२	११	२३	ध. ०।५१	६	५३	६	१८	१०	१७	३६	२५	भ. ५३।४२ उ., (वि. मु. मूल) १६।५३.
२८	३७	१०	मं.	२०	४८	पू.षा.	५२	३८	सि.	२४	३६	वि.	२०	४८	२०	३	१२	२४	धनु	६	५२	६	१८	१०	१८	३६	३४	भ. २०।४८ या., बुध पूर्व में अस्त ४६।२७, नेप्च्यून वक्री
२८	४१	११	बु.	१३	५१	उ.षा.	४७	०	व.	४५	३०	बा.	१३	५१	२१	४	१३	२५	म. ६।१३	६	५१	६	१९	१०	१९	३६	४३	पू. भा. में सूर्य २३।१५, मीन में शुक्र ५४।३०, विजया ११व्र.स
२८	४६	१२	गु.	६	६	श्रव.	४०	४२	प.	३५	५०	तै.	६	६	२२	५	१४	२६	मकर	६	५०	६	१९	१०	२०	३६	४९	भ. ५७।४२ उ., शतभिषा में बुध ५०।३७, प्रदोष व्र.,
अव	म	१३	गु.	५७	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय,
२८	५०	१४	शु.	४९	१६	ध.	३४	११	शि.	२५	५८	वि.	२३	२९	२३	६	१५	२७	कु. ७।२६	६	४९	६	२०	१०	२१	३६	५३	भ. २३:२९ या., पञ्चक प्रा., ७।२६, श्री महाशिव रात्रि व्र.,
२८	५५	३०	श.	४१	३	श.	२७	४२	सि.	१६	७	च.	१५	१०	२४	७	१६	२८	कुम्भ	६	४८	६	२१	१०	२२	३६	५५	उ. भा. में शुक्र ३५।०, शनैश्चरी ३०,

ग्रह-दर्शन—बुध ३ मार्च को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु पश्चिम-कपाल में दीखेगा। सायं शनि-मंगल पश्चिम-कपाल में ऊपर-नीचे चमक रहे होंगे। इस समय शुक्र पश्चिम + में डूब रहा होगा।

(वसन्त ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण गोल)

फाल्गु. कृ. ८ रवि. इष्ट ५६।३०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	६	१०	०	१०	४
१७	२	०	१२	२६	११	१८	१८
३२	५५	१८	२२	१८	२७	३९	३९
५६	२४	१२	७	४	२६	५७	५७
६०	४३	९६	१	७४	५	३	३
१२	१०	११	५९	५३	३५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	३	२	२	४	४	२
शत.	अश्वि.	धनि.	स्वा.	पू.भा.	अश्वि.	शत.	पू.फा.

१२
१०बु.
१मं. श.
११ सू. चं. रा. शु.
९
२
८ नें.
३
५के.
७गु.
४
६

यहां फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पू. फा. नक्षत्र का योग है जो कि आगे सुभिक्ष का सूचक है। २५ फर. से गेहूँ आदि प्रत्येक प्रकार का अनाज मन्दा रहे। सोना, चान्दी आदि धातु मूंगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना तथा गुड़, खाण्ड रसादि पदार्थ तेज हों। ५ मार्च से १५ दिन के अन्दर चान्दी में पहले साधारण मन्दी आकर तेजी आवे। घी, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्डी और रूई में तेजी आवे।

कुं. सूर्योदय फाल्गु. कृ. ३० शनि, इष्ट ५६।४५,

शु.१२
१०
१मं. श.
११ सू. बु. चं. रा.
९
२
८
३
५के.
७गु.
४
६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	६	११	०	१०	४
२३	७	१०	१२	३	१२	१८	१८
३३	१३	११	७	४७	२	२०	२०
४२	४९	२५	२६	६	०	५३	५३
६०	४२	[illegible]	३	७४	५	३	३
१	५६	४०	५	४६	५८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	२	२	१	४	४	२
पू.भा.	अश्वि.	शत.	स्वा.	उ. भा.	अश्वि.	शत.	पू.फा.

शकुन से भविष्य विचार—२४ फरवरी को यदि वायु के साथ मेघ दीखें, तो आगे आश्विन शुक्ल तृतीया को दिन-रात वर्षा होगी। २६ फरवरी को यदि वर्षा हो, बिजली चमके, तो वैशाख में अन्न मन्दा रहेगा। ७ मार्च को प्रातः यदि पश्चिम में इन्द्र धनुष दीखें तो शीघ्र वर्षा हो। यदि ७ मार्च को ही आकाश के मध्य भाग में इन्द्र धनुष दिखाई दे, तो अनाज के स्टाक वाले हानि में रहें।

आकाश-लक्षण—२२ फर. से २७ फरवरी तक बिहार, आसाम, पू. पाकिस्तान के उत्तरी भाग में वर्षा के योग हैं। हिमाचल-प्रदेश तथा पञ्जाब में भी कहीं कहीं बूंदाबांदी संभव है।

श्री वि. सं. २०२६, शाके १८९१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदयकालिक | (८ मार्च से २३ मार्च तक सन १९७० ई.)

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. ज़िल्हिज्ज	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा.अं.क.वि.
२९ ०	१	र.	३३ २६	पू.भा.	२१ ४७	सा.	[illegible]	कि.	७ १५	२५	८	१७	२९	मी.८।१६	६ ४६	६ २१	१० २३ ३६ ५८
२९ ५	२	चं.	२६ ४५	उ.भा.	१६ ४५	शु.	४९ ५२	कौ.	२६ ४५	२६	९	१८	३०	मीन	६ ४५	६ २२	१० २४ ३६ ५२
२९ १०	३	मं.	२१ २५	रे.	१३ ०	ब्र.	४३ ११	ग.	२१ २५	२७	१०	१९	मु.१	मे. १३।०	६ ४३	६ २३	१० २५ ३६ ४६
२९ १४	४	बु.	१७ ५०	अ.	१० ५०	ऐं.	३७ ५४	वि.	१७ ५०	२८	११	२०	२	मेष	६ ४२	६ २४	१० २६ ३६ ४०
२९ १९	५	गु.	१६ ३	भ.	१० ३१	वै.	३४ ९	बा.	१६ ३	२९	१२	२१	३	वृ.२५।५६	६ ४१	६ २५	१० २७ ३६ ३२
२९ २३	६	शु.	१६ २१	कृ.	१२ १२	वि.	३१ ५९	तै.	१६ २१	३०	१३	२२	४	वृष	६ ४०	६ २५	१० २८ ३६ २१
२९ २८	७	श.	१८ ३०	रो.	१५ ५०	प्री.	३१ २०	व.	१८ ३०	चै.'१	१४	२३	५	मि.४८।२४	६ ३९	६ २६	१० २९ ३६ ९
२९ ३३	८	र.	२२ ३१	मृ.	२० ५८	आ.	३१ ५६	व.	२२ ३१	२	१५	२४	६	मिथुन	६ ३८	६ २६	११ ० ३५ १३
२९ ३८	९	चं.	२७ ५०	आर्द्रा	२७ ३२	सौ.	३३ ३५	कौ.	२७ ५०	३	१६	२५	७	मिथुन	६ ३६	६ २७	११ १ ३५ ३६
२९ ४२	१०	मं.	[illegible]	पुन.	[illegible]	शो.	३५ ५१	तै.	१ ०	४	१७	२६	८	क. १८।९	६ ३५	६ २७	११ २ ३५ १७
[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	पु.	[illegible]	अ.	३८ २५	व.	७ ३०	५	१८	२७	९	कर्क	६ ३४	६ २८	११ ३ ३४ ५५
२९ ५१	१२	[illegible]	[illegible]	आ.	[illegible]	सु.	४० ५०	व.	१४ ६	६	१९	२८	१०	सि.५०।३५	६ ३२	६ २९	११ ४ ३४ ३२
[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ.	२० १९	७	२०	२९	११	सिंह	६ ३१	६ ३०	११ ५ ३४ ६
[illegible]	१४	[illegible]	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग.	२५ ४८	८	२१	३०	१२	सिंह	६ २९	६ ३०	११ ६ ३३ ३८
[illegible]	१५	[illegible]	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि.	३० १९	९	२२	चै.'१	१३	कं.२०।१९	६ २८	६ ३१	११ ७ ३३ ८
[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२३	२	१४	कन्या	६ २७	६ ३२	११ ८ ३२ ३७

ग्रह-दर्शन—बुध अस्त है। इस पक्ष में केवल गुरु ही देखा जा सकेगा, जो पश्चिम में होगा। सायं मंगल और शनि पश्चिम में एक दूसरे के समीप देखे जा सकेंगे। इस*

*समय शुक्र पश्चिम क्षितिज में होगा। १५ मार्च को मंगल-शनि+ +परस्पर काफी समीप होंगे।

चन्द्र दर्शन, मु. ३०, (वि.मु.रेख.) ✽सन् १३९० प्रा.,

भ. ४९।३८ उ., पञ्चक स. १३।०, मुहर्रम मु. १ प्रा. हिजरी ✽

भ. १७।५० या.,

()मि. के बाद), शक चैत्र १८९२ प्रा., मन्वादि,

पू. भा. में बुध ३२।२५,

भ. १८।३० उ. ५७।३० या., खर-मासारम्भ सं. मीन में सूर्य ✽

होलाष्टक प्रा., ✽२३।५५, मु. ३० पुण्य ७।५५ बाद,

भरणी में मंगल ३०।५०,

उ. भा. में सूर्य ४८।५५,...शुक्र १८।३५, आमला ११ व्र. स.,

भ. ७।३० उ. ४०।५१ या., मीन में बुध ५५।१०, रेव में...

महर्रम (ताजिया) ✽सूर्य ५९।४८, उत्तर गोल प्रा., प्रदोषव्र.

उ. भा. में बुध ३८।४७, भर. में शनि १८।२२ सायन मेष में ✽

भ. ५८।२० उ., शक सं. १८९१ स., महाविषुव दिन,

भ. ३०।१९ या., सत्य व्र. होलिका दहन (सायं ६ घं. २६ ()

होलाष्टक स., धुलेण्डी,

(वसन्त ऋतु उत्तरायण, दक्षिण उत्तरगोल)

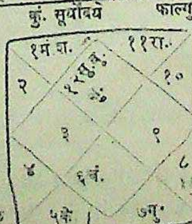
फाल्गु. शु. ८ रवि. इष्ट [illegible], कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	[illegible]	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

९ मार्च से वस्त्र, रुई, सूत, सोना, रंग और अन्न के भाव में तेजी का रुख रहेगा। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दे का प्रभाव रहे। १४ मार्च से चांदी, नारियल, जायफल, इलायची, लौंग, मेवा व चौपाए पशु मन्दे हों। तांबा, पीतल व कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों में घटाबढ़ी रहे। १७ मार्च से ३ दिन के अन्दर चांदी और [illegible] में तेजी का झटका आवे।

शकुन व वर्षा विचार—१२ मार्च को यदि बादल गर्जे, बिजली चमके तो आगे वैशाख में अन्न मन्दे रहेंगे। १७ एवं १८ मार्च को यदि बादल दीखें तो आश्विन की चतुर्थी और पञ्चमी को वर्षा होती है। यदि २३ मार्च को वर्षा हो तो अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ रहे। होलिका-दहन के अवसर पर अग्नि-शिखा यदि सीधी आकाश की ओर जाए तो अशान्ति एवं युद्ध भय की सूचक है। आकाश-लक्षण—१९ से २३ मार्च तक तूफान, बिजली, आकाश में वर्षा के योग हैं। हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं [illegible] में कहीं कहीं बूंदाबांदी हो।

कुं. सूर्योदये



फाल्गु. शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५७।३७,

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	११	०	११	६	११	०	१०	४
	९	१८	९	१०	२३	१३	१७	१७
	२९	३५	५२	५८	४०	४४	२९	२१
	४१	५१	२०	७	१०	३४	५९	५९
	५९	४२	११०	५	७४	६	३	३
	२७	१६	२१	३७	१९	५१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२६; शाक १८९१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | उदयकालिक | (... तक. सन् १९७० ई.)

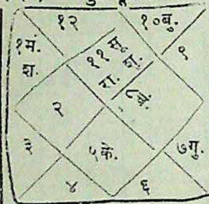
दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. फाल्गुन	अं. फर.	रा. फाल्गुन	मु. जिलहिज	संचार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
२७	५५	१	र.	२०	३२	पू.फा.	४५	५५	सु.	२९	११	कौ.	२२	३२	११	२२	३	१५	सिंह	७	१	६	११	१०	९	३४	२१	
२८	१	२	चं.	२७	२७	उ.फा.	५१	४६	धृ.	३०	१०	ग.	२७	२७	१२	२३	४	१६	कं. २।२३	७	०	६	१२	१०	१०	३४	४२	भ. ५९।२५ उ.,
२८	४	३	मं.	३१	२३	ह.	५६	३८	श.	३०	२५	वि.	३१	२३	१३	२४	५	१७	कन्या	६	५९	६	१३	१०	११	३५	२	भ. ३१।२३ या., पू. भा. में शुक्र ५३।३५, श्री गणेश ४ व्र.,
२८	९	४	बु.	३४	११	चि.	६०	०	गं.	२९	५०	ब.	२	४७	१४	२५	६	१८	तु. २८।२७	६	५८	६	१४	१०	१२	३५	१९	अश्वि. मेष में मंगल ५२।५७, धनि में बुध २७।२०,
२८	१३	५	गु.	३५	३७	चि.	०	१५	वृ.	२८	१२	कौ.	४	५४	१५	२६	७	१९	तुला	६	५७	६	१४	१०	१३	३५	३६	
२८	१८	६	शु.	३५	४१	स्वा.	२	३७	ध्रु.	२५	३३	ग.	५	३९	१६	२७	८	२०	वृ. ४८।१७	६	५६	६	१५	१०	१४	३५	५०	भ. ३५।४१ उ.,
२८	२३	७	श.	३४	१०	वि.	३	३०	व्या	२१	४१	वि.	४	५५	१७	२८	९	२१	वृश्चिक	६	५५	६	१६	१०	१५	३६	३	भ. ४।५५ या., (वि. मु. अनु.)
२८	२७	८	र.	३१	८	अनु.	२	५५	ह.	१६	३५	बा.	२	३९	१८	मा	१०	२२	वृश्चिक	६	५४	६	१७	१०	१६	३६	१४	कुम्भ में बुध ४५।०, मार्च प्रा.,
२८	३२	९	चं.	२६	३७	ज्ये.	५७	५९ १७	व.	१०	२०	ग.	२६	३७	१९	२	११	२३	ध. ०।५१	६	५३	६	१८	१०	१७	३६	२५	भ. ५३।४२ उ., (वि. मु. मूल) १६।५३.
२८	३६	१०	मं.	२०	४८	पू.षा.	५२	३८	सि.	५४ ३	५५ ३६	वि.	२०	४८	२०	३	१२	२४	धनु	६	५२	६	१८	१०	१८	३६	३४	भ. २०।४८ या., बुध पूर्व में अस्त ४६।२७, नेप्च्यून वक्री
२८	४१	११	बु.	१३	५१	उ.षा.	४७	०	व.	४५	३०	बा.	१३	५१	२१	४	१३	२५	म. ६।१३	६	५१	६	१९	१०	१९	३६	४३	पू. भा. में सूर्य २३।१५, मीन में शुक्र ५४।३०, विजया ११व्र.स
२८	४६	१२	गु.	६	६	श्रव.	४०	४२	प.	३५	५०	तै.	६	६	२२	५	१४	२६	मकर	६	५०	६	१९	१०	२०	३६	४९	भ. ५७।४२ उ., शतभिषा में बुध ५०।३७, प्रदोष व्र.,
अव	म	१३	गु.	५७	४२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय,
२८	५०	१४	शु.	४९	१६	ध.	३४	११	शि.	२५	५८	वि.	२३	२९	२३	६	१५	२७	कु. ७।२६	६	४९	६	२०	१०	२१	३६	५३	भ. २३:२९ या., पञ्चक प्रा., ७।२६, श्री महाशिव रात्रि व्र.,
२८	५५	३०	श.	४१	३	श.	२७	४२	सि.	१६	७	च.	१५	१०	२४	७	१६	२८	कुम्भ	६	४८	६	२१	१०	२२	३६	५५	उ. भा. में शुक्र ३५।०, शनैश्चरी ३०,

ग्रह-दर्शन—बुध ३ मार्च को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु पश्चिम-कपाल में दीखेगा। सायं शनि-मंगल पश्चिम-कपाल में ऊपर-नीचे चमक रहे होंगे। इस समय शुक्र पश्चिम + + में डूब रहा होगा।

(वसन्त ऋतु, उत्तरायण, दक्षिण गोल)

फाल्गु. कृ. ८ रवि. इष्ट ५६।३०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	६	१०	०	१०	४
१७	२	०	१२	२६	११	१८	१८
३२	५५	१८	२२	१८	२७	३९	३९
५६	२४	१२	७	४	२६	५७	५७
६०	४३	९६	१	७४	५	३	३
१२	१०	११	५९	५३	३५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शत.	अश्वि.	धनि.	स्वा.	पू.भा.	अश्वि.	शत.	पू.फा.



यहां फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पू. फा. नक्षत्र का योग है जो कि आगे सुभिक्ष का सूचक है। २५ फर. से गेहूं आदि प्रत्येक प्रकार का अनाज मन्दा रहे। सोना, चान्दी आदि धातु मूंगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना तथा गुड़, खाण्ड रसादि पदार्थ तेज हों। ५ मार्च से १५ दिन के अन्दर चान्दी में पहले साधारण मन्दी आकर तेजी आवे। घी, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्डी और रूई में तेजी आवे।

कुं. सूर्योदय फाल्गु. कृ. ३० शनि, इष्ट ५६।४५,

शु.१२ | १० | १मं. श. | सू.बु.चं. ११ रा. | ९ | २ | ८ | ३ | ५के. | ७गु. | ४ | ६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	६	११	०	१०	४
२३	७	१०	१२	३	१२	१८	१८
३३	१३	११	७	४७	२	२०	२०
४२	४९	२५	२६	६	०	५३	५३
६०	४२	[illegible]	३	७४	५	३	३
१	५६	४०	५	४६	५८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	ब.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पू.भा.	अश्वि.	शत.	स्वा.	उ.भा.	अश्वि.	शत.	पू.फा.

शकुन से भविष्य विचार—२४ फरवरी को यदि वायु के साथ मेघ दीखें, तो आगे आश्विन शुक्ल तृतीया को दिन-रात वर्षा होगी। २६ फरवरी को यदि वर्षा हो, बिजली चमके, तो वैशाख में अन्न मन्दा रहेगा। ७ मार्च को प्रातः यदि पश्चिम में इन्द्र धनुष दीखें तो शीघ्र वर्षा हो। यदि ७ मार्च को ही आकाश के मध्य भाग में इन्द्र धनुष दिखाई दे, तो अनाज के स्टाक वाले हानि में रहें।

आकाश-लक्षण—२२ फर. से २७ फरवरी तक बिहार, आसाम, पू. पाकिस्तान के उत्तरी भाग में वर्षा के योग हैं। हिमांचल-प्रदेश तथा पञ्जाब में भी कहीं कहीं बूंदाबांदी संभव है।

श्री वि. सं. २०२६, शाक १८९१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५। तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टें. टा. | उदयकालिक | (८ मार्च से २३ मार्च तक सन १९७० ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. जिल्हिज	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२९	०	१	र.	३३	२६	पू.भा.	२१	४७	सा.	५७	४६	कि.	७	१५	२५	८	१७	२९	मी.८।१६	६	४६	६	२१	१०	२३	३६	५४
२९	५	२	चं.	२६	४५	उ.भा.	१६	४५	शु.	४९	५२	कौ.	२६	४५	२६	९	१८	३०	मीन	६	४५	६	२२	१०	२४	३६	५२
२९	१०	३	मं.	२१	२५	रे.	१३	०	ब्र.	४३	११	ग.	२१	२५	२७	१०	१९	मु.१	मे. १३।०	६	४३	६	२३	१०	२५	३६	४६
२९	१४	४	बु.	१७	५०	अ.	१०	५०	ऐं.	३७	५४	वि.	१७	५०	२८	११	२०	२	मेष	६	४२	६	२४	१०	२६	३६	४०
२९	१९	५	गु.	१६	३	भ.	१०	३१	वै.	३४	९	वा.	१६	३	२९	१२	२१	३	वृ.२५।५६	६	४१	६	२५	१०	२७	३६	३२
२९	२३	६	शु.	१६	२१	कृ.	१२	१२	वि.	३१	५९	तै.	१६	२१	३०	१३	२२	४	वृष	६	४०	६	२५	१०	२८	३६	२१
२९	२८	७	श.	१८	३०	रो.	१५	५०	प्री.	३१	२०	व.	१८	३०	चै.	१४	२३	५	मि४८।२४	६	३९	६	२६	१०	२९	३६	९
२९	३३	८	र.	२२	३१	मृ.	२०	५८	आ.	३१	५६	ब.	२२	३१	२	१५	२४	६	मिथुन	६	३८	६	२६	११	०	३५	१३
२९	३८	९	चं.	२७	५०	आर्द्रा	२७	३२	सौ.	३३	३५	कौ.	२७	५०	३	१६	२५	७	मिथुन	६	३६	६	२७	११	१	३५	३६
२९	४२	१०	मं.	३४	१०	पुन.	३५	२	शो.	३५	५१	तै.	१	०	४	१७	२६	८	क. १८।१९	६	३५	६	२७	११	२	३५	१७
२९	४७	११	[illegible]	४०	५१	पु.	४२	५६	अ.	३८	२५	व.	७	३०	५	१८	२७	९	कर्क	६	३४	६	२८	११	३	३४	५५
२९	५१	१२	[illegible]	४७	२२	आ.	५०	३४	सु.	४०	५०	व.	१४	६	६	१९	२८	१०	सिं५०।३५	६	३२	६	२९	११	४	३४	३२
२९	५६	१३	[illegible]	[illegible]	१६	म.	[illegible]	४०	[illegible]	४२	५८	कौ.	२०	१९	७	२०	२९	११	सिंह	६	३१	६	३०	११	५	३४	६
३०	[illegible]	१४	[illegible]	५८	२०	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२	ग.	२५	४८	८	२१	३०	१२	सिंह	६	२९	६	३०	११	६	३३	३८
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	वि.	३०	१९	९	२२	चै.	१३	कं.२०।१९	६	२८	६	३१	११	७	३३	८
३०	१०	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व.	२	१८	१०	२३	२	१४	कन्या	६	२७	६	३२	११	८	३२	३७

ग्रह-दर्शन—बुध अस्त है। इस पक्ष में केवल गुरु ही देखा जा सकेगा, जो पश्चिम में होगा। सायं मंगल और शनि पश्चिम में एक दूसरे के समीप देखे जा सकेंगे। इस*

*समय शुक्र पश्चिम क्षितिज में होगा। १५ मार्च को मंगल-शनि+ +परस्पर काफी समीप होंगे।

चन्द्र दर्शन, मु. ३०, (वि.मु.रेव.) ✽सन् १३९० प्रा., भ. ४९।३८ उ., पञ्चक स. १३।०, मुहर्रम मु. १ प्रा. हिजरी ✽ भ. १७।५० या., ()मि. के बाद), शक चैत्र १८९२ प्रा., मन्वादि, पू. भा. में बुध ३२।२५, भ. १८।३० उ. ५०।३० या., खर-मासारम्भ सं. मीन में सूर्य ✽ होलाष्टक प्रा., ✽२३।५५, मु. ३० पुण्य ७।५५ बाद, भरणी में मंगल ३०।५०, उ. भा. में सूर्य ४४।५५,...शुक्र १८।३५, आमला ११ व्र. स., भ. ७।३० उ. ४०।५१ या., मीन में बुध ५५।१०, रेव में... मुहर्रम (ताजिया) ✽सूर्य ५९।४८, उत्तर गोल प्रा., प्रदोषव्र. उ. भा. में बुध ३८।४७, भर. में शनि १८।२२ सायन मेष में ✽ भ. ५८।२० उ., शक सं. १८९१ स., महाविषुव दिन, भ. ३०।१९ या., सत्य व्र. होलिका दहन (सायं ६ घं. २६ () होलाष्टक स., धुलेण्डी,

(वसन्त ऋतु उत्तरायण, दक्षिण उत्तरगोल)

फाल्गु. शु. ८ रवि. इष्ट [illegible], कुं सूर्योदय

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९ मार्च से वस्त्र, रूई, सूत, सोना, रंग और अन्न के भाव में तेजी का रुख रहेगा। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़, [illegible] में मन्दे का प्रभाव रहे। १४ मार्च से चांदी, [illegible], [illegible], इलायची, लौंग, मेवा व चौपाए पशु [illegible] हों। सोना, पीतल व कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों में घटाबढ़ी रहे। १७ मार्च से ३ दिन के अन्दर चांदी और [illegible] में तेजी का झटका आवे।

शकुन से भविष्य विचार—१२ मार्च को यदि बादल [illegible] में अन्न [illegible]। १७ एवं १८ मार्च को यदि बादल दीखें तो आश्विन की [illegible] अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ रहे। [illegible] की वर्षा होती है। यदि २३ मार्च को वर्षा हो तो [illegible] की ओर जाए तो अशान्ति एवं युद्ध भय की सूचक [illegible] होलिका-दहन के अवसर पर [illegible] वर्षा के योग हैं। हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं [illegible] है। आकाश-लक्षण—१६ से २३ मार्च तक [illegible], आकाश में [illegible] [illegible] में कहीं कहीं बूंदाबांदी हो।

कुं. सूर्योदय — फाल्गु. शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५७।३७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	६	११	०	१०	४
९	१८	९	१०	२३	१३	१७	१७
२९	३५	५२	५८	४०	४४	२९	२९
४१	५१	२०	७	१०	३४	५९	५९
५९	४२	११°	५	७४	६	३	३
२७	१६	३१	३७	१९	५१	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. स. २०२६, शाक १८९१, चैत्र कृष्ण पक्ष २६ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टे. टा. | उदयकालिक | (२४ मार्च से ६ अप्रैल तक, सन १९७० ई.)

द.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	१५	१	मं.	५	५	ह.	१३	१५	ध्रु.	४३	३५	कौ.	५	५	११	२४	३	१५	तु.४४।४१	६	२६	६	३३	११	९	३२	३
३०	१९	२	बु.	६	४१	चि.	१६	७	व्या.	४१	३३	ग.	६	४१	१२	२५	४	१६	तुला	६	२५	६	३३	११	१०	३१	२६
३०	२४	३	गु.	७	०	स्वा.	१७	५४	ह.	३८	३२	वि.	७	०	१३	२६	५	१७	तुला	६	२४	६	३४	११	११	३०	४८
३०	२९	४	शु.	६	१५	वि.	१८	३२	व.	३४	४२	बा.	६	१५	१४	२७	६	१८	वृ. ३।२३	६	२३	६	३४	११	१२	३०	८
३०	३४	५	श.	४	१६	अनु.	१८	१४	सि.	३०	५	तै.	४	१६	१५	२८	७	१९	वृश्चिक	६	२२	६	३५	११	१३	२९	२५
३०	३८	६	र.	१	३५	ज्ये.	१६	५२	व्य.	२४	४०	व.	१	३५	१६	२९	८	२०	ध.१६।५२	६	२०	६	३५	११	१४	२८	४०
अव	म	७	र.	५७	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	४३	८	चं.	५३	११	मू.	१४	४१	व.	१८	३१	बा.	२५	३०	१७	३०	९	२१	धनु	६	१९	६	३६	११	१५	२७	५५
३०	४७	९	मं.	४७	४२	पू.षा.	११	३७	प.	११	४२	तै.	२०	२६	१८	३१	१०	२२	म.२५।४०	६	१८	६	३६	११	१६	२७	८
३०	५२	१०	बु.	४१	४५	उ.षा.	७	५०	शि.	५४/६	१७/२१	व.	१४	४३	१९	अ.	११	२३	मकर	६	१७	६	३७	११	१७	२६	२१
३०	५७	११	गु.	३५	१०	श्रव.	५३/२	२६/३२	सा.	४८	२	ब.	८	२८	२०	२	१२	२४	कुं.३०।५९	६	१६	६	३८	११	१८	२५	३०
३१	१	१२	शु.	२९	११	श.	५३	३२	शु.	३९	३५	कौ.	२	१०	२१	३	१३	२५	कुम्भ	६	१५	६	३९	११	१९	२४	३८
३१	५	१३	श.	२१	२६	पू.भा.	४८	४०	शु.	३१	४	व.	२१	२६	२२	४	१४	२६	मी.३४।५३	६	१३	६	३९	११	२०	२३	४४
३१	१०	१४	र.	१४	४५	उ.भा.	४४	९	ब्र.	२२	५४	श.	१४	४५	२३	५	१५	२७	मीन	६	१२	६	४०	११	२१	२२	४७
३१	१४	३०	चं.	८	३९	रे.	४०	२३	ऐं.	१५	१३	ना.	८	३९	२४	६	१६	२८	मे. ४०।२३	६	११	६	४०	११	२२	२१	४९

ग्रह-दर्शन—बुध २ अप्रैल को पश्चिम में उदित होगा, प्रातः गुरु पश्चिम में चमक रहा होगा। सायं मंगल शनि पश्चिम में ऊपर-नीचे होंगे। इस समय शुक्र इन दोनों के नीचे होगा।

होला, मेला श्री आनन्दपुर साहिब,

भ. ३६।५० उ.,

भ. ७।० या., श्री गणेश ४ व्र., मेला श्री शीतला माता कुराली,

रेवती में बुध १९।२५, व. यूरेनस हस्त १ में २५।५, गुडफ्राईडे,

भ. १।३५ उ. २९।४१ या., अश्वि मेष में शुक्र ४।४५,

ईस्टर सण्डे,

+०।५, पाप मोचिनी ११ व्र. स.,

रेवती में सूर्य १३।२,

भ. १४।४३ उ. ४१।४५ या. अप्रैल प्रा.,

पञ्चक प्रा. ३०।५९, अश्वि मेष में बुध ५३।४५, व. गुरु

प्रदोष व्र., स्वाती १ में २५।१५, बुध पश्चिम में उदित+

भ. २१।२६ उ. ४८।५या., कृत्ति. में मंगल २८।५०,

मेला पिहोवा, मन्वादि, २०२६ समाप्त,

सोमवती ३०, पञ्चक स. ४०।२३, चान्द्र संवत्सर

(वसन्त ऋतु, उत्तरायण, उत्तर गोल)

चैत्र कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५७।५८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	६	०	०	१०	४
१६	२३	२४	१०	२	१४	१७	१७
२५	३०	५	१६	१९	३३	७	७
९	५४	५४	५	५७	२२	४५	४५
५९	४२	१११	६	७४	७	३	३
१५	०	५०	२८	८	७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	भर. ४	रेव. ३	स्वा. २	अश्वि. ४	भ. २	शत. ४	पू.फा. २

कुं. सूर्योदये

मशश, ११रा., १२सू.चं., १०, ९शु., २, ३, ४, ६, ८, ५के, ७गु.

२९ मार्च से जौ, चना, गेहूँ, आदि अन्न तथा घी में तेजीका रुख रहे। सोना, चांदी में भी तेजी चलेगी। गुड़ शक्कर पाट, वारदाना, आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। ऊन, तिल, तेल, सरसों, एरण्डी में कुछ मन्दी का वातावरण रहेगा। ३ अप्रैल से मूंगा, मोती, जवाहरात, कपास, रूई में कुछ मन्दी का प्रभाव बनेगा। पक्षान्त में अनाज के भाव में अच्छी मन्दी का योग है। **शकुन से भविष्य विचार**–२७-२८ मार्च को यदि वर्षायुक्त पवन चले, तो आगे वर्षा काल में वर्षा की कमी के कारण अन्न तेज रहे। २९ मार्च को यदि आकाश मेघों से ढका रहे तो लाल-वस्तुओं के भावों में निस्सन्देह मन्दी होगी। ३० मार्च और ५ अप्रैल को अगर आकाश बादलों से ढका रहे, परन्तु वर्षा न हो और उत्तर की वायु चले तो आगे अन्न मन्दा रहेगा। ५ अप्रैल को यदि बिजली चमके, वर्षा हो तथा आंधी आवे तो लकड़ी, मोती, मूंगा, पुखराज आदि जवाहरात और पत्थर का कोयला, सोना, चांदी आदि खनिज से छठे मास लाभ हो। **आकाश-लक्षण**–२४ से २६ मार्च तक बर्मा, मैसूर, भूटान में कहीं कहीं साधारण वर्षा के योग हैं। पञ्जाब आदि में कहीं कहीं बादल चाल हो और वायु का जोर रहे। **"चन्द्र मौलि शंकर चरण बार बार शिर नाय। संवत यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय॥"**

कुं. सूर्योदये

म.बु.गु., श., १२सू.चं., ११रा., १०, २, ३, ९, ४, ६, ८, ५के., ७गु.

चैत्र कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५८।१८.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	०	६	०	०	१०	४
२३	२८	७	९	१०	१५	१६	१६
१९	२४	४८	२८	५८	२३	४५	४५
१०	३	५८	३८	२३	५८	३१	३१
५९	४१	१०८	७	७३	७	३	३
२	४३	२६	८	५६	२१	११	११
	मा.	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	कृ. २	अश्वि. ३	स्वा. २	अश्वि. ४	भ. २	शत. ४	पू.फा. २

भा. स्टै. टा. में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी पलों में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टैं. टा. मे तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशिप्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है, इसे समझ लेना चाहिए :—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात्—दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहिले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिलकुल स्पष्ट हो जाएगा :—

(१) २१ मार्च (१९६९) शुक्रवार को चैत्र शुक्ल तृतीया के आगे ९ घं. ५४ मि. लिखे हैं। इसका अर्थ है कि यह तृतीया दिन के ९ बजकर ५४ मि. पर समाप्त होगी।

(२) ७ अप्रैल (१९६९) चन्द्रवार को ज्येष्ठा के आगे २३ घं. ३३ मि. लिखे हैं, जिसका अर्थ है कि इस तारीख को यह नक्षत्र रात के ११ बजकर ३३ मि. पर समाप्त होगा।

(३) २७ मार्च (१९६९) गुरुवार को पुनः नक्षत्र के आगे २५ घं. ३९ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय है कि २७ मार्च की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे) के बाद २८ मार्च को रात के १ बजकर ३९ मि. पर पुन. नक्षत्र समाप्त होगा। ध्यान रहे — यद्यपि यहां पुनः नक्षत्र की समाप्ति के समय २८ मार्च ही होगा एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार [illegible] उस समय वार शुक्र ही माना [illegible] वार भी [illegible] ही होगा, परन्तु भारतीय [illegible] के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही [illegible], क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार [illegible] के आगे ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम [illegible] है। यही कारण है—[illegible] के आगे [illegible] २४ से अधिक हों, वहां घण्टों [illegible] कह सकते हैं—कि यहां पञ्चांग में तिथि आदि के घण्टे [illegible] तारीख का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के [illegible] में से २४ घटाकर शेष घण्टा मिनटों को अगिम तारीख [illegible] लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिए—

११ अप्रैल शुक्रवार को कुम्भ में चन्द्र का प्रवेश काल २९ घं. ४३ मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि—१२ अप्रैल को सूर्योदय से पूर्व ५ बजकर ४३ मि. पर चन्द्र कुम्भ राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय शुक्रवार ही होगा।

[illegible] बाद—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाईम (घं. मि.) नहीं लिखा है, अर्थात् (;...) इस तरह का चिह्न लगाया गया है, उस तिथि नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक) रहेगा।

घंटा मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्रस्पष्ट करने की विधि:—

भभोग एवं भयात के मिनट बनाओ। मिनटात्मक भयात को ४० से गुणा करके ३ से गुणित मिनटात्मक भभोग से भाग देकर तीन लब्धियां क्रमशः अंश, कला, विकला प्राप्त करो। इस अंशादि फल में इष्ट कालिक वर्तमान नक्षत्र की राशि, अंश, कलाओं को नीचे दिए गए "नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक" से लेकर जोड़ दो—बस यही आपका इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र होगा।

भभोग कैसे बनाएं ?

अभीष्ट समय में (जिस समय चन्द्र स्पष्ट करना है उस समय) भा. स्टैं. टा. के वक्त जो वर्तमान नक्षत्र हो उसे 'वर्तमान-नक्षत्र' एवं 'वर्तमान नक्षत्र' से पूर्ववर्ती नक्षत्र को 'गत नक्षत्र' समझें। वर्तमान नक्षत्र के पंचांग में दिए गए घण्टा मिनटों में २४ घण्टा जोड़कर (यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हो तो ४८ घण्टा जोड़कर तथा यदि वर्तमान नक्षत्र क्षय हो तो उसमें बिना कुछ जोड़े ही) उसमें से गत नक्षत्र के घण्टा मिनट घटाने पर घण्टा मिनटात्मक भभोग बनेगा। संक्षेप से इस तरह कह सकते हैं कि—वर्तमान नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनटों में से गत नक्षत्र के वार घंटा, मिनटों को घटाने से शेष दिनादि भभोग होगा।

भयात कैसे बनाएं ?

भयात बनाने से पूर्व अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के घण्टा मिनटों को ठीक उसी तरह लिखें जैसे इस पंचांग में तिथि आदि के घण्टा, मिनट लिखे गए हैं। अर्थात्—दिन के १२ बजे के बाद रात्रि के १२ बजे तक के घण्टों को १३, १४ आदि एवं रात्रि के १२ बजे के बाद सूर्योदय (पंचांग में दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय) तक के घण्टों को २५, २६ आदि लिखें (देखें—इसी पृष्ठ के पहिले कालम का दूसरा प्रघटक)। इस अभीष्ट भा. स्टैं. टा को वार सहित लिखकर उसमें से गत नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनट घटाने पर शष दिनादि भयात होगा। भयात की दिन संख्या को २४ से गुणा करके उसमें घण्टों को जोड़ देने पर घण्टादि भयात बन जाएगा। अथवा यूं कहिए—यदि इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) में २४ घण्टा जोड़ कर, दो बार आगे का हो तो ४८ घण्टा जोड़कर उसमें से गत नक्षत्र के घ. मि. घटाने से भयात के घं. मि. प्राप्त होंगे। (उदाहरण पृष्ठ ३३ पर देखें)

—:नक्षत्रराश्यादि बोधक कोष्ठक:—

नक्षत्र	अश्वि	भ.	कृ.		मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा	उ.फा	ह.	चि.
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५
अं.	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
नक्षत्र	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा	श्रव.	ध.	श.	पू.भा	उ.भा	रे.	
रा.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	
क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि

(वि. सं. २०२६)

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा
चैत्र शुक्लपक्ष	मार्च १९	१	बु.	९।३८	उ.भा.	९।४	मीन	
	२०	२	गु.	९।२७	रे.	९।३३	मे.९।३३	पंचक स. ९।३३
	२१	३	शु.	९।५४	अ.	१०।३६	मेष	भ. २२।३०उ.(ब)
	२२	४	श.	१०।५८	भ.	१२।१८	वृ. १८।५१	भ.१०।५८या., ज्येष्ठ में -मंगल १८।५१
	२३	५	र.	१२।३६	कृ.	१४।२८	वृष	
	२४	६	चं.	१४।४२	रो.	१७।५	वृष	
	२५	७	मं.	१७।४	मृ.	१९।५९	मि. ६।३२	भ.१७।४उ., ३०।१७या.,
	२६	८	बु.	१९।३०	आर्द्रा	२२।५५	मिथुन	मीन में बुध २५।४६
	२७	९	गु.	२१।४७	पुन.	२५।३९	क. १८।५८	
	२८	१०	शु.	२३।४३	पु.	२८।३	कर्क	उ.भा. में बुध २१।४१
	२९	११	श.	२५।४	आ.	२९।५३	सि. २९।५३	भ.१२।२२उ.,२५।४या.,
	३०	१२	र.	२५।५०	म.		सिंह	रेव. में सूर्य २९।१७
	३१	१३	चं.	२५।५५	म.	७।५	सिंह	व. शुक्र रेव-मीन में १६।३
	अप्रै. १	१४	मं.	२५।२२	पू. फा.	७।४०	क. १३।४२	भ. २५।२२उ.,
	२	१५	बु.	२४।१३	उ.फा.	७।३९	कन्या	भ.१२।४७या,
वैशाख कृष्णपक्ष	अप्रै. ३	१	गु.	२२।३६	ह.	३०।४	तु.१८।३८	
	४	२	शु.	२०।३६	स्वा.	२८।३५	तुला	रेव. में बुध २०।२५
	५	३	श.	१८।१९	वि.	२७।२	वृ. २१।२५	भ.७।२७उ.,१८।१९या.,
	६	४	र.	१५।५१	अनु.	२५।१८	वृश्चिक	
	७	५	चं.	१३।२१	ज्ये.	२३।३३	ध. २३।३३	
	८	६	मं.	१०।५३	मू.	२१।५५	धनु	भ.१०।५३उ.,२१।४३या.,
	९	७	बु.	८।३३	पू.षा.	२०।२४	म.२६।५	
	१०	८	गु.	२६।२६	उ.षा.	१९।६	मकर	
	११	१०	शु.	२६।४९	श्र.	१८।५	कुं.२९।४३	भ.१५।३९उ.,२६।४९या, (अ)
	१२	११	श.	२५।३०	ध.	१७।२०	कुम्भ	
	१३	१२	र.	२४।३०	श.	१६।५५	कुम्भ	अश्वि. मेष में सूर्य १८।४१
	१४	१३	चं.	२३।५०	पू.भा.	१६।५१	मी. १०।५१	भ. २३।५० उ.,
	१५	१४	मं.	२३।३५	उ.भा.	१७।९	मीन	भ. ११।४२ या.,
	१६	३०	बु.	२३।४५	रे.	१७।५१	मे. १७।५१	पंचक स. १७।५१

(अ) पंचक प्रा. २९।४३, अश्वि. मेष में बुध ८।२१ (ब) पू.भा. में बुध १२।५६,

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा
वैशाख शुक्ल पक्ष	अप्रै. १७	१	गु.	२४।२४	अ.	१९।२	मेष	भर. में बुध १७।२०
	१८	२	शु.	२५।३०	भ.	२०।३८	वृ.२७।९	
	१९	३	श.	२७।४	कृ.	२२।४१	वृष	
	२०	४	र.	२९।४	रो.	२५।१२	वृष	भ.१६।३उ.,२९।४या.,
	२१	५	चं.	.....	मृ.	२७।५९	मि.१४।३४	
	२२	५	मं.	७।१९	आर्द्रा	.....	मिथुन	
	२३	६	बु.	९।४५	आर्द्रा	६।५५	क. २७।७	
	२४	७	गु.	१२।८	पुन.	९।५०	कर्क	भ.१२।८उ.,२५।१०या.,(स)
	२५	८	शु.	१४।१२	पु.	१२।३०	कर्क	
	२६	९	श.	१५।५१	आ.	१४।४४	सि.१४।४४	वृष में बुध १३।२६
	२७	१०	र.	१६।५०	म.	१६।२१	सिंह	भ.२८।५७उ.,सूर्य भर. में
	२८	११	चं.	१७।४	पू.फा.	१७।१३	क.२३।१६	भ. १७।४या., -१०।३०(द)
	२९	१२	मं.	१६।३०	उ.फा.	१७।२१	कन्या	शुक्र मार्गी २४।५३,
	३०	१३	बु.	१५।१२	ह.	१६।४५	तु. २८।७	
	मई १	१४	गु.	१३।१३	चि.	१५।२९	तुला	भ.१३।१३उ., २३।५८या.,
	२	१५	शु.	१०।४३	स्वा.	१३।४३	तुला	
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	मई ३	१	श.	२८।४६	वि.	११।३२	वृ. ६।१०	रोहि. में बुध १३।४०
	४	३	र.	२५।२९	अनु.	९।११	वृश्चिक	भ.१५।५उ.,२५।२९या.,
	५	४	चं.	२२।२०	ज्ये.	६।४६, २८।३०	ध. ६।४६	
	६	५	मं.	१९।२४	पू.षा.	२६।२६	धनु	
	७	६	बु.	१६।४९	उ.षा.	२४।४५	म. ७।५८	भ.१६।४९उ.,२७।४४या.,
	८	७	गु.	१४।३८	श्र.	२३।३०	मकर	
	९	८	शु.	१२।५५	ध.	२२।४५	कुम्भ११।७	पंचक प्रा. ११।७
	१०	९	श.	११।४२	श.	२२।२८	कुम्भ	भ.२३।२१उ., (अ)
	११	१०	र.	१०।५९	पू.भा.	२२।४३	मीन१६।३९	भ.१०।५९या.,
	१२	११	चं.	१०।४४	उ.भा.	२३।२२	मीन	
	१३	१२	मं.	१०।५६	रे.	२४।२८	मेष२४।२८	पंचक स. २४।२८
	१४	१३	बु.	११।३४	अ.	२५।५६	मेष	फ.११।३४उ.,२४।५या.,(ब)
	१५	१४	ग.	१२।३४	भ.	२७।४६	मेष	
	१६	३०	शु.	१३।५६	कृ.		वृ. १०।१९	

(अ) कृत्ति. में सूर्य २८।४७, (ब) वृष में सूर्य १५।३८, (स) कृत्ति. में बुध १४।२४,
(द) मंगल वक्री १६।५३,

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि

(वि. सं. २०२६)

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	मई १७	१	श.	१५।३८	कृ.	५।५७	वृष	बुध व. ी २४।४२,
	१८	२	र.	१७।४२	रो.	८।२६	म. २१।५०	
	१९	३	चं.	१९।५५	मृ.	११।१३	मिथुन	
	२०	४	मं.	२२।२२	आर्द्रा	१४।१०	मिथुन	भ.९।८उ.,२२।२२या.,
	२१	५	बु.	२४।४७	पुन.	१७। ९	क. १०।२४	
	२२	६	गु.	२७। ५	पु.	२०। ५	कर्क	
	२३	७	शु.	२८।५९	आ.	२२।४०	स. २२।४०	भ. २८।५९उ., (ब)
	२४	८	श.	......	म.	२४।४७	सिंह	भ १७।४१ या.,
	२५	८	र.	६।२३	पू.फा.	२६।१२	सिंह	
	२६	९	चं.	६।५७	उ.फा.	२६।५२	क. ८।२२	
	२७	१०	मं.	६।४७	ह.	२६।४३	कन्या	भ. १८।१७ उ.,
	२८	११	बु.	[illegible]	चि.	२५।४६	तु. १४।१५	भ. ५।४६ या., (स)
	२९	१३	गु.	२५।२३	स्वा.	२४। ३	तुला	(द)
	३०	१४	शु.	२२।१८	वि.	२१।४७	वृ. १६।२१	भ. २२।१८उ.,
	३१	१५	श.	१८।४८	अनु.	१९। ७	वृश्चिक	भ. ८।३३ या., (ड)
आषाढ़ कृष्णपक्ष	जून १	१	र.	१५। ५	ज्ये.	१६।१४	ध. १६।१४	
	२	२	चं.	११।२०	मू.	१३।१९	धनु	भ. २१।३२ उ.,
	३	३	मं.	[illegible]	पू.षा.	१०।१६	म. १५।५८	भ. ७।४८ या.,
	४	५	बु.	[illegible]	उ.षा.	८।२०	मकर	
	५	६	गु.	[illegible]	श्र.	[illegible]	कु. १९।३३	भ. २२।२०उ.,पंचक प्रा.
	६	७	शु.	[illegible]	ध.	[illegible]	कुम्भ	भ. १०।३१ या., -१९।३३
	७	८	श.	२०।४६	पू.भा.	[illegible]	मी. २२।१२	मृग. में सूर्य २२।५५, (अ)
	८	९	र.	[illegible]	उ.भा.	[illegible]	मीन	
	९	१०	चं.	२०।४८	रे.		मीन	भ. ८।३८उ., २०।४८ या.,
	१०	११	मं.	[illegible]	रे.	[illegible]	मे. ५।१०	पंचक स. ५।१० (फ)
	११	१२	बु.	[illegible]	अ.	[illegible]	मेष	रोहि. में बुध ५।८,
	१२	१३	गु.	[illegible]	भ.	[illegible]	वृ. [illegible]	भ. [illegible] उ.,
	१३	१४	शु.	२६।२९	कृ.	[illegible]	वृष	भ. [illegible] या., मृ. में शुक्र-
	१४	३०	श.	[illegible]	रो.	[illegible]	मि. [illegible]	मिथु. में सूर्य [illegible]

(अ) पंचक प्रा. १९।३३, (ब) गुरु मार्गी १३।५६, (स) अश्वि. मेष में शुक्र २८।३२, (द) व. मंगल अनु. में १७।२६, (ड) पू.भा. में राहु शु १९।१६, (फ) बुध मार्गी २३।१५, व. बुध. कृत्ति. में २६।४,

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	जून १५	१	र.	.....	मृ.	१७।३४	मिथुन	
	१६	१	चं.	६।५८	आर्द्रा	२०।३१	मिथुन	
	१७	२	.	९।२२	पुन.	२३।३२	क. १६।४७	
	१८	३	बु.	११।४९	पु.	२६।२९	कर्क	भ. २५।० उ., ५
	१९	४	गु.	१४।१०	आ.	२९।१७	सि. २९।१७	भ. १४।१० या.,
	२०	५	.	१६।१५	म.	...	सिंह	
	२१	६	श.	१७।५३	म.	७।४६	सिंह	आर्द्रा में सूर्य २१।५१
	२२	७	र.	१८।५८	पू.फा.	९।४३	क. १६। २	भ. १८।५८ उ.,
	२३	८	चं.	१९।१७	उ.फा.	१०।५९	कन्या	भ. ७।७ या.,
	२४	९	मं.	१८।४८	ह.	११।२९	तु. २३।२०	
	२५	१०	बु.	१७।३१	चि.	११।११	तुला	भ. २८।२७ उ.,
	२६	११	गु.	१५।२४	स्वा.	१०। ४	वृ.२६।४२	भ. १५।२४ या.,
	२७	१२	शु.	१२।३६	वि.	८।१४	वृश्चिक	कृत्ति. में शुक्र १३।५८,
	२८	१३	श.	९।१५	अनु.	[illegible]	ध. २६।५५	
	२९	१४	र.	[illegible]	मू.	२३।५०	धनु	भ.५।३१उ.,१५।३२या. (ब)
(अधिक) आषाढ़ कृष्णपक्ष	जून ३०	१	चं.	२१।३६	पू.षा.	२०।४२	म. २५।५७	वृष में शुक्र २०।२१,
	जुला. १	२	मं.	१७।४९	उ.षा.	१७।४६	मकर	भ. २८।६ उ.,
	२	३	बु.	१४।२४	श्र.	१५।१०	कुं. २६।८	भ. १४।२४या., पंचक प्रा.
	३	४	गु.	११।२९	ध.	१३। ७	कुम्भ	-२६।८
	४	५	शु.	९।११	श.	११।३९	मी. २९। ९	मिथु. में बुध १३।२८
	५	६	श.	७।३९	पू.भा.	१०।५९	मीन	भ.७।३९उ.,२९।१४या., (अ)
	६	७	र.	६।५०	उ.भा.	११। ४	मीन	
	७	८	चं.	६।५२	रे.	११।५५	मे. ११।५४	पंचक स. ११।५४
	८	९	मं.	७।३२	अ.	१३।२२	मेष	भ. २०।९ उ, (स)
	९	१०	बु.	८।४८	भ.	१५।२५	वृ. २२। १	भ. ८।४८ या.,
	१०	११	गु.	१०।३३	कृ.	१७।५१	वृष	रोहि. में शुक्र ९।५,
	११	१२	शु.	१२।३६	रो.	२०।३५	वृष	
	१२	१३	श.	१४।५२	मृ.	२३।२९	मि. १०।२	भ. १४।५२उ., २८।४या.,
	१३	१४	र.	१७।१६	आर्द्रा	२६।२७	मिथुन	
	१४	३०	चं.	१९।४२	पुन.	२९।२७	क. २२।४७	पुन. में बुध २९।२९,

(अ) पुन. में सूर्य २१।३२, (ब) मृग. में बुध २५।१४, (स) आर्द्रा में बुध १०।४२, मंगल मार्गी ११।३८.

भा० स्टै० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि

(वि० सं० २०२६)

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घ.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसंचार घ.मि.	भद्रा आदि
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्ष	जुला. १५	१	मं.	२२। ६	पु.	... ...	कर्क	
	१६	२	बु.	२४।१९	पु.	८।२१	कर्क	कर्क में सूर्य ९।१३
	१७	३	गु.	२६।१९	आ.	११। ६	सि. ११।६	
	१८	४	शु.	२८। ०	म.	१३।३७	सिंह	भ.१५।११उ.,२८।०या.,
	१९	५	श.	२९।१५	पू.फा.	१५।४३	क. २२।७	पुष्य में सूर्य २१।१ (अ)
	२०	६	र	......	उ.फा.	१७।२२	कन्या	
	२१	६	चं.	५।५८	ह.	१८।२२	कन्या	पुष्य मे बुध १२।१०,
	२२	७	मं.	५।५५ २६।१२	चि.	१८।४४	तु. ६।३३	भ.५।५५उ.,१७।३३या.,(ब)
	२३	९	बु.	२७।४४	स्वा.	१८।२०	तुला	
	२४	१०	गु.	२५।३३	वि.	१७।१३	वृ. ११।३०	
	२५	११	शु.	२२।४६	अनु.	१५।२७	वृश्चिक	भ.१२।९उ.,२२।४६या.,
	२६	१२	श.	१९।२८	ज्ये.	१३। ७	ध. १३।७	
	२७	१३	र.	१५।५३	मृ.	१०।२६	धनु	आश्ले. में बुध २१।२५
	२८	१४	चं.	१२। ३	पू.षा.	[illegible]	म. १२।४३	भ.१२।३उ., २२।९ या (स)
	२९	१५	मं.	[illegible]	श्र.	२५।४०	मकर	
श्रावण कृष्ण पक्ष	जुला. ३०	२	बु.	२५।२२	ध.	२३।१०	कुं. १२।२५	पंचक प्रा. १२।२५,
	३१	३	गु.	२२।३६	श.	२१। ९	कुम्भ	भ.११।५९उ.,२२।३६या.,(द
	अग. १	४	शु.	२०।३०	पू. भा.	१९।५०	मी. १४।१०	
	२	५	श.	१९ ।१६	उ.भा.	१९।१२	मीन	आश्ले. में सूर्य १९।५७
	३	६	र.	१८।२२	रे.	१९।२०	मे. १९।२०	भ.१८।३२उ.,पंचकस.१९।२०
	४	७	चं.	१८।४६	अ.	२०।१६	मेष	भ. ६।३८ या., -(ई)
	५	८	मं.	१९।४१	भ.	२१।५४	वृ. २८।२७	
	६	९	बु.	२१।१४	कृ.	४८। ८	वृष	हस्त में गुरु २०।५९
	७	१०	गु.	२३।१५	रो.	२६।४५	वृष	भ. १०।१४उ., २३।१५ या.,
	८	११	शु.	२५।३५	मृ.	२९।३८	मि. १६।१२	
	९	१२	श.	२७।५८	आर्द्रा		मिथुन	
	१०	१३	र.	......	आर्द्रा	८।३९	क. २८।५१	
	११	१३	चं.	६।२२	पुन.	११।३६	कर्क	भ.६।२२उ., १९।३२या., (फ
	१२	१४	मं.	८।४३	पु.	१४।२७	कर्क	
	१३	३०	बु.	१०।४६	आ.	१७। ४	सि. १७। ४	

(अ) कर्क में बुध २२।३२, (ब) मृग. में शुक्र १५।२४, (स) मिथुन में शुक्र १५।१०, (द) कुम्भ में राहु सिंह में केतु ८।५४, (ई) मघा-सिंह में बुध १८।२४, आर्द्रा में शुक्र १३।७, (फ) पू.फा. में बुध ९।१९,

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घ.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसंचार घ.मि.	भद्रा आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	अग. १४	१	गु.	१२।३५	म.	१९।२२	सिंह	ज्येष्ठा में मंगल १५।३३, (ड)
	१५	२	शु.	१४। ३	पू.फा.	२१।१९	क. २७।४३	
	१६	३	श.	१५। ५	उ.फा.	२२।५५	कन्या	भ.२७।२३उ., (अ)
	१७	४	र.	१५।४१	ह.	२४। ०	कन्या	भ. १५।४१ या.,
	१८	५	चं.	१५।४६	चि.	२४।३६	तु. १२।१८	
	१९	६	मं.	१५।२०	स्वा.	२४।३७	तुला	उ.फा. मे बुध २५।८,
	२०	७	बु.	१४।१३	वि.	२४। ५	वृ. १८।१३	भ.१४।१३उ., २५।२७या.,
	२१	८	गु.	१२।४३	अनु.	२३। ३	वृश्चिक	शनि वक्री ११।१,
	२२	९	शु.	१०।३३	ज्ये.	२१।२७	ध. २१।२७	कन्या में बुध १०।२४,
	२३	१०	श.	[illegible]	मू.	१९।२८	धनु	भ.१८।३०उ., २९।०या.,ई
	२४	१२	र.	२५।४९	पू.षा.	१७। ८	म. २२।२८	
	२५	१३	चं.	२२।२८	उ.षा.	१४।३७	मकर	
	२६	१४	मं.	१९। ९	श्र.	१२। ७	कुं. २२।५५	भ.१९।९उ.,२९।३५या.,(ब)
	२७	१५	बु.	१६। २	ध.	९।४४	कुम्भ	
भाद्रपद कृष्णपक्ष	अग. २८	१	गु.	१३।१७	श.	[illegible]	मी. २४।२१	
	२९	२	शु.	१०।५७	उ.भा.	२८।५२	मीन	भ. २२।५ उ.,
	३०	३	श.	९।१३	रे.	२८।२७	मे. २८।२७	भ.९।१३या., पंचक स. -२८।२७, (स)
	३१	४	र.	८।१२	अ.	२८।४६	मेष	
	सितं. १	५	चं.	७।५६	भ.	२९।४९	मेष	
	२	६	मं.	८।२७	कृ.	......	वृ. १२।१२	भ. ८।२७उ., २१।४ या.
	३	७	बु.	९।४०	कृ.	७।३५	वृष	
	४	८	गु.	११।२४	रो.	९।५४	मि. २३।१६	
	५	९	शु.	१३।३९	मृ.	१२।३९	मिथुन	भ. २६।५० उ.,
	६	१०	श.	१६। २	आर्द्रा	१५।३५	मिथुन	भ. १६।२ या., (फ)
	७	११	र.	१८।२३	पुन.	१८।३५	क. ११।५०	
	८	१२	चं.	२०।४५	पु	२१।२५	कर्क	
	९	१३	मं.	२२।४३	आ.	२३।५५	सि. २३।५५	भ. २२।४३ उ.,
	१०	१४	बु.	२४।१८	म.	२६। ३	सिंह	भ. ११।३१ या., (ज)
	११	३०	गु.	२५।२५	पू.फा.	२७।४५	सिंह	

(अ) मघा सिंह में सूर्य १७।३४, (ब) पंचक प्रा. २२।५५ पुष्य में शुक्र १४।२८, (स) पू. फा. में सूर्य १३।३१ हस्त में बुध ११।२, (द) पुन. में शुक्र २८।१७, (ई) कर्क में शुक्र १८।२१, (फ) आश्ले. में शुक्र २०।२६, (ज) मूल धनु में [illegible]

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा

(वि. सं. २०२६)

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्लपक्ष	सितं. १२	१	शु.	२६।५	उ.फा.	२८।५९	क. १०।३	
	१३	२	श.	२६।१५	ह.	२९।४५	कन्या	उ.फा. में सूर्य ७।१७,
	१४	३	र.	२५।५९	चि.	३०। ४	तु. १७।५४	
	१५	४	चं.	२५।२७	स्वा.	३०। १	तुला	भ.१३।३८उ.,२५।१७ या.
	१६	५	मं.	२४।१२	वि.	२९।३४	वृ.२३।४१	कन्या में १७।२१ (A)
	१७	६	बु.	२२।४३	अनु.	२८।४३	वृश्चिक	मघा. सिंह मे शुक्र २२।५०
	१८	७	गु.	२०।५५	ज्ये.	२७।३४	ध.२७।३४	भ. २०।५५ उ.,
	१९	८	शु.	१८।५०	मू.	२६। ८	धनु	भ. ७।५२ या.,
	२०	९	श.	१६।२९	पू.षा.	२४।३१	म.३०।३	
	२१	१०	र.	१३।५९	उ.षा.	२२।४४	मकर	भ. २४।४१ उ.,
	२२	११	चं.	११।२२	श्र.	२०।५२	मकर	भ. ११।२२ या.,
	२३	१२	मं.	[illegible]	ध.	१९। ३	कुं.७।५८	पंचक प्रा. ७।५८,
	२४	१४	बु.	२७।५४	श.	१७।२१	कुम्भ	भ. २७।५४उ.,
	२५	१५	[illegible]	[illegible]	पू.भा.	[illegible]	मी.१०।१७	भ.१४।५२या..
आश्विन कृष्णपक्ष	सित. २६	१	शु.	२४।१५	उ.भा.	१४।५०	मीन	हस्त में सूर्य २२।४७
	२७	२	श.	२३।११	रे.	१४।१५	मे. १४।१५	पंचक स. १४।१५
	२८	३	र.	२२।४२	अ.	१४।१४	मेष	भ.१०।५७उ.,२२।४३या.+
	२९	४	चं.	[illegible]	भ.	१४।५३	वृ. २१।१२	+(B)
	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ.	[illegible]	वृष	मंगल २९।१२(C)
	अक्तू. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृष	भ. २५।२२उ., पू.षा. में
	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.	[illegible]	मि. [illegible]	भ.१४।२५या., (D)
	३	८	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]	मिथुन	
	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पुन	[illegible]	क. [illegible]	
	४	९	[illegible]	......	पुष्य	[illegible]	कर्क	भ. २१।२९उ.,
	५	९	[illegible]	८।१८	पु.	[illegible]	कर्क	भ.१०।४०या,
	६	१०	[illegible]	[illegible]	आ.	......	[illegible]	(E)
	७	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिं. [illegible]	[illegible] मार्गी २१।२४
	८	१२	[illegible]	[illegible]	म.	१। ८	सिंह	[illegible]
	९	१३	गु.	१९। ८	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible]उ.,[illegible]या.,
	१०	१४	शु.	१५।२९	उ.फा.	[illegible]	कन्या	चित्रा में सूर्य [illegible]
	११	३०	श.	१५। ३	ह.	१९। ६	तु. २५।२	[illegible]

मास पक्ष	ता.	तिथि	वा.	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा
आश्विन शुक्लपक्ष	अक्तू. १२	१	र.	१४।२०	चि.	१२।५९	तुला	कन्या में शुक्र १२।१७ (B)
	१३	२	चं.	१३। ३	स्वा.	१२।२५	वृ. २९।४३	
	१४	३	मं.	११।२४	वि.	११।२९	वृश्चिक	भ.२२।७उ.,हस्त में बुध
	१५	४	बु.	९।३१	अ.	१०।२९	वृश्चिक	भ. ९।३१ या., २९।४४
	१६	५	गु.	३०।२७	ज्ये.	८।५९	ध. ८।५९	तुला में सूर्य २९।१३,
	१७	७	शु.	२७। ६	मू.	३०।३२	धनु	भ. २७।६ उ.,
	१८	८	श.	२४।५६	उ.षा.	२८।४०	म.११।४४	भ. १४।२ या.,
	१९	९	र.	२२।५३	श्र.	२७।२०	मकर	
	२०	१०	चं.	२०।५४	ध.	२६।६	कुं. १४।४३	पचक प्रा. १४।४३,(C)
	२१	११	मं.	१९। ५	श.	२५। २	कुम्भ	भ.८।० उ., १९।५या.,(D)
	२२	१२	ब.	१७।२६	.भा.	२४। ८	मी. १८।२१	
	२३	१३	ग.	१६। २	उ. भा.	२३।३१	मीन	स्वा. में सूर्य २२।९,
	२४	१४	शु.	१४।५६	रे.	२३।१४	मे. २३।१४	भ.१४।५६ उ., २६।३५
	२५	१५	श.	१४।१५	अ	२३।२०	मेष	या. (A)
कार्तिक कृष्णपक्ष	अक्तू. २६	१	र.	१३।५९	भ.	२३।५३	वृ. ३०।८	मकर में मंगल १८।३१
	२७	२	चं.	१४।१७	कृ.	२५। १	वृष	भ. २६।४२ उ.,
	२८	३	मं.	१५। ७	रो.	२६।४२	वृष	भ.१५।७या.,तुला में बुध
	२९	४	बु.	१६।३४	मृ.	२८।५५	मि. १५।४९	२३।२१
	३०	५	गु.	१८।३२	आर्द्रा	......	मिथुन	
	३१	६	शु.	२०।५३	आर्द्रा	७।३४	क. २७।४७	भ. २०।५३उ., चित्रा
	नवं. १	७	श.	२३।२८	पुन	१०।३१	कर्क	भ. १०।११ या., (E)
	२	८	र.	२५।५९	पु.	१३।३४	कर्क	में शुक्र ७।५
	३	९	चं.	२८।१२	आ.	१६।२५	सि.१६।२५	
	४	१०	मं.	२९।५३	म.	१८।५२	सिंह	भ.१७।३उ.,२९।५४या.,
	५	११	बु.	......	पू.फा.	२०।४४	क. २७।२	विशा. में सूर्य ३०।१९ (
	६	११	गु.	६।५७	उ.फा.	२१।५४	कन्या	
	७	१२	शु.	३०।४२	ह.	२२।१८	कन्या	भ.२०।४२ उ.,
	८	१४	श.	२९।२९	चि.	२१।५८	तु. १०।८	भ.१८।५४.,
	९	३०	र.	२७।४४	स्वा.	२१।२	तुला	विशा. में बुध २६।३८(F)

(A) बुधवक्री १८।८, (B) हस्त में बुध, २३।५६, पू.फा. में शुक्र २२।२६, (C) व. बुध उ. फा. में २५।३४, (D) पू. फा. में केतु ८।२६, (E) उ.फा. में शुक्र १६।२४

(A) पंचक स. २३।१४ चित्रा में बुध २१।१५ (B) व. शनि अश्वि. में १६।१५, (C) हस्त में शुक्र १४।२३, (D) उ.षा. में मंगल २४।७, (E) स्वाती में बुध २३।५३, (F) श्रव. में मंगल १८।५२, (G) तुला में शुक्र १६।१९,

भा० स्टें० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि

(वि० सं० २०२६)

मास पक्ष	ता. १९६९	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
कार्तिक-शुक्ल-पक्ष	नवं. १०	१	चं.	२५।२५	वि.	१९।३५	वृ. १३।५७	स्वाती में शुक्र २४।९,
	११	२	मं.	२२।५१	अनु.	१७।४९	वृश्चिक	तुला में गुरु २४।५४
	१२	३	बु.	२०। ७	ज्ये.	१५।४९	ध. १५।४९	भ ३०।४४उ.,
	१३	४	गु.	१७।२२	मू.	१३।४८	धनु	भ. १७।२२ या.,
								या., (A)
	१४	५	शु.	१४।४५	पू.षा.	११।५१	म. १७।२६	
	१५	६	श.	१२।२०	उ. षा.	१०।१०	मकर	वृश्चिक में सूर्य २८।५५
	१६	७	र.	१०।१३	श्र.	८।४२	कुं. २०।७	भ.१०।१३उ.,२१।१८
								या.,(B)
	१७	८	चं.	८।२४	ध.	२०।४४	कुम्भ	
	१८	९	मं.	२६।४०	पू.भा.	३०।१७	मी. २४।२४	अनु. में बुध १०।२४
	१९	११	बु.	२९। २	उ.भा.	३०। ८	मीन	भ.१७।२६ उ., २९।२
	२०	१२	गु.	२८।३५	रे.	३०।२०	मे. ३०।२०	पचक स. ३०।२०,
	२१	१३	शु.	२८।२८	अ.	३०।५२	मेष	विशा. में शुक्र १५।३८
	२२	१४	श.	२८।४३	भ.	......	मेष	भ. २८।४३ उ.,
	२३	१५	र.	२९।२४	भ.	७।४५	वृ. १४।४	भ. १७।४ या.,
मार्गशीर्ष-कृष्ण पक्ष	नवं. २४	१	चं.	३०।३०	कृ.	९। ५	वृष	२२।२५
	२५	२	मं.	......	रो.	१०।४४	मि. २३।४७	
	२६	२	बु.	८। ३	मृ.	१२।५२	मिथुन	भ.२१।२उ.,ज्ये. में बध
	२७	३	गु.	१०। ३	आर्द्रा	१५।२६	मिथुन	भ.१०।३या., धनि. में मगल-२४।१७
	२८	४	शु.	१२।२७	पुन.	१८।१९	क. ११।३३	
	२९	५	श.	१५। ४	पु.	२१।२४	कर्क	वृश्चि. में शुक्र १४।४९
	३०	६	र.	१७।४६	आ.	२४।२८	सि. २४।३२	भ.१७।४६उ., ३१।० या.,
	दिसं. १	७	चं.	२०।१५	म.	२७।१८	सिह	अनु. में शुक्र ३०।३१
	२	८	मं.	२२।१६	पू.फा.	२९।३९	सिंह	ज्येष्ठा में सूर्य १६।३६
	३	९	बु.	२३।३९	उ.फा.	......	क. १२। ३	
	४	१०	गु.	२४।१४	उ.फा.	७।१९	कन्या	भ.११।५७उ., २४।१४ या.,
	५	११	शु.	२३।५५	ह.	८।११	तु. २०।११	मूल. धनु में बुध १२।४२
	६	१२	श.	२२।४५	चि.	८।१०	तुला	कुम्भ में मंगल २४।२१
	७	१३	र.	२०।४८	स्वा.	२६।५५	वृ. २४।१४	भ. २०।४८ उ.,
	८	१४	चं.	१८।१४	अनु.	२७।४७	वृश्चिक	भ. ७।३१ या.,
	९	३०	मं.	१५।१२	ज्ये.	२५।२०	ध. २५।२०	

(A) पंचक प्रा. २०१७ वृश्चिक में बुध ७।५९, (B) अनु. में सूर्य १२।१५

मास पक्ष	ता. १९६९-७०	तिथि	वार	घं. मि	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष-शुक्ल-पक्ष	दिसं. १०	१	बु.	११।५३	मू.	२२।४०	धनु	
	११	२	गु.	२६।२८	पू.षा.	२०। २	म. २५।२४	भ.१५।३५उ.,२६।२या.,(B)
	१२	४	शु.	२६। २	उ.षा.	१७।३२	मकर	पंचक प्रा., २६।२९, (C)
	१३	५	श.	२३।१७	श्र.	१५।२२	कुं. २६।२९	
	१४	६	र.	२१। २	ध.	१३।३७	कुम्भ	
	१५	७	चं.	१९।१८	श.	१२।२३	मी. २९।५२	भ. १९।१८उ., ३०।४२ या.,(A,
	१६	८	मं.	१८। ७	पू.भा.	११।४२	मीन	
	१७	९	बु.	१७।३०	उ.भा.	११।३४	मीन	स्वाती में गुरु १२।४९ पंचक+
	१८	१०	गु.	१७।२५	रे.	११।५६	मे. ११।५६	भ. २९।३५ उ.,+स. ११।५६
	१९	११	शु.	१७।४६	अ.	१२।४६	मेष	भ. १७।४६ या.,
	२०	१२	श.	१८।३२	भ.	१३।५९	वृ. २०।२३	
	२१	१३	र.	१९।४२	कृ.	१५।३७	वृष	
	२२	१४	चं.	११।१३	रो.	१७।३४	मि. ३०।४२	भ. २१।१३ उ.,
	२३	१५	मं.	२३। ३	मृ.	१९।५२	मिथुन	भ. १०।८ या., (D)
पौष-कृष्ण-पक्ष	दिसं. २४	१	बु.	२५।१५	आर्द्रा	२२।२७	मिथुन	मकर में बुध २६।४९
	२५	२	गु.	२७।४४	पुन.	२५।१९	क. १८।३६	भ. १७।३ उ., ३०।२३ या.,
	२६	३	शु.	३०।२३	पु.	२८।२२	कर्क	
	२७	४	श.	......	आ.	......	कर्क	
	२८	४	र.	९। ७	आ.	७।३१	सिंह ७।३१	पू.षा. में सूर्य २१।४८,
	२९	५	चं.	११।४४	म.	१०।३३	सिंह	
	३०	६	मं.	१४। २	पू.फा.	१३।१७	क. १९।५०	भ.१४।२उ., २६।५४ या.,
	३१	७	बु.	१५।४६	उ.फा.	१५।३०	कन्या	
	जन. १	८	गु.	१६।४६	ह.	१७। २	तु. २९।२३	सन् १९७० ई. प्रा.
	२	९	शु.	१६।५६	चि.	१७।४५	तुला	भ. २८।३४ उ., (E)
	३	१०	श.	१६।२२	स्वा.	१७।३४	तुला	भ. १६।१२ या., (F)
	४	११	र.	१४।३६	वि.	१६।३५	वृ. १०।५०	बुध वक्री १३।३५
	५	१२	चं.	१२।१४	अनु.	१४।५२	वृश्चिक	
	६	१३	मं.	२६।४८	ज्ये.	१२।३१	ध. १२।३१	भ. ९।१५उ., १९।३२या.,
	७	३०	बु.	२६। ५	मू.	२०।४४	धनु	

(A) मूल धनु में सूर्य १९।३०, शत. में मंगल २३।१५, (B) ज्येष्ठा में शुक्र २१।२, (C) पू. षा. में बुध २९।१५, (D) उ. षा. में बुध ११।७, मूल-धनु में शुक्र ११।२३, (E) पू.भा. में मंगल २०।१४, पू.षा. में शुक्र २५।४५, (F) शनि मार्गी २६।४०

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि

(वि० सं० २०२६)

मास पक्ष	ता. १९७०	तिथि	वार	घ.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसचार घं.मि.	भद्रा आदि
पौष शुक्लपक्ष	जन. ८	१	गु.	२२।१७	उ.षा.	२७।४२	म. ११।५९	
	९	२	शु.	१८।३७	श्र.	२४।५०	मकर	✲११।३४ (A)
	१०	३	श.	१५।१३	ध.	२२।१७	कुं. ११।३४	म.२५।४४उ.,पंचक प्रा.✲
	११	४	र.	१२।१५	श.	२०।१३	कुम्भ	म. १२।१५या.,
	१२	५	चं.	९।५१	पू. भा.	१८।४५	मी. १३।३७	व. बुध धनु में २६।४३,
	१३	६	मं.	[illegible]	उ.भा.	१७।५७	मीन	म. ३१।३ उ., (B)
	१४	८	बु.	३०।४३	रेव.	१७।५०	मे. १७।५०	म.१८।५३या., पंचक स. ✲
	१५	९	गु.	३१। ३	अ.	१८।२५	मेष	मीन में मंगल ३०।३४
	१६	१०	शु.	... ...	भ.	१९।३५	वृ. २६।११	मकर में शुक्र ७।४३
	१७	१०	श.	७।५७	कृ.	२१।१६	वृष	म. २०।४१ उ., ✲१७।५०
	१८	११	र.	९।२४	रो.	२३।२६	वृष	म. ९।२४ या.,
	१९	१२	चं.	११।१६	मृ.	२५।५६	मि. १२।४१	
	२०	१३	मं.	१३।२६	आर्द्रा	२८।४२	मिथुन	उ.भा. में मंगल १८।२२,
	२१	१४	बु.	१५।५१	पुन.	......	क. २८।५८	म. १५।५१उ., २९।१८ या.,
	२२	१५	गु.	१८।२५	पुन.	७।३८	कर्क	

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	घ.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसचार घं.मि.	भद्रा आदि
माघ कृष्णपक्ष	जन. २३	१	शु.	[illegible]	पु.	१०।४०	कर्क	श्रव. में सूर्य २६।४ (C)
	२४	[illegible]	श.	२३।४३	आ.	१३।४४	सि. १३।४४	बुध मार्गी २२।२०
	२५	[illegible]	र.	[illegible]	म.	१६।४४	सिंह	म. १२।५८उ., २६।१३या.,
	२६	४	चं.	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	क. २९।१८	
	२७	५	मं.	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	कन्या	
	२८	[illegible]	बु.	......	ह.	[illegible]	कन्या	
	२९	[illegible]	गु.	[illegible]	चि.	[illegible]	तु. [illegible]	म. ७।३३उ., १९।५१ या.,
	३०	[illegible]	शु.	[illegible]	स्वा.	[illegible]	तुला	
	३१	८	श.	[illegible]	वि.	[illegible]	वृ. [illegible]	
						[illegible]	वृश्चिक	म. [illegible] उ., [illegible] या., [illegible] या., (D)
	फर. १	१०	र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	२	११	चं.	[illegible]	ज्ये.	[illegible]	धनु	धनि. में शुक्र [illegible],
	३	१२	मं.	[illegible]	मू.	[illegible]	[illegible]	म. [illegible] उ., [illegible] ✲
	४	१३	बु.	[illegible]	पू.षा.	[illegible]	मकर	धनि. में सूर्य [illegible]
	५	१४	गु.	[illegible]	उ.षा.	[illegible]	[illegible]	पंचक प्रा. [illegible]
	६	३०	शु.	[illegible]	श्र.	[illegible]	कुं. [illegible]	

(A) उ.षा. में सूर्य २३।४४, (B) मकर में सूर्य ३०।१५, उ.षा. में शुक्र [illegible]
(C) श्रव. में शुक्र [illegible], (D) [illegible] में बुध [illegible], शत. में राहु [illegible]

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसचार घं.मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	फर. ७	१	श.	[illegible]	ध.	[illegible]	कुम्भ	रेव. में मंगल २०।२८(A)
	८	३	र.	२६।३८	पू.भा.	२८।२५	मी. २२।५८	कुम्भ में शुक्र २९।०,
	९	४	चं.	२४।१५	उ.भा.	२६।४७	मीन	म. १३।२६उ., २४।१५ या.,
	१०	५	मं.	२२।२३	रे.	२५।५२	मे. २५।५२	पंचक स. २५।५२,
	११	६	बु.	२१।३५	अ.	२५।४०	मेष	
	१२	७	गु.	२१।२७	भ.	२६।१५	मेष	म.२१।२७उ., कुम्भ में सूर्य ⦀
	१३	८	शु.	२२। ५	कृ.	२७।३६	वृ. ८।३४	म. ९।४५ या., ⦀१९।१७
	१४	९	श.	२३।२२	रो.	२९।३२	वृष	शत. में शुक्र १२।३९,
	१५	१०	र.	२५।१४	मृ.	......	मि. १८।४४	
	१६	११	चं.	२७।३१	मृ.	७।५९	मिथुन	म.१४।२२ उ., २७।३१
	१७	१२	मं.	३०। ३	आर्द्रा	१०।४८	क. ३।१५	या., (B)
	१८	१३	बु.	......	पुन.	१३।४९	कर्क	
	१९	१३	गु.	८।४३	पु.	१६।५४	कर्क	शत. में सूर्य ९।४६, (C)
	२०	१४	शु.	११।१९	आ.	१९।५७	सि. १९।५७	म.११।१९उ., २४।३३ या.,
	२१	१५	श.	१३।४७	म.	२२।४९	सिंह	

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घ.मि.	चन्द्रसचार घं.मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन कृष्णपक्ष	फर. २२	१	र.	१६। २	पू.फा.	२५।२३	सिंह	
	२३	२	चं.	१७।५९	उ.फा.	२७।४२	क. ७।५७	म. ३०।४६ उ.
	२४	३	मं.	१९।३२	ह.	२९।३८	कन्या	म. १९।३२ या., (D)
	२५	४	बु.	२०।३८	चि.	......	तु. १८।२१	अश्वि.मेष मेंमंगल२८।९.(E)
	२६	५	गु.	२१।१२	चि.	७। ३	तुला	
	२७	६	शु.	२१।१२	स्वा.	७।५९	वृ. २६।१५	म. २१।१२ उ.,
	२८	७	श.	२०।३५	वि.	८।१९	वृश्चिक	म. ८।५३ या.,
	मार्च १	८	र.	१९।२१	अनु.	८। ४	वृश्चिक	कुम्भ में बुध २४।५४,
	२	९	चं.	१७।३२	ज्ये.	[illegible]	ध. ७।१३	म. २८।२२ उ.,
	३	१०	मं.	१५।११	पू.षा.	२७।५५	धनु	म. १५।११ या.,
	४	११	बु.	१२।२२	उ.षा.	२५।३९	म. ९।२०	पू.भा. में सूर्य १६।९,(F)
	५	१२	गु.	[illegible]	श्र.	२३। ७	मकर	म.२९।५५उ.,शत. में (G)
	६	१४	शु.	[illegible]	ध.	२०।२२	कुं. ९।४७	म.१६।१३या.,पंचकप्रा.९।४७
	७	३०	श.	[illegible]	श.	१७।५३	कुम्भ	उ.भा. में शुक्र २०।४८,

(A) मकर में बुध २०।३४, (B) श्रव. में बुध ९।५७, (C) गुरु वक्री २८।२८,
(D) पू.भा. में शुक्र २८।३४, (E) धनि में बुध १७।५४, (F) मीन में शुक्र २८।३९,
(G) बुध [illegible]

भा० स्टै० टा० में तिथ्यादि (सं० २०२६)

मास पक्ष	तारीख १९७०	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र सञ्चार घं.मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	मार्च ८	१	र.	२०। ८	पू.भा.	१५।२९	मी. १०।४	
	९	२	चं.	१७।२७	उ.भा.	१३।२७	मीन	
	१०	३	मं.	१५।१७	रे.	११।५५	मे. ११।५५	भ. २६।३४उ.,
	११	४	बु.	१३।५०	अ.	११। २	मेष	भ. १३।५० या.,
	१२	५	गु.	१३।०६	भ.	१०।५३	वृ. १७।३	
	१३	६	शु.	१३।१२	कृ.	११।३३	वृष	पू.भा. में बुध १९।३८,
	१४	७	श.	१४। ३	रो.	१२।५९	मि. २६।१	भ.१४।३उ.,२६।५१या.,(A)
	१५	८	र.	१५।३८	मृ.	१५। १	मिथुन	
	१६	९	चं.	१७।४४	आ.	१७।३७	मिथुन	भर. में मंगल १८।५६
	१७	१०	मं.	२०।१५	पुन.	२०।३६	क. १३।५१	उ.भा. में सूर्य २४।३३,
	१८	११	बु.	२२।५४	पु.	२३।४४	कर्क	भ.९।३४उ.,२२।५४या,(B)
	१९	१२	गु.	२५।२९	आ.	२६।४६	सि. २६।४६	
	२०	१३	शु.	२७।४९	म.	२९।३५	सिंह	उ.भा. में बुध २२।२, (C)
	२१	१४	श.	२९।४९	पू.फा.	......	सिंह	भ. २९।४९ उ.,
	२२	१५	र.	......	पू.फा.	८। ४	क. १४।३६	भ. १८।३६ या.,
	२३	१५	चं.	७।२२	उ.फा.	१०।८	कन्या	
चैत्र कृष्ण पक्ष	मार्च २४	१	मं.	८।२८	ह.	११।४४	तु. २४।१८	
	२५	२	बु.	९। ५	चि.	१२।५२	तुला	भ. २१।९ उ.,
	२६	३	गु.	९।१२	स्वा.	१३।३४	तुला	भ. ९।१२ या.,
	२७	४	शु.	८।५३	वि.	१३।४८	वृ. ७।४४	रेव. में बुध १४।९,
	२८	५	श.	८। ४	अनु.	१३।४०	वृश्चिक	
	२९	६	र.	[illegible]	ज्ये.	१३। ४	ध. १३।५	भ.६।५८उ.,१८।१२या. (D)
	३०	८	चं.	२७।३५	मू.	१२।११	धनु	
	३१	९	मं.	२५।२३	पू.षा.	१०।५७	म. १६।३४	रेव. में सूर्य ११।३१
	अप्र. १	१०	बु.	२२।५९	उ.षा.	९।२५	मकर	भ. १२।१०उ., २२।५९या.,
	२	११	गु.	२०।२०	श्र.	[illegible]	कुं. १८।४०	अश्वि. मेष में बुध २७।४६,
								[illegible]या., (E)
	३	१२	शु.	१७।५५	श.	२७।४०	कुम्भ	
	४	१३	श.	१४।४७	पू.भा.	२५।४१	मी. २०।१०	भ. १४।४७ उ., २५।२७+
	५	१४	र.	१२। ६	उ.भा.	२३।५२	मीन	
	६	३०	चं.	९।३९	रे.	२०।२२	मे. २२।२०	पंचक स. २२।२०

(A) मीन में सूर्य १६।१३, (B) मीन में बुध २८।३८, रेव. में शुक्र १४।१०, (C) भर. में शनि १३।५२, (D) अश्वि. मेष में शुक्र ८।१४, (E) कृत्ति. में मंगल १७।४५

भा. स्टै. टा. के स्पष्ट ग्रहों की [illegible]क उपयोगिता

कुछ पञ्चाङ्गों में किसी विशेष स्थल के मिश्रघन या घट्यादि इष्ट के स्पष्ट ग्रह दिए रहते हैं, जिनसे किसी अन्य स्थल के घट्यादि इष्ट काल पर ग्रह स्पष्ट करने के लिए चरान्तर देशान्तर संस्कारों का काफी झंझट करना पड़ता है। इसी झंझट से अपने पाठकों को बचाने के लिए हम पिछले वर्षों से श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में भा. स्टै. टा. के अनुसार स्पष्ट ग्रह देते आ रहे हैं। पीछे वि. सं. २०२४ तक रात्रि के १२ बजे (भा. स्टैं. टा.) के ग्रह दिए होते थे, अब सं०२०२५ से प्रातः साढ़ पाच बजे (भा० स्टैं, टा.) के स्पष्ट ग्रह दिए जा रहे हैं। यहां दिए गये ये स्पष्ट ग्रह भारत के सभी शहरों में प्रातः ५॥ बजे के ही माने जाएंगे, क्योंकि भा. स्टैं. टा. सारे भारत के लिए एक ही है।

मान लीजिए किसी तारीख को प्रातः ७ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर कोई बच्चा पैदा हुआ है। क्योंकि पंचांग में प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) के स्पष्ट ग्रह हैं। अतः इन्हें प्रातः ७ घं. ३० मि. पर स्पष्ट करने के लिए २ घण्टे का चालन देना होगा। वह बच्चा मद्रास. पटना, दिल्ली, बम्बई आदि भारत के किसी भी नगर में किसी भी तारीख को पैदा क्यों न हुआ हो—हर हालत में चालन २ घण्टे का ही दिया जाएगा। परन्तु यदि पंचांग में स्पष्ट ग्रह घट्यादि इष्ट के अनुसार दिए गए हों तो चालन के लिए घट्यादि प्रत्येक नगर के लिए प्रतिदिन भिन्न २ होंगे। क्योंकि पंचांग में दिया गया पंक्ति का इष्ट किसी अन्य नगर के (जिस नगर के अक्षांशादि के अनुसार वह पंचांग बनाया गया है, उस नगर के) सूर्योदय से बनाया गया है और आपका इष्ट अन्य नगर के (जातक के जन्म स्थान के) सूर्योदय से बनाया गया है। अतः पंक्ति के इष्ट एवं अपने इष्ट का अन्तर करने से पूर्व पंक्तिस्थ इष्ट को स्व-स्थानीय इष्ट बनाना नितान्त आवश्यक है, अन्यथा स्पष्ट किए गए ग्रह अशुद्ध होंगे। भा. टैं. टा. के अनुसार पंचांग में दिए गए स्पष्ट ग्रहों से अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने में इस तरह का कोई झंझट ही नहीं है। अतः सुविधा तथा शुद्धता के लिए ज्योतिषियों को चाहिए कि वे इस विधि का ही उपयोग किया करें।

बिना गुणा भाग के ग्रह-स्पष्ट करने की सरल विधि

पृ. ९९ पर लघुरिक्थ-कोष्ठक दिया गया है। इसकी सहायता से बिना गुणा भाग के इष्ट कालिक ग्रह-स्पष्ट बड़ी सरलता से किए जा सकते हैं। विधि इस प्रकार है—

इस पञ्चाङ्ग में स्पष्ट ग्रह प्रातः ५घं. ३० मि. के दिए गए हैं। आप जिस समय के ग्रह-स्पष्ट करना चाहते हैं, उस टाईम के घन्टा-मिनटों में से ५घं. ३०मि. घटाएं। शेष बचे घन्टा के नीचे एवं शेष मिनटों के आगे लघु-रिक्थ कोष्ठक में दी गई संख्या उठाएं,–यह संख्या अभीष्ट घं.मि. का लघुरिक्थ कहा जाएगा। जिस दिन ग्रह-स्पष्ट करना है, उस दिन अभीष्ट ग्रह की गति निकालें। अभीष्ट-टाईम के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काल के पञ्चाङ्गस्थ स्पष्ट ग्रहों का अन्तर ही ग्रह की गति होगी। जैसे इष्ट घन्टा-मिनटों का लघुरिक्थ-कोष्ठक से प्राप्त किया है, उसी प्रकार ग्रह-गति के ऊपर लिखे अंश और कलाओं का लघुरिक्थ भी कोष्ठक से प्राप्त करें। कोष्ठक के

(शेष पृष्ठ ८१ पर)

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः [illegible])

रा. अं. क.

(१९ मार्च को अयनांश २३°। ५।३७) १ अप्रैल को अयनांश २३°।२५।३८ तथा प्लूटो ४।२९।५३)

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अं. क.	नेप्च्यून (वक्री) रा. अं. क.
मार्च १९	११। ४।४७।१०	११।१४।४१	७।१५।२६।४०	१०।१६।३२।१८	५। ८। ६।१३	०। ३।२३।४७	०। १।१९।४०	११। ७। ६।३६	५। ८।४३	७। ५।१२
२०	११। ५।४६।४८	११।२७।४९	७।१५।४७।४५	१०।१८।१०।५५	५। ७।५८।२६	०। ३।२१।१९	०। १।२६।४७	११। ७। ३।२५	५। ८।४०	७। ५।११
२१	११। ६।४६।२५	०।१०।३९	७।१६। ८।३०	१०।१९।५०।४६	५। ७।५०।४०	०। ३।१६।२४	०। १।३३।५७	११। ७। ०।१४	५। ८।३७	७। ५।११
२२	११। ७।४६। ०	०।२३।११	७।१६।२८।५२	१०।२१।३१।५२	५। ७।४२।५३	०। ३। ८।५९	०। १।४१। ८	११। ६।५७। ३	५। ८।३५	७। ५।१०
२३	११। ८।४५।३३	१। ५।२८	७।१६।४८।५३	१०।२३।१४।१५	५। ७।३५। ७	०। २।५९। ४	०। १।४८।२२	११। ६।५३।५२	५। ८।३२	७। ५। ९
२४	११। ९।४५। १	१।१७।३२	७।१७। ८।३०	१०।२४।५७।५५	५। ७।२७।२१	०। २।४६।३९	०। १।५५।३७	११। ६।५०।४१	५। ८।३१	७। ५। ८
२५	११।१०।४४।२९	१।२९।२९	७।१७।२७।४५	१०।२६।४२।५३	५। ७।१९।३५	०। २।३१।४६	०। २। २।५५	११। ६।४७।३०	५। ८।२७	७। ५। ९
२६	११।११।४३।५५	२।११।२३	७।१७।४६।३५	१०।२८।२९। ९	६। ७।११।५१	०। २।१४।२५	०। २।१०।१४	११। ६।४४।१९	५। ८।२४	७। ५। ७
२७	११।१२।४३।१८	२।२३।१६	७।१८। ५। २	११। ०।१६।४५	५। ७। ४। ८	०। १।५४।४१	०। २।१७।३४	११। ६।४१। ८	५। ८।२१	७। ५। ६
२८	११।१३।४२।४०	३। ५।१७	७।१८।२३। ३	११। २। ५।४०	५। ६।५६।२७	०। १।३२।३६	०। २।२४।५६	११। ६।३७।५७	५। ८।१९	७। ५। ५
२९	११।१४।४१।५९	३।१७।२५	७।१८।४०।४०	११। ३।५५।५५	५। ६।४८।४८	०। १। ८।१७	०। २।३२।१९	११। ६।३४।४६	५। ८।१७	७। ५। ४
३०	११।१५।४१।१७	३।२९।४८	७।१८।५७।४८	११। ५।४७।३२	५। ६।४१।१०	०। ०।४१।४९	०। २।३९।४४	११। ६।३१।३५	५। ८।१४	७। ५। ३
३१	११।१६।४०।३२	४।१२।२९	७।१९।१४।३१	११। ७।४०।३०	५। ६।३३।३५	०। ०।१३।२०	०। २।४७। ८	११। ६।२८।२४	५। ८।११	७। ५। २
अप्रै. १	११।१७।३९।४३	४।२५।२८	७।१९।३०।४८	११। ९।३४।४८	५। ६।२६। २	११।२९।४२।५९	०। २।५४।३५	११। ६।२५।१३	५। ८। ९	७। ५। १
२	११।१८।३८।५४	५। ८।४७	७।१९।४६।३७	११।११।३०।२७	५। ६।१८।३२	११।२९।१०।५६	०। ३। २। ४	११। ६।२२। २	५। ८। ६	७। ५। ०
३	११।१९।३८। ३	५।२२।२६	७।२०। १।५९	११।१३।२७।२५	५। ६।११। ८	११।२८।३७।२१	०। ३। ९।३३	११। ६।१८।५१	५। ८। ४	७। ४।५९
४	११।२०।३७।१०	६। ६।२२	७।२०।१६।५२	११।१५।२५।४२	५। ६। ३।४८	११।२८। २।२८	०। ३।१७। ४	११। ६।१५।४०	५। ८। २	७। ४।५८
५	११।२१।३६।१५	६।२०।३०	७।२०।३१।१५	११।१७।२५।१४	५। ५।५६।३१	११।२७।२६।३१	०। ३।२४।३५	११। ६।१२।२९	५। ८। ०	७। ४।५७
६	११।२२।३५।१८	७। ४।४८	७।२०।४५। ८	११।१९।२६। १	५। ५।४९।१९	११।२६।४९।४१	०। ३।३२। ८	११। ६। ९।१८	५। ७।५७	७। ४।५६
७	११।२३।३४।१८	७।१९।१२	७।२०।५८।२१	११।२१।२७।५५	५। ५।४२।११	११।२६।१२।१५	०। ३।३९।४१	११। ६। ६। ७	५। ७।५४	७। ४।५५
८	११।२४।३३।१६	८। ३।३६	७।२१।११।२२	११।२३।३०।५३	५। ५।३५। ९	११।२५।३४।२८	०। ३।४७।१६	११। ६। २।५६	५। ७।५२	७। ४।५४
९	११।२५।३२।१४	८।१७।५०	७।२१।२३।४१	११।२५।३४।५०	५। ५।२८।११	११।२४।५६।३५	०। ३।५४।५१	११। ५।५९।४५	५। ७।४९	७। ४।५३
१०	११।२६।३१। ९	९। १। ९	७।२१।३५।२९	११।२७।३९।३५	५। ५।२१।२०	११।२४।१८।५०	०। ४। २।२७	११। ५।५६।३५	५। ७।४६	७। ४।५२
११	११।२७।३०। २	९।१५। ३	७।२१।४६।४१	११।२९।४५। १	५। ५।१४।३३	११।२३।४१।२१	०। ४।१०। २	११। ५।५३।२४	५। ७।४४	७। ४।५१
१२	११।२८।२८।५४	९।२९।४४	७।२१।५७। ८	०। १।५०।५५	५। ५। ७।५३	११।२३। ४।४९	०। ४।१७।३७	११। ५।५०।१३	५। ७।४२	७। ४।४९
१३	११।२९।२७।४४	१०।१३। ४	७।२२। ७।१९	०। ३।५७। ४	५। ५। १।१९	११।२२।२९। ०	०। ४।२५।१३	११। ५।४७। ३	५। ७।३९	७। ४।४८
१४	०। ०।२६।३०	१०।२६। ९	७।२२।१६।४८	०। ६। ३।१६	५। ४।५४।५२	११।२१।५४।१७	०। ४।३२।५०	११। ५।४३।५२	५। ७।३७	७। ४।४७
१५	०। १।२५।१५	११।१०।३८	७।२२।२५।१९	०। ८। ९।१४	५। ४।४८।३१	११।२१।२०।५२	०। ४।४०।२८	११। ५।४०।४१	५। ७।३४	७। ४।४६
१६	०। २।२३।५९	११।२३।२१	७।२२।३३।४९	०।१०।१४।४८	५। ४।४२।१७	११।२०।४८।५७	०। ४।४८। ६	११। ५।३७।३०	५। ७।३२	७। ४।४४
१७	०। ३।२२।४०	०। ६।१२	७।२२।४१।१५	०।१२।१९।१०	५। ४।३६।१०	११।२०।१८।४१	०। ४।५५।४५	११। ५।३४।२०	५। ७।३०	७। ४।४३
१८	०। ४।२१।२१	०।१८।४९	७।२२।४८।१०	०।१४।२२।३१	५। ४।३०।१२	११।१९।५०।१७	०। ५। ३।२३	११। ५।३१। ९	५। ७।२८	७। ४।४२
१९	०। ५।१९।५९	१। १।१४	७।२२।५४।२५	०।१६।२४।२२	५। ४।२४।२२	११।१९।२३।५०	०। ५।११। २	११। ५।२७।५८	५। ७।२५	७। ४।४१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.

(१ मई को अयनांश २३°।२५।४२, प्लूटो ४।२९।१६)
रा.अं. क.

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.
अप्रै. २०	०। ६।१८।३६	१।१३।२६	७।२३। ०। १	०।१८।२४।२२	५। ४।१८।३९	११।१८।५९।२७	०। ५।१८।४०	११। ५।२४।४७	५। ७।२३	७। ४।३९
२१	०। ७।१७।१०	१।२५।३०	७।२३। ४।५६	०।२०।२२।१२	५। ४।१३। ५	११।१८।३७।१६	०। ५।२६।१९	११। ५।२१।३६	५। ७।२१	७। ४।३८
२२	०। ८।१५।४२	२। ७।२५	७।२३। ९।११	०।२२।१७।३२	५। ४। ७।३९	११।१८।१७।२१	०। ५।३३।५७	११। ५।१८।२५	५। ७।१९	७। ४।३६
२३	०। ९।१४।१३	२।१९।१८	७।२३।१२।४४	०।२४।१०। ७	५। ४। २।२१	११।१७।५९।४५	०। ५।४१।३५	११। ५।१५।१४	५। ७।१७	७। ४।३५
२४	०।१०।१२।४१	३। १।११	७।२३।१५।३५	०।२५।५९।३८	५। ३।५७।१३	११।१७।४४।३१	०। ५।४९।१२	११। ५।१२। ४	५। ७।१५	७। ४।३३
२५	०।११।११। ६	३।१३। ९	७।२३।१७।४३	०।२७।४५।५३	५। ३।५२।१४	११।१७।३१।४३	०। ५।५६।५०	११। ५। ८।५३	५। ७।१३	७। ४।३२
२६	०।१२। ९।३०	३।२५।१६	७।२३।१९। ८	०।२९।२८।३७	५। ३।४७।२४	११।१७।२१।१९	०। ६। ४।२८	११। ५। ५।४२	५। ७।११	७। ४।३०
२७	०।१३। ७।५२	४। ७।३८	७।२३।१९।४९	१। १। ७।३९	५। ३।४२।४२	११।१७।१३।२२	०। ६।१२। ४	११। ५। २।३२	५। ७। ९	७। ४।२९
२८	०।१४। ६।११	४।२०।२०	७।२३।१९।४६	१। २।४२।५०	५। ३।३८।११	११।१७। ७।५०	०। ६।१९।३९	११। ४।५९।२१	५। ७। ७	७। ४।२७
२९	०।१५। ४।२९	५। ३।२४	७।२३।१९। १	१। ४।१४। ०	५। ३।३३।४८	११।१७। ४।४४	०। ६।२७।१४	११। ४।५६।१०	५। ७। ५	७। ४।२६
३०	०।१६। २।४५	५।१६।५२	७।२३।१७।३२	१। ५।४१। २	५। ३।२९।३५	११।१७। ४। १	०। ६।३४।४७	११। ४।५२।५९	५। ७। ३	७। ४।२४
मई १	०।१७। १। ०	६। ०।४६	७।२३।१५।१८	१। ७। ३।५०	५। ३।२५।३२	११।१७। ५।३८	०। ६।४२।२०	११। ४।४९।४८	५। ७। १	७। ४।२३
२	०।१७।५९।१२	६।१५। ३	७।२३।१२।१९	१। ८।२२।१८	५। ३।२१।३९	११।१७। ९।३५	०। ६।४९।५३	११। ४।४६।३७	५। ७। ०	७। ४।२१
३	०।१८।५७।२२	६।२९।३८	७।२३। ८।३४	१। ९।३६।२२	५। ३।१७।५५	११।१७।१५।४८	०। ६।५७।२६	११। ४।४३।२७	५। ६।५८	७। ४।२०
४	०।१९।५५।२९	७।१४।२४	७।२३। ४। ४	१।१०।४५।५५	५। ३।१४।२२	११।१७।२४।१६	०। ७। ४।५७	११। ४।४०।१६	५। ६।५६	७। ४।१८
५	०।२०।५३।३६	७।२९।१३	७।२२।५८।४९	१।११।५०।५५	५। ३।११। ०	११।१७।३४।५२	०। ७।१२।२८	११। ४।३७। ५	५। ६।५५	७। ४।१७
६	०।२१।५१।३९	८।१३।५८	७।२२।५२।४९	१।१२।५१।१६	५। ३। ७।४७	११।१७।४७।३६	०। ७।१९।५७	११। ४।३३।५४	५। ६।५३	७। ४।१५
७	०।२२।४९।४३	८।२८।३२	७।२२।४६। ३	१।१३।४६।५४	५। ३। ४।४५	११।१८। २।२२	०। ७।२७।२५	११। ४।३०।४४	५। ६।५१	७। ४।१३
८	०।२३।४७।४६	९।१२।४९	७।२२।३८।३१	१।१४।३७।४७	५। ३। १।५३	११।१८।१९। ७	०। ७।३४।५३	११। ४।२७।३३	५। ६।५०	७। ४।१२
९	०।२४।४५।४७	९।२६।४९	७।२२।३०।१४	१।१५।२३।५०	५। २।५९।११	११।१८।३७।४८	०। ७।४२।१९	११। ४।२४।२२	५। ६।४९	७। ४।१०
१०	०।२५।४३।४७	१०।१०।३०	७।२२।२१।१०	१।१६। ५। १	५। २।५६।४१	११।१८।५८।१९	०। ७।४९।४४	११। ४।२१।११	५। ६।४७	७। ४। ९
११	०।२६।४१।४५	१०।२३।५४	७।२२।११।२२	१।१६।४१।१५	५। २।५४।२१	११।१९।२०।३९	०। ७।५७। ७	११। ४।१८। ०	५। ६।४५	७। ४। ७
१२	०।२७।३९।४३	११। ७। २	७।२२। ०।४९	१।१७।१२।३१	५। २।५२।११	११।१९।४४।४१	०। ८। ४।२९	११। ४।१४।४९	५। ६।४४	७। ४। ५
१३	०।२८।३७।३९	११।१९।५७	७।२१।४९।३३	१।१७।३८।४६	५। २।५०।१३	११।२०।१०।२३	०। ८।११।५०	११। ४।११।३८	५। ६।४३	७। ४। ४
१४	०।२९।३५।३३	०। २।३९	७।२१।३७।३३	१।१८। ०। ०	५। २।४८।२५	११।२०।३७।४०	०। ८।१९। ९	११। ४। ८।२८	५। ६।४२	७। ४। २
१५	१। ०।३३।२६	०।१५।११	७।२१।२४।५२	१।१८।१६।११	५। २।४६।४८	११।२१। ६।२९	०। ८।२६।२५	११। ४। ५।१७	५। ६।४०	७। ४। १
१६	१। १।३१।१७	०।२७।३३	७।२१।११।३०	१।१८।२७।२४	५। २।४५।२३	११।२१।३६।४७	०। ८।३३।४०	११। ४। २। ६	५। ६।३९	७। ३।५९
१७	१। २।२९। ७	१। ९।४६	७।२०।५७।२७	१।१८।३३।४१	५। २।४४। ८	११।२२। ८।३२	०। ८।४०।५४	११। ३।५८।५६	५। ६।३८	७। ३।५७
१८	१। ३।२६।५५	१।२१।५३	७।२०।४२।४६	१।१८।३५। ५	५। २।४३। ४	११।२२।४१।३७	०। ८।४८। ७	११। ३।५५।४५	५। ६।३७	७। ३।५६
१९	१। ४।२४।४२	२। ३।५०	७।२०।२७।२९	१।१८।३३।४४	५। २।४२।१०	११।२३।१६। १	०। ८।५५।१७	११। ३।५२।३४	५। ६।३६	७। ३।५४
२०	१। ५।२२।२८	२।१५।४४	७।२०।११।३६	१।१८।२३।५०	५। २।४१।२७	११।२३।५१।४१	०। ९। २।२६	११। ३।४९।२३	५। ६।३५	७। ३।५२
२१	१। ६।२०।१३	२।२७।३५	[illegible]	१।१८।११।३५	५। २।४०।५६	११।२४।२८।३३	०। ९। ९।३३	११। ३।४६।१२	५। ६।३४	७। ३।५१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह ([illegible]त ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम।)

रा. अ. क.

(१ जून को अयनांश २३°।२५।४७, प्लूटो ४।२८।५९)

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अ. क.	मंगल (वक्री) रा. अ. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अ. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अ. क. वि.	राहु रा. अ. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अ. क.	नेप्च्यून (वक्री) रा. अ. क.
मई २२	१।७।१७।५६	३।९।२६	७।१९।३८।११	११।७।५५।१३	५।२।४०।३५	११।२५।६।३५	०।९।१६।३७	११।३।४३।१	५।६।३३	७।३।४२
२३	१।८।१५।३७	३।२१।२३	७।१९।२०।४४	११।७।३५।५	६।२।४०।२६	११।२५।४५।४५	०।९।२३।४०	११।३।३९।५१	५।६।३२	७।३।४८
२४	१।९।१३।१७	४।३।२८	७।१९।२।४९	११।७।१३।२२	५।२।४०।२७	११।२६।२५।५८	०।९।३०।४०	११।३।३६।४०	५।६।३२	७।३।४६
२५	१।१०।१०।५५	४।१५।४७	७।१८।४४।२७	११।६।४८।५८	५।२।४०।४०	११।२७।७।१४	०।९।३७।३८	११।३।३३।२९	५।६।३१	७।३।४४
२६	१।११।८।३२	४।२८।२५	७।१८।२५।४२	११।६।१५।५३	५।२।४१।३	११।२७।४९।२९	०।९।४४।३३	११।३।३०।१८	५।६।३०	७।३।४३
२७	१।१२।६।८	५।११।२६	७।१८।६।३७	११।५।४४।४५	५।२।४१।३८	११।२८।३२।४२	०।९।५१।२६	११।३।२७।८	५।६।३०	७।३।४१
२८	१।१३।३।४१	५।२४।५५	७।१७।४७।१२	११।५।१२।१०	५।२।४२।२४	११।२९।१६।४९	०।९।५८।१६	११।३।२३।५७	५।६।२९	७।३।४०
२९	१।१४।१।१४	६।८।५२	७।१७।२७।३२	११।४।३८।३९	५।२।४३।१९	०।०।१।५१	०।१०।५।४	११।३।२०।४६	५।६।२९	७।३।३८
३०	१।१४।५८।४५	६।२३।१९	७।१७।७।३७	११।४।४।५०	५।२।४४।२५	०।०।४७।४१	०।१०।११।४८	११।३।१७।३५	५।६।२८	७।३।३६
३१	१।१५।५६।१६	७।८।८	७।१६।४७।३२	११।३।३१।१५	५।२।४५।४१	०।१।३४।२१	०।१०।१८।३१	११।३।१४।२४	५।६।२८	७।३।३५
जून १	१।१६।५३।४५	७।२३।१३	७।१६।२७।१७	११।२।५८।३०	५।२।४७।९	०।२।२१।५१	०।१०।२५।११	११।३।११।१३	५।६।२७	७।३।३३
२	१।१७।५१।१२	८।८।२४	७।१६।६।५५	११।२।२७।१०	५।२।४८।४७	०।३।१०।७	०।१०।३१।४८	११।३।८।२	५।६।२७	७।३।३२
३	१।१८।४८।३९	८।२३।३०	७।१५।४६।२९	११।१।५७।४७	५।२।५०।३६	०।३।५९।७	०।१०।३८।२४	११।३।४।५२	५।६।२७	७।३।३०
४	[illegible]	९।८।२३	७।१५।२६।३	११।१।३०।४८	५।२।५२।३५	०।४।४८।५१	०।१०।४४।५६	११।३।१।४१	५।६।२७	७।३।२८
५	[illegible]	९।२२।५४	७।१५।५।३७	११।१।६।४१	५।२।५४।४५	०।५।३९।१६	०।१०।५१।२६	११।२।५८।३०	५।६।२६	७।३।२७
६	[illegible]	१०।७।१	[illegible]	११।०।४५।४८	५।२।५७।४	०।६।३०।१९	०।१०।५७।५२	११।२।५५।२०	५।६।२६	७।३।२५
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११।०।२८।३०	५।२।५९।३५	०।७।२२।१	०।११।४।१५	११।२।५२।९	५।६।२६	७।३।२४
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११।०।१५।३	५।३।२।१५	०।८।१४।१९	०।११।१०।३६	११।२।४८।५८	५।६।२६	७।३।२२
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।३।५।६	०।९।७।१३	०।११।१६।५३	११।२।४५।४७	५।६।२६	७।३।२१
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।३।८।६	०।१०।०।४०	०।११।२३।८	११।२।४२।३६	५।६।२६	७।३।१९
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।३।११।१७	०।१०।५४।४१	०।११।२९।१८	११।२।३९।२५	५।६।२७	७।३।१८
१२	[illegible]	०।२४।२१	[illegible]	[illegible]	५।३।१४।३७	०।११।४९।१२	०।११।३५।२५	११।२।३६।१५	५।६।२७	७।३।१६
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।३।१८।९	०।१२।४४।१३	०।११।४१।२९	११।२।३३।४	५।६।२७	७।३।१५
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।३।२१।४९	०।१३।३९।४३	०।११।४७।२९	११।२।२९।५३	५।६।२८	७।३।१४
१५	[illegible]	२।०।४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१४।३५।४२	०।११।५३।२६	११।२।२६।४३	५।६।२८	७।३।१२
१६	[illegible]	२।१२।४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१५।३२।८	०।११।५९।१९	११।२।२३।३२	५।६।२८	७।३।११
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१६।२९।०	०।१२।५।९	११।२।२०।२१	५।६।२९	७।३।९
१८	[illegible]	३।६।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१७।२६।१६	०।१२।१०।५६	११।२।१७।१०	५।६।२९	७।३।८
१९	२।४।६।२५	३।१८।९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१८।२४।५८	०।१२।१६।३८	११।२।१४।०	५।६।३०	७।३।७
२०	२।५।३।४२	४।०।६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१९।२३।२	०।१२।२२।१७	११।२।१०।४९	५।६।३१	७।३।५
२१	२।६।०।५७	४।१२।११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।२०।२२।२०	०।१२।२७।५१	११।२।७।३८	५।६।३१	७।३।४
२२	२।६।५८।१३	४।२४।२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।२१।२१।१९	०।१२।३३।२१	११।२।४।२	५।६।३२	७।३।३

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा. अं. क.

(१ जुलाई को अयनांश २३°।२५।५३, प्लूटो ४।२९।१०)

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून (वक्री) रा. अं. क.
जून २३	२। ७।५५।२७	५। ७। ४	७। ९।५१।५७	१।१५।४०।१२	५। ४। २। ७	०।२२।१८।३०	०।१२।३८।४७	११। २। १।१६	५। ६।३३	७। ३। १
२४	२। ८।५२।४१	५।२०। ३	७। ९।३९।५७	१।१६।३६।१८	५। ४। ७।२३	०।२३।१८। १	०।१२।४४। ९	११। १।५८। ५	५। ६।३४	७। ३। ०
२५	२। ९।४९।५४	६। ३।२६	७। ९।२८।४३	१।१७।३६।२४	५। ४।१२।४७	०।२४।१७।५३	०।१२।४९।२८	११। १।५४।५४	५। ६।३५	७। २।५९
२६	२।१०।४७। ७	६।१७।१८	७। ९।१८।१५	१।१८।४०।२५	५। ४।१८।१९	०।२५।१८। ३	०।१२।५४।४२	११। १।५१।४३	५। ६।३६	७। २।५८
२७	२।११।४४।१९	७। १।४१	७। ९। ८।३५	१।१९।४८।१७	५। ४।२४। १	०।२६।१८।३२	०।१२।५९।५३	११। १।४८।३२	५। ६।३७	७। २।५७
२८	२।१२।४१।३१	७।१६।३०	७। ८।५९।४२	१।२०।५९।५९	५। ४।२९।५१	०।२७।१९।२०	०।१३। ४।५९	११। १।४५।२१	५। ६।३८	७। २।५५
२९	२।१३।३८।४२	८। १।३९	७। ८।५१।३७	१।२२।१५।२६	५। ४।३५।४९	०।२८।२०।२६	०।१३।१०। ०	११। १।४२।१०	५। ६।३९	७। २।५४
३०	२।१४।३५।५३	८।१६।५७	७। ८।४४।२१	१।२३।३४।३८	५। ४।४१।५४	०।२९।२१।४९	०।१३।१४।५६	११। १।३८।५९	५। ६।४०	७। २।५३
जुला. १	२।१५।३३। ४	९। २।१५	७। ८।३७।५३	१।२४।५७।३०	५। ४।४८। ९	१। ०।२३।३१	०।१३।१९।४८	११। १।३५।४८	५। ६।४१	७। २।५२
२	२।१६।३०।१५	९।१७।२१	७। ८।३२।१६	१।२६।२४। १	५। ४।५४।३२	१। १।२५।२९	०।१३।२४।३६	११। १।३२।३७	५। ६।४२	७। २।५१
३	२।१७।२७।२६	१०। २। ६	७। ८।२७।२८	१।२७।५४। ६	५। ५। १। ४	१। २।२७।४३	०।१३।२९।२०	११। १।२९।२७	५। ६।४४	७। २।५०
४	२।१८।२४।३७	१०।१६।२४	७। ८।२३।३१	१।२९।२७।४४	५। ५। ७।४३	१। ३।३०।१४	०।१३।३३।५९	११। १।२६।१६	५। ६।४५	७। २।४९
५	२।१९।२१।४८	११। ०।१४	७। ८।२०।२३	२। १। ४।५०	५। ५।१४।३१	१। ४।३२।५९	०।१३।३८।३३	११। १।२३। ५	५। ६।४७	७। २।४८
६	२।२०।१८।५९	११।१३।३७	७। ८।१८। ६	२। २।४५।२०	५। ५।२१।२६	१। ५।३६। ०	०।१३।४३। २	११। १।१९।५५	५। ६।४८	७। २।४७
७	२।२१।१६।११	११।२६।३६	७। ८।१६।३८	२। ४।२९। ८	५। ५।२८।३३	१। ६।३९।१५	०।१३।४७।२७	११। १।१६।४४	५। ६।५०	७। २।४६
८	२।२२।१३।२२	०। ९।१५	७। ८।१६। १	२। ६।१६। ८	५। ५।३५।४४	१। ७।४२।४५	०।१३।५१।४७	११। १।१३।३३	५। ६।५१	७। २।४५
९	२।२३।१०।३३	०।२१।३७	७। ८।१६।१३	२। ८। ६।११	५। ५।४३। ३	१। ८।४६।२७	०।१३।५६। ३	११। १।१०।२२	५। ६।५३	७। २।४४
१०	२।२४। ७।४४	१। ३।४७	७। ८।१७।१५	२। ९।५९। ९	५। ५।५०।२९	१। ९।५०।२४	०।१४। ०।१३	११। १। ७।११	५। ६।५४	७। २।४३
११	२।२५। ४।४६	१।१५।४९	७। ८।१९। ७	२।११।५४।४९	५। ५।५८। ४	१।१०।५४।३३	०।१४। ४।१८	११। १। ४। ०	५। ६।५६	७। २।४२
१२	२।२६। २।१०	१।२७।४६	७। ८।२१।४८	२।१३।५३। १	५। ६। ५।४५	१।११।५८।५५	०।१४। ८।१९	११। १। ०।५०	५। ६।५८	७। २।४२
१३	२।२६।५९।२५	२। ९।३९	७। ८।२५।१९	२।१५।५३।२८	५। ६।१३।३३	१।१३। ३।२७	०।१४।१२।१४	११। ०।५७।३९	५। ७। ०	७। २।४१
१४	२।२७।५६।३९	२।२१।३०	७। ८:२९।३८	२।१७।५५।५७	५। ६।२१।२९	१।१४। ८।११	०।१४।१६। ४	११। ०।५४।२८	५। ७। २	७। २।४०
१५	२।२८।५३।५४	३। ३।२२	७। ८।३४।४५	२।२०। ०। ७	५। ६।२९।३१	१।१५।१३। ६	०।१४।१९।४९	११। ०।५१।१७	५। ७। ३	७। २।३९
१६	२।२९।५१।१०	३।१५।१५	७। ८।४०।४०	२।२२। ५।४४	५। ६।३७।४१	१।१६।१८।१४	०।१४।२३।२८	११। ०।४८। ७	५। ७। ५	७। २।३९
१७	३। ०।४८।२५	३।२७।१२	७। ८।४७।२४	२।२४।१२।२९	५। ६।४५।५८	१।१७।२३।३३	०।१४।२७। २	११। ०।४४।५६	५। ७। ७	७। २।३८
१८	३। १।४५।४१	४। ९।१४	७। ९।५४।५४	२।२६।२०। १	५। ६।५४।२२	१।१८।२९। ३	०।१४।३०।३१	११। ०।४१।४५	५। ७। ९	७। २।३७
१९	३। २।४२।५७	४।२१।२५	७। ९। ३।११	२।२८।२८। ४	५। ७। २।५२	१।१९।३४।४२	०।१४।३३।५४	११। ०।३८।३४	५। ७।१२	७। २।३७
२०	३। ३।४०।१४	५। ३।४७	७। ९।१२।१३	३। ०।३६।१८	५। ७।११।२९	१।२०।४०।३२	०।१४।३७।१२	११। ०।३५।२३	५। ७।१४	७। २।३६
२१	३। ४।३७।३०	५।१६।२६	७। ९।२२। १	३। २।४४।२९	५। ७।२०।१३	१।२१।४६।३१	०।१४।४०।२४	११। ०।३२।१२	५। ७।१६	७। २।३५
२२	३। ५।३४।४७	५।२९।२२	७। ९।३२।३२	३। ४।५२।१८	५। ७।२९। ३	१।२२।५२।४०	०।१४।४३।३०	११। ०।२९। २	५। ७।१८	७। २।३५
२३	३। ६।३२। ४	६।१२।४२	७। ९।४३।४८	३। ६।५९।३३	५। ७।३७।५९	१।२३।५९। ०	०।१४।४६।३१	११। ०।२५।५१	५। ७।२०	७। २।३४
२४	३। ७।२९।२२	६।२६।२७	७। ९।५५।४६	३। ९।.६। २	५। ७।४७। २	१।२५।.५।२९	०।१४।४९।२७	११। ०।२२।४०	५। ७।२३	७। २।३४

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह प्रातः ५ घं. मि., भारतीय स्टैंडर्ड टाइम

रा. अं. क.

(१ अगस्त को अयनांश २३°।२५।५८", प्लूटो ४।२९।५१)

तारीख सन्	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.
१९६९										
जु. २५	३। ८।२६।४०	७।१०।३९	७।१०। ८।२६	३।११।११।३३	५। ७।५६।११	१।२६।१२। ६	०।१४।५२।१६	११। ०।१९।३०	५। ७।२५	७। २।३३
२६	३। ९।२३।५८	७।२५।१६	७।१०।२२।४७	३।१३।१५।५८	५। ८। ५।२७	१।२७।१८।५४	०।१४।५५। ०	११। ०।१६।१९	५। ७।२७	७। २।३३
२७	३।१०।२१।१७	८।१०।१४	७।१०।३५।४९	३।१५।१९। ८	५। ८।१४।४८	१।२८।२५।५०	०।१४।५७।३८	११। ०।१३। ८	५। ७।३०	७। २।३३
२८	३।११।१८।३६	८।२५।२६	७।१०।५०।३०	३।१७।२०।५८	५। ८।२४।१५	१।२९।३३।५५	०।१५। ०।११	११। ०। ९।५७	५। ७।३२	७। २।३२
२९	३।१२।१५।५६	९।१०।३८	७।११। ५।४९	३।१९।२१।२१	५। ८।३३।४७	२। ०।४०।१०	०।१५। २।३७	११। ०। ६।४७	५। ७।३५	७। २।३२
३०	३।१३।१३।१८	९।२५।४४	७।११।२२।४४	३।२१।२०।१८	५। ८।४३।२४	२। १।४७।३१	०।१५। ४।५९	११। ०। ३।३७	५। ७।३७	७। २।३२
३१	३।१४।१०।३९	१०।१०।३३	७।११।३८।१८	३।२३।१७।३६	५। ८।५३। ६	२। २।५५। १	०।१५। ७।१५	११। ०। ०।२७	५। ७।४०	७। २।३१
अग. १	३।१५। ८। १	१०।२४।५७	७।११।५५।२९	३।२५।१३।२५	५। ९। २।५५	२। ४। २।४०	०।१५। ९।२४	१०।२९।५७।१६	५। ७।४२	७। २।३१
२	३।१६। ५।२४	११। ८।५५	७।१२।१३।१५	३।२७। ७।४०	६। ९।१२।४९	२। ५।१०।२९	०।१५।११।२७	१०।२९।५४। ५	५। ७।४५	७। २।३१
३	३।१७। २।४९	११।२२।२५	७।१२।३१।३७	३।२९। ०।१८	५। ९।२२।४९	२। ६।१८।२५	०।१५।१३।२४	१०।२९।५०।५४	५। ७।४८	७। २।३१
४	३।१८। ०।१४	०। ५।२९	७।१२।५०।३३	४। ०।५१।२१	५। ९।३२।५४	२। ७।२६।३०	०।१५।१५।१६	१०।२९।४७।४३	५। ७।५०	७। २।३१
५	३।१८।५७।४१	०।१८।११	७।१३।१०। ४	४। २।४०।४८	५। ९।४३। ५	२। ८।३४।४२	०।१५।१७। १	१०।२९।४४।३३	५। ७।५३	७। २।३१
६	३।१९।५५। ९	१। ०।३३	७।१३।३०। ८	४। ४।२८।३९	५। ९।५३।२०	२। ९।४३। ३	०।१५।१८।४०	१०।२९।४१।२२	५। ७।५६	७। २।३०
७	[illegible]	१।१२।४२	७।१३।५०।४५	४। ६।१४।५६	५।१०। ३।४०	२।१०।५१।३१	०।१५।२०।१४	१०।२९।३८।१०	५। ७।५९	७। २।३०
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४। ७।५९।३७	५।१०।१४। ६	२।१२। ०। ६	०।१५।२१।४०	१०।२९।३४।५९	५। ८। २	७। २।३०
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४। ९।४२।४५	५।१०।२४।३६	२।१३। ८।४९	०।१५।२३। ०	१०।२९।३१।४८	५। ८। ५	७। २।३०
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।११।२४।१९	५।१०।३५।१२	२।१४।१७।३९	०।१५।२४।१४	१०।२९।२८।३७	५। ८। ८	७। २।१३
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१३। ४।२१	५।१०।४५।५२	२।१५।२६।२६	०।१५।२५।२२	१०।२९।२५।२७	५। ८।११	७। २।३१
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१४।४२।५०	५।१०।५६।३७	२।१६।३५।४१	०।१५।२६।२३	१०।२९।२२।१६	५। ८।१४	७। २।३१
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१६।१९।४८	५।११। ७।२६	२।१७।४४।५१	०।१५।२७।१९	१०।२९।१९। ५	५। ८।१७	७। २।३१
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१७।५५।१४	५।११।१८।२१	२।१८।५४। ९	०।१५।२८। ८	१०।२९।१५।५५	५। ८।२०	७। २।३१
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१९।२९। ८	५।११।२९।२०	२।२०। ३।३१	०।१५।२८।५०	१०।२९।१२।४४	५। ८।२३	७। २।३१
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।११।४०।२५	२।२१।१३। १	०।१५।२९।२६	१०।२९। ९।३३	५। ८।२६	७। २।३२
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।११।५१।३५	२।२२।२२।३८	०।१५।२९।५५	१०।२९। ६।२२	५। ८।२९	७। २।३२
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।१२। २।४१	२।२३।३२।२०	०।१५।३०।१९	१०।२९। ३।१२	५। ८।३२	७। २।३२
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।१२।१३।५६	२।२४।४२। ८	०।१५।३०।३६	१०।२९। ०। १	५। ८।३५	७। २।३२
२०	[illegible]	६।२२।४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।२५।५२। २	०।१५।३०।४७	१०।२८।५६।५०	५। ८।३९	७। २।३३
२१	४। ४।२१।४०	७। ६।२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।२७। २। ४	०।१५।३०।५१	१०।२८।५३।३९	५। ८।४२	७। २।३३
२२	४। ५।१९।२८	७।२०।३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।२८।१२।१०	०।१५।३०।४९	१०।२८।५०।२८	५। ८।४५	७। २।३४
२३	४। ६।१५।१९	८। ४।५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।२९।२२।२२	०।१५।३०।४१	१०।२८।४७।१८	५। ८।४९	७। २।३४
२४	४। ७।१३। ६	८।१९।११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३। ०।३२।४१	०।१५।३०।२७	१०।२८।४४। ७	५। ८।५२	७। २।३५
२५	४। ८।१०।५७	९। ४।२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३। १।४३। ५	०।१५।३०। ७	१०।२८।४०।५६	५। ८।५५	[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा. अं. क.
(१ सितं. को अयनांश २३°।२६'।१२", प्लूटो ५।०।५२)

तारीख सन् १९६९	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अग. २६	४। ९। ८।४९	९।१९।१४	७।२१।५४।१९	५। ४।५८।४५	५।१३।३४।३०	३। २।५३।३६	०।१५।२९।३९	१०।२८।३७।४५	५। ८।५९	७। २।३६
२७	४।१०। ६।४३	१०। ४। ५	७।२२।२३।५६	५। ६।१३।१०	५।१३।४६।१४	३। ४। ४।१३	०।१५।२९। ६	१०।२८।३४।३४	५। ९। २	७। २।३६
२८	४।११। ४।३९	१०।१८।४३	७।२२।५३।५५	५। ७।२५।४०	५।१३।५८। २	३। ५।१४।५४	०।१५।२८।२७	१०।२८।३१।२४	५। ९। ५	७। २।३७
२९	४।१२। २।३८	११। ३। ४	७।२३।२४।१४	५। ८।३६।१२	५।१४। ९।५२	३। ६।२५।४१	०।१५।२७।४१	१०।२८।२८।१३	५। ९। ९	७। २।३८
३०	४।१३। ०।३७	११।१७। २	७।२३।५४।५४	५। ९।४४।४१	५।१४।२१।४५	३। ७।३६।३४	०।१५।२६।४८	१०।२८।२५। २	५। ९।१२	७। २।३८
३१	४।१३।५८।३८	०। ०।३५	७।२४।२५।५४	५।१०।५०।५९	५।१४।३३।४१	३। ८।४७।३४	०।१५।२५।४९	१०।२८।२१।५१	५। ९।१६	७। २।३९
सितं. १	४।१४।५६।४१	०।१३।४४	७।२४।५७।१२	५।११।५५। ४	५।१४।४५।४१	३। ९।५८।३९	०।१५।२४।४३	१०।२८।१८।४०	५। ९।१९	७। २।४०
२	४।१५।५४।४५	०।२६।३१	७।२५।२८।५०	५।१२।५६।४७	५।१४।५७।४४	३।११। ९।५०	०।१५।२३।३२	१०।२८।१५।२९	५। ९।२३	७। २।४१
३	४।१६।५२।५१	१। ८।५६	७।२६। ०।४६	५।१३।५६। ०	५।१५। ९।५०	३।१२।२१। ६	०।१५।२२।१४	१०।२८।१२।१९	५। ९।२७	७। २।४२
४	४।१७।५०।५९	१।२१। ७	७।२६।३३। १	५।१४।५२।३२	५।१५।२१।५९	३।१३।३२।२७	०।१५।२०।५०	१०।२८। ९। ८	५। ९।३०	७। २।४२
५	४।१८।४९। ९	२। ३। ७	७।२७। ५।३५	५।१५।४६।१५	५।१५।३४।११	३।१४।४३।५३	०।१५।१९।२१	१०।२८। ५।५८	५। ९।३४	७। २।४३
६	४।१९।४७।२१	२।१५। १	७।२७।३८।२७	५।१६।३६।५७	५।१५।४६।२५	३।१५।५५।२६	०।१५।१७।४६	१०।२८। २।४७	५। ९।३७	७। २।४४
७	४।२०।४५।३५	२।२६।५२	७।२८।११।३६	५।१७।२४।२९	५।१५।५८।४३	३।१७। ७। ३	०।१५।१६। ५	१०।२७।५९।३७	५। ९।४१	७। २।४५
८	४।२१।४३।५१	३। ८।४५	७।२८।४५। २	५।१८। ८।३३	५।१६।११। २	३।१८।१८।४६	०।१५।१४।१८	१०।२७।५६।२६	५। ९।४५	७। २।४६
९	४।२२।४२। ९	३।२०।४३	७।२९।१८।४६	५।१८।४८।५८	५।१६।२३।२४	३।१९।३०।३३	०।१५।१२।२४	१०।२७।५३।१५	५। ९।४८	७। २।४७
१०	४।२३।४०।२९	४। २।५०	७।२९।५२।४६	५।१९।२५।२७	५।१६।३५।४९	३।२०।४२।२५	०।१५।१०।२४	१०।२७।५०। ४	५। ९।५२	७। २।४८
११	४।२४।३८।५०	४।१५। ७	८। ०।२७। ३	५।१९।५७।४२	५।१६।४८।१६	३।२१।५४।२२	०।१५। ८।१९	१०।२७।४६।५३	५। ९।५६	७। २।४९
१२	४।२५।३७।१४	४।२७।३६	८। १। १।३५	५।२०।२५।२७	५।१७। ०।४४	३।२३। ६।२३	०।१५। ६। ८	१०।२७।४३।४३	५। ९।५९	७। २।५०
१३	४।२६।३५।३९	५।१०।१७	८। १।३६।२४	५।२०।४८।२२	५।१७।१३।१६	३।२४।१८।२९	०।१५। ३।५१	१०।२७।४०।३२	५।१०। ३	७। २।५२
१४	४।२७।३४। ६	५।२३।१२	८। २।११।२९	५।२१।१६। ७	५।१७।२५।४८	३।२५।३०।४०	०।१५। १।२८	१०।२७।३७।२१	५।१०। ७	७। २।५३
१५	४।२८।३२।३५	६। ६।२०	८। २।४६।४९	५।२१।१८।२०	५।१६।३८।२१	३।२६।४२।५५	०।१४।५९। ०	१०।२७।३४।१०	५।१०।१०	७। २।५४
१६	४।२९।३१। ५	६।१९।४३	८। ३।२२।२३	५।२१।२४।४२	५।१७।५०।५८	३।२७।५५।१५	०।१४।५६।२५	१०।२७।३०।५९	५।१०।१४	७। २।५५
१७	५। ०।२९।३८	७। ३।१८	८। ३।५८।१३	५।२१।२४।४९	५।१८। ३।३७	३।२९। ७।३८	०।१४।५३।४५	१०।२७।२७।४९	५।१०।१८	७। २।५६
१८	५। १।२८।११	७।१७। ७	८। ४।३४।१६	५।२१।१८।२५	५।१८।१६।१७	४। ०।२०। ६	०।१४।५१।५९	१०।२७।२४।३८	५।१०।२२	७। २।५७
१९	५। २।२६।४५	८। १। ९	८। ५।१०।३४	५।२१। ५।१७	५।१८।२९। ०	४। १।३२।३८	०।१४।४८। ९	१०।२७।२१।२७	५।१०।२५	७। २।५९
२०	५। ३।२५।२२	८।१५।१९	८। ५।४७। ४	५।२०।४५। ९	५।१८।४१।४४	४। २।४५।१५	०।१४।४५।१४	१०।२७।१८।४६	५।१०।२९	७। ३। ०
२१	५। ४।२४। ०	८।२९।३९	८। ६।२३।४८	५।२०।१७।५६	५।१८।५४।३०	४। ३।५७।५५	०।१४।४२।१३	१०।२७।१५। ५	५।१०।३३	७। ३। २
२२	५। ५।२२।४०	९।१४। ५	८। ७। ०।४४	५।१९।४३।३५	५।१९। ७।१६	४। ५।१०।३९	०।१४।३९। ८	१०।२७।११।५४	५।१०।३७	७। ३। ३
२३	५। ६।२१।२२	९।२८।३२	८। ७।३७।५३	५।१९। २।१८	५।१९।२०। ५	४। ६।२३।२८	०।१४।३५।५७	१०।२७। ८।४३	५।१०।४०	७। ३। ४
२४	५। ७।२०। ६	१०।१२।५६	८। ८।१५।१३	५।१८।१४।२४	५।१९।३२।५४	४। ७।३६।२०	०।१४।३२।४२	१०।२७। ५।३२	५।१०।४४	७। ३। ६
२५	५। ८।१८।५२	१०।२७।१३	८। ८।५२।४६	५।१७।२०।२७	५।१९।४५।४४	४। ८।४९।१६	०।१४।२९।२२	१०।२७। २।२१	५।१०।४८	७। ३। ७
२६	५। ९।१७।३९	११।११।१७	८। ९।३०।३१	५।१६।२२।१८	५।१९।५८।३६	४।१०। २।१७	०।१४।२५।५७	१०।२६।५९।११	५।१०।५२	७। ३। ९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३०मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(१ अक्तू. को अयनांश २३°।२६′।१६″, प्लूटो रा. अं. क. ५।१।५८)

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.
सि. २७	५।१०।१६।२९	११।२५। ३	८।१०। ८।२६	५।१५।१७।५८	५।२०।११।२८	४।११।१५।२१	०।१४।२२।२७	१०।२६।५६। ०	५।१०।५६	७। ३।१०
२८	५।११।१५।२०	०। ८।३१	८।१०।४६।३३	५।१४।११।४७	५।२०।२४।२२	४।१२।२८।३१	०।१४।१८।५३	१०।२६।५२।४९	५।१०।५९	७। ३।१२
२९	५।१२।१४।१४	०।२१।३८	८।११।२४।५०	५।१३। ४।१५	५।२०।३७।१६	४।१३।४१।४३	०।१४।१५।१४	१०।२६।४९।३९	५।११। ३	७। ३।१३
३०	५।१३।१३।११	१। ४।२५	८।१२। ३।१६	५।११।५७। ४	५।२०।५०।११	४।१४।५५। १	०।१४।११।३२	१०।२६।४६।२८	५।११। ७	७। ३।१५
अक्तू. १	५।१४।१२। ९	१।१६।५३	८।१२।४१।५५	५।१०।५२। ०	५।२१। ३। ७	४।१६। ८।२१	०।१४। ७।४४	१०।२६।४३।१८	५।११।११	७। ३।१६
२	५।१५।११।१०	१।२९। ६	८।१३।२०।४५	५। ९।५०।५०	५।२१।१६। ४	४।१७।२१।४६	०।१४। ३।५३	१०।२६।४०। ७	५।११।१५	७। ३।१८
३	५।१६।१०।१३	२।११। ७	८।१३।५९।४८	५। ८।५५।१४	५।२१।२९। २	४।१८।३५।१४	०।१३।५९।५८	१०।२६।३६।५६	५।११।१८	७। ३।२०
४	५।१७। ९।१८	२।२३। २	८।१४।३८।५४	५। ८। ६।४६	५।२१।४२। १	४।१९।४८।४७	०।१३।५५।५८	१०।२६।३३।४५	५।११।२२	७। ३।२१
५	५।१८। ८।२५	३। ४।५३	८।१५।१८।१३	५। ७।२६।४२	५।२१।५५। ०	४।२१। २।२२	०।१३।५१।५५	१०।२६।३०।३५	५।११।२६	७। ३।२३
६	५।१९। ७।३५	३।१६।४६	८।१५।५७।४३	५। ६।५६। ६	५।२२। ८। ०	४।२२।१६। २	०।१३।४७।४९	१०।२६।२७।२४	५।११।३०	७। ३।२५
७	५।२०। ६।४७	३।२८।४७	८।१६।३७।२२	५। ६।३५।४०	५।२२।२१। ०	४।२३।२९।४४	०।१३।४३।३८	१०।२६।२४।१४	५।११।३३	७। ३।२७
८	५।२१। ६। १	४।१०।५९	८।१७।१७।१०	५। ६।२५।५१	५।२२।३४। १	४।२४।४३।२९	०।१३।३९।२५	१०।२६।२१। ३	५।११।३७	७। ३।२८
९	५।२२। ५।१७	४।२३।२६	८।१७।५७। ७	५। ६।२६।४७	५।२२।४७। १	४।२५।५७।१९	०।१३।३५। ८	१०।२६।१७।५२	५।११।४१	७। ३।३०
१०	५।२३। ४।३५	५। ६। ८	८।१८।३७।१३	५। ६।३८।२३	५।२३। ०। ३	४।२७।११।११	०।१३।३०।४९	१०।२६।१४।४१	५।११।४५	७। ३।३२
११	५।२४। ३।५६	५।१९। ९	८।१९।१७।२८	५। ७। ०।१७	५।२३।१३। ४	४।२८।२५। ६	०।१३।२६।२६	१०।२६।११।३०	५।११।४८	७। ३।३४
१२	५।२५। ३।१९	६। २।२७	८।१९।५७।५३	५। ७।३२। १	५।२३।२६। ५	४।२९।३९। ४	०।१३।२२। ०	१०।२६। ८।१९	५।११।५२	७। ३।३६
१३	५।२६। २।४४	६।१६। २	८।२०।३८।२६	५। ८।१२।५६	५।२३।३९। ६	५। ०।५३। ६	०।१३।१७।३२	१०।२६। ५। ८	५।११।५६	७। ३।३७
१४	५।२७। २।१०	६।२९।५१	८।२१।१९। ९	५। ९। २।११	५।२३।५२। ६	५। २। ७।१०	०।१३।१३। १	१०।२६। १।५८	५।११।५९	७। ३।३९
१५	५।२८। १।३८	७।१३।५१	८।२२। ०। ०	५। ९।५९।२५	५।२४। ५। ५	५। ३।२१।१७	०।१३। ८।२७	१०।२५।५८।४७	५।१२। ३	७। ३।४१
१६	५।२९। १। ९	७।२७।५५	८।२२।४०।५९	५।११। ३।२३	५।२४।१८। ५	५। ४।३५।२६	०।१३। ३।५०	१०।२५।५५।३६	५।१२। ७	७। ३।४३
१७	६। ०। ०।४१	८।१२। ९	८।२३।२२। ४	५।१२।१३।२८	५।२४।३१। ५	५। ५।४९।३९	०।१२।५९।१३	१०।२५।५२।२५	५।१२।११	७। ३।४५
१८	६। १। ०।१६	८।२६।२६	८।२४। ३।१८	५।१३।२८।५४	५।२४।४४। ४	५। ७। ३।५३	०।१२।५४।३३	१०।२५।४९।१४	५।१२।१४	७। ३।४७
१९	६। १।५९।५२	९।१०।२६	८।२४।४४।३८	५।१४।४८।५५	५।२४।५७। ३	५। ८।१८। ९	०।१२।४९।५३	१०।२५।४६। ३	५।१२।१८	७। ३।४९
२०	६। २।५९।२९	९।२४।४९	८।२५।२६। ६	५।१६।१२।२६	५।२५।१०। ०	५। ९।३२।२९	०।१२।४५।१०	१०।२५।४२।५३	५।१२।२१	७। ३।५१
२१	६। ३।५९। ९	१०। ८।१९	८।२६। ७।४०	५।१७।४०।१६	५।२५।२२।५८	५।१०।४६।५०	०।१२।४०।२६	१०।२५।३९।४२	५।१२।२५	७। ३।५३
२२	६। ४।५८।५१	१०।२१।१५	८।२६।४९।२९	५।१९।१०।२४	५।२५।३५।५४	५।१२। १।१५	०।१२।३५।४१	१०।२५।३६।३१	५।१२।२९	७। ३।५५
२३	६। ५।५८।२२	११। ६।२४	८।२७।३१।२९	५।२०।४२।४९	५।२५।४८।५०	५।१३।१५।४१	०।१२।३०।५४	१०।२५।३३।२०	५।१२।३२	७। ३।५७
२४	६। ६।५८।१६	११।२०। ३	८।२८।१३।३३	५।२२।१७। ८	५।२६। १।४४	५।१४।३०। ९	०।१२।२६। ६	१०।२५।३०।१०	५।१२।३६	७। ३।५९
२५	६। ७।५८। ३	०। ३।१२	८।२८।५५।४२	५।२३।५४।५४	५।२६।१४।३८	५।१५।४४।४१	०।१२।२१।१८	१०।२५।२६।५९	५।१२।३९	७। ४। १
२६	६। ८।५७।५१	०।१६।४२	८।२९।३७।५७	५।२५।२९।५३	५।२६।२७।३०	५।१६।५९।१५	०।१२।१६।२९	१०।२५।२३।४८	५।१२।४३	७। ४। ३
२७	६। ९।५७।४१	०।२९।४०	९। ०।१९।१९	५।२७। ७।४६	५।२६।४०।२२	५।१८।१३।५०	०।१२।११।४०	१०।२५।२०।३८	५।१२।४६	७। ४। ५
२८	६।१०।५७।३४	१।१२।२१	९। १। १।१६	५।२८।४४।२०	५।२६।५३।१३	५।१९।२८।२८	०।१२। ६।५१	१०।२५।१७।२७	५।१२।५०	७। ४। ७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घ. ३० मि., भारतीय स्टण्डर्ड टाईम)

(१ नवं. को अयनांश २३°।२६।१०", प्लूटो ५।३।०)
रा. अं. क.

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.
अक्तू. २९	६।११।५७।२८	१।२४।४६	९। १।४३।५९	६। ०।२५।२१	५।२७। ६। २	५।२०।४३। ९	०।१२। २। २	१०।२५।१४।१६	५।१२।५३	७। ४।१०
३०	६।१२।५७।२४	२। ६।५६	९। २।२६।२९	६। २। ४।४२	५।२७।१८।४९	५।२१।५७।५१	०।११।५७।१२	१०।२५।११। ५	५।१२।५७	७। ४।१२
३१	६।१३।५७।२२	२।१८।५९	९। ३। ८।५८	६। ३।४४।१३	५।२७।३१।३५	५।२३।१२।३४	०।११।५२।२२	१०।२५। ७।५४	५।१३। ०	७। ४।१४
१	६।१४।५७।२३	३। ०।५१	९। ३।५१।३६	६। ५।२३।४६	५।२७।४४।१९	५।२४।२७।२०	०।११।४७।३२	१०।२५। ४।४३	५।१३। ३	७। ४।१६
नवं. २	६।१५।५७।२६	३।१२।४१	९। ४।३४।२१	६। ७। ३।१६	५।२७।५७। २	५।२५।४२। ९	०।११।४२।४३	१०।२५। १।३३	५।१३। ७	७। ४।१८
३	६।१६।५७।३१	३।२४।३४	९। ५।१७।१०	६। ८।४२।४०	५।२८। ९।४३	५।२६।५६।५९	०।११।३७।५४	१०।२४।५८।२२	५।१३।१०	७। ४।२०
४	६।१७।५७।३८	४। ६।३४	९। ६। ०। ५	६।१०।२१।५३	५।२८।२२।२२	५।२८।११।५२	०।११।३३। ७	१०।२४।५५।११	५।१३।१३	७। ४।२२
५	६।१८।५७।४७	४।१८।४६	९। ६।४३। ४	६।१२। ०।५४	५।२८।३५। ०	५।२९।२६।४६	०।११।२८।२०	१०।२४।५२। १	५।१३।१७	७। ४।२५
६	६।१९।५७।५८	५। १।१६	९। ७।२६। ८	६।१३।३९।३८	५।२८।४७।३५	६। ०।४१।४१	०।११।२३।३५	१०।२४।४८।५०	५।१३।२०	७। ४।२७
७	६।२०।५८।११	५।१४। ७	९। ८। ९।१६	६।१५।१८। ५	५।२९। ०। ९	६। १।५६।३८	०।११।१८।५१	१०।२४।४५।३९	५।१३।२३	७। ४।२९
८	६।२१।५८।२७	५।२७।२१	९। ८।५२।३०	६।१६।५६।१५	५।२९।१२।४०	६। ३।११।३८	०।११।१४। ७	१०।२४।४२।१८	५।१३।२६	७। ४।३१
९	६।२२।५८।४४	६।१०।५९	९। ९।३५।४७	६।१८।३४। ५	५।२९।२५। ९	६। ४।२६।३८	०।११। ९।२६	१०।२४।३९।१७	५।१३।२९	७। ४।३३
१०	६।२३।५९। ३	६।२४।५९	९।१०।१९।१०	६।२०।११।३६	५।२९।३७।३५	६। ५।४१।४१	०।११। ४।४६	१०।२४।३६। ६	५।१३।३२	७। ४।३६
११	६।२४।५९।२३	७। ९।१६	९।११। २।३७	६।२१।४८।४९	५।२९।५०। ०	६। ६।५६।४४	०।११। ०। ८	१०।२४।३२।५५	५।१३।३६	७। ४।३८
१२	६।२५।५९।४५	७।२३।४४	९।११।४६। ७	६।२३।२५।४१	६। ०। २।२२	६। ८।११।४८	०।१०।५५।३३	१०।२४।२९।४४	५।१३।३९	७। ४।४०
१३	६।२७। ०। ९	८। ८।१८	९।१२।२९।४१	६।२५। २।१४	६। ०।१४।४२	६। ९।२६।५५	०।१०।५०।५९	१०।२४।२६।३४	५।१३।४२	७। ४।४२
१४	६।२८। ०।३४	८।२२।५०	९।१३।१३।२०	६।२६।३८।२८	६। ०।२६।५८	६।१०।४२। २	०।१०।४६।२९	१०।२४।२३।२३	५।१३।४५	७। ४।४५
१५	६।२९। १। १	९। ७।१४	९।१३।५७। ०	६।२८।१४।२६	६। ०।३९।११	६।११।५७।११	०।१०।४१।५९	१०।२४।२०।१३	५।१३।४८	७। ४।४७
१६	७। ०। १।२९	९।२१।२८	९।१४।४०।४५	६।२९।५०। ५	६। ०।५१।२२	६।१३।१२।२०	०।१०।३७।३३	१०।२४।१७। २	५।१३।५०	७। ४।४९
१७	७। १। १।५८	१०। ५।२९	९।१५।२४।३५	७। १।२५।२८	६। १। ३।३०	६।१४।२७।३१	०।१०।३३।१०	१०।२४।१३।५१	५।१३।५३	७। ४।५१
१८	७। २। २।२८	१०।१९।१७	९।१६। ८।२७	७। ३। ०।३६	६। १।१५।३५	६।१५।४२।४३	०।१०।२८।५१	१०।२४।१०।४०	५।१३।५६	७। ४।५४
१९	७। ३। २।५९	११। २।५४	९।१६।५२।२३	७। ४।३५।२८	६। १।२७।३६	६।१६।५७।५४	०।१०।२४।३४	१०।२४। ७।२९	५।१३।५९	७। ४।५६
२०	७। ४। ३।३१	११।१६।१९	९।१७।३६।२१	७। ६।१०। ६	६। १।३९।३५	६।१८।१३। ७	०।१०।२०।२१	१०।२४। ४।१८	५।१४। २	७। ४।५८
२१	७। ५। ४। ५	११।२९।३२	९।१८।२०।२२	७। ७।४४।३२	६। १।५१।३०	६।१९।२८।२०	०।१०।१६।११	१०।२४। १। ७	५।१४। ५	७। ५। ०
२२	७। ६। ४।४०	०।१२।३६	९।१९। ४।२५	७। ९।१८।४५	६। २। ३।२२	६।२०।४३।३५	०।१०।१२। ५	१०।२३।५७।५६	५।१४। ७	७। ५। ३
२३	७। ७। ५।१७	०।२५।२८	९।१९।४८।३२	७।१०।५२।४९	६। २।१५।११	६।२१।५८।५०	०।१०। ८। २	१०।२३।५४।४५	५।१४।१०	७। ५। ५
२४	७। ८। ५।५५	१। ८।१०	९।२०।३२।४०	७।१२।२६।४२	६। २।२६।५५	६।२३।१४। ७	०।१०। ४। ४	१०।२३।५१।३५	५।१४।१२	७। ५। ७
२५	७। ९। ६।३५	१।२०।३८	९।२१।१६।५१	७।१४। ०।२७	६। २।३८।३७	६।२४।२९।२४	०।१०। ०। ९	१०।२३।४८।२४	५।१४।१५	७। ५। ९
२६	७।१०। ७।१६	२। २।५६	९।२२। १। ४	७।१५।३४। ३	६। २।५०।१४	६।२५।४४।४३	०। ९।५६।१९	१०।२३।४५।१४	५।१४।१८	७। ५।१२
२७	७।११। ७।५८	२।१५। २	९।२२।४५।२०	७।१७। ७।३२	६। ३। १।४८	६।२७। ०। ३	०। ९।५२।३२	१०।२३।४२। ३	५।१४।२०	७। ५।१४
२८	७।१२। ८।४२	२।२७। १	९।२३।२९।३७	७।१८।४०।५४	६। ३।१३।१७	६।२८।१५।२३	०। ९।४८।५१	१०।२३।३८।५२	५।१४।२३	७। ५।१६
२९	७।१३। ९।२७	३। ८।५१	९।२४।१३।५६	७।२०।१४।११	६। ३।२४।४३	६।२९।३०।४३	०। ९।४५।१३	१०।२३।३५।४१	५।१४।२५	७। ५।१८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं० ३० मि०, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा. अं. क.

(१ दिसं. को अयनांश २३°२६'१५", प्लूटो ४।५।३।४२)

तारीख सन् १९६९	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
नवं. ३०	७।१४।१०।१३	३।२०।३९	९।२४।५८।१५	७।२१।४७।२१	६। ३।३६। ४	७। ०।४६। ३	०। ९।४१।३९	१०।२३।३२।३०	५।१४।२७	७। ५।२१
दिसं. १	७।१५।११। १	४। २।३०	९।२५।४२।३८	७।२३।२०।२७	६। ३।४७।२१	७। २। १।२५	०। ९।३८।१०	१०।२३।२९।१९	५।१३।३०	७। ५।२३
२	७।१६।११।५१	४।१४।२६	९।२६।२७। ३	७।२४।५३।२९	६। ३।५८।३४	७। ३।१६।४८	०। ९।३४।४६	१०।२३।२६। ८	५।१४।३२	७। ५।२५
३	७।१७।१२।४२	४।२६।३५	९।२७।११।३१	७।२६।२६।२६	६। ४। ९।४३	७। ४।३२।११	०। ९।३१।२६	१०।२३।२२।५८	५।१४।३४	७। ५।२७
४	७।१८।१३।३४	५। ९। ३	९।२७।५५।५९	७।२७।५९।१९	६। ४।२०।४७	७। ५।४७।३६	०। ९।२८।१३	१०।२३।१९।४७	५।१४।३६	७। ५।२९
५	७।१९।१४।२८	५।२१।५२	९।२८।४०।२९	७।२९।३२। ८	६। ४।३१।४७	७। ७। ३। १	०। ९।२५। ५	१०।२३।१६।३७	५।१३।३८	७। ५।३२
६	७।२०।१५।२३	६। ५। ९	९।२९।२५। १	८। १। ४।५२	६। ४।४२।४१	७। ८।१८।२७	०। ९।२२। १	१०।२३।१३।२६	५।१४।४१	७। ५।३४
७	७।२१।१६।१९	६।१८।५४	१०। ०। ९।३४	८। २।३७।३०	६। ४।५३।३१	७। ९।३३।५३	०। ९।१९। ३	१०।२३।१०।१५	५।१४।४३	७। ५।३६
८	७।२२।१७।१७	७। ३। ७	१०। ०।५४।१०	८। ४।१०। २	६। ५। ४।१७	७।१०।४९।२१	०। ९।१६।११	१०।२३। ७। ४	५।१४।४५	७। ५।३८
९	७।२३।१८।१५	७।१७।४४	१०। १।३८।४७	८। ५।४२।२५	६। ५।१४।५७	७।१२। ४।४८	०। ९।१३।२३	१०।२३। ३।५३	५।१४।४६	७। ५।४०
१०	७।२४।१९।१४	८। २।३६	१०। २।२३।२६	८। ७।१४।३९	६। ५।२५।३२	७।१३।२०।१६	०। ९।१०।४२	१०।२३। ०।४२	५।१४।४८	७। ५।४३
११	७।२५।२०।१५	८।१७।३६	१०। ३। ८। ५	८। ८।४६।४०	६। ५।३६। २	७।१४।३५।४४	०। ९। ८। ६	१०।२२।५७।३१	५।१४।५०	७। ५।४५
१२	७।२६।२१।१६	९। २।३४	१०। ३।५२।४७	८।१०।१८।२६	५। ५।४६।२७	७।१५।५१।१३	०। ९। ५।३७	१०।२२।५४।२०	५।१४।५२	७। ५।४७
१३	७।२७।२२।१८	९।१७।२१	१०। ४।३७।२९	८।११।४९।५२	६। ५।५६।४५	७।१७। ६।४१	०। ९। ३।१३	१०।२२।५१। ९	५।१४।५४	७। ५।४९
१४	७।२८।२३।२०	१०। १।५९	१०। ५।२२।१२	८।१३।२०।५७	६। ६। ६।५८	७।१८।२२। ९	०। ९। ०।५४	१०।२२।४७।५९	५।१४।५६	७। ५।५१
१५	७।२९।२४।२३	१०।१६। ०	१०। ६। ६।५४	८।१४।५१।२९	६। ६।१७। ४	७।१९।३७।३६	०। ८।५८।४१	१०।२२।४४।४८	५।१४।५७	७। ५।५३
१६	८। ०।२५।२६	१०।२९।४९	१०। ६।५१।३८	८।१६।२१।२९	६। ६।२७। ५	७।२०।५३। ४	०। ८।५६।३३	१०।२२।४१।३८	५।१४।५९	७। ५।५५
१७	८। १।२६।२९	११।१२।५९	१०। ७।३६।२३	८।१७।५०।४८	६। ६।३७। ०	७।२२। ८।३२	०। ८।५४।३३	१०।२२।३८।२७	५।१५। १	७। ५।५७
१८	८। २।२७।३३	११।२६।३३	१०। ८।२१। ९	८।१९।१९।१५	६। ६।४६।५१	७।२३।२४। १	०। ८।५२।३९	१०।२२।३५।१६	५।१५। २	७। ६। ०
१९	८। ३।२८।३८	[illegible]	१०। ९। ५।५४	८।२०।४६।४२	६। ६।५६।३४	७।२४।३९।२९	०। ८।५०।५२	१०।२२।३२। ५	५।१५। ३	७। ६। २
२०	८। ४।२९।४०	[illegible]	१०। ९।५०।४१	८।२२।१२।५४	६। ७। ६।११	७।२५।५४।५९	०। ८।४९। ९	१०।२२।२८।५४	५।१५। ५	७। ६। ४
२१	८। ५।३०।४८	[illegible]	१०।१०।३५।२८	८।२३।३७।३९	६। ७।१५।४३	७।२७।१०।२८	०। ८।४७।३४	१०।२२।२५।४४	५।१५। ६	७। ६। ६
२२	८। ६।३१।४९	[illegible]	१०।११।२०।१६	८।२५। ०।४१	६। ७।२५। ८	७।२८।२५।५८	०। ८।४६। ५	१०।२२।२२।३३	५।१५। ७	७। ६। ८
२३	८। ७।३२।५५	[illegible]	१०।१२। ५। ४	८।२६।२१।३८	६। ७।३४।२६	७।२९।४१।२७	०। ८।४४।४४	१०।२२।१९।२२	५।१५। ८	७। ६।१०
२४	८। ८।३४। १	[illegible]	१०।१२।४९।५३	८।२७।४०।१०	६। ७।४३।३९	८। ०।५६।५७	०। ८।४३।२९	१०।२२।१६।११	५।१५।१०	७। ६।१२
२५	८। ९।३५। ७	[illegible]	१०।१३।३४।४२	८।२८।५५।५०	६। ७।५२।४४	८। २।१२।२६	०। ८।४२।२०	१०।२२।१३। १	५।१५।११	७। ६।१४
२६	८।१०।३६।१४	२।२३।१६	१०।१४।१९।३२	९। ०। ८। ७	६। ८। १।४३	८। ३।२७।५५	०। ८।४१।१८	१०।२२। ९।५०	५।१५।१२	७। ६।१६
२७	८।११।३७।२१	३। ५।२४	१०।१५। ४।२२	९। १।१८।३०	६। ८।१०।३५	८। ४।४३।२४	०। ८।४०।२२	१०।२२। ६।३९	५।१५।१३	७। ६।१७
२८	८।१२।३८।२९	३।१७।३८	१०।१५।४९।१२	९। २।२०।१६	६। ८।१९।२१	८। ५।५८।५४	०। ८।३९।३३	१०।२२। ३।२८	५।१५।१४	७। ६।१९
२९	८।१३।३९।३७	३।२९। ९	१०।१६।३४। ३	९। ३।१८।४५	६। ८।२७।५९	८। ७।१४।२३	०। ८।३८।५१	१०।२२। ०।१७	५।१५।१५	७। ६।२१
३०	८।१४।४०।४६	४।१०।५०	१०।१७।१८।५४	९। ४।१२।२५	६। ८।३६।२४	८। ८।२९।५२	०। ८।३८।१४	१०।२१।५७। ६	५।१५।१५	७। ६।२३
३१	८।१५।४१।५२	४।२२।४६	१०।१८। ३। २	९। ५। ३। ३	६। ८।४४।४९	८। ९।४५।२०	०। ८।३७।४५	१०।२१।५३।५५	५।१५।१६	७। ६।२५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५घं० ३० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

रा.अ.क. रा. अ. क.

(१ जन. को अयनांश २३°।२६।२१", प्लूटो ५।३।५७ (१ फर. को अयनांश २३°।२६।२६", प्लूटो ५।३।४०)

तारीख सन् १९७०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
जन. १	८।१६।४३। ०	५।१७।१६	१०।१८।४७।४७	९। ५।३४।५६	६। ८।५३। ८	८।११। ०।४९	०। ८।३७।२३	१०।२१।५०।४४	५।१५।१७	७। ६।२७
२	८।१७।४४। ९	६। ०। १	१०।१९।३२।३२	९। ६। ४।१०	६। ९। १।१७	८।१२।१६।१८	०। ८।३७। ६	१०।२१।४७।३३	५।१५।१८	७। ६।२९
३	८।१८।४५।१९	६।१३।११	१०।२०।१७।१७	९। ६।२३।५१	६। ९। ९।१८	८।१३।३१।४८	०। ८।३६।५७	१०।२१।४४।२२	५।१५।१८	७। ६।३०
४	८।१९।४६।२९	६।२६।५१	१०।२१। २। १	९। ६।२३। ८	६। ९।१७।११	८।१४।४७।१८	०। ८।३६।५४	१०।२१।४१।१२	५।१५।१९	७। ६।३२
५	८।२०।४७।३९	७।११। १	१०।२१।४६।४४	९। ६।३१।१८	६। ९।२४।५७	८।१६। २।४९	०। ८।३६।५८	१०।२१।३८। १	५।१५।१९	७। ६।३४
६	८।२१।४८।५०	७।२५।३९	१०।२२।३१।२८	९। ६।१७।५०	६। ९।३२।३४	८।१७।१८।१९	०। ८।३७। ९	१०।२१।३४।५०	५।१५।२०	७। ६।३६
७	८।२२।५०। १	८।१०।३९	१०।२३।१६।११	९। ५।५२।३०	६। ९।४०। ४	८।१८।३३।४८	०। ८।३७।२७	१०।२१।३१।३९	५।१५।२०	७। ६।३७
८	८।२३।५१।१२	८।२५।५३	१०।२४। ०।५३	९। ५।१५।२७	६। ९।४७।२५	८।१९।४९।१८	०। ८।३७।५२	१०।२१।२८।२८	५।१५।२०	७। ६।३९
९	८।२४।५२।२२	९।११। ८	१०।२४।४५।३५	९। ४।२७।१४	६। ९।५४।३८	८।२१। ४।४७	०। ८।३८।२३	१०।२१।२५।१७	५।१५।२१	७। ६।४१
१०	८।२५।५३।३२	९।२६।१६	१०।२५।३०।१६	९। ३।२८।५६	६।१०। १।४०	८।२२।२०।१७	०। ८।३९। २	१०।२१।२२। ६	५।१५।२१	७। ६।४२
११	८।२६।५४।४१	१०।११। ५	१०।२६।१४।५६	९। २।२२। ५	६।१०। ८।३६	८।२३।३५।४६	०। ८।३९।४६	१०।२१।१८।५५	५।१५।२१	७। ६।४४
१२	८।२७।५५।५०	१०।२५।३२	१०।२६।५९।३६	९। १। ८।४२	६।१०।१५।२३	८।२४।५१।१४	०। ८।४०।३६	१०।२१।१५।४४	५।१५।२१	७। ६।४६
१३	८।२८।५६।५९	११। ९।३४	१०।२७।४४।१४	८।२९।५१। ४	६।१०।२२। १	८।२६। ६।४२	०। ८।४१।३४	१०।२१।१२।२३	५।१५।२१	७। ६।४७
१४	८।२९।५८। ७	११।२३।१०	१०।२८।२८।५१	८।२८।३१।४२	६।१०।२८।३०	८।२७।२२। ९	०। ८।४२।३९	१०।२१। ९।२३	५।१५।२१	७। ६।४९
१५	९। ०।५९।१४	०। ६।२३	१०।२९।१३।२६	८।२७।१३। ३	६।१०।३४।४९	८।२८।३७।४०	०। ८।४३।४९	१०।२१। ६।१२	५।१५।२१	७। ६।५०
१६	९। २। ०।२१	०।१९।१५	१०।२९।५८। १	८।२५।५७।३७	६।१०।४१। १	८।२९।५३। ४	०। ८।४५। ९	१०।२१। ३। १	५।१५।२१	७। ६।५२
१७	९। ३। १।२७	१। १।५०	११। ०।४२।३५	८।२४।४७।१९	६।१०।४७। ३	९। १। ८।३०	०। ८।४६।३४	१०।२०।५९।५०	५।१५।२१	७। ६।५३
१८	९। ४। २।३२	१।१४।१२	११। १।२७। ७	८।२३।४३।४९	६।१०।५२।५६	९। २।२३।५७	०। ८।४८। ५	१०।२०।५६।४०	५।१५।२१	७। ६।५५
१९	९। ५। ३।३५	१।२६।२४	११। २।११।३८	८।२२।४८।२२	६।१०।५८।४०	९। ३।३९।३२	०। ८।४९।४३	१०।२०।५३।२९	५।१५।२०	७। ६।५६
२०	९। ६। ४।३७	२। ८।२७	११। २।५६। ८	८।२२। १।४५	६।११। ४।१५	९। ४।५४।४६	०। ८।५१।२८	१०।२०।५०।१८	५।१५।२०	७। ६।५७
२१	९। ७। ५।३९	२।२०।२४	११। ३।४०।३६	८।२१।२४।२२	६।११। ९।४०	९। ६।१०।११	०। ८।५३।१९	१०।२०।४७। ८	५।१५।१९	७। ६।५९
२२	९। ८। ६।४१	३। २।१७	११। ४।२५। ३	८।२०।५६।२१	६।११।१४।५५	९। ७।२५।३६	०। ८।५५।१७	१०।२०।४३।५७	५।१५।१९	७। ७। ०
२३	९। ९। ७।४३	३।१४। ७	११। ५। ९।२८	८।२०।३७।३०	६।११।२०। ०	९। ८।४१। ०	०। ८।५७।५१	१०।२०।४०।४६	५।१५।१९	७। ७। १
२४	९।१०। ८।४४	३।२५।५६	११। ५।५३।५२	८।२०।२७।३०	६।११।२४।५६	९। ९।५६।२३	०। ८।५९।३१	१०।२०।३७।३५	५।१५।१८	७। ७। ३
२५	९।११। ९।४४	४। ७।४६	११। ६।३८।१४	८।२०।२५।५५	६।११।२९।४२	९।११।११।४६	०। ९। १।४६	१०।२०।३४।२५	५।१५।१७	७। ७। ४
२६	९।१२।१०।४२	४।१९।४०	११। ७।२२।३३	८।२०।३२।११	६।११।३४।१८	९।१२।२७। ८	०। ९। ४। ८	१०।२०।३१।१४	५।१५।१७	७। ७। ५
२७	९।१३।११।४०	५। १।४१	११। ८। ६।५२	८।२०।४५।४६	६।११।३८।४४	९।१३।४२।३०	०। ९। ६।३८	१०।२०।२८। ३	५।१५।१६	७। ७। ६
२८	९।१४।१२।३७	५।१३।५०	११। ८।५१।१०	८।२१। ६। ४	६।११।४३। १	९।१४।५७।५२	०। ९। ९।१३	१०।२०।२४।५३	५।१५।१५	७। ७। ७
२९	९।१५।१३।३३	५।२६।१४	११। ९।३५।२५	९।२१।३२।३१	६।११।४७। ७	९।१६।१३।१३	०। ९।११।५५	१०।२०।२१।४२	५।१५।१४	७। ७। ८
३०	९।१६।१४।२९	६। ८।५६	११।१०।१९।३९	८।२२। ४।३६	६।११।५१। २	९।१७।२८।३४	०। ९।१४।४३	१०।२०।१८।३१	५।१५।१३	६। ७।१०
३१	९।१७।१५।२४	६।२२। ०	११।११। ३।५०	८।२२।४१।५०	६।११।५४।४८	९।१८।४३।५६	०। ९।१७।३६	१०।२०।१५।२१	५।१५।१२	७। ७।११
फर. १	९।१८।१६।१९	७। ५।३२	११।११।४८। २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२०।१२।१०	५।१५।११	७। ७।१२

दैनिक स्पष्ट निरयण (प्रातः ५घं० ३० मि०, भारतीय स्टैंण्डर्ड टाइम)

रा. अं. क.
(१ मार्च को अयनांश २३°।२६'।३०", प्लूटो ५।३।२)

तारीख सन् १९७०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरनस (वक्री) रा. अं. क.	नेप्च्यन रा. अं. क.
फर. २	९।१९।१७।१३	७।१९।२९	११।१२।३२।११	८।२४। ९।५४	६।१२। १।४७	९।२१।१४।३४	०। ९।२३।४२	१०।२०। ९। ०	५।१५।१०	७। ७।१३
३	९।२०।२८। ७	८। ३।५५	११।१३।१६।२०	८।२४।५९।५४	६।१२। ५। १	९।२२।२९।५३	०। ९।२६।५४	१०।२०। ५।४९	५।१५। ९	७। ७।१४
४	९।२१।१८।५९	८।१८।४३	११।१४। ०।२६	८।२५।५३।२५	६।१२। ८। ४	९।२३।४५।१३	०। ९।३०।१२	१०।२०। २।३९	५।१५। ८	७। ७।१५
५	९।२२।१९।५०	९। ३।४९	११।१४।४४।३१	८।२६।५०।१०	६।१२।१०।५६	९।२५। ०।३०	०। ९।३३।३६	१०।१९।५९।२८	५।१५। ७	७। ७।१५
६	९।२३।२०।४१	९।१९। ४	११।१५।२८।३४	८।२७।४९।५०	६।१२।१३।३७	९।२६।१५।४८	०। ९।३७। ६	१०।१९।५६।१७	५।१५। ६	७। ७।१६
७	९।२४।२१।३०	१०। ४।१७	११।१६।१२।३५	८।२८।५२।११	६।१२।१६। ७	९।२७।३१। ५	०। ९।४०।४२	१०।१९।५३। ६	५।१५। ४	७। ७।१७
८	९।२५।२२।१७	१०।१९।१८	११।१६।५६।३५	८।२९।५७। ०	६।१२।१८।२६	९।२८।४६।२१	०। ९।४४।२३	१०।१९।४९।५५	५।१५। ३	७। ७।१८
९	९।२६।२३। ३	११। ३।५९	११।१७।४०।३३	९। १। ४। ४	६।१२।२०।३४	१०। ०। १।३७	०। ९।४८।१०	१०।१९।४६।४४	५।१५। २	७। ७।१९
१०	९।२७।२३।४७	११।१८।१५	११।१८।२४।२७	९। २।१३।१५	६।१२।२२।३१	१०। १।१६।५१	०। ९।५२। ३	१०।१९।४३।३३	५।१५। ०	७। ७।१९
११	९।२८।२४।३०	०। २। ४	११।१९। ८।२१	९। ३।२४।२३	६।१२।२४।१७	१०। २।३२। २	०। ९।५६। ०	१०।१९।४०।२२	५।१४।५९	७। ७।२०
१२	९।२९।२५।११	०।१५।२६	११।१९।५२।१३	९। ४।३७।२१	६।१२।२५।५०	१०। ३।४७।१५	०।१०। ०। २	१०।१९।३७।११	५।१४।५७	७। ७।२१
१३	१०। ०।२५।५१	०।२८।२४	११।२०।३६। २	९। ५।५२।५८	६।१२।२७।१३	१०। ५। २।२७	०।१०। ४।११	१०।१९।३४। ०	५।१४।५६	७। ७।२१
१४	१०। १।२६।३०	१।११। १	११।२१।१९।५०	९। ७। ८।१२	६।१२।२८।२६	१०। ६।१७।३७	०।१०। ८।२६	१०।१९।३०।५०	५।१४।५४	७। ७।२२
१५	१०। २।२७। ६	१।२३।१९	११।२२। ३।३५	९। ८।२५।५५	६।१२।२९।२७	१०। ७।३२।४९	०।१०।१२।४६	१०।१९।२७।३९	५।१४।५२	७। ७।२३
१६	१०। ३।२७।४१	२। ५।२५	११।२२।४७।२०	९। ९।४५। ४	६।१२।३०।१५	१०। ८।४७।५६	०।१०।१७। ९	१०।१९।२४।२८	५।१४।५१	७। ७।२३
१७	१०। ४।२८।१५	२।१७।२२	११।२३।३१। ०	९।११। ५।३५	६।१२।३०।५४	१०।१०। ३। ३	०।१०।२१।४०	१०।१९।२१।१७	५।१४।४९	७। ७।२४
१८	१०। ५।२८।४७	२।२९।१४	११।२४।१४।३९	९।१२।२७।२४	६।१२।३१।२२	१०।११।१८।१०	०।१०।२६।१५	१०।१९।१८। ६	५।१४।४७	७। ७।२४
१९	१०। ६।२९।१८	३।११। ६	११।२४।५८।१५	९।१३।५०।२८	६।१२।३१।३७	१०।१२।३३।१५	०।१०।३०।५५	१०।१९।१४।५५	५।१४।४५	७। ७।२४
२०	१०। ७।२९।४८	३।२२।५२	११।२५।४१।४८	९।१५।१४।४४	६।१२।३१।४२	१०।१३।४८।२०	०।१०।३५।४०	१०।१९।११।४४	५।१४।४३	७। ७।२५
२१	१०। ८।३०। ४	४। ४।४४	११।२६।२५।२०	९।१६।४०। ९	६।१२।३१।३५	१०।१५। ३।२३	०।१०।४०।३०	१०।१९। ८।३३	५।१४।४२	७। ७।२६
२२	१०। ९।३०।४३	४।१६।४१	११।२७। ८।५०	९।१८। ६।४४	६।१२।३१।१७	१०।१६।१८।२५	०।१०।४५।२३	१०।१९। ५।२३	५।१४।४०	७। ७।२६
२३	१०।१०।३१। ९	४।२८।४३	११।२७।५२।१६	९।१९।३४।२५	६।१२।३०।४८	१०।१७।३३।२६	०।१०।५०।२४	१०।१९। २।१२	५।१४।३८	७। ७।२६
२४	१०।११।३१।२८	५।१०।५४	११।२८।३५।४१	९।२१। [illegible]	६।१२।३०। ७	१०।१८।४८।२७	०।१०।५५।२८	१०।१८।५९। २	५।१४।३६	७। ७।२६
२५	१०।१२।३१।४८	५।२३।१५	११।२९।१९। ३	९।२२।३३। [illegible]	६।१२।२९।१५	१०।२०। ३।२६	०।११। ०।३६	१०।१८।५५।५१	५।१४।३४	७। ७।२६
२६	१०।१३।३२। ६	६। ५।४९	०। ०। २।२४	९।२४। ३।५८	६।१२।२८।१२	१०।२१।१८।२४	०।११। ५।४९	१०।१८।५२।४०	५।१४।३२	७। ७।२७
२७	१०।१४।३२।२४	६।१८।३९	०। ०।४५।४२	९।२५।३५। [illegible]	६।१२।२६।५८	१०।२२।३३।२१	०।११।११। ६	१०।१८।४९।२९	५।१४।२९	७। ७।२७
२८	१०।१५।३२।३९	७। १।४६	०। १।२९। ०	९।२७। [illegible]	६।१२।२५।३२	१०।२३।४८।१७	०।११।१६।२९	१०।१८।४६।१८	५।१४।२७	७। ७।२७
मार्च. १	१०।१६।३२।५३	७।१५।१३	०। २।१२।१३	९।२८।४१। ५	६।१२।२३।५५	१०।२५। ३।१०	०।११।२१।५५	१०।१८।४३। ७	५।१४।२५	७। ७।२७
२	१०।१७।३३। ५	७।२९। १	०। २।५५।२४	१०। ०।१८।१२	६।१२।२२। ७	१०।२६।१८। ४	०।११।२७।२६	१०।१८।३९।५७	५।१४।२३	७। ७।२७
३	१०।१८।३३। ८	८।१३।३१	०। ३।३८।३४	१०। १।५६।२२	६।१२।२०। ८	१०।२७।३२।५७	०।११।३३। १	१०।१८।३६।४६	५।१४।२१	७। ७।२७
४	१०।१९।३३।१९	८।२७।३८	०। ४।२१।४१	१०। ३।३५।२६	६।१२।१७।५८	१०।२८।४७।४९	०।११।३८।४१	१०।१८।३३।३६	५।१४।१८	७। ७।[illegible]
५	१०।२०। ३।२८	९।११।२४	०। ५। ४।४७	१०। ५। ९।५८	६।१२।१५।३६	११। ०। २।४०	०।११।४४।२४	१०।१८।३०।२६	५।१४।१६	७। ७।[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि०,

रा. अं. क.

(१ अप्रै. को अयनांश २३।२६।३४", प्लूटो ५।२।१३)

तारीख सन् १९७०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यरेनस (वक्री) रा. अं. क.	नेप्च्यून (वक्री) रा. अं. क.
मार्च ६	१०।२१।३३।३५	९।२७।१९	०। ५।४७।५०	१०। ६।४९।२२	६।१२।१३। ४	११। १।१७।३०	०।११।५०।१२	१०।१८।२७।१५	५।१४।१४	७। ७।२७
७	१०।२२।३३।४०	१०।१२।१८	०। ६।२०।५१	१०। ८।२९।५०	६।१२।१०।२०	११। २।३२।१९	०।११।५६। ३	१०।१८।२४। ४	५।१४।११	७। ७।२७
८	१०।२३।३३।४२	१०।२७।११	०। ७।१३।४९	१०।१०।११।२५	६।१२। ७।२६	११। ३।४७। ६	०।१२। २। ०	१०।१८।२०।५३	५।१४। ९	७। ७।२७
९	१०।२४।३३।४३	११।११।५२	०। ७।५६।४५	१०।११।५४। ५	६।१२। ४।२१	११। ५। १।५२	०।१२। ७।५८	१०।१८।१७।४२	५।१४। ७	७। ७।२६
१०	१०।२५।३३।४१	११।२६।१३	०। ८।३९।३९	१०।१३।३७।५३	६।१२। १। ५	११। ६।१६।३६	०।१२।१४। ०	१०।१८।१४।३१	५।१४। ४	७। ७।२६
११	१०।२६।३३।३८	०।१०।१०	०। ९।२२।३१	१०।१५।२२।४९	६।११।५७।३७	११। ७।३१।१९	०।१२।२०। ७	१०।१८।११।२०	५।१४। २	७। ७।२६
१२	१०।२७।३३।३३	०।२३।४१	०।१०। ५।२०	१०।१७। ८।५३	६।११।५४। ०	११। ८।४६। १	०।१२।२६।१७	१०।१८। ८। ९	५।१३।५९	७। ७।२६
१३	१०।२८।३३।२६	१। ६।४६	०।१०।४८। ७	१०।१८।५६। ९	६।११।५०।१४	११।१०। ०।४१	०।१२।३२।३१	१०।१८। ५।५८	५।१३।५७	७। ७।२५
१४	१०।२९।३३।१७	१।१९।२८	०।११।३०।५०	१०।२०।४४।३३	६।११।४६।१७	११।११।१५।१९	०।१२।३८।४९	१०।१८। १।४८	५।१३।५४	७। ७।२५
१५	११। ०।३३। ५	२। १।५०	०।१२।१३।३१	१०।२२।३४। ८	६।११।४२।१०	११।१२।२९।५४	०।१२।४५।१०	१०।१७।५८।३७	५।१३।५२	७। ७।२५
१६	११। १।३२।५२	२।१३।५७	०।१२।५६।१०	१०।२४।२४।५४	६।११।३७।५३	११।१३।४४।३०	०।१२।५१।३४	१०।१७।५५।२७	५।१३।४९	७। ७।२४
१७	११। २।३२।३६	२।२५।५३	०।१३।३८।४७	१०।२६।१६।५२	६।११।३३।२७	११।१४।५९। ३	०।१२।५८। १	१०।१७।५२।१६	५।१३।४७	७। ८।२४
१८	११। ३।३२।१७	३। ७।४३	०।१४।२१।२१	१०।२८।१०। ०	६।११।२८।५१	११।१६।१३।३५	०।१३। ४।३१	१०।१७।४९। ५	५।१३।४४	७। ७।२३
१९	११। ४।३१।५७	३।१९।३१	०।१५। ३।५३	११। ०। ४।१८	६।११।२४। ६	११।१७।२८। ५	०।१३।११। ४	१०।१७।४५।५४	५।१३।४२	७। ७।२३
२०	११। ५।३१।३३	४। १।२१	०।१५।४६।२२	११। १।५९।४५	६।११।१९।१२	११।१८।४२।३४	०।१३।१७।४१	१०।१७।४२।४३	५।१३।३९	७। ७।२२
२१	११। ६।३१। ८	४।१३।१७	०।१६।२८।४८	११। ३।५६।२०	६।११।१४। ९	११।१९।५७। ०	०।१३।२४।२०	१०।१७।३९।३२	५।१३।३७	७। ७।२२
२२	११। ७।३०।४१	४।२५।२२	०।१७।११।११	११। ५।५४। २	६।११। ८।५७	११।२१।११।२६	०।१३।३१। ३	१०।१७।३६।२१	५।१३।३४	७। ७।२१
२३	११। ८।३०।१२	५। ७।३७	०।१७।५३।३२	११। ७।५२।४२	६।११। ३।३६	११।२२।२५।४८	०।१३।३७।४७	१०।१७।३३।१०	५।१३।३२	७। ७।२१
२४	११। ९।२९।४१	५।२०। ४	०।१८।३५।५१	११। ९।५२।२०	६।१०।५८। ७	११।२३।४०।१०	०।१३।४४।३४	१०।१७।२९।५९	५।१३।२९	७। ७।२०
२५	११।१०।२९। ८	६। २।४४	०।१९।१८। ७	११।११।५२।५१	६।१०।५२।३०	११।२४।५४।२९	०।१३।५१।२५	१०।१७।२६।४९	५।१३।२६	७। ७।१९
२६	११।११।२८।३३	६।१५।३८	०।२०। ०।२१	११।१३।५४। ७	६।१०।४६।४५	११।२६। ८।४८	०।१३।५८।१८	१०।१७।२३।३९	५।१३।२४	७७। ७।१
२७	११।१२।२७।५६	६।२८।४५	०।२०।४२।३३	११।१५।५६। ०	६।१०।४०।५२	११।२७।२३। ५	०।१४। ५।१४	१०।१७।२०।२८	५।१३।२१	७। ७।१८
२८	११।१३।२७।१६	७।१२। ५	०।२१।२४।४१	११।१७।५८।१८	६।१०।३४।५१	११।२८।३७।१९	०।१४।१२।१२	१०।१७।१७।१८	५।१३।१९	७। ७।१७
२९	११।१४।२६।३५	७।२५।४०	०।२२। ६।४७	११।२०। ०।५३	६।१०।२८।४३	११।२९।५१।३४	०।१४।१९।१३	१०।१७।१४। ७	५।१३।१६	७। ७।१६
३०	११।१५।२५।५३	८। ९।२७	०।२२।४८।५२	११।२२। ३।३०	६।१०।२२।२८	०। १। ५।४६	०।१४।२६।१६	१०।१७।१०।५६	५।१३।१३	७। ७।१५
३१	११।१६।२५। ९	८।२३।२८	०।२३।३०।५४	११।२४। ५।५४	६।१०।१६। ५	०। २।१९।५७	०।१४।३३।२२	१०।१७। ७।४५	५।१३।११	७। ७।१४
अप्रै. १	११।१७।२४।२४	९। ७।४०	०।२४।१२।५४	११।२६। ७।४४	६।१०। ९।३७	०। ३।३४। ५	०।१४।४०।२९	१०।१७। ४।३४	५।१३। ८	७। ७।१३
२	११।१८।२३।३६	९।२२। ३	०।२४।५४।५१	११।२८। ९।४६	६।१०। ३। २	०। ४।४८।११	०।१४।४७।३९	१०।१७। १।२४	५।१३। ५	७। ७।१२
३	११।१९।२२।४७	१०। ६।३३	०।२५।३६।४६	०। ०। ८।३७	६। ९।५६।२०	०। ६। २।१७	०।१४।५४।५१	१०।१६।५८।१४	५।१३। २	७। ७।११
४	११।२०।२१।५६	१०।२१। ७	०।२६।१८।३९	०। २। ६।५६	६। ९।४९।३३	०। ७।१६।२१	०।१५। २। ५	१०।१६।५५। ३	५।१३। ०	७। ७।१०
५	११।२१।२१। ३	१०। ५।३८	०।२७। ०।२९	०। ४। ४।२१	६। ९।४२।४०	०। ८।३०।२३	०।१५। ९।२१	१०।१६।५१।५३	५।१२।५८	७। ७। ९
६	११।२२।२०। ८	११।२०। २	०।२७।४२।१६	०। ५।५७।२८	६। ९।३५।४२	०। ९।४४।२३	०।१५।१६।३८	१०।१६।४८।४२	५।१२।५६	७। ७। ८
७	११।२३।१९।१०	०। ४।१३	०।२८।२४। ३	०। ७।४८।५८	६। ९।२८।३८	०।१०।५८।२३	०।१५।२३।५८	१०।१६।४५।३१	५।१२।५४	७। ७। ७

(पृष्ठ ६८ का शेष)

घण्टों को अंश, बाईं एवं दाईं ओर (ऊपर से नीचे) लिखे मिनटों को कला समझ कर ग्रह-गति का लघुरिक्थ प्राप्त करें। ग्रह-गति एवं अभीष्ट घण्टा-मिनटों के लघु-रिक्थों को जोड़कर जो संख्या मिले उसे लघुरिक्थ कोष्ठक में ही ढूंढें। यदि बिल्कुल वही संख्या न मिले, तो उसकी आसन्नतम संख्या को कोष्ठक में देखें। इस संख्या के ऊपर कोष्ठक में जितने घन्टे लिखे हैं, उन्हें अंश, दाईं एवं बाईं ओर जितने मिनट लिखे हैं, उन्हें कला समझें—यह अभीष्ट चालन होगा। इस चालन को अपने अभीष्ट टाईम के पूर्वकालिक पञ्चाङ्गस्थ मार्गी ग्रह में जोड़ने और वक्री ग्रह में से घटाने पर इष्ट कालिक-ग्रह स्पष्ट होगा।

यदि ग्रह की गति २४ कला से कम हो तो उसका लघुरिक्थ लेने के लिए कोष्ठक के घंटों को कला और मिनटों को विकला समझ कर ग्रहगति का लघुरिक्थ लेना चाहिए। बाकी सारी प्रक्रिया पूर्ववत् ही होगी। यहां जो अभीष्ट चालन प्राप्त होगा, वह अंश-कला न होकर कला-विकला होगा,—बस यह ध्यान रखें।

उदाहरण (१)—९ जन. १९७० को रात के ११ घं. ४५ मि. पर (अर्थात् २३ बज कर ४५ मिनट पर) चन्द्र स्पष्ट करना है। २३ घ. ४५ मि. में से ५ घं. ३० मि. घटाने पर अभीष्ट घं. मि. १८।१५ प्राप्त हुए। इसका लघुरिक्थ ११८९ कोष्ठक से प्राप्त किया। अभीष्ट टाईम २३।४५ से पहले ता. ९ जन. को पञ्चाङ्ग में ५ घं. ३० मि. पर ९ रा. ११ अ. ८ क. स्पष्ट चन्द्र है। इससे आगे (१० जन. को) पञ्चाङ्ग में ही ९ रा. २६ अं. १६ क. स्पष्ट चन्द्र है। इन दोनों का अन्तर १५ अं. ८ क. चन्द्र की गति हुई। कोष्ठक में इसका लघुरिक्थ (१५ घं. के नीचे ८ मि. के आगे) २००३ प्राप्त हुआ। अभीष्ट घं. मि. एवं चन्द्र गति के इन लघुरिक्थों को जोड़ने पर ३१९२ संख्या मिली। इसकी आसन्नतम संख्या ३१८९ कोष्ठक में ११ घं. के नीचे और ३१ मिनट के आगे है, अतः चालन ११ अं. ३१ क. हुआ। इसे अभीष्ट टाईम के पूर्ववर्ती काल वाले पञ्चाङ्गस्थ स्पष्ट चन्द्र ९ रा. ११ अं. ८ क. में जोड़ा तो ९ रा. २२ अं. ३९ क. इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र हुआ।

उदाहरण (२)—२ अगस्त १९६९ को प्रातः ४ घं. ५ मिनट (अर्थात् २८ घं. ५ मि.) पर गुरु स्पष्ट करना है। अभीष्ट घं. मि. (२८ घ. ५ मि.) में से ५।३० घटाने पर २२।३५ अभीष्ट घं. मि. प्राप्त हुआ (अर्थात् १ अगस्त को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर स्पष्ट गुरु ५।१९।२।५५ में २२ घ. ३५ मि. का चालन देना है) २२ घं. ३५ मि. का लघुरिक्थ ०२८४ मिला। पञ्चाङ्ग में इससे अभीष्ट टाईम (४ घ. ५ मि. प्रातः) से पूर्वकालिक स्पष्ट गुरु ५।१९।२।५५ है। इसके आगे २ अगस्त का स्पष्ट गुरु ५।१९।१२।४९, है। दोनों का अन्तर ९ क. ५४ वि. प्राप्त हुआ, जो गुरु की गति है। घण्टा ९ के नीचे और मि. ५४ के आगे कोष्ठक में ३८८६ संख्या प्राप्त हुई है जो गति का लघुरिक्थ है। गति और अभीष्ट घ. मि. के इन लघुरिक्थों का योग ४१७० हुआ। कोष्ठक में इसकी आसन्नतम संख्या ४१०९ ९ घ. के नीचे और १९ मि. के आगे है। अतः अभीष्ट चालन ९ कला १९ विकला हुआ। इसे अभीष्ट टाईम के पूर्ववर्ती काल के पञ्चाङ्गस्थ स्पष्ट गुरु ५।१९।२।५५ में जोड़ने से ५।१९।१२।१४ इष्टकालिक स्पष्ट गुरु हुआ। हमारा इष्टकालिक गुरु स्पष्ट हुआ।

(शेष पृष्ठ ९८ पर)

सूर्य चन्द्र क्रान्ति तथा चन्द्रशर (सं. २०२६)

(प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.)

तारीख	मार्च (१९६९)			अप्रैल		
	सू. क्रां. अ. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	च. क्रां. अ. क.	च. श. अं. क.
१				+४।२३	+५।२२	+१। ३
२				४।४६	–१।२	–०।११
३				५।१०	७।३३	१।२५
४				५।३२	१३।४९	२।३६
५				५।५५	१९।२९	३।३८
६				६।१८	२४। ७	४।२८
७				६।४१	२७।१७	५। १
८				७। ३	२८।३९	५।१५
९				७।२६	२८। ६	५। ९
१०				७।४८	२५।४४	४।४५
११				८।१०	२१।४८	४। ४
१२				८।३२	१६।४४	३। ९
१३				८।५४	१०।५२	२। ४
१४				९।१६	–४।३६	–०।५३
१५				९।३७	+१।४०	+०।१९
१६				९।५९	७।५९	१।३०
१७				१०।२०	१३।४५	२।३४
१८	–१। ६	–२।३५	–०।३१	१०।४१	१८।५१	३।३०
१९	०।४३	+३।५३	+०।४३	११। २	२३। ३	४।१५
२०	–०।१९	१०। २	१।५४	११।२२	२६।११	४।४७
२१	+०। ५	१५।३९	२।५७	११।४४	२८। ४	५। ६
२२	०।२९	२०।२८	३।५०	१२। ४	२८।३४	५।१२
२३	०।५२	२४।१९	४।३१	१२।२४	२७।५३	५। ४
२४	१।१६	२७। २	४।५९	१२।४४	२५।५१	४।४३
२५	१।३९	२८।२९	५।१४	१३। ४	२२।४०	४।१०
२६	२। ३	२८।३७	५।१६	१३।२३	१८।२८	३।२५
२७	२।२७	२७।२६	५। ४	१३।४३	१३।२६	२।३०
२८	२।५०	२४।५९	४।३९	१४। २	७।४३	१।२६
२९	३।१३	२१।२३	४। १	१४।२०	+१।[illegible]	+०।१६
३०	३।३७	१९।४७	३।११	+१४।३९	–[illegible]	–०।५७
३१	+४। ०	+११।२३	+२।११			

सूर्य एवं चन्द्र की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.)

(सं. २०२६)

ता.	मई १९६९			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तू.		
	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
१	+१४।५७	-११।१२	-२।९	+२२।०	-२७।४१	-४।५६	+२३।८	-२५।१३	-४।१७	+१८।८	-४।५३	-०।१९	+८।२६	+१७।३०	+३।४८	-३।२	+२७।७	५।१०
२	१५।१६	१७।२३	३।१४	२२।८	२८।२६	५।०	२३।४	२०।५१	३।२७	१७।५२	+१।४८	+०।५७	८।४	२२।४	४।३१	३।२५	२८।२९	५।१५
३	१५।३३	२२।३२	४।८	२२।१६	२७।४	४।४४	२३।०	१५।१७	२।२४	१७।३७	८।११	२।६	७।४२	२५।३२	५।०	३।४८	२८।२९	५।७
४	१५।५१	२६।२०	४।४७	२२।२३	२३।४७	४।८	२२।५५	९।२	१।१४	१७।२१	१४।०	३।७	७।२०	२७।४५	५।१४	४।१२	२७।९	४।४५
५	१६।८	२८।२०	५।६	२२।३०	१९।४	३।१७	२२।५०	-२।३२	-०।१	१७।५	१९।५	३।५७	६।५८	२८।३९	५।१५	४।३५	२४।३६	४।११
६	१६।२५	२८।१९	५।५	२२।३७	१३।२५	२।१४	२२।४४	+३।५१	+१।९	१६।४९	२३।१२	४।३५	६।३६	२८।१२	५।२	४।५८	२१।०	३।२६
७	१६।४३	२६।२०	४।४४	२२।४३	७।१५	-१।६	२२।३८	९।५४	२।१४	१६।३२	२६।१५	४।५९	६।१३	२६।२८	४।३७	५।२१	१६।३०	२।३२
८	१६।५९	२२।४१	४।६	२२।४९	-०।५७	+०।४	२२।३२	१५।२३	३।१०	१६।१६	२८।३	५।१०	५।५१	२३।३४	३।५९	५।४४	११।१८	१।३०
९	१७।१५	१७।४९	३।१४	२२।५४	+५।१५	१।११	२२।२५	२०।७	३।५७	१५।५९	२८।३४	५।७	५।२८	१९।३८	३।११	६।७	+५।३३	+०।२३
१०	१७।३१	१२।७	२।१२	२२।५९	११।५	२।१५	२२।१८	२३।५६	४।३१	१५।४१	२७।४५	४।५१	५।६	१४।५२	२।१३	६।३०	-०।३२	-०।४७
११	१७।४६	-५।५९	-१।३	२३।४	१६।२३	३।१०	२२।१०	२६।४०	४।५३	१५।२४	२५।४१	४।२३	४।४३	९।२६	१।९	६।५२	६।४४	१।५५
१२	१८।२	+०।१७	+०।७	२३।८	२०।५६	३।५५	२२।२	२८।११	५।२	१५।६	२२।२८	३।४३	४।२०	+३।३४	+०।१	७।१५	१२।४७	२।५९
१३	१८।१७	६।२६	१।१६	२३।१२	२४।३३	४।२९	२१।५३	२८।२३	४।५८	१४।४८	१८।१८	२।५३	३।५७	-२।३२	-१।९	७।३८	१८।२१	३।५४
१४	१८।३२	१२।१४	२।१९	२३।१५	२७।३	४।५१	२१।४५	२७।१६	४।४१	१४।३०	१३।२२	१।५५	३।३४	८।३८	२।१७	८।०	२३।४	४।३७
१५	१८।४६	१७।२७	३।१५	२३।१८	२८।१८	४।५९	२१।३६	२४।५५	४।१२	१४।११	७।५२	+०।५१	३।११	१४।२९	३।१८	८।२२	२६।३१	५।३
१६	१९।१	२१।५२	४।१	२३।२०	२८।१३	४।५५	२१।२६	२१।३०	३।३२	१३।५२	+१।५९	-०।१७	२।४८	१९।४५	४।१०	८।४४	२८।२१	५।१२
१७	१९।१४	२५।१७	४।३४	२३।२२	२६।५०	४।३७	२१।१६	१७।१०	२।४२	१३।३३	-४।३	१।२५	२।२५	२४।७	४।४९	९।७	२८।२१	५।२
१८	१९।२८	२७।३२	४।५६	२३।२४	२४।१५	४।८	२१।६	१२।९	१।४४	१३।१४	१०।२	२।३०	२।२	२७।१०	५।१२	९।२९	२६।२९	४।३३
१९	१९।४१	२८।२८	५।३	२३।२५	२०।३८	३।२८	२०।५६	६।३६	+०।४१	१२।५५	१५।४३	३।२९	१।३८	२८।३६	५।१६	९।५०	२२।५८	३।४७
२०	१९।५४	२८।५	४।५८	२३।२६	१६।१०	२।३८	२०।४५	+०।४३	-०।२५	१२।३५	२०।४७	४।१८	१।१५	२८।११	५।२	१०।१२	१८।६	२।४८
२१	२०।६	२६।२५	४।४०	२३।२७	११।१	१।४१	२०।३३	-५।१९	१।३२	१२।१५	२४।५४	४।५३	०।५२	२५।५३	४।२९	१०।३३	१२।१७	१।४०
२२	२०।१९	२३।३४	४।१०	२३।२७	+५।२१	+०।३७	२०।२२	११।१६	२।३५	११।५५	२७।३८	५।१२	०।२८	२१।५५	३।३९	१०।५५	-५।५४	-०।२५
२३	२०।३०	१९।४३	३।२८	२३।२६	-०।३९	-०।२९	२०।१०	१६।५४	३।३२	११।३५	२८।३८	५।१२	+०।५	१६।३८	२।३५	११।१६	+०।४१	+०।४९
२४	२०।४२	१५।१	२।३७	२३।२६	६।४७	१।३६	१९।५७	२१।५२	४।१९	११।१४	२७।४०	४।५२	-०।१८	१०।२६	१।२१	११।३७	७।१०	२।०
२५	२०।५३	९।३८	१।३८	२३।२४	१२।५०	२।४०	१९।४५	२५।४५	४।५२	१०।५४	२४।४५	४।१३	०।४२	-३।४५	-०।३	११।५७	१३।१४	३।४
२६	२१।४	+३।४४	+०।३२	२३।२३	१८।२८	३।३७	१९।३२	२८।३	५।७	१०।३३	२०।९	३।१६	१।५	+३।०	+१।१४	१२।१९	१८।३५	३।५६
२७	२१।१४	-२।३०	-०।३७	२३।२१	२३।१७	४।२२	१९।१९	२८।२५	५।१	१०।१२	१४।१९	२।७	१।२८	९।२९	२।२६	१२।३९	२२।५८	४।३४
२८	२१।२४	८।५०	१।४७	२३।१८	२६।४४	४।५१	१९।५	२६।३९	४।३५	९।५२	७।४६	-०।४९	१।५२	१५।२३	३।२७	१२।५९	२६।१०	४।५८
२९	२१।३४	१४।५८	२।५२	+२३।१५	२८।२२	५।१	१८।५१	२२।५७	३।४९	९।३०	-०।५६	+०।३०	२।१५	२०।२६	४।१६	१३।१९	२८।२	५।८
३०	२१।४३	२०।२९	३।४९	+२३।१२	-२७।५१	-४।४९	१८।३७	१७।४४	२।४७	९।९	+५।४५	१।४५	-२।३९	+२४।२४	+४।५०	१३।३९	२८।३०	५।३
३१	+२१।५२	-२४।५४	-४।३१				+१८।२२	-११।३२	-१।३५	+८।४७	+११।५९	+२।५२				-१३।५९	+२७।३५	+४।४५

सूर्य- एवं चन्द्र की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.)

(सं० २०२६)

	नवम्बर (१९६९)			दिसम्बर			जनवरी (१९७०)			फरवरी			मार्च			अप्रैल		
ता.	सु. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं.श. अं. क.	सु. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रा अं. क.	चं. श. अं. क.
१	-१४।१८	+२५।२६	+४।१४	-२१।४५	+१४।३६	+१।५०	-२३। ३	-६।२०	-३।१७	-१७।१७	-२४।५३	-५। ५	-७।४९	-२६।५८	-५।१७	+४।१८	-२३।१४	-३।२४
२	१४।३८	२२।११	३।३३	२१।५४	९।२३	+०।४९	२२।५८	१२। ६	३।१४	१६।५९	२७।३१	५।१३	७।२६	२८।२५	५।१२	४।४१	१८।२४	२।१८
३	१४।५७	१८। १	२।४३	२२। ३	+३।४३	-०।१५	२२।५२	१७।३२	७। ३	१६।४२	२८।२८	५। २	७। ३	२८। ५	४।४९	५। ४	१२।२८	-१। ३
४	१५।१५	१३। ७	१।४५	२२।११	-२।१३	१।२०	२२।४७	२२।१८	४।३९	१६।२४	२७।२४	४।३१	६।४०	२५।५१	४। ६	५।२७	-५।५०	+०।१६
५	१५।३४	७।३६	+०।४१	२२।१९	८।१४	२।२३	२२।४१	२५।५७	५। १	१६। ६	२४।२०	३।४१	६।१७	२१।५१	३। ७	५।४९	+१।४	१।३४
६	१५।५१	+१।४३	-०।२६	२२।२७	१४। ५	३।२०	२२।३४	२८। २	५। ३	१५।४८	१९।३२	२।३५	५।५४	१६।२३	१।५५	६।१३	७।५१	२।४५
७	१६।१०	-४।२६	१।३३	२२।३४	१९।२८	४। ८	२२।२७	२८। ८	४।४५	१५।३०	१३।२९	-१।१७	५।३१	९।५६	-०।३४	६।३५	१४। ८	३।४५
८	१६।२८	१०।३३	२।३८	२२।४१	२३।५७	४।४२	२२।१९	२६। ८	४। ७	१५।११	-६।४३	+०। ५	५। ८	-२।५८	+०।४९	+६।५८	+१९।३४	+४।३०
९	१६।४५	१६।२२	३।३५	२२।४७	२७। ३	४।५९	२२।११	२२।१३	३।११	१४।५२	+०।१६	१।२४	४।४४	+४। ३	२। ७			
१०	१७। २	२१।२९	४।२१	२२।५३	२८।१९	४।५६	२२। ३	१६।५०	२। २	१४।३३	७। २	२।३७	४।२१	१०।४२	३।१५			
११	१७।१९	२५।२८	४।५१	२२।५८	२७।३१	४।३२	२१।५४	१०।३४	-०।४६	१४।१३	१३।१४	३।३८	३।५७	१६।३८	४। ९			
१२	१७।३६	२७।५२	५। ४	२३। ३	२४।४४	३।५१	२१।४४	-३।५३	+०।३२	१३।५२	१८।३८	४।२५	३।३४	२१।३३	४।४८			
१३	१७।५२	२८।२२	४।५६	२३। ८	२०।१९	२।५४	२१।३५	+२।४८	१।४५	१३।३४	२३। ०	४।५७	३।१०	२५।१५	५।११			
१४	१८। ८	२६।५४	४।२०	२३।१२	१४।४६	१।४६	२१।२४	९। ९	२।५०	१३।१३	२६।१०	५।१३	२।४६	२७।३५	५।१७			
१५	१८।२३	२२।४२	३।४९	२३।१५	८।३३	-०।३४	२१।१४	१४।५४	३।४५	१२।५३	२८। ०	५।१५	२।२३	२८।३०	५। ८			
१६	१८।३९	१९। ५	२।५०	२३।१८	-२। ५	+०।३९	२१। ३	१९।५२	४।२६	१२।३२	२८।२९	५। २	१।५९	२८। ०	४।४६			
१७	१८।५४	१३।२९	१।४४	२३।२०	+४।२०	१।४८	२०।५२	२३।५०	४।५३	१२।१२	२७।३६	४।३७	१।३५	२६।१२	४।१२			
१८	१९। ८	७।१६	-०।२२	२३।२३	१०।३५	२।५०	२०।४०	२६।३८	५। ७	११।५२	२५।२९	४। ०	१।१२	२३।१६	३।२७			
१९	१९।२२	-०।५१	+०।४४	२३।२५	१५।५७	३।४९	२०।२८	२८। ८	५। ६	११।३०	२२।१५	३।१२	०।४८	१९।२३	२।३३			
२०	१९।३६	+५।३९	[illegible]	२३।२६	२०।४१	४।२२	२०।१५	२८।१७	४।५१	११। ८	१८। ७	२।१७	०।२५	१४।४३	१।३३			
२१	१९।५०	११।३६	[illegible]	[illegible]	२४।१५	[illegible]	२०। २	२७। ६	४।२४	१०।४७	१३।१७	१।१५	-०। १	९।२९	+०।२८			
२२	२०। ३	१७। २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।४९	२४।४१	३।४५	१०।२५	७।५६	+०। ९	+०।२३	+३।५१	-०।३८			
२३	२०।१६	२१।३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।३५	२१।१४	२।५७	१०। ३	+२।१४	-०।५७	०।४६	-२। ०	१।४४			
२४	२०।२८	२५।११	४।४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।२१	१६।५६	२। १	९।४१	-३।३५	२। २	१।१०	७।५२	२।४६			
२५	२०।४१	२७।२७	५। ०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९। ७	११।५८	+०।५९	९।१९	९।२२	३। २	१।३३	१३।३२	३।४०			
२६	२०।५२	२८।२१	४।५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।५२	६।३४	-०। ५	८।५७	१४।५२	३।५४	१।५७	१८।४२	४।२५			
२७	२१। ४	२७।५१	४।४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।३७	+०।५२	१।१०	८।३४	१९।५०	४।३६	२।२०	२३। ५	४।५६			
२८	२१।१४	२६। ३	४।१३	२३।१८	१५।४८	[illegible]	१८।२१	-४।५५	२।१३	-८।१२	-२३।५९	-५। ४	२।४४	२६।२१	५।१२			
२९	२१।२५	२३। ७	३।३४	२३।१५	१०।४५	[illegible]	१८। ५	१०।३८	३।११				३। ७	२८।१०	५।११			
३०	-२१।३५	+१९।१५	+२।४५	२३।१२	+५।१६	[illegible]	१७।४९	१५।५१	४। १				३।३१	२८।१७	४।५२			
३१				-२३। ८	-०।२९	-१।१५	-१७।३३	-२०।१६	-४।५०				+३।५४	-२६।३७	-४।१७			

(+उत्तर)
(–दक्षिण)

(मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे. टा. के लिए)
(सं० २०२६)

ता.	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९६९	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
मा.१८	–२०।५०	+०।५४	–१०।३१	–२।१४	+०।५३	+१।३५	+१६।५५	+७। ५	+७।२६	–२।१६
२२	२१। ७	०।५०	८। २	२।१७	१। ०	१।३५	१७।१३	७।३०	७।३७	२।१६
२६	२१।२३	०।४५	५।१३	२।१२	१।१२	१।३४	१७।१०	७।४८	७।४८	२।१५
३०	२१।३७	०।४०	–२। ८	१।५९	१।२४	१।३४	१६।४३	७।५५	७।४९	२।१५
अप्र. ३	२१।५१	०।३५	+१।१४	१।३८	१।३६	१।३४	१५।५१	७।५०	८।१०	२।१५
७	२२। ४	०।२९	४।४९	१। ८	१।४७	१।३४	१४।३८	७।३१	८।२१	२।१५
११	२२।१६	०।२२	८।३१	–०।३२	१।५८	१।३४	१३।१०	६।५९	८।३२	२।१४
१५	२२।२७	०।१५	१२।११	+०।१०	२। ८	१।३४	११।३५	६।१५	८।४३	२।१४
१९	२२।३८	+०। ६	१५।३७	०।५४	२।१७	१।३३	१०। २	५।२४	८।५४	२।१४
२३	२२।४९	–०। २	१८।३६	१।३५	२।२५	१।३२	८।३७	४।२८	९। ४	२।१४
२७	२२।५९	०।१२	२०।५९	२। ८	२।३२	१।३२	७।२७	३।३१	९।१५	२।१४
मई १	२३। ९	०।२३	२२।४२	२।३०	२।३८	१।३१	६।३४	२।३७	९।२६	२।१४
५	२३।१९	०।३४	२३।४६	२।३७	२।४७	१।३०	५।५८	१।४५	९।३६	२।१४
९	२३।२८	०।४९	२४।१३	२।२८	२।४७	१।२९	५।४०	०।५९	९।४६	२।१५
१३	२३।३६	०।५८	२४। ८	२। २	२।५०	१।२८	५।३८	+०।१७	९।५६	२।१५
१७	२३।४३	१।१२	२३।३३	१।२०	२।५२	१।२७	५।५०	–०।२०	१०। ६	२।१५
२१	२३।४९	१।२५	२२।३३	+०।२२	२।५२	१।२६	६।१३	०।५२	१०।१५	२।१५
२५	२३।५३	१।३९	२१।१४	–०।४५	२।५१	१।२६	६।४७	१।२०	१०।२४	२।१६
२९	२३।५६	१।५२	१९।४६	१।५५	२।४९	१।२५	७।३०	१।४४	१०।३३	२।१६
जू. २	२३।५७	२। ५	१८।२४	२।५६	२।४६	१।२४	८।२०	२।४	१०।४२	२।१७
६	२३।५७	२।१८	१७।२२	३।४१	२।४२	१।२२	९।१६	२।२०	१०।५०	२।१७
१०	२३।५५	२।३०	१६।४९	४। ७	२।३७	१।२२	१०।१६	२।३३	१०।५८	२।१८
१४	२३।५२	२।४०	१६।४७	४।१२	२।३१	१।२१	११।१९	२।४३	११। ५	२।१८
१८	२३।४९	२।५०	१७।१६	४। १	२।२३	१।२०	१२।२४	२।५०	११।१३	२।१९
२२	२३।४६	२।५८	१८। ८	३।३५	२।१५	१।१९	१३।२९	२।५५	११।१९	२।२०
२६	२३।४४	३। ५	१९।१७	२।५९	२। ६	१।१८	१४।३४	२।५७	११।२६	२।२०
३०	२३।४३	३।१०	२०।३४	२।१५	१।५५	१।१७	१५।३७	२।५७	११।३२	२।२१
जु. ४	२३।४३	३।१५	२१।४९	१।२६	१।४४	१।१६	१६।३९	२।५५	११।३७	२।२२
८	२३।४५	३।१८	२२।५०	–०।३६	१।३३	१।१५	१७।३६	२।५१	११।४२	२।२३
१२	२३।४८	३।२१	२३।२६	+०।११	१।२०	१।१४	१८।३०	२।४५	११।४६	२।२४
१६	२३।५४	३।२३	२३।२४	०।५२	१। ६	१।१४	१९।१९	२।३८	११।५०	२।२५
२०	२४। १	३।२३	२२।४०	१।२३	१।५२	१।१३	२०। २	२।२९	११।५४	२।२६
२४	२४।१०	३।२४	२१।१४	१।४१	०।३८	१।१३	२०।३८	२।१९	११।५७	२।२६
२८	–२४।२०	–३।२३	+१९।१५	+१।४७	+०।२२	+१।१२	+२१। ७	–२। ९	+१२।०	–२।२७

ता.	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९६९	अं. क.	अं.क.	अं. क.	अं.क.	अं. क.	अं.क.	अं. क.	अं. क.	अं.क.	अं.क.
अग. १	–२४।३१	–३।२२	+१६।५२	+१।४३	+०। ६	+१।११	+२२।२८	–१।५७	+१२।२	–२।२८
५	२४।४३	३।२१	१४।१३	१।२९	–०।१०	१।११	२२।४२	१।४४	१२। ३	२।२९
९	२४।५६	३।२०	११।२५	१। ८	०।२७	१।१०	२२।४६	१।३१	१२। ४	२।३०
१३	२५। ८	३।१८	८।३३	०।४२	०।४५	१।१०	२२।४१	१।१८	१२। ४	२।३१
१७	२५।२१	३।१५	५।४२	+०।११	१। ३	१। ९	२२।२७	१। ४	१२। ४	२।३२
२१	२५।३३	३।१३	२।५५	–०।२३	१।२१	१। ९	२१। ३	०।५१	१२। ४	२।३३
२५	२५।४४	३।१०	+०।१४	०।५९	१।४०	१। ८	२१।३१	०।३७	१२।२	२।३४
२९	२५।५४	३। ७	–२।१७	१।३६	१।५९	१। ८	१९।४९	०।२३	१२। १	२।३५
सितं. २	२६। २	३। ४	४।३४	२।१३	२।१८	१। ८	१८।५८	–०।१०	११।५८	२।३६
६	२६। ९	३। ०	६।३४	२।४९	२।३७	१। ७	१७।५८	+०। ३	११।५६	२।३७
१०	२६।१३	२।५७	८। ९	३।२१	२।५७	१। ७	१६।५१	०।१६	११।५३	२।३८
१४	२६।१६	२।५३	९।१२	३।४६	३।१७	१। ७	१५।३५	०।२८	११।४९	२।३९
१८	२६।१५	२।४९	९।२९	३।५९	३।३७	१। ६	१४।१३	०।३९	११।४५	२।४०
२२	२६।१२	२।४५	८।४७	३।५३	३।५७	१। ६	१२।४४	०।४९	११।४०	२।४१
२६	२६। ६	२।४१	६।५७	३।२०	४।१७	१। ६	११। ९	०।५९	११।३६	२।४१
३०	२५।५७	२।३७	४।१५	२।१८	४।३७	१। ६	९।२९	१। ७	११।३०	२।४२
अक्तू ४	२५।४५	२।३३	–१।३१	–०।५८	४।५७	१। ६	७।४४	१।१४	११।२५	२।४२
८	२५।२९	२।२८	+०।२०	+०।१८	५।१७	१। ६	५।५५	१।२१	११।१९	२।४३
१२	२५।१०	२।२४	+०।४६	१।१६	५।३७	१। ६	४। ३	१।२६	११।१३	२।४३
१६	२४।४७	२।१९	–०। ७	१।४९	५।५७	१। ६	२। ९	१।३०	११। ७	२।४३
२०	२४।२१	२।१५	१।५७	२। २	६।१७	१। ६	+०।१४	१।३३	११। १	२।४४
२४	२४।५१	२।१०	४।२१	२। ०	६।३६	१। ६	–१।४२	१।३४	११।५४	२।४४
२८	२३।१७	२। ५	७। ०	१।४६	६।५५	१। ६	३।३९	१।३५	१०।४८	२।४४
नवं. १	२२।४१	२। १	९।४३	१।२६	७।१४	१। ६	५।३४	१।३४	१०।४२	२।४४
५	२२। १	१।५६	१२।२२	१।२	७।३३	१। ६	७।२९	१।३२	१०।३६	२।४३
९	२१।१७	१।५१	१४।५२	०।३६	७।५२	१। ७	९।२०	१।२९	१०।३०	२।४३
१३	२०।३१	१।४६	१७।११	+०। ९	८।१०	१। ७	११। ९	१।२५	१०।२४	२।४२
१७	१९।४१	१।४१	१९।१७	–०।१८	८।२७	१। ७	१२।५३	१।२०	१०।१९	२।४२
२१	१८।४८	१।३७	२१। ७	०।४४	८।४५	१। ७	१४।३२	१।१४	१०।१३	२।४१
२५	१७।५३	१।३३	२२।४१	१। ८	९। १	१। ८	१६। ६	१। ८	१०। ९	२।४१
२९	१६।५५	१।२६	२३।५६	१।३०	९।१८	१। ८	१७।३३	१। ०	१०। ४	२।४०
दिसं. ३	१५।५५	१।२२	२४।५२	१।४८	९।३३	१। ९	१८।५२	०।५२	१०। १	२।३९
७	१४।५२	१।१७	२५।२६	२। ३	९।४९	१। ९	२०। २	०।४४	९।५७	२।३८
११	–१३।४८	–१।१३	–२५।३९	–२।१३	–१०।३	+१। ९	–२१। ५	+०।३५	+९।५४	–२।३७

मंगल आदि ग्रहों की स्पष्ट क्रान्ति एवं शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.) भा. स्टैं. टा. के लिए (सं. २०२६)

ता.	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
६९-७०	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
दि. १५	-१२।४२	-१। ८	-२५।२७	-२।१७	-१०।१७	+१।१०	-२१।५७	+०।२५	+९।५२	-२।३६
१९	११।३३	१। ३	२४।५३	२।१२	१०।३०	१।११	२२।३९	०।१६	९।५०	२।३५
२३	१०।२४	०।५९	२३।५५	१।५७	१०।४३	१।११	२३।१०	+०। ६	९।४९	२।३४
२७	९।१३	०।५४	२२।३९	१।२९	१०।५५	१।१२	२३।३०	-०।४	९।४९	२।३३
३१	८। १	०।५०	२१।१३	०।४५	११। ६	१।१२	२३।३८	०।१३	९।४९	२।३२
जन. २	७।२५	०।४८	२०।३१	०।१५	११।१२	१।१३	२३।३७	०।१८	९।५०	२।३१
६	६।१२	०।४३	१९।१९	+०।५५	११।२२	१।१३	२३।२८	०।२७	९।५१	२।३०
१०	४।५८	०।३९	१८।३९	२।१०	११।३१	१।१४	२३। ७	०।३६	९।५२	२।२९
१४	३।४४	०।३५	१८।३४	३। ७	११।३९	१।१५	२२।३४	०।४५	९।५५	२।२८
१८	२।३०	०।३१	१८।५५	३।२७	११।४७	१।१६	२१।५१	०।५२	९।५८	२।२६
२२	१।१६	०।२७	१९।२८	३।१३	११।५३	१।१६	२०।५६	१। ०	१०। १	२।२५
२६	-०। १	०।२३	२०। ५	२।३८	११।५९	१।१७	१९।५२	१। ६	१०। ५	२।२४
३०	+१।१३	०।१९	२०।३७	१।५६	१२। ४	१।१८	१८।३९	१।१२	१०।१०	२।२३
फर. ३	२।२६	०।१५	२०।५९	१।१३	१२। ८	१।१९	१७।१७	१।१७	१०।१५	२।२२
७	३।३९	०।११	२१। ५	+०।३१	१२।१०	१।२०	१५।४७	१।२१	१०।२१	२।२१
११	४।५१	०। ८	२०।५४	-०। ७	१२।१२	१।२१	१४।११	१।२४	१०।२७	२।२०
१५	[illegible]	०। ४	२०।२४	०।४०	१२।१३	१।२२	१२।२८	१।२६	१०।३४	२।१९
१९	७।१२	-०।१	१९।३४	१। ९	१२।१३	१।२२	१०।४०	१।२७	१०।४१	२।१८
२३	८।२१	०। २	१८।२४	१।२३	१२।१२	१।२३	८।४७	१।२७	१०।४८	२।१७
२७	९।२८	०। ५	१६।५८	१।४१	१२।१०	१।२४	६।५१	१।२६	१०।५६	२।१६
मा. ३	१०।३४	०। ९	[illegible]	[illegible]	१२। ७	१।२५	४।५१	१।२४	११। ४	२।१५
७	११।३८	०।१२	[illegible]	[illegible]	१२। ३	१।२६	२।५०	१।२१	११।१३	२।१४
११	१२।४१	०।१४	[illegible]	[illegible]	११।५८	१।२६	-०।४६	१।१७	११।२१	२।१३
१५	१३।४३	०।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	+१।१६	१।१२	११।३०	२।१३
१९	[illegible]	०।२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१।२८	३।१९	१। ६	११।३९	२।१२
२३	[illegible]	०।२३	-०।४४	[illegible]	[illegible]	१।२८	५।२१	०।५८	११।४९	२।११
२७	[illegible]	०।२५	+२।५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११।५८	२।११
३१	[illegible]	०।२८	५।४४	-०।१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२। ८	२।१०
अप्रै. ४	१८।१०	०।३०	१०।२६	+०।१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।१०
८	+१८।५६	+०।३५	+१३।५८	+१।२१	-११।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	-२। ९

ग्रहों के उदयास्त—ग्रहों के उदयास्त २ प्रकार के हैं—(१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त—ये भू-भ्रमण के कारण होते हैं। (२) सूर्य-कैन्द्रिक उदयास्त—सूर्य के समीप होने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है एवं सूर्य से दूर होने पर उदित हो जाता है। यहां दिए गए ग्रहों के उदयास्त सूर्य कैन्द्रिक हैं।

यूरेनस-नेपच्यून के क्रान्ति-शर (सं. २०२६)

तारीख	यूरेनस		नेपच्यून	
१९६९	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९७०	अं.क.	अं.क.	अं.	अ.क.
१ अप्रै.	+०। ५	+०।४६	-१८। ७	+१।४५
१ मई	०।३१	०।४६	१७।५८	१।४६
१ जून	०।४४	०।४५	१७।४६	१।४६
१ जुला.	०।३७	०।४३	१७।३८	१।४५
१ अगस्त	+०।१२	०।४२	१७।३५	१।४३
१ सितं.	-०।२८	०।४१	१७।३९	१।४१
१ अक्तू.	१।१२	०।४१	१७।४९	१।४०
१ नवं.	१।५७	०।४१	१८। ३	१।३९
१ दिसं.	२।३०	०।४२	१८।१८	१।३९
१ जन.	२।४८	०।४३	१८।३१	१।३९
१ फर.	२।४५	०।४४	१८।३९	१।४०
१ मार्च	२।२७	०।४५	१८।४१	१।४२
१ अप्रै.	-१।५५	+०।४५	-१८।३७	+१।४३

ग्रहों के वक्र-मार्गी (सं. २०२६)

ग्रह	वक्र मार्गी	तारीख
मं.	वक्री	२७ अप्रै. '६९
,,	मार्गी	८ जुला '६९
बु.	वक्री	१८ मई '६९
,,	मार्गी	११ जून '६९
,,	वक्री	१६ सितं. '६९
,,	मार्गी	८ अक्तू. '६९
,,	वक्री	४ जन. '७०
,,	मार्गी	२४ जन. '७०
गु.	मार्गी	२३ मई '६९
,,	वक्री	२० फर. '७०
शु.	मार्गी	३० अप्रै. '६९
श.	वक्री	२१ अग. '६९
श.	मार्गी	४ जन. '७०
यू.	मार्गी	७ जून '६९
यू.	वक्री	१३ जन. '७०
ने.	मार्गी	७ अग. '६९
ने.	वक्री	३ मार्च '७०

ग्रहों के उदय-अस्त (सं. २०२६)

ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीख	ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीख	ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीखें
बुध	पू. अ.	२१ मार्च ६९	बुध	प. अ.	१७- ९-६९	बुध	प. उ.	२- ४-७०
,,	प. उ.	१७- ४-६९	,,	पू. उ.	५-१०-६९	गुरु	प. अ.	२४- ९-६९
,,	प. अ.	२१- ५-६९	,,	पू. अ.	३१-१०-६९	,,	पू. उ.	२१-१०-६९
,,	पू. उ.	१०- ६-६९	,,	प. उ.	८-१२-६९	शुक्र	प. अ.	५- ४-६९
,,	पू. अ.	१३- ७-६९	,,	प. अ.	८- १-७०	,,	पू. उ.	१०- ४-६९
,,	प. उ.	३- ८-६९	,,	पू. उ.	१८- १-७०	,,	पू. अ.	[illegible]-१२-६९
			,,	पू. अ.	४- ३-७०	,,	प. उ.	७- २-७०
						शनि	प. अ.	१४- ४-६९
						,,	पू. उ.	१०- ५-६९

(सं. २०२६) नेपच्यून चार (पृ. ८९ का शेष)

९ मई '६९ ; ७ अग. '६९ ; ३ अक्तू. '६९	विशा. ४ (मार्गी) अनु. १	८ जन. '७० ; ३ मार्च '७०	अनु. २ (वक्री)

चन्द्रोदयास्त (चण्डीगढ़) सं० २०२६ भा. स्ट. टा. सन् १९६९

ता. मार्च १९६९	ति. चैत्र शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१९	१	१९।५०
२०	२	२०।५०
२१	३	२१।५०
२२	४	२२।५१
२३	५	२३।५०
२४	६	—
२५	७	०।४६
२६	८	१।४०
२७	९	२।२८
२८	१०	३।११
२९	११	३।४८
३०	१२	४।२१
३१	१३	४।५१
अप्रै. १	१४	५।१९
२	१५	५।४७

ता. अप्रै.	ति. वैशा. कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
३	१	१९।२९
४	२	२०।३६
५	३	२१।४७
६	४	२२।५८
७	५	—
८	६	०। ७
९	७	१।१२
१०	८	२। ६
११	१०	२।५२
१२	११	३।३०
१३	१२	४। २
१४	१३	४।३२
१५	१४	४।५९
१६	३०	५।२९

ता. अप्रै.	ति. वैशा. शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१७	१	१९।३७
१८	२	२०।३७
१९	३	२१।३७
२०	४	२२।३५
२१	५	२३।३१
२२	५	—
२३	६	०।२१
२४	७	१। ६
२५	८	१।४५
२६	९	२।१९
२७	१०	२।५०
२८	११	३।१७
२९	१२	३।४६
३०	१३	४।१३
मई १	१४	४।४४
२	१५	५।१८

ता. मई	ति. ज्येष्ठ कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
३	१	२०।४१
४	३	२१।५४
५	४	२३।०१
६	५	—
७	६	०। १
८	७	०।५१
९	८	१।३१
१०	९	२। ५
११	१०	२।३६
१२	११	३। ३
१३	१२	३।३०
१४	१३	३।५८
१५	१४	४।२८
१६	३०	५। २

ता. मई	ति. ज्येष्ठ शुक्ल	चन्द्रास्त घं.मि.
१७	१	२०।२७
१८	२	२१।२३
१९	३	२२।१५
२०	४	२३। १
२१	५	२३।४२
२२	६	—
२३	७	०।१७
२४	८	०।४९
२५	८	१।१६
२६	९	१।४४
२७	१०	२।११
२८	११	२।४०
२९	१३	३।११
३०	१४	३।४९
३१	१५	४।३४

ता. जून	ति. प्र. आषा कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
१	१	२०।४८
२	२	२१।४९
३	३	२२।४८
४	५	२३।२९
५	६	—
६	७	०। ६
७	८	०।३७
८	९	१। ६
९	१०	१।३४
१०	११	२। १
११	१२	२।३१
१२	१३	३। ३
१३	१४	३।४१
१४	३०	४।२०

ता. जून	ति. प्र. आषा शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१५	१	२०।१०
१६	१	२०।५८
१७	२	२१।४१
१८	३	२२।१७
१९	४	२२।५०
२०	५	२३।१८
२१	६	२३।४६
२२	७	—
२३	८	०।१३
२४	९	०।३८
२५	१०	१। ७
२६	११	१।४१
२७	१२	२।२२
२८	१३	३।१०
२९	१४	४।११

ता. जून	ति. द्वि. आषा कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
३०	१	२०।२७
जु. १	२	२१।२०
२	३	२२। २
३	४	२२।३७
४	५	२३। ८
५	६	२३।३६
६	७	—
७	८	०। ४
८	९	०।३३
९	१०	१। ४
१०	११	१।३९
११	१२	२।१९
१२	१३	३। ४
१३	१४	३।५५
१४	३०	४।४३

ता. जुला.	ति. द्वि. आ. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.
१५	१	२०।१८
१६	२	२०।५१
१७	३	२१।२१
१८	४	२१।४९
१९	५	२२।१५
२०	६	२२।४१
२१	६	२३। ९
२२	७	२३।३९
२३	९	—
२४	१०	०।१५
२५	११	०।५७
२६	१२	१।५२
२७	१३	२।५७
२८	१४	४। ९
२९	१५	५।२७

ता. जुला.	ति. श्राव. कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
३०	२	२०।३२
३१	३	२१। ५
अग १	४	२१।३५
२	५	२२। ३
३	६	२२।३३
४	७	२३। ४
५	८	२३।३९
६	९	—
७	१०	०।१७
८	११	०।५९
९	१२	१।५०
१०	१३	२।४४
११	१३	३।४०
१२	१४	४।३८
१३	३०	५।३६

ता. अग.	ति. श्राव. शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१४	१	१९।५३
१५	२	२०।१९
१६	३	२०।४६
१७	४	२१।१२
१८	५	२१।४०
१९	६	२२।१५
२०	७	२२।५४
२१	८	२३।४२
२२	९	—
२३	१०	०।४१
२४	१२	१।४८
२५	१३	३। १
२६	१४	४।१५
२७	१५	५।२९

ता. अग.	ति. भाद्र कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
२८	१	१९।३१
२९	२	२०। १
३०	३	२०।३१
३१	४	२१। २
सि. १	५	२१।३५
२	६	२२।१३
३	७	२२।५६
४	८	२३।४३
५	९	—
६	१०	०।३६
७	११	१।३१
८	१२	२।२९
९	१३	३।२८
१०	१४	४।२५
११	३०	५।२३

ता. सितं.	ति. भाद्र शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१२	१	१८।४९
१३	२	१९।१६
१४	३	१९।४४
१५	४	२०।१६
१६	५	२०।५२
१७	६	२१।४०
१८	७	२२।३२
१९	८	२३।३५
२०	९	—
२१	१०	०।४४
२२	११	१।५७
२३	१२	३। ९
२४	१४	४।१८
२५	१५	५।२४

ता. सितं.	ति. आश्वि. कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
२६	१	१८।२८
२७	२	१९। ०
२८	३	१९।३३
२९	४	२०। ९
३०	५	२०।४९
अ. १	६	२१।३४
२	७	२२।२६
३	८	२३।२९
४	९	—
५	९	०।१८
६	१०	१।१७
७	११	२।१४
८	१२	३।१३
९	१३	४।११
१०	१४	५।१०
११	३०	६। ७

ता. अक्तू.	ति. आश्वि. शुक्ल	चन्द्रास्त घं.मि.
१२	१	१८।१७
१३	२	१८।५३
१४	३	१९।३६
१५	४	२०।२८
१६	५	२१।२९
१७	७	२२।३५
१८	८	२३।४५
१९	९	—
२०	१०	०।५६
२१	११	२। ५
२२	१२	३।११
२३	१३	४।१४
२४	१४	५।१७
२५	१५	६।१९

ता. अक्तू.	ति. कार्ति. कृष्ण	चन्द्रोदय घं.मि.
२६	१	१८। ३
२७	२	१८।४२
२८	३	१९।२७
२९	४	२०।१६
३०	५	२१।१०
३१	६	२२। ७
नवं. १	७	२३। ५
२	८	—
३	९	०। ३
४	१०	१। ०
५	११	१।५६
६	११	२।५३
७	१२	३।५२
८	१४	४।५३
९	३०	५।५७

चन्द्रोदयांस्त (चण्डीगढ़) सं० २०२६ भा० स्टै टा० (सन् १९६९-७०)

ता. नवं. १९६९	ति. कार्ति शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१०	१	१७।३०
११	२	१८।२०
१२	३	१९।१९
१३	४	२०।२८
१४	५	२१।३८
१५	६	२२।४८
१६	७	२३।५७
१७	८	——दि.
१८	९	१। २
१९	११	२। ५
२०	१२	३। ७
२१	१३	४। ९
२२	१४	५।११
२३	१५	६।१३

ता. नवं.	ति. मार्ग- कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
२४	१	१७।२०
२५	२	१८। ९
२६	२	१९। १
२७	३	१९।५८
२८	४	२०।५५
२९	५	२१।५२
३०	६	२२।४८
१	७	२३।४४
२	८	
३	९	०।४०
४	१०	१।३७
५	११	२।३५
६	१२	३।३७
७	१३	४।४३
८	१४	५।५२
९	३०	७। ४

ता. दिसं.	ति. मार्ग- शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
१०	१	१८। ८
११	२	१९।२२
१२	४	२०।३६
१३	५	२१।४७
१४	६	२२।५६
१५	७	
१६	८	०। १
१७	९	१। ३
१८	१०	२। ३
१९	११	३। ४
२०	१२	४। ५
२१	१३	५। ६
२२	१४	६। ७
२३	१५	७। ४

ता. दिसं.	ति. पौष कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
२४	१	१७।४९
२५	२	१८।४६
२६	३	१९।४५
२७	४	२०।४२
२८	४	२१।३८
२९	५	२२।३३
३०	६	२३।२६
३१	७	
जन १	८	०।२२
२	९	१।१८
३	१०	२।२१
४	११	३।२७
५	१२	४।३८
६	१३	५।५०
७	३०	६।५६

ता. जन. (१९७०)	ति. पौष शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
८	१	१८।१०
९	२	१९।२५
१०	३	२०।३८
११	४	२१।४७
१२	५	२२।५२
१३	६	२३।५५
१४	८	
१५	९	०।५७
१६	१०	१।५८
१७	१०	३। ०
१८	११	४। ०
१९	१२	४।५७
२०	१३	५।५१
२१	१४	६।३७
२२	१५	७।१७

ता. जन. १९७०	ति. माघ कृष्ण	चन्द्रोदय घं.मि.
२३	१	१८।३४
२४	२	१९।३०
२५	३	२०।२४
२६	४	२१।१८
२७	५	२२।१३
२८	६	२३।१०
२९	६	
३०	७	०। ९
३१	८	१।१२
फ. १	१०	२।१८
२	११	३।२७
३	१२	४।३३
४	१३	५।३५
५	१४	६।२७
६	३०	७।१५

ता. फर.	ति. माघ शुक्ल	चन्द्रास्त घं.मि.
७	१	१९।२२
८	३	२०।३२
९	४	२१।३९
१०	५	२२।४३
११	६	२३।४८
१२	७	
१३	८	०।५०
१४	९	१।५४
१५	१०	२।५२
१६	११	३।४६
१७	१२	४।३५
१८	१३	५।१७
१९	१३	५।५५
२०	१४	६।३०
२१	१५	६।५७

ता. फर.	ति. फाल्गु कृष्ण	चन्द्रोदय घं मि.
२२	१	१९।१४
२३	२	२०। ९
२४	३	२१। ५
२५	४	२२। ४
२६	५	२३। ४
२७	६	
२८	७	०। ८
मा. १	८	१।१४
२	९	२।२०
३	१०	३।२१
४	११	४।१६
५	१२	५। ४
६	१४	५।४४
७	३०	६।२१

ता. मार्च १९७०	ति. फाल्गु शुक्ल	चन्द्रास्त घं. मि.
८	१	१९।१५
९	२	२०।२५
१०	३	२१।२८
११	४	२२।३५
१२	५	२३।४०
१३	६	
१४	७	०।४२
१५	८	१।३८
१६	९	२।३०
१७	१०	३।१६
१८	११	३।५५
१९	१२	४।२९
२०	१३	४।५२
२१	१४	५।२६
२२	१५	५।५२
२३	१५	६।१७

ता. मार्च	ति. चैत्र कृष्ण	चन्द्रोदय घं. मि.
२४	१	[illegible]
२५	२	[illegible]
२६	३	[illegible]
२७	४	[illegible]
२८	५	
२९	६	०।१२
३०	८	१।१०
३१	९	[illegible]
अप्रै १	१०	[illegible]
२	११	[illegible]
३	१२	४।१५
४	१३	४।५०
५	१४	५।२२
६	३०	[illegible]

अक्षांश भेद से समस्त भारत में चन्द्र दर्शन की तारीख एवं उन्नत शृंग (सं. २०२६)

(+उत्तर शृंग) (—दक्षिण शृंग)

अक्षांश	चैत्र चन्द्र दर्शन ता. '६९	चैत्र शृंगोन्नति अंश	वैशा. चन्द्र दर्शन ता. '६९	वैशा. शृंगोन्नति अंश	ज्येष्ठ चन्द्रदर्शन ता. '६९	ज्येष्ठ शृंगोन्नति अंश	प्रथम आषा. चन्द्र दर्शन ता. '६९	प्रथम आषा. शृंगोन्नति अंश	द्वितीय आषाढ़ चन्द्रदर्शन ता. '६९	द्वितीय आषाढ़ शृंगोन्नति अंश	श्राव. चन्द्र दर्शन ता. '६९	श्राव. शृंगोन्नति अंश	भाद्र. चन्द्र दर्शन ता. '६९	भाद्र. शृंगोन्नति अंश	आश्वि. चन्द्र दर्शन ता. '६९	आश्वि. शृंगोन्नति अंश	कार्ति. चन्द्र दर्शन ता. '६९	कार्ति. शृंगोन्नति अंश	मार्ग. चन्द्र दर्शनता. '६९	मार्ग. शृंगोन्नति अंश	पौष चन्द्र दर्शन ता. '६९	पौष शृंगोन्नति अंश	माघ चन्द्रदर्शन ता. '७०	माघ शृंगोन्नति अंश	फाल्गु. चन्द्र दर्शन ता. '७०	फाल्गु. शृंगोन्नति अंश
	मार्च		अ.		मई		जू.		जु.		अग.		सि.		अ.		नवं		दि.		जन.		फ.र.		मार्च	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	[illegible]	१७	[illegible]	१६	-१३	१६	+६	१४	+१७	१३	+३४	१३	+३९	११	+३५	१०	+२९	९	+४	७	-१०	९	-२६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	"	[illegible]	"	[illegible]	"	-३	"	+१७	[illegible]	+२७	"	+४४	"	+५०	"	+४५	"	+३९	"	+१६	"	०	"	-१६
[illegible]	"	[illegible]	"	[illegible]	"	[illegible]	"	+३	"	+२७	१५	+४५	"	+५४	"	+५९	"	+५५	b	+४२	"	+२६	"	+१०	"	-४
[illegible]	"	[illegible]	"	[illegible]	"	[illegible]	"	+१०	"	+३७	"	+५५	a	+६४	"	+६९	"	+६५	१	+५२	"	+३६	"	+२०	"	+७

a २४ अक्षांश से अधिक अक्षांश वाले प्रदेशों में चन्द्रदर्शन १५ अगस्त को ही होगा। a ३२ एवं इससे अधिक अक्षांश वाले स्थानों पर १३ सित. (द्वितीया) को भी चन्द्रदर्शन असम्भव प्रतीत होता है। b २० से अधिक अक्षांश वाले प्रदेशों में चन्द्रदर्शन ११ दिसं. को होगा।

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार (सं॰ २०२६)

सूर्य-चार

तारीख स १९६९	नक्षत्र चरण	तारीख १९६९	नक्षत्र चरण	तारीख ६९–७०	नक्षत्र चरण	तारीख स १९७०	नक्षत्र चरण
मार्च २०	उ.भा. २	जुला. ५	पुन. १	अक्तू २०	चि. ४	जन. ३०	श्रव. ३
२४	३	९	२	२३	स्वा. १	फर. २	४
२७	४	१२	३	२७	२	६	ध. १
३०	रेव. १	१६	पुन. ४ कर्क	३०	३	९	२
अप्रै. ३	२	१९	पुष्य १	नवं. २	४	१२	ध. ३ कुंभ
६	३	२३	२	६	वि. १	१६	४
१०	४	२६	३	९	२	१९	शत. १
१३	अश्वि. १ मेष	३०	४	१२	३	२२	२
१७	२	अग. २	आश्ले. १	१६	वि ४ वृश्चि.	२६	३
२०	३	६	२	१९	अनु. १	मार्च १	४
२४	४	९	३	२२	२	४	पू.भा. १
२७	भर. १	१३	४	२६	३	८	२
३०	२	१६	मघा १ सिंह	२९	४	११	३
मई ४	३	२०	२	दिसं. २	ज्ये. १	१४	पू.भा. ४ मी
७	४	२३	३	५	२	१७	उ.भा. १
११	कृ. १	२७	४	९	३	२१	२
१४	कृ. २ वृष	३०	पू.फा. १	१२	४	२४	३
१८	३	सितं. ३	२	१५	मू. १ ध.	२८	४
२१	४	६	३	१९	२	३१	रे. १
२५	रो. १	९	४	२२	३	अप्रै. ३	२
२८	२	१३	उ. फा. १	२५	४	७	३
३१	३	१६	उ.फा. २ कं.	२८	पू.षा. १		
जून ४	४	२०	३	जन. १	२		
७	मृग. १	२३	४	४	३		
११	२	२६	ह. १	७	४		
१४	मृ. ३ मिथु.	३०	२	१०	उ.षा. १		
१८	४	अक्तू. ३	३	१४	उ.षा. २ मक.		
२१	आर्द्रा १	७	४	१७	३		
२५	२	१०	चि. १	२०	४		
२८	३	१३	२	२४	श्रव. १		
जुला. २	४	१७	चि. ३ तुला	२७	२		

मंगल-चार

मार्च २२	ज्ये. १
अप्रै. ३	२
२७	(वक्री)
मई २०	ज्ये. १
३१	अनु. ४
जून १०	३
२२	२
जुला. ८	(मार्गी)
२४	अनु. ३
अग. ५	४

मङ्गल-चार

तारीख ६९–७०	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण
अग. १४	ज्ये. १	जन. १६	पू.भा. ४ मी.
२२	२	२०	उ.भा. १
२९	३	२५	२
सितं. ४	४	२९	३
१०	मू. १ धनु	फर. ३	४
१६	मू. २	७	रेव. १
२१	३	१२	२
२७	४	१६	३
अक्तू. २	पू.षा. १	२१	४
७	२	२६	अश्वि. १ मेष
१२	३	मार्च २	अश्वि. २
१७	४	७	३
२२	उ.षा. १	१२	४
२६	उ.षा. २ मकर	१६	भर. १
३१	उ.षा. ३	२१	२
नवं. ५	४	२६	३
९	श्रव. १	३०	४
१४	२	अप्रै. ४	कृ. १
१८	३		
२३	४		
२८	धनि. १		
दिसं. २	२		
७	ध. ३ कुं.		
११	ध. ४		
१५	शत. १		
२०	२		
२४	३		
२९	४		
जन. २	पू.भा. १		
७	२		
११	३		

बुध-चार

मार्च १९	शत. ४
२१	पू.भा. १
२३	२
२५	३
२७	पू.भा. ४ मी.
२८	उ.भा. १
३०	२
अप्रै. १	३
३	४
४	रेव. १
६	२
८	३
९	४

बुध चार

तारीख १९६९	नक्षत्र चरण	तारीख १९६९	नक्षत्र चरण
अप्रै. ११	अश्वि. १ मेष.	जु. १४	पुन. १
१२	२	१६	२
१४	३	१८	३
१६	४	१९	पुन. ४ कर्क
१७	भर. १	२१	पुष्य १
१९	२	२३	२
२१	३	२४	३
२२	४	२६	४
२४	कृ. १	२७	आश्ले. १
२६	कृ. २ वृष	२९	२
२८	३	३१	३
३०	४	अग. १	४
मई ३	रो. १	३	मघा १ सिंह
६	२	५	२
११	३	७	३
१८	(वक्री)	९	४
२५	रो. २	११	पू.फा. १
३१	१	१३	२
जू. १०	कृ. ४	१५	३
११	(मार्गी)	१७	४
११	रो. १	२०	उ.फा. १
२०	२	२२	उ.फा. २ क.
२४	३	२४	३
२७	४	२७	४
३०	मृग. १	३०	हस्त १
जु. २	२	सितं. २	२
४	मृग. ३ मि.	६	३
६	४	११	४
८	आर्द्रा १	१६	(वक्री)
१०	२	२१	ह. ३
११	३	२५	२
१३	४	२८	१

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र-चरण चार (सं० २०२६)

बुध-चार

तारीख १९६९	नक्षत्र चरण	तारीख ६९-७०	नक्षत्र चरण	तारीख १९७०	नक्षत्र चरण
अक्तू. २	उ.फा. ४	दिसं. १२	मू. ४	मार्च १३	पू.भा. १
७	३	१४	पू.षा. १	१५	२
८	मार्गी	१६	२	१७	३
१०	उ.फा. ४	१८	३	१९	पू.भा. ४ मीन
१५	ह. १	२१	४	२०	उ.भा. १
१८	२	२३	उ.षा. १	२२	२
२०	३	२६	उ.षा. २ मक.	२४	३
२२	४	२९	३	२५	४
२४	चि. १	जन. ४	(वक्री)	२७	रेव. १
२६	२	१०	२	२९	२
२८	चि. ३ तु.	१३	उ.षा. १ धनु	३०	३
३१	४	१५	पू.षा. ४	अप्रै. १	४
नवं. १	स्वा. १	१८	३	३	अश्वि. १ मेष
३	२	२४	(मार्गी)	४	२
६	३	फर. १	पू.षा. ४	६	३
८	४	५	उ.षा. १		
१०	वि. १	८	उ.षा. २ मक.		
१२	२	११	३		
१५	३	१३	४		
१७	वि. ४ वृश्चिक	१६	श्रव. १		
१९	[illegible] १	१८	२		
२०	२	२२	३		
२२	३	२४	४		
२४	४	२६	धनि. १		
२६	[illegible] १	२८	२		
२९	२	मार्च २	ध. ३ कुं.		
दिसं. १	३	४	४		
३	४	६	शत. १		
५	मू. १ धनु	८	२		
७	२	१०	३		
९	३	११	४		

[illegible]-चार

तारीख	नक्षत्र चरण
मार्च १०	[illegible] फा. ३
मई ६	२
२३	(मार्गी)
जून १३	उ.फा. ३
[illegible] २६	४
[illegible]	[illegible] १
२४	[illegible]
[illegible]	३
[illegible]	४
[illegible]	[illegible] १
[illegible]	[illegible]
[illegible]	चि. [illegible]
२८	४
दि. १३	स्वा. १
जन. ९	२

गुरु-चार

तारीख १९७०	नक्षत्र चरण
फर. २०	(वक्री)
अप्रै. २	स्वा. १

शुक्र-चार

तारीख १९७०	नक्षत्र चरण
मार्च २०	अश्वि. १
३१	रेव. ४ मीन
अप्रै. ६	३
११	२
१७	१
३०	(मार्गी)
मई १२	रेव. २
१९	३
२४	४
२९	अश्वि. १ मेष
जून २	२
६	३
१०	४
१३	भ. १
१७	२
२०	३
२४	४
२७	कृ. १
३०	कृ. २ वृष
[illegible]	३
[illegible]	४
१०	रो. १
[illegible]	२
[illegible]	३
[illegible]	४
२३	मृ. १
२६	२
२८	मृ. ३ मिथु.

शुक्र-चार

तारीख १९६९	नक्षत्र चरण	तारीख ६९-७०	नक्षत्र चरण	तारीख १९७०	नक्षत्र चरण
जु. ३१	मृ. ४	अक्तू. २५	ह. ३	जन. १६	उ.षा. २ मक
अग. ३	आर्द्रा १	२८	४	१८	३
६	२	३१	चि. १	२१	४
९	३	नवं. ३	२	२४	श्रव. १
१२	४	५	चि. ३ तु.	२६	२
१५	पुन. १	८	४	२९	३
१८	२	११	स्वा. १	फर. १	४
२०	३	१३	२	३	धनि १
२३	पुन. ४ कर्क	१६	३	६	२
२६	पुष्य १	१८	४	९	ध. ३ कुं.
२९	२	२१	वि. १	११	४
सितं. १	३	२४	२	१४	शत. १
४	४	२६	३	१७	२
६	आश्ले १	२९	वि. ४ वृश्चि	१९	३
९	२	दिसं. २	अनु. १	२२	४
१२	३	४	२	२५	पू.भा. १
१५	४	७	३	२७	२
१७	म. १ सिंह	१०	४	मार्च २	३
२०	२	१२	ज्ये. १	५	पू.भा. ४ मीन
२३	३	१५	२	७	उ.भा. १
२६	४	१८	३	१०	२
२८	पू.फा. १	२०	४	१३	३
अक्तू. १	२	२३	मू. १ धनु	१५	४
४	३	२६	२	१८	रेव. १
७	४	२८	३	२१	२
९	उ.फा. १	३१	४	२३	३
१२	उ.फा. २ कं.	जन. ३	पू.षा. १	२६	४
१५	३	५	२	२९	अश्वि. १ मेष
१७	४	८	३	अप्रै. १	२
२०	हस्त १	११	४	३	३
२३	२	१३	उ.षा. १	६	४

नोट—नेप्च्यून का चार पृ. ८५ पर देखें

शनि-चार

तारीख ६९-७०	नक्षत्र चरण
अप्रै. ४	अश्वि. २
२९	३
मई २८	४
जु. १	भ. १
अग. २१	(वक्री)
अक्तू. १२	अश्वि. ४
नवं. २५	३
जन. ४	(मार्गी)
फर. १३	अश्वि. ४
मार्च २०	भ. १

राहु-चार

तारीख	नक्षत्र चरण
मार्च २७	उ. भा. १
मई २९	पू.भा. ४
जु. ३१	पू.भा. ३ कुं.
अक्तू. ४	पू.भा. २
दिसं. ४	१
फर. ५	शत. ४

केतु-चार

तारीख	नक्षत्र चरण
मार्च २७	उ.फा. ३
मई २९	२
जु. ३१	उ.फा. १ सिं.
अक्तू. ४	पू.फा. ४
दिसं. ४	३
फर. ५	२

हर्षल-चार

तारीख	नक्षत्र चरण
मई १५	उ.फा. ३
जु. ७	(मार्गी)
३०	उ.फा. ४
सि. १२	ह. १
नवं. ६	२
जन. १३	(वक्री)
मा. २७	ह. १

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्र०	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	३।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	३।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	३।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	३।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	३।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	३।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	३।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	३।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	३।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	३।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	३।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	२।५७	९।१८	११।३८	१३।५८	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	२।५३	९।१४	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	२।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	२।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	२।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	[illegible]	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	[illegible]	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	[illegible]	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५	२१।४८	२३।१४	०।३५	२।१०	४।४
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।२०	१।५४	३।४८
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१६	१।५०	३।४४
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१२	१।४६	३।४०
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।८	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।४	[illegible]	[illegible]
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्र०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	[illegible]	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	[illegible]	[illegible]	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	[illegible]	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५४	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।२२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।१८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।१४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।१०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।१	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२२।५७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२२।५३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।४९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।४५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।४१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।३६	१।७	३।२८	५।४८
१३	[illegible]	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।३२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।२८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।२४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।२१	२०।१६	२२।२०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	[illegible]	१०।८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।१७	२०।१२	२२।१६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।७	२२।११	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३	२२।७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।३०	२।५१	५।११
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	६।५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, अतः पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ मानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।१५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३४	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।१०	१२।२७	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	[illegible]	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	[illegible]	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	[illegible]	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	[illegible]	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।१३	४।१७	[illegible]
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।९	४।१३	[illegible]
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।५	४।९	[illegible]
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।१	४।५	[illegible]
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टा मिनट लिखे हैं वे रेलवे (भा. स्टै.) टा. के हैं। यहां रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३ तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा गया है। जैसे वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ३ बज कर ९ मिनट पर है। लग्न की सन्धि में एक-दो मिनट का कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है।

—दैनिक लग्न-सारणी से लग्न के भुक्त अंशों का ज्ञान—

अपने अभीष्ट भा. स्टै. टा. में से गत लग्न के समाप्ति काल के घण्टा मिनट घटा कर जो शेष बचे, उसके मिनट बनाकर उन्हें ३० से गुणा करके वर्तमान लग्न के निरयण स्वोदय के मिनटों से (जो नीचे दिए गए हैं) भाग दें। जो लब्धि आए वह वर्तमान लग्न के भुक्त अंश होंगे।

——लग्नों के निरयण स्वोदयों के मिनट——

लग्न	मे.	वृ.	मि	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
निरयण स्वोदय मिनट	९४	११५	१३४	१४२	१४०	१४०	१४२	१४०	१२४	१०२	८६	८२

——दैनिकलग्न-सारणी से लग्न का नवमांश ज्ञात करना——

अपने अभीष्ट भा. स्ट. टा. के घन्टा-मिनटों में से 'दैनिक-लग्न-सारणी' में दिए गए गत लग्न के समाप्ति काल के घं. मिनटों को घटा कर जो शेष बचे उसके मिनट बनाएं। फिर नीचे दी गई लग्न नवमांश सारणी में वर्तमान लग्न के नीचे उन मिनटों से नवमांश ज्ञात करें। जैसे—चण्डीगढ़ में वैशाख प्रविष्टा ५ को दिन के १२ बज कर ३५ मिनट पर वर्तमान लग्न कर्क है, इस समय कर्क का वर्तमान नवमांश ज्ञात करने के लिए गत लग्न मिथुन के समाप्ति काल ११ घं. २७ मि. को १२ घं. ३५ मि. में से घटाने पर शेष १ घं. ८ मि. (मि. ६८) प्राप्त हुए। नीचे सारणी में वर्तमान लग्न कर्क नीचे ६३ मिनट पर चौथे नवमांश की एवं ७९ मिनट पर पांचवें नवमांश की समाप्ति लिखी है, अतः स्पष्ट है शेष ६८ मिनट पर कर्क लग्न का पांचवां (वृश्चिक का) नवमांश है।

लग्न नवमांश ज्ञानसारिणी——

लग्न	मे. मि.	वृ. मि.	मि. मि.	क. मि.	सि. मि.	क. मि.	तु. मि.	वृ. मि.	ध. मि.	म. मि.	कुं. मि.	मी. मि.
१ला नवमांश समाप्त	१० (मे)	१३ (मे)	१५ (तु)	१६ (क)	१६ (म)	१६ (म)	१६ (तु)	१६ (क)	१४ (मे)	११ (म)	९ (तु)	९ (क)
२रा " "	२१ (वृ)	२६ (कु)	३० (वृ)	३२ सि.	३१ (वृ)	३१ (कुं)	३२ (वृ)	३१ सि.	२८ (वृ)	२२ (कुं)	१९ (वृ)	१८ सि.
३रा " "	३१ मि	३९ मी	४५ (ध)	४८ (क)	४७ मि.	४७ मी	४८ (ध)	४७ (क)	४१ मि	३४ मी	२८ (ध)	२७ (क)
४वां " "	४२ (क)	५१ (मे)	६० (म)	६३ (तु)	६२ (क)	६२ (मे)	६३ (म)	६२ (तु)	५५ (क)	४५ (मे)	३८ (म)	३६ (तु)
५वां " "	५२ सि.	६४ (वृ)	७५ (कुं)	७९ (वृ)	७८ सि.	७८ (वृ)	७९ (कुं)	७८ (वृ)	६९ सि.	५६ (वृ)	४७ (कुं)	४६ (वृ)
६वां " "	६३ (क)	७६ मि.	९० मी	९४ (ध)	९३ (क)	९३ मि.	९४ मी	९३ (ध)	८२ (क)	६८ मि.	५७ मी.	५५ (ध
७वां " "	७३ (तु)	८९ (क)	१०५ (मे)	११० (म)	१०८ (तु)	१०८ (क)	११० (मे	१०८ (म)	९६ (तु)	७९ (क)	६६ (मे)	६४ (म)
८वां " "	८४ (वृ)	१०२ सि.	१२० (वृ)	१२६ (क)	१२४ (वृ)	१२४ सि.	१२६ (वृ)	१२४ (कुं)	११० (वृ)	९० सि.	७६ (वृ)	७३ (कुं)
९वां " "	९४ (ध)	११५ (क)	१३५ मि.	१४२ मी	१४० (ध)	१४० (क)	१४२ मि.	१४० मी	१२४ (ध)	१०२ (क)	८६ मि	८२ मी

(कोष्ठों में दी गई राशियां नवमांश की राशियां हैं।)

सूचना——श्री मार्तण्ड पञ्चांग में दी गई दैनिक-लग्न-सारणियां चण्डीगढ़ के लिए बनाई गई हैं। परन्तु इन्हें सामान्यतया लग्न के समाप्तिकाल एवं नवमांश-ज्ञान के लिए दिल्ली, समस्त पञ्जाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू-काश्मीर के किसी भी नगर के लिए योग में लाया जा सकता है। इसी पञ्चांग में आगे दी हुई 'पञ्चाङ्ग-परिवर्तन-सारणी' की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में पर्याप्त सूक्ष्मता से लग्न-समाप्ति-काल जाना जा सकता है।

सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि :—

यह मानना पड़ेगा, कि पाश्चात्य गणना-पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना-पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट-सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ पाती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य-ज्योतिषियों ने साम्पातिक-काल (Sidereal time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है ?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्वसाधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं :—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) के बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

* (१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
* (२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या −)

ये तीनों उपकरण १०० एवं १०१ पृष्ठस्थ "अक्षांशादि सारिणी" से उठाइए।

विशेष—यदि "अक्षांशादि सारिणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि उपयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल समय—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाइम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं '−' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश [illegible] पर अयनांश सारिणी को तीन भागों में दिया गया है। सारिणी के प्रथम भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अयनांश [illegible] और उसमें सारिणी के द्वितीय भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का [illegible] फल लेकर जोड़ दें। यह [illegible] अयनांश होगा। इसे स्पष्ट करने के लिए अयनांश सारिणी भाग ३ [illegible] की सहायता से [illegible] राहु (निरयन राहु [illegible] करने के लिए [illegible]) से संस्कार करें। सारणी नं. ३ की अयनांश-सारिणी १ म तथा २ य के फलों का जोड़) [illegible] उपेक्षा की जा सकती है क्योंकि यह संस्कार बहुत थोड़ा है।

* भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।
* भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं।

(६) इष्टकालिक साम्पातिक काल :—पृष्ठ १०२-१०३ पर साम्पातिक काल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्टकालिक सां० का० इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन् का सां० का० उठाएं। उसमें सां० का० कोष्ठक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का (लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां० का० लेकर जोड़। इसमें सां० का० कोष्ठक नं० (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सां० का० के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीय मध्यम समय, (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा-मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहां यदि घण्टे २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

(इस पञ्चाङ्ग में दिये गये सां० का कोष्ठकों से सन् १८७६ से सन् १९७१ तक का सां० का० जाना जा सकता है।)

इस प्रकार ऊपर बतलाए गए ६ उपकरण तैयार हो जानेपर नीचे लिखी विधि से सारणी द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट कीजिए—

पृ. १०४ पर ३०, ३१, ३२, ३३ अक्षांशों वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न-सारणी दी गई है, जो पंजाब-हिमाचल प्रदेश के समस्त नगरों एवं हरियाणा जम्मू-काश्मीर के अनेक नगरों के लिए उपयोगी हैं। ऊपर दी गई विधि से ज्ञात किए गए अभीष्ट साम्पातिक-काल के घण्टा मिनटों को इस लग्न सारिणी के बांई ओर वाले पहले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो रा. अं. क. लिखे हैं, उन्हें अलग नोट करें। क्योंकि सारणी के पहले कालम में ३०-३० मि. के अन्तर पर साम्पातिक काल दिया गया है। अतः सम्भव है, कि अभीष्ट साम्पातिक काल वहां पूरा पूरा न मिले, ऐसी दशा में वहा अभीष्ट साम्पातिक-काल के बिल्कुल समीप वाले परन्तु उससे कम सां० का० के आगे लिखे रा. अं. क. को नोट करें और उसके आगे सारिणी में ही दिए गए अन्तर की कलाओं को भी उठा लें। सां० का० के शेष मिनट एवं सेकण्डों को सपिण्डित करके (सेकण्ड बनाकर) उन्हें सारिणी से उठाई गई अन्तर कलाओं से गुणा करके १८०० से भाग दें। लब्धि कला होगी। जो शेष बचे उसे ३० से भाग देने पर लब्धि विकला होगी। इन कला-विकलाओं को सारणी से प्राप्त किए गए रा. अं. क. में जोड़ने पर इष्ट कालिक सायन लग्न होगा। इसमें से उस दिन का अयनांश (जिस को ज्ञात करने की विधि ऊपर दी गई है) घटा देने से फलितोपयोगी निरयण लग्न बन जाएगा। ठीक इसी प्रकार जिस साम्पातिक-काल से लग्न स्पष्ट किया है, उसी सां०का० से पृष्ठ १०४ वाली सारणी में ही दी गई दशम-लग्न-सारणी द्वारा सायन-दशम लग्न स्पष्ट करके उसमें से भी अयनांश घटा देना चाहिए। दशम-लग्न-सारणी सभी अक्षांश वाले प्रदेशों के लिए एक सी ही होती है।

ध्यान रहे, ऊपर दी गई विधि में लग्न-स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांशों के केवल अंशों का ही उपयोग किया गया है, अक्षांशों की कलाओं का नहीं। सूक्ष्म-सूक्ष्म लग्न प्राप्त करने के लिए इसी सारणी में अभीष्ट साम्पातिक-काल के आगे अक्षांश की कलाओं के नीचे दी गई कलाओं को उपरोक्त स्पष्ट निरयण लग्न में चिह्न के अनुसार जोड़ना या घटाना जरूरी है।

लग्न साधन का उदाहरण—यहां हम १५ जुला. १९६९ को भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि. पर चम्बा (हि. प्र.) में लग्न स्पष्ट करेंगे—

'अक्षांशादि सारिणी' में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैण्डर्ड अन्तर—२५ मि. २० से है। १० घं. ४५ मि. में से स्टैण्डर्ड अन्तर के. मि. से. घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीय मध्यम काल हुआ। सांपातिक काल कोष्टक नं. (१) से सन् १९६९ का सां. का. (६ घं. ४१ मि. २ से.) लिया, इसमें कोष्ठक नं. (२) से लिया गया ५ जुला. का सां. का. (१२ घं. ४८ मि. ४९ से.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ से. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अतः १९ घं. २९ मि० ५१ से. में चम्बा का स्थानीय मध्यम काल १० घं. १९ मि. ४० से. जोड़ा और योग फल में कोष्ठक नं. (४) से स्थानीय मध्यम काल के १० घं. १९ मि. से उठाए गए १ मि. ४२ से. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुआ। क्योंकि यहां घण्टे २४ से ज्यादा हैं अतः २४ घण्टे घटाए तो ५ घ. ५१ मि. १३ से. हमारा अभीष्ट साम्पातिक काल हुआ।

इसी दिन (१५ जुला. १९६९ को) अयनांश को जानने के लिए 'अयनांश सारणी भाग १ में' से सन् १९६९ के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया, इसमें 'अयनांश सारणी भाग २' से प्राप्त की गई १५ जुला. की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ। 'अयनांश'' सारणी भाग ३'' का उपयोग स्वल्पान्तर होने के कारण छोड़ दिया गया है।

अब ऊपर स्पष्ट किए गए सां. का. द्वारा लग्न-सारणी की सहायता से इस प्रकार लग्न स्पष्ट करेंगे—

पृ. १०४ पर दी गई लग्न सारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न ५ रा. २३ अं. ३४ क. लिखा है, इसे अलग नोट किया। लग्न के ये राश्यादि ५ घं. ३० मि. सां. का. के हैं। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक काल के राश्यादि चाहिएं। अतः हमें ५ रा. २३अं. ३४ क. में २१ मि. १३ से. (अथवा १२७३ सेकण्ड) का चालन देना है। लग्न सारणी में ३२ अक्षांश के नीचे ५ घं. ३० मि. सा. का. के आगे अन्तर की कलाएं ३८६ दी हैं। इन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० से भाग देने पर लब्धि २७३ कला हुई। शेष ११३६ को ३० से भाग देने पर लब्धि ३८ वि. हुई। २७३ क. ३८वि. (अर्थात ४ अं. ३३ क. ३८ वि.) को ५ रा. २३ अं. ३४ क. में जोड़ने पर ५ रा. २८ अं. ७ क. ३८ वि. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटा देने पर ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ वि. फलितोपयोगी निरयण लग्न हुआ। हमने ३२ अक्षांश की लग्न सारणी से लग्न साधन किया है, परन्तु चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ कला है। अतः इस लग्न में हमें २९ कला (स्वल्पान्तर से ३० कला) का सस्कार देना है। इसके लिए लग्न सारणी के दाईं ओर ''लग्न में अक्षांश कला संस्कार'' वाले कोष्ठक में ३० कला के नीचे और सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे +१ कला प्राप्त हुई। इसे ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ वि. में जोड़ने से ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ वि.—यह अभीष्ट-कालिक सूक्ष्म निरयण-लग्न स्पष्ट हुआ।

ठीक इसी तरह इसी सां. का. (५ घं. ५१ मि. १३ से.) से पृ. १०४ पर 'लग्न सारणी' के साथ ही दी हुई 'दशम लग्न सारणी' से दशमलग्न स्पष्ट किया जाएगा। उदाहरण नीचे दिया गया है—

दशमलग्न-साधन का उदाहरण—१५ जुला. १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. पर ही चम्बा में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय सा. का. ५ घं. ५१ मि. १३ से. है। पृ. १०४ पर दशम लग्न सारणी में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न २ रा. २३ अं. ७ क. दिया है। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक-काल का दशम लग्न चाहिए। अतः २ रा. २३ अं. ७ क. में २१ मि. १३ से. (१२७३ सेकण्ड) का चालन देना होगा। सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न सारणी में अन्तर कलाएं ४१३ लिखी हैं, इन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० का भाग देने पर लब्धि २९२ कला हुई। शेष १४९ को ३० से भाग देने पर लब्धि ५ विकला हुई। इन २९२ क. ५ वि. (४ अं. ५२ क. ५ वि.) को २ रा. २३ अं. ७ क. में जोड़ देने पर २ रा. २७ अं. ५९ क. ५ वि. सायन दशम लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटाने पर २ रा. ४ अं. ३३ क. १२ वि. यह हमारा फलितोपयोगी अभीष्ट कालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान रहे, दशम-लग्न में 'अक्षांश कला-संस्कार'' (जो लग्न में दिया जाता है) नहीं दिया जाता।

———

(पृष्ठ ८१ का शेषांश)

ग्रहों की क्रान्ति एवं शर की उपयोगिता—ग्रहों की क्रान्ति एवं शर की उपयोगिता दो प्रकार की है (१) सिद्धान्त ज्योतिष सम्बन्धी, (२) फलित ज्योतिष सम्बन्धी। ग्रहों के बिम्बों की आकाश में स्थिति केवल भोगांशों से नहीं जानी जा सकती, इसके लिए क्रान्ति एवं शर की अपेक्षा रहती है। ग्रहों के उदयास्त युति आदि का निर्णय भी क्रान्ति शर पर अवलम्बित है—यह क्रान्ति-शर की सिद्धान्त ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगिता है, जिसका सर्वसाधारण के लिए कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इसकी फलित ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगिता सर्वसाधारण ज्योतिष-प्रेमियों के लिए पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। नवीन फलित ज्योतिष के क्षेत्र में क्रान्ति एवं शर के आधार पर ग्रहों के प्रभाव की बलवत्ता का पर्याप्त अध्ययन किया गया है। आधुनिक फलित विशेषज्ञों का अनुभव है कि मेदिनी, अर्घकाण्ड, जातक आदि ज्योतिष की सभी फलित शाखाओं में ग्रहों की क्रान्ति एवं शर के परिमाण का सूक्ष्मता से विचार करने पर भविष्यवाणी आश्चर्यजनक रूप से सत्य निकलती है। अतएव फलित ज्योतिष के नवीन ग्रन्थों में ग्रहों के भोगांशों के समान क्रान्ति एवं शर को भी फलादेश का निर्णायक तत्त्व माना गया है। 'केशवीय जातक पद्धति' में भी आयन बल के ज्ञान के लिए ग्रह की स्थानीय क्रान्ति का उपयोग बताया गया है। परन्तु नव्य ज्योतिर्विद बिम्बीय (स्पष्ट) क्रान्ति को महत्त्व देते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्ति स्पष्ट (बिम्बीय) ही है।

लघुरिक्थकोष्टक

विकला	अं ०	अं १	अं २	अं ३	अं ४	अं ५	अं ६	अं ७	अं ८	अं ९	अं १०	अं ११	अं १२	अं १३	अं १४	अं १५	अं १६	अं १७	अं १८	अं १९	अं २०	अं २१	अं २२	अं २३	विकला
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३१
३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३२
३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३३
३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३४
३५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३५
३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६
३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३७
३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३८
३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३९
४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०
४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१
४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४२
४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४३
४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४४
४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४५
४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६
४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४७
४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४८
४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४९
५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०
५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५१
५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५२
५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३
५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५४
५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५
५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५६
५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७
५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८
५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५९

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टै. टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

अक्षांशादि सारिणी

रेखांश—ग्रीनिच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि 'स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२अंश ३०कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	-२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	-१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	-२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	-१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	-१५।३२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	-१०।५२	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	-२६।३२	झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	- ४।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	-३०।४८	कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	-१०।१६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	-२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	-२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	-३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	-२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	- १। ४	कोचीन बदर	९।५८	७६।१७	-२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	-१७। ०
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०	खंभात	२२।१९	७२।३६	-३९।३६	डेराइस्माइलखां (पा.)	३१।५१	७०।५६	-१६।१६
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	+१०। ४	डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	-१६।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	-३०।४८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	+ १।४४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	-३९।२८	गाजीपुर (यू.पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	-४०। ८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	-१७।३६	गिलगित	३५।५५	७४।२२	-३२।३२	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	-१४।५६
आगरा („)	२७।१०	७८। ५	-१७।४०	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	- ३।४०	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+ १३।४८
आजमगढ़ („)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	- ३। ४	द्वारिका	२२।१४	६९। १	-५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	-३९। ०	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	-२८।१२	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+ २३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	-१३।५२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+३।३६	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	-२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	-२६।४०	गोवा	१५।३०	७३।५७	-३४।१२	देहरादून	३०।१९	७८। ४	-१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	-२७। ८	चम्बा	३२।२९	७६।१०	-२५।२०	धौलपुर	२६।४२	७७।५[illegible]	-[illegible]८।२
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	नडियाद (गुज)	२२।४१	७२।५५	-३८।२०
एलिचपुर (म.रा.)	२१।१८	७७।३३	-१९।४८	चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	+३७। ८	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	-३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद्र.)	१९।५३	७५।२३	-२८।२८	छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	-११।२८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	-१३।२४
कठूआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	-२७।३६	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाभा	३०।२५	७६। ९	-२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	-२८।२०	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	-२१।५२	जम्मू	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	नासिक	२०। २	७३।५०	-३४।४०
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	-३१।४४	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०। ४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
काठमाण्डू (नेपा.)	२७।४२	८५।१२	+१०।४८	जालन्धर	३१।१९	७५।१८	-२८।४८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	-२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	- ८।२४	जामनगर	२२।२७	७०। ७	-४९।३२	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	-२७।१२
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	-१३।३६	जीन्द	२९।१९	७६।२३	-२४।२८	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	- २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	-४७।३६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५१	-१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	-२४।४८	जैसलमेर	२९।५५	७०।५७	-४६।१२	पुञ्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	-३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	-३४।२४	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	-३७।४४	पूना	१९। ०	७२।५५	-३८।२०
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	-२२।४८	जौनपुर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (पा.)	३४। २	७१।३७	-[illegible]

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	-५०।४४	रतलाम	२३।२१	७५। ७	-२९।३२
फर्रुखाबाद	२७ २४	७९।३७	-११।३२	रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	-३६।४४
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	-३०।१२	रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	-१२।३२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	-३१।२०	रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	- ७।३६
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	-३६। ०	राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७।१०	८१।४८	- २।४८
बम्बई	१९। ०	७२।५४	-३८।२४	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	-२३।२०
बरेली	२८।२२	७९।२७	-१२।१२	रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	- ४।४४
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	-११।५२	रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	- ३।१६
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	राजकोट	२२।१८	७०।५६	-४६।१६
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	-४२।५२	रोहतक	२८।५४	७६।३८	-२३।२८
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	- १। ८	रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	-२४।००
बीकानेर	२८। १	७३।२२	-३६।३२	लखनऊ	२६।५५	८०।५९	- ६। ४
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	-२६।५२	लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	- ७।४०
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	-१९।२८	लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	- २।१६
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	-३०। ०	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	-२६।२४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	-२०। ०	शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	-५५।२०
भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	-१७।५६	शिमला	३१। ६	७७।१३	-२१। ८
भोपाल (म.प्र.)	२३।१६	७७।२६	-१९।१६	श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	-३०।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	- ९।२०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	- ८।५२	सहारनपुर	२९।५८	७७।३३	-२०।२८
मथुरा	२७।२८	७७।४१	-१९।१६	सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	- ११।३६
मालेरकोटला	३०।३२	७५।५९	-२६। ४	सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	-३३।५२
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	-४४।४८	सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	-१५। ०
मिन्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।११	-३७।३६	सूरत	२१।१२	७२।५२	-३८।३२
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	-४३।५६	सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	-२१।२४
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२३	+११।४८	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	-१७। ८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४७	९३।५८	+४५।५२	हिसार	२९।१०	७५।४६	-२६।५६
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	-१४।४४	हैदराबाद (सिंध)	२५।२५	६८।२८	-५५।२८
मेरठ	२९। १	७७।४५	-१९। ०	हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	-१६। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	-२३।१२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५९	-२६।१२
मण्डी (हि. प्र.)	३१।४२	७६।५८	-२१। ८	होशंगाबाद (म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	-१९। ०

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं.टा. से देशीय स्टैं. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३०	पू. ६९।१८	- १। ०	+ ७।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू. ६५।३०	- १। ०	- ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१२	पू. ६७। ०	- ०।३०	-१२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू. ९६। ८	+ १। ०	- ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू. ९६।१३	+ १। ०	- ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. ११।१७	पू.१०३।५१	+ २। ०	-३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू. ४४।२७	- २।३०	- २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू. ३९।५४	- २।३०	-२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू. ५१।२५	- २। ०	- ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू. ३१।१५	- ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विट्जर लै.)	उ.४६।१३	पू. ६। ७	- ४।४०	-३५।३२
जेरूशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू. ३५।१४	- ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प. ७४। ०	-१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प. ७७। ४	-१०।३०	- ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू. १३।२५	- ४।३०	- ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू. १९। ३	- ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	- ५।३०	- ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	० ०	- ५।३०	० ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू. ९१ ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९। ९	- ५।३०	-३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू. ९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू. ६७। ४	- ०।३०	-३१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. ११।१८	पू. ३६।५२	- २।३०	-३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू. ३९।४०	- २।३०	-२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू. ३२।५६	- २।३०	-४८।१६
मोषी "	द. ३।२१	पू. ३७।२०	- २।३०	-३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	पू.१३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	प. २।२०	- ४।३०	-५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू. ३७।३७	- २।३०	-२९।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू. १२।२८	- ४।३०	-१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू. ११४।११	+ २।३०	-[illegible]
पेकिंग "	उ.३९।५५	पू.११६।२४	+ २।[illegible]	[illegible]

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०	सन	सां० का०
	घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०
१८७६	६।३९।१९	१८८८	६।३९।४०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१७	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	६।३७।४६
१८७७	६।४२।१८	१८८९	६।४२।३९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	[illegible]	१९६१	६।४०।४५
१८७८	६।४१।२१	१८९०	६।४१।४२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२६	१९६२	६।३९।४८
१८७९	६।४०।२४	१८९१	६।४०।४४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५१
१८८०	६।३९।२७	१८९२	६।३९।४७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२६	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३२	१९६४	६।३७।५४
१८८१	६।४२।२६	१८९३	६।४२।४६	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३२	१९६५	६।४०।५५
१८८२	६।४१।२९	१८९४	६।४१।४९	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३४	१९६६	६।३९।५७
१८८३	६।४०।३१	१८९५	६।४०।५२	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३६	१९६७	६।३९। ०
१८८४	६।३९।३४	१८९६	६।३९।५४	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५४	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।३९	१९६८	६।३८। २
१८८५	६।४२।३३	१८९७	६।४२।५४	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१६	१९५७	६।४०।३८	१९६९	६।४१। २
१८८६	६।४१।३५	१८९८	६।४१।५६	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४१	१९७०	६।४०। ५
१८८७	६।४०।३८	१८९९	६।४०।५९	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४४	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० प्लुतवर्ष (लीप इयर) नहीं था।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	तारीख
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३६	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१। ३। ५	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५५	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५२	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४७	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०,	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०	.	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६	. . . .	५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८	. . .	२३।५५। ७	३१
												२३।५९। ३	३२

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

पूर्व संस्कार	सां० का० संस्कार
घ० मि०	[illegible]
८। ०	+ ४५
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
[illegible]	[illegible]
१०१। ०	− १६
१०३। ०	− १७

अयनांश सारिणी (भाग ३) (धूनन संस्कार)

उपकरण = निरयण राहु सारिणी १ म. द्वितीय से प्राप्त मध्यम अयनांश (सायन राहु)

उप. रा.।अं.	संस्कार वि.
०। ०	−०
०।१५	−५
१। ०	−९
१।१५	−१२
२। ०	−१५
२।१५	−१६
३। ०	−१९
३।१५	−२१
४। ०	−२२
४।१५	−२२
[illegible]	[illegible]
१०। ०	+४
१०।१५	[illegible]
११।१५	+४

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० ४)

घं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०	मि०सं०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४७
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१५	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२४	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२४	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
जनवरी	[illegible]	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	[illegible]	५	५	५	६	६	७	७	८	८
मार्च	[illegible]	[illegible]	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	२८	२८	२९
अगस्त	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६	३६	३७	३७
अक्टूबर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४९	४९	४९	५०

अयनांश-सारिणी भाग (१ म)

ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९५१	२३।१०।२[illegible]
१९२२	२२।४६। ३	१९५२	२३।११।११
१९२३	२२।४६।५४	१९५३	२३।१२। १
१९२४	२२।४७।४४	१९५४	२३।१२।५१
१९२५	२२।४८।३४	१९५५	२३।१३।४१
१९२६	२२।४९।२५	१९५६	२३।१४।३१
१९२७	२२।५०।१५	१९५७	२३।१५।२१
१९२८	२२।५१। ५	१९५८	२३।१६।११
१९२९	२२।५१।५५	१९५९	२३।१७। १
१९३०	२२।५२।४५	१९६०	२३।१७।५१
१९३१	२२।५३।३६	१९६१	२३।१८।४४
१९३२	२२।५४।२६	१९६२	२३।१९।३४
१९३३	२२।५५।१६	१९६३	२३।२०।२४
१९३४	२२।५६। ७	१९६४	२३।२१।१५
१९३५	२२।५६।५७	१९६५	२३।२२। ५
१९३६	२२।५७।४७	१९६६	२३।२२।५५
१९३७	२२।५८।३७	१९६७	२३।२३।४५
१९३८	२२।५९।२८	१९६८	२३।२४।३६
१९३९	२३। ०।१८	१९६९	२३।२५।२६
१९४०	२३। १। ८	१९७०	२३।२६।१६
१९४१	२३। १।५८	१९७१	२३।२७। ६
१९४२	२३। २।४९	१९७२	२३।२७।५७
१९४३	२३। ३।३९	१९७३	२३।२८।४७
१९४४	२३। ४।२९	१९७४	२३।२९।३७
१९४५	२३। ५।१९	१९७५	२३।३०।२७
१९४६	२३। ६।१०	१९७६	२३।३१।१८
१९४७	२३। ७। ०	१९७७	२३।३२। ८
१९४८	२३। ७।५०	१९७८	२३।३२।५८
१९४९	२३। ८।४१	१९७९	२३।३३।४८
१९५०	२३। ९।३१	१९८०	२३।३४।३[illegible]

लग्न-सारणी

(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

साम्पातिक काल घ. मि.	दशम लग्न-सारणी: दशम लग्न रा. अं. क.	दशम लग्न-सारणी: अन्तर क.	अक्षांश ३०: लग्न रा. अं. क.	अक्षांश ३०: अन्तर क.	अक्षांश ३१: लग्न रा. अं. क.	अक्षांश ३१: अन्तर क.	अक्षांश ३२: लग्न रा. अं. क.	अक्षांश ३२: अन्तर क.	अक्षांश ३३: लग्न रा. अं. क.	अक्षांश ३३: अन्तर क.	लग्न में अक्षांश कला-संस्कार (उत्तरांश-कला): १०क. कला	२०क. कला	३०क. कला	४०क. कला	५०क. कला	६०क. कला
०।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१
०।३०	०।८।९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७	५	१०	१५	२०	२५	२९
१।०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४९	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४३	३७७	३।२७।१०	३७५	४	९	१३	१८	२२	२६
१।३०	०।२४।१८	४७३	४।२।११	३८०	४।२।३५	३७९	४।३।०	३७७	४।३।२५	३७२	४	८	१२	१६	२०	२४
२।०	१।२।११	४६४	४।८।३१	३७९	४।८।५४	३७७	४।९।१७	३७३	४।९।३७	३७४	४	७	११	१५	१८	२२
२।३०	१।९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७२	+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
३।०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८२	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२।३	३७६	+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८।४	३८०	४।२८।१९	३७६	३	५	८	१०	१२	१५
४।०	२।२।५	४२७	५।३।५९	३८८	५।४।११	३८५	५।४।२४	३८२	५।४।३६	३७२	२	४	६	८	१०	१२
४।३०	२।९।१२	४१९	५।१०।२७	३९०	५।१०।३६	३८७	५।१०।४६	३८३	५।१०।५५	३८१	१	३	५	६	८	१०
५।०	२।१६।११	४१६	५।१६।५७	३९१	५।१७।३	३८८	५।१७।९	३८५	५।१७।१६	३८१	१	२	३	४	५	+६
५।३०	२।२३।७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३	१०	+१	+१	+२	+२	३
६।०	३।०।०	४१२	६।०।०	३९२	६।०।०	३८९	६।०।०	३८६	६।०।०	३८३	०	०	०	०	०	
६।३०	३।६।५२	४१७	६।६।३२	३९१	६।६।२९	३८८	६।६।२६	३८५	६।६।२३	३८१	−०	−१	−१	−२	−२	−३
७।०	३।१३।४९	४२०	६।१३।३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१	१	२	३	४	५	६
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९।५	३७९	१	३	५	६	८	१०
८।०	३।२७।५५	४३४	६।२६।१	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७	२	४	६	८	१०	१२
८।३०	४।५।९	४४३	७।२।२७	३८२	७।२।११	३८१	७।१।५६	३७९	७।१।४१	३७६	−२	−५	−८	−१०	−१२	−१५
९।०	४।१२।३२	४५४	७।८।४९	३८१	७।८।३२	३७८	७।८।१५	३७५	७।७।५७	३७२	−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
९।३०	४।२०।६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७६	७।१४।३०	३७५	७।१४।९	३७४	३	६	१०	१३	१६	२०
१०।०	४।२७।३९	४८३	७।२१।२९	३८०	७।२१।६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२	४	७	११	१५	१८	२२
१०।३०	५।५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७।०	३७७	७।२६।३५	३७५	४	८	१२	१६	२०	२४
११।०	५।१३।४३	४८७	८।४।११	३८३	८।३।४४	३८०	८।३।१७	३७९	८।२।५०	३७७	४	९	१३	१७	२२	२७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०।४	३९०	८।९।३६	३८७	८।९।७	३८४	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−२९
१२।०	६।०।०	४८९	८।१७।३	३९६	८।१६।३४	३९४	८।१६।३	३९३	८।१५।३१	३९१	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
१२।३०	६।८।९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३।८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२।२	४०४	५	१०	१६	२१	२६	३२
१३।०	६।१६।१७	४८१	९।०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७	५	१०	१६	२१	२७	३३
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९।७।२८	४४०	९।६।५४	४४०	९।६।१९	४३९	९।५।४३	४३८	५	११	१७	२२	२८	३४
१४।०	७।२।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३।१	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३५
१४।३०	७।९।५५	४५३	९।२२।३०	४८६	९।२१।५७	४८६	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३६
१५।०	७।१७।२८	४४४	१०।०।३६	५२१	१०।०।३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०।९।१७	५५०	१०।८।४५	५५४	१०।८।१३	५५७	१०।७।३८	५६१	५	१०	१६	२१	२७	३३
१६।०	८।२।५	४२७	१०।१८।२७	५८५	१०।१७।५९	५९१	१०।१७।३०	५९५	१०।१६।५९	६००	५	१०	१५	१९	२४	२९
१६।३०	८।९।१२	४१९	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२५	६२९	१०।२६।५९	६३६	४	८	१२	१६	२०	२३
१७।०	८।१६।११	४१६	११।८।२९	६४१	११।८।१२	६४७	११।७।५४	६५५	११।७।३५	६६५	३	६	९	१२	१५	१८
१७।३०	८।२३।७	४१३	११।१९।८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०	−२	−३	−४	−६	−८	−९
१८।०	९।०।०	४१२	०।०।०	६५२	०।०।०	६६०	०।०।०	६७१	०।०।०	६८०	०	०	०	०	०	
१८।३०	९।६।५२	४१७	०।१०।५२	६३९	०।११।०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५	+१	+२	+४	+५	+६	+८
१९।०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२।६	६२९	०।२२।२५	६३६	३	६	९	१२	१५	१८
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१।१।४८	५८५	१।२।१०	५९१	१।२।३५	५९५	१।३।१	६००	४	८	१२	१६	२०	२४
२०।०	९।२७।५५	४३४	१।११।३३	५५०	१।१२।१	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३।१	५६१	५	१०	१५	२०	२५	२९
२०।३०	१०।५।९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६	+५	+११	+१७	+२२	+२८	+३४
२१।०	१०।१२।३२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२।०।३२	४८८	२।१।८	४८९	+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
२१।३०	१०।२०।६	४५३	२।७।३०	४६२	२।८।३	४६३	२।८।४०	४६४	२।९।१७	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।०	१०।२७।३९	४८३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।३०	११।५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३।६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७	६	१२	१८	२४	३०	३५
२३।०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३३	४०७	३।०।६	४०६	३।०।३९	४०५	३।१।१४	४०४	५	११	१६	२१	२७	३३
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३।६।२०	३९७	३।६।५२	३९४	३।७।२४	३९३	३।७।५८	३९१	५	११	१६	२१	२७	३३
२४।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
ऊना	३१।२२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२।५	७६।१८	−२४।४८	पालमपुर	३२।७	७६।३५	−२३।४०
कुल्लू	३१।५८	७७।०	−२२।०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२२।८
कोटखाई	३१।८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७।५	−२१।४०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२५	७७।४५	−१९।०
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३।०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	−२२।४०
डलहौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	−२२।३६
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।[illegible]
नालागढ़	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१।६	७७।१३	−२१।[illegible]
				हमीरपुर	३१।४३	७६।३०	−२४।०

॥ लग्न सारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	सवोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२२	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४० इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घटयादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   १२०
   ११०
     १
    ६०
    ६०
   ६०५
```

तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई। शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया। तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ॥

इस लग्नसारणी से सूक्ष्म लग्न साधन—[illegible] का [illegible] करना जो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उसमें अल्प कोष्ठक से राशि अंश लेना। [illegible] के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, [illegible] उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना लब्ध जो अंश कला विकला आवे वह लब्ध आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है॥

लग्न-सारणी

(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

साम्पातिक काल	दशम लग्न-सारणी		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		लग्न में अक्षांश, कला-संस्कार ध्रुवांश कला					
	दशम लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	१०क.	२०क.	३०क.	४०क.	५०क.	६०क.
प. मि.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	कला	कला	कला	कला	कला	कला
०। ०	०। ०। ०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	३१
०।३०	०। ८। ९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७	५	१०	१५	२०	२५	२९
१। ०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४९	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४३	३७७	३।२७।१०	३७५	४	९	१३	१८	२२	२६
१।३०	०।२४।१८	४७३	४। २।११	३८०	४। २।३५	३७९	४। ३। ०	३७७	४। ३।२५	३७२	४	८	१२	१६	२०	२४
२। ०	१। २।११	४६४	४। ८।३१	३७९	४। ८।५४	३७७	४। ९।१७	३७३	४। ९।३७	३७४	४	७	११	१५	१८	२२
२।३०	१। ९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७३	+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
३। ०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८२	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२। ३	३७६	+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८। ४	३८०	४।२८।१९	३७६	३	५	८	१०	१३	१५
४। ०	२। २। ५	४२७	५। ३।५९	३८८	५। ४।११	३८५	५। ४।२४	३८२	५। ४।३६	३७३	२	४	६	८	१०	१२
४।३०	२। ९।१२	४१९	५।१०।२७	३९०	५।१०।३६	३८७	५।१०।४६	३८३	५।१०।५५	३८१	१	३	५	६	८	१०
५। ०	२।१६।११	४१६	५।१६।५७	३९१	५।१७। ३	३८८	५।१७। ९	३८५	५।१७।१६	३८१	१	२	३	४	५	६
५।३०	२।२३। ७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३	+०	+१	+१	+२	+२	३
६। ०	३। ०। ०	४१२	६। ०। ०	३९२	६। ०। ०	३८९	६। ०। ०	३८६	६। ०। ०	३८३	०	०	०	०	०	
६।३०	३। ६।५२	४१७	६। ६।३२	३९१	६। ६।२९	३८८	६। ६।२६	३८५	६। ६।२३	३८१	−०	−१	−१	−२	−२	−३
७। ०	३।१३।४९	४२०	६।१३। ३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१	१	२	३	४	५	६
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९। ५	३७९	१	३	५	६	८	१०
८। ०	३।२७।५५	४३४	६।२६। १	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७	२	४	६	८	१०	१२
८।३०	४। ५।०९	४४३	७। २।२७	३८२	७। २।११	३८१	७। १।५६	३७९	७। १।४१	३७६	−२	−५	−८	−१०	−१३	−१५
९। ०	४।१२।३२	४५४	७। ८।४९	३८१	७। ८।३२	३७८	७। ८।१५	३७५	७। ७।५७	३७२	−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
९।३०	४।२०। ६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७६	७।१४।३०	३७५	७।१४। ९	३७४	३	६	१०	१३	१६	२०
१०। ०	४।२७।३९	४६३	७।२१।२९	३८०	७।२१। ६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२	४	७	११	१५	१८	२२
१०।३०	५। ५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७। ०	३७७	७।२६।३५	३७५	४	८	१२	१६	२०	२४
११। ०	५।१३।४३	४८७	८। ४।११	३८२	८। ३।४४	३८०	८। ३।१७	३७९	८। २।५०	३७७	४	९	१३	१७	२२	२७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०। ४	३९०	८। ९।३६	३८७	८। ९। ७	३८४	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−२९
१२। ०	६। ०। ०	४८९	८।१७। ३	३९६	८।१६।३४	३९४	८।१६। ३	३९३	८।१५।३१	३९१	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
१२।३०	६। ८। ९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३। ८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२। २	४०४	५	१०	१६	२१	२६	३२
१३। ०	६।१६।१७	४८१	९। ०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७	५	१०	१६	२१	२७	३३
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९। ७।२८	४४०	९। ६।५४	४४०	९। ६।१९	४३९	९। ५।४३	४३८	५	११	१७	२२	२८	३४
१४। ०	७। २।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३। १	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३५
१४।३०	७। ९।५५	४५३	९।२२।३०	४८६	९।२१।५७	४८६	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५। ०	७।१७।२८	४४४	१०। ०।३६	५२१	१०। ०। ३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०। ९।१७	५५०	१०। ८।४५	५५४	१०। ८।१३	५५७	१०। ७।३८	५६१	५	१०	१६	२१	२७	३३
१६। ०	८। २। ५	४२७	१०।१८।२७	५८५	१०।१७।५९	५९१	१०।१७।३०	५९५	१०।१६।५९	६००	५	१०	१५	१९	२४	२९
१६।३०	८। ९।१२	४१९	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२५	६२९	१०।२६।५९	६३६	४	८	१२	१६	२०	२३
१७। ०	८।१६।११	४१६	११। ८।२९	६४१	११। ८।१२	६४७	११। ७।५४	६५५	११। ७।३५	६६५	३	६	९	१२	१५	१८
१७।३०	८।२३। ७	४१३	११।१९। ८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०	−२	−३	−४	−६	−८	−९
१८। ०	९। ०। ०	४१२	०। ०। ०	६५२	०। ०। ०	६६०	०। ०। ०	६७१	०। ०। ०	६८०	०	०	०	०	०	
१८।३०	९। ६।५२	४१७	०।१०।५२	६३९	०।११। ०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५	+१	+२	+४	+५	+६	+८
१९। ०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२। ६	६२९	०।२२।२५	६३६	३	६	९	१२	१५	१८
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१। १।४८	५८५	१। २।१०	५९१	१। २।३५	५९५	१। ३। १	६००	४	८	१२	१६	२०	२४
२०। ०	९।२७।५५	४३४	१।११।३३	५५०	१।१२। १	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३। १	५६१	५	१०	१५	२०	२५	२९
२०।३०	१०। ५।०९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६	+५	+११	+१७	+२२	+२८	३४
२१। ०	१०।१२।३२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२। ०।३२	४८८	२। १। ८	४८९	+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
२१।३०	१०।२०। ६	४५३	२। ७।३०	४६२	२। ८। ३	४६३	२। ८।४०	४६४	२। ९।१७	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२। ०	१०।२७।३९	४६३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।३०	११। ५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३। ६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७	६	१२	१८	२४	३०	३५
२३। ०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३३	४०७	३। ०। ६	४०६	३। ०।३९	४०५	३। १।१४	४०४	५	११	१६	२१	२७	३३
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३। ६।२०	३९७	३। ६।५२	३९४	३। ७।२४	३९३	३। ७।५८	३९१	५	११	१६	२१	२७	३३
२४। ०	०। ०। ०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
ऊना	३१।३२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	−२४।४८	पालमपुर	३२। ७	७६।३५	−२३।४०
कुल्लू	३१।५८	७७। ०	−२२। ०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२२। ८
कोटखाई	३१। ८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७। ५	−२१।४०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२९	७७।४५	−१९। ०
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३। ०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	−२२।४०
डल्हौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	−२२।३६
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।[illegible]
नालागढ	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१। ६	७७।१३	[illegible]
				हमीरपुर	३१।४३	७६।३०	−२४।[illegible]

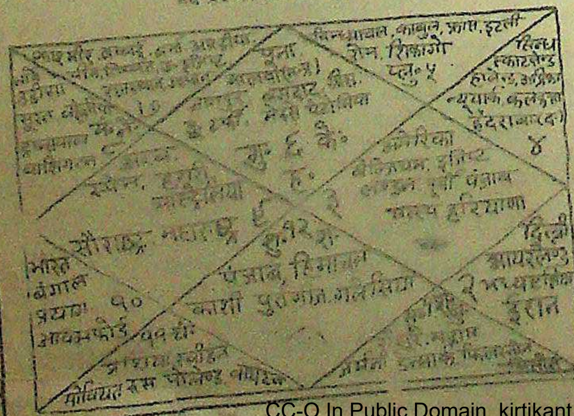
अंशा	०	१	२	३	४	५
मेष ०	२ ३८	२ ४५	२ ५२	२ ५९	१	
वृषभ १	६ ३२	६ ४०	६			
मिथुन २	११					

...विधि को देखते हुए २ वर्ष पहले का लिखी हुई ...होने के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। ईश्वर न करे कि यह ... "दैवज्ञ भी मनुष्य है, निर्भ्रान्त नहीं है। उसकी बुद्धि भी ...ती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सदा सत्य ही हो ...जा सकता। अतः हमने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ ...वह शत-प्रतिशत सही होगा। आज तक इस पंचांग में लिखी गई भविष्य- ...गया ९०% तक सत्य सिद्ध हुईं ऐसा पाठकों का मत है। सत्य सिद्ध होने का श्रेय उन त्रि [illegible] को है जिन के सुत्ररूप सिद्धान्तों का अनुशीलन करके हम लिखते हैं और जो कुछ त्रुटि या भूल रह जाती है वह हमारी बुद्धिका दोष है। अब इस ...विक्रमी सं० २०२६ की ग्रह स्थिति पर शास्त्रीय विचार प्रस्तुत करेंगे।

प्रतिवर्ष जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है उस समय की लग्न कुण्डली नववर्ष की जगत्-लग्न कुण्डली कही जाती है। उस समयकी ग्रह-स्थिति, वर्ष के राजा मंत्री आदि और जो राष्ट्र प्रान्त जिस राशिके प्रभाव क्षेत्र में है तथा नवोदित ... की ग्रहस्थिति परसे वर्ष के शुभाशुभ का विचार किया जाता ... १२ रविवार दि. १३ अप्रैल १९६९ को ... प्रवेश करेगा।

...में सूर्य देव मेषराशि ...

नवे वर्ष की जगत्लग्न कुण्डली



विश्व में अशान्ति आतङ्क अविश्वास ... वृद्धि

इस वर्ष का राजा (सम्राट्) बुध और प्रधान ... १५ से जगत्-लग्न से अष्टम भावमें नीचराशिस्थ शनि के साथ है, अतः सम्पूर्ण विश्व में अशान्ति आतङ्क अविश्वास और अराजकता की भावना बढ़ेगी। वर्ष के मंत्रि-मण्डल (दशाधिकारियों) में शनि को तीन अधिकार प्राप्त हुए हैं। शनि युद्धप्रिय ... स्फोटक मंगल की मेषराशि नीच में है और वृश्चिकस्थ मंगल से षडष्टक योग बना रहा है। मंगल सामान्यतः एक राशि में डेढ़ मास रहता है, किन्तु इस वर्ष (१९६९ में ११ फरवरी से १० सितम्बर) ७ मास तक वृश्चिक राशि में आसन जमा रहेगा। साथ ही मंगल की दूसरी राशि मेष में शनि रहेगा। शनि-मंगल दोनों ही उत्पात विग्रह तोड़ फोड़ विस्फोट कारक ग्रह हैं, अतः इस अवधि में संसार में आक्रमणकारी कार्य और विध्वंसक भावनाएँ बढ़ेंगी। काश्मीर, मैसूर, मद्रास, केरल, नेपाल, भूतान, नेफा, असम, लाओस, उड़ीसा, बंगाल, पाकिस्तान, इंगलैण्ड, अमेरिका पंजाब, हरियाणा, ग्रीस, तुर्की, चीन, तिब्बत, राजस्थान, बम्बई, बर्मा, जापान, साइप्रस पर इस वर्ष शनि मंगल हर्शल नेपच्यून का बुरा प्रभाव रहेगा, वहां प्रकृतिप्रकोप अग्निकाण्ड विस्फोट, हत्याकाण्ड चोरी डाके हड़तालें और चौंका देने वाली घटनाएं, दुर्भिक्ष महामारी बाढ़ भूकम्प और राजनैतिक सामाजिक आर्थिक तंत्र में उलट फेर से प्रजा त्रस्त होगी। कुछ राज्यों में सरकारें टूटेंगी और उनका पुनर्गठन होगा। वियतनाम युद्ध पूर्णरूपेण समाप्त नहीं होगा। दक्षिण पूर्व एशिया में शक्ति-संतुलन अमेरिका के पक्ष में होगा। किन्तु इस वर्ष शनि मंगल की स्थिति अमेरिका में आन्तरिक संकट की द्योतक है। महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु और हिंसात्मक विद्रोह होंगे। नये राष्ट्रपति के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। फ्रांस में राजनैतिक उलट फेर होगा। श्री दगाल, कर्नल नासर, माओत्सेतुंग, श्री विलसन, श्री जानसन, मार्शल टीटो, मार्शल अयूबखां के लिए आगामी दो वर्ष (मेष का शनि) कष्टदायक हैं, स्वास्थ्य में हानि, सत्ताच्युत या दुर्घटनाग्रस्त होना सम्भव है। यूरोप, अमेरिका, जापान, चीन, रशिया और अफ्रिका में कहीं भयंकर शीत लहर, कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड, विस्फोट, राज्यविप्लव तो कहीं दुर्भिक्ष महामारी आदि से जन-धन का विनाश होगा। इस वर्ष अमेरिका ... के कुछ प्रधान सूत्रधार पर्दे परसे उठ जावेंगे। राजनीति में अनेक नाटकीय ... बढ़ेगी।

लग्न-सारणी

(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

सार्वत्रिक काल	दशम लग्न-सारणी		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		लग्न में अक्षांश कला-संस्कार					
	दशम लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	लग्न	अन्तर	१०क.	२०क.	३०क.	४०क.	५०क.	६०क.
घ. मि.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	रा. अं. क.	क.	कला	कला	कला	कला	कला	कला
०। ०	०। ०। ५	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	३१
०।३०	०। ८। ९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७	५	१०	१५	२०	२५	२९
१। ०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४९	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४३	३७७	३।२७।१०	३७५	४	९	१३	१८	२२	२६
१।३०	०।२४।१८	४७३	४। २।११	३८०	४। २।३५	३७९	४। ३। ०	३७७	४। ३।२५	३७२	४	८	१२	१६	२०	२४
२। ०	१। २।११	४६४	४। ८।३१	३७९	४। ८।५४	३७७	४। ९।१७	३७३	४। ९।३७	३७४	४	७	११	१५	१८	२२
२।३०	१। ९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७२	+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
३। ०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८२	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२। ३	३७६	+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८। ४	३८०	४।२८।१९	३७६	३	५	८	१०	१३	१५
४। ०	२। २। ५	४२७	५। ३।५९	३८८	५। ४।११	३८५	५। ४।२४	३८२	५। ४।३६	३७१	२	४	६	८	१०	१२
४।३०	२। ९।१२	४१९	५।१०।२७	३९०	५।१०।३६	३८७	५।१०।४६	३८३	५।१०।५५	३८१	२	३	५	६	८	१०
५। ०	२।१६।११	४१६	५।१६।५७	३९१	५।१७। ३	३८८	५।१७। ९	३८५	५।१७।१६	३८१	१	२	३	४	५	+६
५।३०	२।२३। ७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३	+०	+१	+१	+२	+२	३
६। ०	३। ०। ०	४१२	६। ०। ०	३९२	६। ०। ०	३८९	६। ०। ०	३८६	६। ०। ०	३८३	०	०	०	०	०	
६।३०	३। ६।५२	४१७	६। ६।३२	३९१	६। ६।२९	३८८	६। ६।२६	३८५	६। ६।२३	३८१	−०	−१	−१	−२	−२	−३
७। ०	३।१३।४९	४२०	६।१३। ३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१	१	२	३	४	५	६
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९। ५	३७९	१	३	५	६	८	१०
८। ०	३।२७।५५	४३४	६।२६। १	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७	२	४	६	८	१०	१२
८।३०	४। ५। ९	४४३	७। २।२७	३८२	७। २।११	३८१	७। १।५६	३७९	७। १।४१	३७६	−२	−५	−८	−१०	−१३	−१५
९। ०	४।१२।३२	४५४	७। ८।४९	३८१	७। ८।३२	३७८	७। ८।१५	३७५	७। ७।५७	३७२	−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
९।३०	४।२०। ६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७६	७।१४।३०	३७५	७।१४। ९	३७४	३	६	१०	१३	१६	२०
१०। ०	४।२७।३९	४८३	७।२१।२९	३८०	७।२१। ६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२	४	७	११	१५	१८	२२
१०।३०	५। ५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७। ०	३७७	७।२६।३५	३७५	४	८	१२	१६	२०	२४
११। ०	५।१२।४३	४८७	८। ४।११	३८३	८। ३।४४	३८०	८। ३।१७	३७९	८। २।५०	३७७	४	९	१३	१७	२२	२७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०। ४	३९०	८। ९।३६	३८७	८। ९। ७	३८४	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−२९
१२। ०	६। ०। ०	४८९	८।१७। ३	३९६	८।१६।३४	३९४	८।१६। ३	३९३	८।१५।३१	३९१	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
१२।३०	६। ८। ९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३। ८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२। २	४०४	५	१०	१६	२१	२६	३२
१३। ०	६।१६।१७	४८१	९। ०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७	५	१०	१६	२१	२७	३३
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९। ७।२८	४४०	९। ६।५४	४४०	९। ६।१९	४३९	९। ५।४३	४३८	५	११	१७	२२	२८	३४
१४। ०	७। २।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३। १	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३५
१४।३०	७। ९।५५	४५३	९।२२।३०	४८६	९।२१।५७	४८६	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५। ०	७।१७।२८	४४४	१०। ०।३६	५२१	१०। ०। ३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०। ९।१७	५५०	१०। ८।४५	५५४	१०। ८।१३	५५७	१०। ७।३८	५६१	५	१०	१६	२१	२७	३३
१६। ०	८। २। ५	४२७	१०।१८।२७	५८५	१०।१७।५९	५९१	१०।१७।३०	५९५	१०।१६।५९	६००	५	१०	१५	१९	२४	२९
१६।३०	८। ९।१२	४१९	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२५	६२९	१०।२६।५९	६३६	४	८	१२	१६	२०	२३
१७। ०	८।१६।११	४१६	११। ८।२९	६४१	११। ८।१२	६४७	११। ७।५४	६५५	११। ७।३५	६६५	३	६	९	१२	१५	१८
१७।३०	८।२३। ७	४१३	११।१९। ८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०	−२	−३	−४	−६	−८	−९
१८। ०	९। ०। ०	४१२	०। ०। ०	६५२	०। ०। ०	६६०	०। ०। ०	६७१	०। ०। ०	६८०	०	०	०	०	०	
१८।३०	९। ६।५२	४१७	०।१०।५२	६३९	०।११। ०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५	+१	+२	+४	+५	+६	+८
१९। ०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२। ६	६२९	०।२२।२५	६३६	३	६	९	१२	१५	१८
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१। १।४८	५८५	१। २।१०	५९१	१। २।३५	५९५	१। ३। १	६००	४	८	१२	१६	२०	२४
२०। ०	९।२७।५५	४३४	१।११।३३	५५०	१।१२। १	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३। १	५६१	५	१०	१५	२०	२५	२९
२०।३०	१०। ५। ९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६	+५	+११	+१७	+२२	+२८	३४
२१। ०	१०।१२।३२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२। ०।३२	४८८	२। १। ८	४८९	+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
२१।३०	१०।२०। ६	४५३	२। ७।३०	४६२	२। ८। ३	४६३	२। ८।४०	४६४	२। ९।१७	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२। ०	१०।२७।३९	४८३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।३०	११। ५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३। ६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७	६	१२	१८	२४	३०	३५
२३। ०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३३	४०७	३। ०। ६	४०६	३। ०।३९	४०५	३। १।१४	४०४	५	११	१६	२१	२७	३३
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३। ६।२०	३९७	३। ६।५२	३९४	३। ७।२४	३९३	३। ७।५८	३९१	५	११	१६	२१	२७	३३
२४। ०	०। ०। ०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
ऊना	३१।३२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	−२४।४८	पालम पुर	३२। ७	७६।३५	−२३।४०
कुल्लू	३१।५८	७७। ०	−२२। ०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२२। ८
कोटखाई	३१। ८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७। ५	−२१।४०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२९	७७।४५	−१९। ०
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३। ०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	−२२।४०
डल्हौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	−२२।३६
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।[illegible]
नालागढ़	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१। ६	७७।१३	−[illegible]
				हमीरपुर	३१।४३	७६।३०	−२४। ०

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

सं० २०२६ वि० की ग्रह परिषद् का विचार

संसारकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिकादि परिस्थितिका विश्लेषण

अनन्ताकाश में ग्रह नक्षत्र तारागण परस्पर अपनी-अपनी वक्रमार्गादि गति से विचरण करते हुए आकर्षण विकर्षण के द्वारा भूमण्डल के वातावरण में कुछ न कुछ नित्य नवीन परिवर्तन करते रहते हैं। सौर जगत् के शिशुमार-चक्रस्थ ग्रहोपग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का प्रभाव इस भूगोल पर निश्चित रूप से पड़ता है, इस तथ्य को अब पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार कर लिया है। वह शुभाशुभ स्थिति पञ्चाङ्ग के सूक्ष्म गणित द्वारा निश्चित होती है। जिस प्रकार हमारे इस छोटे से भूभाग पर शासन करने के लिए केन्द्रीय और प्रान्तीय धारा-सभाएँ, व्यवस्थापक-परिषदें या मन्त्रिमण्डल बनते हैं और उसमें जैसे उदार अनुदार भले बुरे व्यक्तियों के हाथ में अधिकार चला जाता है वैसा ही शासन पर भला बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायिका महामाया श्री जगदीश्वरी के सौरसाम्राज्य में भी प्रतिवर्ष संसार-चक्र को चलाने के लिए ग्रह परिषद् (वर्ष के राजा मंत्री धनेश धान्येश दुर्गेशादि) की नव-नियुक्ति होती है। इस ग्रह-परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न जगल्लग्न में उन की बैठक से त्रिकालदर्शी अतीन्द्रिय ज्ञानी महर्षियों के निर्माण किये हुए ग्रन्थों के आधार पर सूक्ष्मधी दैवज्ञ वर्ष के शुभाशुभ भावी फल को जानने में सक्षम होते हैं। तदनुसार इस विज्ञान के द्वारा हम भी यथाशक्ति जनता जनार्दन की सेवा गत २४ वर्षों से निरन्तर कर रहे हैं। हमारी इस अकिञ्चन सेवा से राष्ट्र का कितना हित हुआ और पाठकों ने किस स्नेह और उत्सुकता से पञ्चाङ्ग के इस स्तम्भ (दैवज्ञ की दृष्टि को) पढ़ा इसका प्रमाण पाठक स्वयं हैं। हमने कभी भी कोई बात जनता को भयभीत या गुमराह करने के लिए नहीं लिखी। शास्त्रीय दृष्टि से जो भी समझ में आया उसे कटु सत्य के रूप में लिखने में भी हमने कभी संकोच नहीं किया। जिन प्रसिद्धि चाहने वाले सज्जनों तथाकथित ज्योतिर्विदों ने जनता में व्यर्थ आतङ्क फैलाया उसका भी हमने इस पंचांग में समाधान किया है। सन् १९५७ ... पूर्व अनेक महाशयों ने ५७ की भयानक विभीषिका प्रस्तुत की थी, उसका ... सं० २०१३ (सन् १९५६) के 'श्रीविश्व-विजय पंचांग' में पृष्ठ ३५ ... भयभीत होने की आवश्यकता नहीं' शीर्षक में किया था। इससे ... की अष्टग्रही से जो विश्वव्यापी भयंकर भय, प्रलयकारी ... का समाधान भी हमने सं० २०१८-१९ के पंचांग में ... आगामी दशवर्ष' शीर्षक में स्पष्ट लिखा था कि— ... फरवरी मास में भयभीत होने की आवश्यकता नहीं ... तथा अन्यान्य ग्रह योगों को देखते हुए हमारा निश्चित मत यही है कि १९६२ से आगे के दशवर्ष संसार के लिए उत्तरोत्तर अधिक संकट पूर्ण सिद्ध होंगे।" इत्यादि।

विगत सन् १९६५ में जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था उसकी सूचना ६ मास पूर्व हमने तत्कालीन प्रधान-मंत्री श्री शास्त्रीजी, रक्षा-मंत्री, गृह-मंत्री और स्थलसेनाध्यक्ष को रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेजकर सतर्क सावधान रहने का अनुरोध किया था। वह पूरा पत्र सं० २०२३ के पंचांग में पृष्ठ ४ पर प्रकाशित हो चुका है। गत ६७ के आम चुनाव में अनेक राज्यों में कांग्रेस के पतन और लोकसभा विधानसभाओं में अभूत पूर्व हुल्लड़, अशान्ति, यत्र-तत्र हड़ताल आदि होने की जो भविष्यवाणी की गई उसकी सत्यताका अनुभव अये दिन होता जा रहा है।

आज से १९ वर्ष पहले सं० २००७ के पंचांग में गणतंत्र भारत की जन्म-कुण्डली प्रकाशित की गई थी, वह पृष्ठ ३४ पर लिखा था "केतुकी दशा में इस गणराज्य का जन्म हुआ है, जिसके केवल ६ मास २८ दिन शेष हैं। आगे शुक्र की महादशा २० वर्ष की प्रारम्भ होगी वह भी शुभ नहीं है। अतः इस अवधि में गुप्त शत्रु कई उत्पन्न होंगे और अनेक प्रकार की उलझनें आती दिखाई देंगी। राजनैतिक सामाजिक साम्प्रदायिक और अनेक प्रश्नों को लेकर अनेक स्थलों में अप्रिय प्रसङ्ग उपस्थित किये जावेंगे, परन्तु शक्तिशाली नेपथ्य विरोधीतत्वों को दबाकर शान्ति स्थापना में सहायक होंगे······ ······काश्मीर का प्रश्न एक बार सारे विश्व में हलचल मचा देगा। मध्यस्थ या सुरक्षा-परिषद् शान्तिपूर्ण ढंग से समझौता कराने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे।" इत्यादि।

गत ३ वर्ष से हम इस पंचांग और 'ज्योतिर्मति' के द्वारा सूचना दे रहे हैं कि पाकिस्तान और चीन भारत की पीठ में छुरा भोंकने के प्रयत्न में हैं, इन से मित्रता की आशा रखना दुराशा मात्र है। गत सं० २०२४ और २०२५ के पंचांग में "युद्ध अनिवार्य है" शीर्षक में पृष्ठ २० पर लिखा है—

"विश्व युद्ध का भय संसार से समाप्त नहीं हुआ है। सन् १९६८ से यूरोप और एशिया में युद्ध के बीजारोपण होंगे। ७०-७१ मध्य भारत को भी पड़ोसी राष्ट्र पाक-चीन से भयंकर युद्ध के लिए विवश होना होगा। भारत विजयी होगा। १९८० के आसन्न संसार में विश्वयुद्ध भड़क उठेगा ... शान्ति के सभी प्रयत्न विफल होंगे।···············पाकिस्तान और चीन से भारत को सदा सतर्क रहना चाहिए। काश्मीर समस्या का समाधान शीघ्र न होगा।··········· हमें युद्ध देव पहने रहना है। हमारे शस्त्रों की धार तेज रहनी चाहिए।·················गुजरात का तट, राजस्थान की मरुभूमि, पंजाब का मैदान, ... के गिरिशृंग, आसाम की पहाड़ियां, बंगाल की नदियां, यह सब रणक्षेत्र होगा। ... अणुबम आवश्यक है। आबादी में पैटन टैंकों से बढ़ चढ़ कर टैंक तय्यार ... 'ट' और 'हण्टर' जेट सेबर जेट विमानों के समकक्ष ही न हों उन से बढ़ ... हों। पश्चिम से बुद्धि उधार न लें, अपनी बुद्धि से सोचें।······ ·········इस सत्य ... स्वीकार किये बगैर हम १९७० में भी भारत भूमि में स्थायी शान्ति न ला सकेंगे ...

॥ लग्न सारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंशा।	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	सर्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
९	२२	३०	३९	४७	५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४० इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।१५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   १२०
   ११०
     १
    ६०
    ६०
   ६०५
```

तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया। तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ॥

[illegible] सूक्ष्म लग्न साधन—जिस [illegible] का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, [illegible] कोष्ठक के राशि अंश [illegible] के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, [illegible] अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है॥

॥ दशम लग्न-सारिणी ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१७
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

नोट—हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे चण्डीगढ़, अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारिणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है।

अथ दशम लग्न साधनम्—उदयादिष्टकं द्युदलं हि प्रपातयेत्। दशमस्य भवेदिष्टं सारिखांगे नृपाङ्गने ॥१॥

अर्थः—सूर्योदय से घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मानकर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है॥

भाव-साधनम्—विलग्नतुर्यं षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत्। एकद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड् युताः परे ॥२॥ अर्थः—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भ सन्धि होगी। फिर उसी आरंभ संधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभ संधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६) छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं॥

—लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धतिः—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए पृ०१०८-१०९ पर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार के गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधियाँ नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' (पृष्ठ १०८-१०९) में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी (पृष्ठ ९० से ९५) में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिह्नानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे −४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें दैनिक लग्न सारिणी' में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त के परिवर्तन की विधिः—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यक्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग में दिए गए चण्डीगढ़ सूर्योदय में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात हुआ। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३५ मि० लिखा है। इस समय सूर्यक्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक [illegible] उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे +३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३५ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ८ मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त [illegible] जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के आगे सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखना चाहिए। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त [illegible] मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के दाईं ओर बम्बई के नीचे −[illegible] मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग में [illegible] में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० १ मि० आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधिः—सूर्योदयास्त के परिवर्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहाँ भी सूर्योदयास्त के परिवर्तन की भाँति चन्द्रोदय परिवर्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्तिको सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें।

जैसे—५ अप्रैल १९६९ को काशी में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। (इस दिन पञ्चाङ्ग में चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय २१ घं. ४७ मि. लिखा है। इसी समय चन्द्र क्रान्ति—२३ (दक्षिण क्रान्ति २३) है। सारिणी में काशी के नीचे एवं उदय-कालिक दक्षिण-क्रान्ति २३ आग—३६ मि. लिखा है। इस पञ्चांग में दिये चन्द्रोदय २१ घं. ४७ मि. में से ३६ मि. घटाने पर २१ घं. ११ मि. काशी में ५ अप्रैल १९६९ को चन्द्रोदयकाल हुआ। चन्द्रास्त-काल-परिवर्तन का उदाहरण भी लीजिये—२४ अप्रै. १९६९ को इस वर्ष के पञ्चांग में चन्द्रास्त १ घं. ६ मि. लिखा है। इस समय चन्द्र-क्रान्ति +२६ (उत्तर क्रान्ति २६ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे अस्तकालिक उतर चन्द्र-क्रान्ति २६ के आगे−३८ मि. लिखा है। चण्डीगढ़ के इस दिन के चन्द्रास्त १ घं. ६ मि. में से ३८ मि. घटाने पर ० घं. २८ मि. भा. स्टैं. टा.), २४ अप्रैल को काशी में चन्द्रास्त का समय प्राप्त हुआ।

नोट—चन्द्रोदयास्त पृष्ठ ८६-८७, एवं चन्द्र- सूर्य क्रान्ति पृ. ८१-८३ पर देखें।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—जिस दिन तिथि, नक्षत्र योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आगे दिए गये मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिह्न के विपरीत तिथ्यादि के समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोटः—इस पञ्चाङ्ग मे सूर्य चन्द्र की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिह्न उत्तर क्रान्ति एवं − यह चिह्न दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तियाँ ५घं. ३० मि. की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

स्थूल चन्द्रोदयास्त जानने की विधिः—तिथि प्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाण मानं च युतं [illegible] चन्द्रोदयास्त [illegible] नाड्यश्चन्द्रोदये [illegible] च ताः स्युः ॥१॥ [illegible] ॥ [illegible] जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणे, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उन में २घटी जोड़ना यदि कृष्ण पक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उसमें १५ का भाग देकर जो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध [illegible] के [illegible] सूर्यास्त के अनन्तर चंद्रास्त होगा। यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक [illegible] दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोद[illegible]

पंचाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग १ म)

(लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन के लिए)

छत्र	उदयकालिक दक्षिण क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मंडी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर	हरिद्वार	हिसार	अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+ ८	+ ५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	− ५	+८	+४	−१	− ९	−३३	+२	+ ५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+ ८	−५	+ ४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
कुम्भ	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+१	१	९	६	४	२
	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+ १	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	३	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	− १	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
कन्या	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+१	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	−१	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+१	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	१०	१०	०	४	१९	३९	२	७	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
मकर	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	१०	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	−१	४	२१	४०	२	७	२७	+ २	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	− १	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	−१	१२	११	२	५	२४	४१	२	८	२८	२	१	३९	२	१	१४	७	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	२	४१	२	१	१४	७	२	१८
तुला	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
	२०	१०	९	+ १	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
धनु,	२१	१०	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	३	१	१५	७	१	२१
	२२	१०	११	०	६३	३६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
वृश्चि.	२३	१०	१२	− १	६४	३६	५	१	१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
	२४	१०	१३	२	६५	३७	६	१	१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३२	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४	२	६६	३८	६	१	१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	−१	१७	७	+ १	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८	६	१	१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३५	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०	७	२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३५	१७	३	६१	४	०	१९	७	०	२९
	३०	+११	−१८	− ६	−७१	−४१	+७	−२	−१९	+१५	−८	−८	−३८	−४९	+१	+१०	−३६	−१८	+३	−६३	−४	−०	+२०	−८	+०	३०

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ य)

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
सिंह	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	११	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४२	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
मीन	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	११	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	४	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	२	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	२	१४	३०	२	७	३	२	३	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	०	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	२	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२३	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	२	१	११	३६	२	१५	४	२	१	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	३	१७	४	२	१	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२४	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	+१	४	७	२१
	२२	६	२०	[illegible]	२९	१३	१	२	४	४	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	५	२	०	४	८	२२
वृष	२३	६	२१	[illegible]	२८	१३	१	२	४	४	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२६	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	−१	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	[illegible]	१२	१	२	५	३	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	[illegible]	१	४	८	२५
	२६	६	२४	२९	२५	११	१	२	५	३	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	[illegible]	२	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२४	१०	१	२	५	३	१४	४	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	३	९	२७
	२८	६	२५	३०	२३	[illegible]	१	२	६	३	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	३	९	२८
	२९	६	२६	३१	२२	९	१	२	८	२	१५	५	१८	१८	२	१	५	४९	४	३४	६	३	३	३	९	२९
	३०	+५	+२७	+३२	−२१	−८	−१	+१	+२	+१	+१६	+५	+२०	−१७	+२	−१	४	+५०	−४	+३६	+६	−३	−४	−३	+९	

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त भा. स्टै. टा.

तारीख	कलकत्ता उदय	कलकत्ता अस्त	गौहाटी उदय	गौहाटी अस्त	वाराणसी उदय	वाराणसी अस्त	मद्रास उदय	मद्रास अस्त	नागपुर उदय	नागपुर अस्त	दिल्ली उदय	दिल्ली अस्त	जम्मू उदय	जम्मू अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	बम्बई उदय	बम्बई अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. १	६।१८	१७। १	६।१२	१६।४१	६।४५	१७।१७	६।३३	१७।५२	६।५२	१७।४१	७।१५	१७।३४	७।३१	१७।३६	७।१७	१७।४३	७।१३	८।११
६	६।२०	१७। ५	६।१३	१६।४४	६।४७	१७।२१	६।३५	१७।५५	६।५४	१७।४५	७।१६	१७।३७	७।३२	१७।३९	७।१८	१७।४६	७।१५	१८।१४
११	६।२०	१७। ८	६।१४	१६।४८	६।४७	१७।२४	६।३६	१७।५८	६।५५	१७।४८	७।१७	१७।४१	७।३२	१७।४३	७।१८	१७।५०	७।१६	१८।१७
१६	६।२१	१७।१२	६।१४	१६।५१	६।४७	१७।२८	६।३७	१८। ०	६।५५	१७।५१	७।१७	१७।४५	७।३१	१७।४८	७।१८	१७।५६	७।१६	१८।२०
२१	६।२०	१७।१५	६।१३	१६।५५	६।४७	१७।३२	६।३७	१८। ३	६।५५	१७।५४	७।१६	१७।४९	७।३०	१७।५३	७।१७	१७।५९	७।१६	१८।२४
२६	६।१९	१७।१८	६।१२	१६।५९	६।४५	१७।३५	६।३७	१८। ५	६।५४	१७।५७	७।१४	१७।५३	७।२८	१७।५८	७।१६	१८। ३	७।१६	१८।२६
३१	६।१८	१७।२२	६।१०	१७। ३	६।४३	१७।३९	६।३७	१८। ८	६।५३	१८। १	७।१२	१७।५७	७।२५	१८। २	७।१४	१८। ७	७।१५	१८।३०
फर. ५	६।१६	१७।२५	६। ७	१७। ७	६।४१	१७।४३	६।३६	१८।१०	६।५१	१८। ४	७। ९	१८। १	७।२२	१८। ७	७।११	१८।११	७।१३	१८।३२
१०	६।१३	१७।२८	६। ४	१७।१०	६।३८	१७।४६	६।३५	१८।१२	६।४९	१८। ७	७। ६	१८। ५	७।१८	१८।१२	७। ८	१८।१५	७।११	१८।३५
१५	६।१०	१७।३१	६। १	१७।१४	६।३५	१७।५०	६।३३	१८।१३	६।४६	१८।१०	७। २	१८। ९	७।१४	१८।१६	७। ४	१८।१८	७। ९	१८।३७
२०	६। ७	१७।३४	५।५७	१७।१७	६।३१	१७।५३	६।३१	१८।१५	६।४३	१८।१२	६।५७	१८।१३	७। ९	१८।२०	७। ०	१८।२१	७। ६	१८।३९
२५	६। ३	१७।३६	५।५३	१७।२०	६।२७	१७।५६	६।२९	१८।१६	६।३९	१८।१५	६।५३	१८।१६	७। ४	१८।२४	६।५६	१८।२४	७। ३	१८।४१
मार्च २(१)	५।५९	१७।३९	५।४८	१७।२३	६।२२	१७।५८	६।२६	१८।१६	६।३६	१८।१७	६।४८	१८।२०	६।५८	१८।२८	६।५२	१८।२७	६।५९	१८।४३
७(६)	५।५५	१७।४१	५।४३	१७।२६	६।१८	१८। १	६।२३	१८।१७	६।३१	१८।१८	६।४२	१८।२३	६।५२	१८।३१	६।४७	१८।३०	६।५६	१८।४५
१२(११)	५।५०	१७।४३	५।३८	१७।२८	६।१३	१८। ३	६।२०	१८।१८	६।२७	१८।२०	६।३७	१८।२६	६।४६	१८।३५	६।४२	१८।३३	६।५२	१८।४६
१७(१६)	५।४६	१७।४५	५।३३	१७।३१	६। ८	१८। ६	६।१७	१८।१८	६।२३	१८।२२	६।३०	१८।२८	६।४०	१८।३८	६।३६	१८।३५	६।४८	१८।४७
२२(२१)	५।४१	१७।४६	५।२७	१७।३३	६। २	१८। ८	६।१४	१८।१९	६।१८	१८।२४	६।२५	१८।३१	६।३४	१८।४१	६।३०	१८।३८	६।४३	१८।४९
२७(२६)	५।३६	१७।४८	५।२२	१७।३६	५।५७	१८।१०	६।१०	१८।१९	६।१३	१८।२५	६।१९	१८।३४	६।२७	१८।४४	६।२४	१८।४०	६।३९	१८।५०
अप्रै. १(०)	५।३१	१७।५०	५।१६	१७।३८	५।५२	१८।१२	६। ७	१८।१९	६। ९	१८।२७	६।१४	१८।३७	६।२१	१८।४८	६।१८	१८।४३	६।३५	१८।५१
६(५)	५।२७	१७।५२	५।११	१७।४०	५।४७	१८।१५	६। ४	१८।२०	६। ४	१८।२८	६। ८	१८।३९	६।१५	१८।५२	६।१३	१८।४६	६।३१	१८।५२
११(१०)	५।२२	१७।५४	५। ६	१७।४३	५।४१	१८।१७	६। ०	१८।२०	६। ०	१८।३०	६। २	१८।४२	६। ९	१८।५५	६। ९	१८।४९	६।२७	१८।५३
१६(१५)	५।१८	१७।५५	५। १	१७।४५	५।३७	१८।१९	५।५७	१८।२०	५।५६	१८।३१	५।५७	१८।४५	६। ३	१८।५८	६। ४	१८।५१	६।२३	१८।५५
२१	५।१३	१७।५७	४।५६	१७।४७	५।३२	१८।२१	५।५५	१८।२१	५।५२	१८।३३	५।५२	१८।४८	५।५७	१९। १	५।५९	१८।५३	६।१९	१८।५६
२६	५।१०	१७।५९	४।५२	१७।५०	५।२८	१८।२४	५।५२	१८।२२	५।४८	१८।३५	५।४७	१८।५१	५।५१	१९। ५	५।५४	१८।५६	६ १६	१८।५७
मई १	५। ६	१८। १	४।४८	१७।५२	५।२४	१८।२६	५।५०	१८।२३	५।४५	१८।३७	५।४३	१८।५४	५।४६	१९। ८	५।५०	१८।५९	६।१३	१८।५९
६	५। ३	१८। ४	४।४४	१७।५५	५।२०	१८।२९	५।४८	१८।२४	५।४२	१८।३९	५।३९	१८।५७	६।४१	१९।११	५।४६	१९। १	६।१०	१९। १
११	५। ०	१८। ६	४।४१	१७।५८	५।१७	१८।३१	५।४६	१८।२५	५।३९	१८।४१	५।३५	१९। ०	५।३७	१९।१५	५।४३	१९। ४	६। ८	१९। २
१६	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।१४	१८।३४	५।४५	१८।२६	५।३७	१८।४३	५।३२	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।४०	१९। ७	६। ६	१९। ४
२१	४।५६	१८।१०	४।३६	१८। ३	५।१२	१८।३७	५।४४	१८।२७	५।३५	१८।४५	५।३०	१९। ६	५।३१	१९।२१	५।३७	१९।१०	६। ४	१९। ६
२६	४।५४	१८।१३	४।३४	१८। ६	५।१०	१८।३९	५।४३	१८।२९	५।३४	१८।४७	५।२८	१९। ८	५।२८	१९।२५	५।३५	१९।१३	६। ३	१९। ८
३१	४।५३	१८।१५	४।३३	१८। ८	५। ९	१८।४१	५।४३	१८।३०	५।३३	१८।४९	५।२६	१९।११	५।२६	१९।२८	५।३३	१९।१५	६। २	१९।१०
जून ५	४।२३	१८।१७	४।३२	१८।१०	५। ९	१८।४४	५।४३	१८।३२	५।३३	१८।५१	५।२५	१९।१३	५।२५	१९।३१	५।३३	१९।१७	६। २	१९।१२
१०	४।५३	१८।१९	४।३२	१८।१३	५। ९	१८।४६	५।४३	१८।३३	५।३३	१८।५३	५।२५	१९।१६	५।२५	१९।३४	५।३३	१९।२०	६। २	१९।१३
१५	४।५३	१८।२०	४।३२	१८।१४	५। ९	१८।४८	५।४४	१८।३५	५।३३	१८।५५	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।३३	१९।२२	६। ३	१९।१५
२०	४।५४	१८।२२	४।३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।४५	१८।३६	५।३४	१८।५६	५।२६	१९।१९	५।२६	१९।३७	५।३४	१९।२३	६। ४	१९।१६
[illegible]	४।५५	१८।२३	४।३४	१८।१७	५।११	१८।५०	५।४६	१८।३७	५।३५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।३८	५।३५	१९।२४	६। ५	१९।१७

कोष्ठक में दी गई तारीखें प्लुत-वर्ष (लीप इयर) में देखें।

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरणवक्रीभवन संस्कार समाविष्ट है। अतः ज्ञान साधनार्थ इष्ट साधन के लिये सूर्योदय में लगभग ४ मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग ४ मिनट घटाने पर वास्तविक सूर्योदय होते हैं।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय [illegible]

तारीख	कलकत्ता उदय	कलकत्ता अस्त	गोहाटी उदय	गोहाटी अस्त	वाराणसी उदय	वाराणसी अस्त	मद्रास उदय	मद्रास अस्त	नागपुर उदय	नागपुर अस्त
	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घ. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून ३०	४।५६	१८।२३	४।३६	१८।१७	५।१२	१८।५१	५।४७	१८।३८	५।३७	१८।५८
जुला. ५	४।५८	१८।२४	४।३७	१८।१७	५।१४	१८।५१	५।४९	१८।३८	५।३८	१८।५८
१०	५। ०	१८।२३	४।३९	१८।१७	५।१६	१८।५०	५.५०	१८।३८	५।४०	१८।५८
१५	५। २	१८।२३	४।४२	१८।१६	५।१८	१८।४९	५।५१	१८।३८	५।४२	१८।५७
२०	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।२१	१८।४८	५।५३	१८।३८	५।४४	१८।५६
२५	५। ६	१८।२०	४।४७	१८।१२	५।२३	१८।४६	५।५४	१८।३७	५।४६	१८।५४
३०	५। ८	१८।१७	४।४९	१८।१०	५।२५	१८।४३	५।५५	१८।३६	५।४८	१८।५२
अग. ४	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ७	५।२८	१८।४०	५।५६	१८।३४	५।५०	१८।५०
९	५।१२	१८।१२	४।५४	१८। ३	५।३०	१८।३७	५।५७	१८।३२	५।५१	१८।४७
१४	५।१४	१८। ८	४।५६	१७।५९	५।३२	१८।३३	५।५८	१८।३०	५।५३	१८।४४
१९	५।१६	१८। ४	४।५९	१७।५५	५।३४	१८।२९	५।५८	१८।२७	५।५५	१८।४०
२४	५।१८	१८। ०	५। १	१७।५०	५।३७	१८।२४	५।५९	१८।२४	५।५६	१८।३६
२९	५।१९	१७।५६	५। ३	१७।४५	५।३९	१८।१९	५।५९	१८।२१	५।५८	१८।३२
सितं. ३	५।२१	१७।५१	५। ५	१७।४०	५।४१	१८।१४	५।५९	१८।१७	५।५९	१८।२७
८	५।२२	१७।४६	५। ७	१७।३५	५।४२	१८। ९	५।५९	१८।१५	६। ०	१८।२३
१३	५।२४	१७।४२	५। ९	१७।२९	५।४४	१८। ४	५।५९	१८।११	६। १	१८।१८
१८	५।२५	१७।३६	५।११	१७।२४	५।४६	१७।५८	५।५९	१८। ७	६। ३	१८।१३
२३	५।२६	१७।३१	५।१३	१७।१८	५।४८	१७।५३	५।५९	१८। ४	६। ४	१८। ९
२८	५।२८	१७।२६	५।१५	१७।१३	५।५०	१७।४८	६। ०	१८। ०	६। ५	१८। ४
अक्तू. ३	५।३०	१७।२२	५।१८	१७। ७	५।५२	१७।४२	६। ०	१७।५७	६। ७	१७।५९
८	५।३२	१७।१७	५।२०	१७। २	५।५४	१७।३७	६। ०	१७।५४	६। ८	१७।५५
१३	५।३३	१७।१२	[illegible]	[illegible]	५।५७	१७।३२	६। ०	१७।५०	६।१०	१७।५०
१८	५।३५	१७। ८	[illegible]	[illegible]	५।५९	१७।२७	६। १	१७।४८	६।११	१७।४६
२३	५।३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६। २	१७।२३	६। २	१७।४५	६।१४	१७।४३
२८	५।४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६। ५	१७।१९	६। ३	१७।४३	६।१६	१७।३९
नवं. २	५।४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६। ८	१७।१६	६। ४	१७।४१	६।१८	१७।३६
७	५।४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६।११	१७।१३	६। ५	१७।४०	६।२१	१७।३४
१२	५।४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६।१४	१७।१०	६। ८	१७।३८	६।२४	१७।३२
१७	५।५२	१६।५१	[illegible]	[illegible]	६।१८	१७। ८	६।१०	१७।३८	६।२७	१७।३१
२२	५।५५	१६।५०	[illegible]	[illegible]	६।२२	१७। ७	६।१२	१७।३८	६।३०	१७।३०
२७	५।५८	१६।५०	[illegible]	[illegible]	६।२५	१७। ६	६।१५	१७।३८	६।३३	१७।२९
दिसं. २	६। २	१६।५०	[illegible]	[illegible]	६।२८	१७। ६	६।१८	[illegible]	६।३६	१७।३०
७	६। ५	१६।५०	[illegible]	[illegible]	६।३२	१७। ७	६।२०	[illegible]	६।३९	१७।३०
१२	६। ८	१६।५२	[illegible]	[illegible]	६।३५	१७। ७	६।२३	१७।४१	६।४२	१७।३२
१७	६।११	१६।५३	[illegible]	[illegible]	६।३८	१७। ९	६।२५	[illegible]	६।४५	१७।३४
२२	६।१४	१६।५६	६। ८	१६।३४	६।४१	१७।११	६।२८	१७।४५	६।४८	१७।३६
२७	६।१६	१६।५८	६।१०	१६।३७	६।४३	१७।१४	६।३०	१७।४९	६।५०	१७।३८

तारीख	दिल्ली उदय	दिल्ली अस्त	जम्मू उदय	जम्मू अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	बम्बई उदय	बम्बई अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून ३०	५।२९	१९।२१	५।२९	१९।३८	५।३६	१९।२४	६। ६	१९।१८
जुला. ५	५।३०	१९।२१	५।३१	१९।३८	५।३८	१९।२४	६। ८	१९।१८
१०	५।३३	१९।२०	५।३३	१९।३७	५।४०	१९।२३	६। ९	१९।१८
१५	५।३५	१९।१९	५।३५	१९।३६	५।४३	१९।२२	६।११	१९।१८
२०	५।३८	१९।१७	५।३८	१९।३४	५।४६	१९।२०	६।१३	१९।१७
२५	५।४०	१९।१५	५।४१	१९।३१	५।४८	१९।१८	६।१५	१९।१६
३०	५।४३	१९।१२	५।४५	१९।२८	५।५१	१९।१५	६।१६	१९।१४
अग. ४	५।४६	१९। ८	५।४८	१९।२४	५।५४	१९।१२	६।१८	१९।१२
९	५।४९	१९। ५	५।५१	१९।१९	५।५६	१९। ८	६।२०	१९। ९
१४	५।५१	१९। ०	५।५४	१९।१४	५।५९	१९। ४	६।२१	१९। ६
१९	५।५४	१८।५६	५।५८	१९। ८	६। १	१८।५९	६।२२	१९। ३
२४	५।५७	१८।५१	६। १	१९। ३	६। ३	१८।५५	६।२४	१८।५९
२९	५।५९	१८।४५	६। ४	१८।५८	६। ५	१८।५०	६।२५	१८।५५
सितं. ३	६। २	१८।४०	६। ७	१८।५२	६। ७	१८।४४	६।२५	१८।५१
८	६। ४	१८।३४	६।१०	१८।४५	६।१०	१८।३९	६।२६	१८।४७
१३	६। ६	१८।२८	६।१३	१८।३९	६।१२	१८।३३	६।२७	१८।४३
१८	६। ९	१८।२२	६।१६	१८।३२	६।१५	१८।२८	६।२८	१८।३८
२३	६।११	१८।१६	६।१९	१८।२६	६।१६	१८।२२	६।२९	१८।३४
२८	६।१४	१८।१०	६।२२	१८।१९	६।१८	१८।१६	६।३०	१८।२९
अक्तू. ३	६।१६	१८। ४	६।२६	१८।१३	६।२१	१८।११	६।३१	१८।२५
८	६।१९	१७।५९	६।२९	१८। ७	६।२४	१८। ६	६।३२	१८।२१
१३	६।२२	१७।५३	६।३२	१८। १	६।२६	१८। ०	६।३३	१८।१७
१८	६।२५	१७।४८	६।३५	१७।५५	६।२९	१७।५५	६।३५	१८-१३
२३	६।२८	१७।४३	६।३९	१७।५०	६।३२	१७।५१	६।३७	१८।१०
२८	६।३१	१७।३९	६।४३	१७।४५	६।३५	१७।४६	६।३८	१८। ७
नवं. २	६।३५	१७।३५	६।४७	१७।४०	६।३८	१७।४२	६।४०	१८। ४
७	६।३९	१७।३१	६।५१	१७।३६	६।४१	१७।३९	६।४३	१८। २
१२	६।४२	१७।२८	६।५६	१७।३२	६।४५	१७।३६	६।४५	१८। ०
१७	६।४६	१७।२६	७। १	१७।२९	६।४९	१७।३४	६।४८	१७।५९
२२	६।५०	१७।२४	७। ६	१७।२७	६।५३	१७।३३	६।५१	१७।५९
२७	६।५४	१७।२३	७।१०	१७।२६	६।५७	१७।३३	६।५४	१७।५९
दिसं. २	६।५८	१७।२३	७।१४	१७।२६	७। ०	१७।३३	६।५७	१७।५९
७	७। २	१७।२३	७।१८	१७।२६	७। ४	१७।३३	७। ०	१८। ०
१२	७। ५	१७।२४	७।२१	१७।२७	७। ७	१७।३४	७। ३	१८। १
१७	७। ९	१७।२५	७।२४	१७।२८	७।१०	१७।३६	७। ६	१८। ३
२२	७।११	१७।२७	७।२७	१७।३०	७।१३	१७।३८	७। ९	१८। ५
२७	७।१४	१७।३०	७।२९	१७।३३	७।१५	१७।४०	७।११	१८। ८

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। प्रथम किरण-वक्री-भवन संस्कार समाविष्ट है। लग्न सों नांवें इष्ट-साधन के लिये सूर्योदय
[illegible] ४ मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग ४ मिनट घटाने पर वास्तविक सूर्योदयास्त होते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध नगरों का सूर्योदयास्त काल (भा. स्टै. टा.)

	शिमला, सोलन		रामपुर		मण्डी, कुल्लू, सुन्दर नगर		चम्बा		धर्मशाला कांगड़ा		बिलासपुर	
महीना तारीख	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.
जन. १	७।१९	५।३०	७।१८	५।२७	७।२२	५।२९	७।२७	५।३३	७।२६	५।३०	७।२२	५।३३
७	७।२०	५।३५	७।१९	५।३२	७।२३	५।३४	७।२८	५।३५	७।२७	५।३४	७।२२	५।३६
१३	७।२०	५।४०	७।१९	५।३७	७।२२	५।३९	७।२७	५।४०	७।२६	५।३९	७।२३	५।४१
१९	७।१९	५।४५	७।१८	५।४२	७।२१	५।४५	७।२६	५।४६	७।२५	५।४५	७।२२	५।४६
२५	७।१७	५।५०	७।१६	५।४७	७।१९	५।५०	७।२४	५।५१	७।२३	५।५०	७।२०	५।५१
३१	७।१४	५।५६	७।१२	५।५३	७।१५	५।५६	७।२१	५।५७	७।२०	५।५६	७।१७	५।५७
फ़र. ६	७।१०	६।१	७।८	५।५८	७।११	६।१	७।१६	६।३	७।१५	[illegible]	७।१३	६।२
१२	७।५	६।६	७।३	६।३	७।६	६।६	७।११	६।९	७।१०	६।२	७।७	६।७
१८	७।०	६।११	६।५८	६।८	७।१	६।११	७।६	६।१४	७।५	६।१३	७।२	६।१२
२४	६।५४	६।१६	६।५२	६।१३	६।५५	६।१६	६।५९	६।१९	६।५८	६।१८	६।५६	६।१७
मार्च २	६।४७	६।२०	६।४५	६।१७	६।४८	६।२०	६।५२	६।२३	६।५१	६।२२	६।४९	६।२१
८	६।४०	६।२४	६।३८	६।२१	६।४१	६।२४	६।४५	६।२८	६।४४	६।२७	६।४२	६।२५
१४	६।३३	६।२८	६।३१	६।२६	६।३४	६।२९	६।३७	६।३३	६।३६	६।३१	६।३५	६।३०
२०	६।२५	६।३२	६।२३	६।३०	६।२६	६।३३	६।२९	६।३६	६।२८	६।३५	६।२७	६।३४
२६	६।१८	६।३६	६।१५	६।३४	६।१८	६।३७	६।२२	६।४१	६।२१	६।४०	६।१९	६।३८
अप्रै. १	६।१०	६।४०	६।७	६।३८	६।१०	६।४१	६।१४	६।४६	६।१३	६।४०	६।११	६।४२
७	६।३	६।४४	६।०	६।४२	६।३	६।४५	६।६	६।५०	६।५	६।४९	६।४	६।४६
१३	५।५६	६।४८	५।५३	६।४६	५।५६	६।४९	५।५९	६।५४	५।५८	६।५३	५।५७	६।५०
१९	५।४९	६।५२	५।४६	६।५०	५।४९	६।५३	५।५२	६।५८	५।५१	६।५७	५।५०	६।५४
२५	५।४३	६।५६	५।४०	६।५४	५।४३	६।५७	५।४५	७।२	५।४४	७।०	५।४४	६।५८
मई १	५।३७	७।०	५।३५	६।५८	५।३८	७।१	५।३९	७।६	५।३८	७।४	५।३९	७।२
७	५।३२	७।४	५।२९	७।३	५।३२	७।६	५।३३	७।११	५।३२	७।९	५।३३	७।७
१३	५।२७	७।८	५।२४	७।७	५।२७	७।१०	५।२८	७।१५	५।२७	७।१४	५।२८	७।११
१९	५।२३	७।१२	५।२०	७।११	५।२३	७।१४	५।२४	७।१९	५।२३	७।१८	५।२४	७।१५
२५	५।२०	७।१६	५।१७	७।१५	५।२०	७।१८	५।२१	७।२३	५।२०	७।२२	५।२१	७।१९
३१	५।१८	७।१९	५।१५	७।१८	५।१८	७।२१	५।१९	७।२६	५।१८	७।२५	५।१९	७।२२
जून ६	५।१७	७।२२	५।१४	७।२१	५।१७	७।२५	५।१८	७।३०	५।१७	७।२९	५।१८	७।२५
१२	५।१७	७।२५	५।१४	७।२४	५।१६	७।२७	५।१७	७।३३	५।१६	७।३२	५।१८	७।२८
१८	५।१७	७।२७	५।१४	७।२६	५।१७	७।२९	५।१८	७।३५	५।१७	७।३४	५।१८	७।३०
२४	५।१८	७।२८	५।१५	७।२७	५।१८	७।३१	५।१९	७।३६	५।१८	७।३५	५।१९	७।३१
३०	५।२०	७।२९	५।१७	७।२८	५।२०	७।३१	५।२१	७।३७	५।२०	७।३६	५।२१	७।३२
जुला. ६	५।२३	७।२८	५।२०	७।२७	५।२३	७।३०	५।२४	७।३६	५।२३	७।३५	५।२४	७।३२
१२	५।२६	७।२७	५।२३	७।२६	५।२६	७।२९	५।२७	७।३५	५।२६	७।३४	५।२७	७।३०
१८	५।२९	७।२५	५।२६	७।२४	५।२९	७।२७	५।३०	७।३३	५।२९	७।३२	५।३०	७।२८
२४	५।३२	७।२२	५।३०	७।२१	५।३३	७।२४	५।३४	७।३०	५।३४	७।२९	५।३४	७।२५
३०	५।३५	७।१८	५।३३	७।१७	५।३६	७।२०	५।३८	७।२६	५।३७	७।२५	५।३७	७।२१
अग. ५	५।४०	७।१३	५।३७	७।१२	५।४०	७।१५	५।४२	७।२१	५।४१	७।२०	५।४१	७।१६
११	५।४४	७।८	५।४१	७।६	५।४४	७।९	५।४६	७।१४	५।४५	७।१४	५।४५	७।१०
१७	५।४८	७।२	५।४५	७।०	५।४८	७।३	५।५०	७।८	५।४९	७।७	५।४९	७।४
२३	५।५१	६।५५	५।४९	६।५३	५।५२	६।५७	५।५४	७।१	५।५३	७।०	५।५३	६।५७
२९	५।५४	६।४८	५।५२	६।४६	५।५५	६।५०	५।५८	६।५४	५।५७	६।५३	५।५६	६।५०
सितं. ४	५।५८	६।४१	५।५६	६।३९	५।५९	६।४२	६।२	६।४९	६।१	६।४५	६।०	६।४३
१०	६।१	६।३३	६।०	६।३१	६।३	६।३४	६।६	६।३८	६।५	६।३७	६।४	६।३५
१६	६।५	६।२६	६।४	६।२४	६।७	६।२७	६।९	६।३०	६।८	६।२९	६।६	६।२८
२२	६।८	६।१८	६।७	६।१६	६।१०	६।१९	६।१३	६।२२	६।१२	६।२१	६।११	६।२०
२८	६।१२	६।१०	६।११	६।८	६।१४	६।११	६।१७	६।१४	६।१६	६।१३	६।१५	६।१२
अक्तू. ४	६।१६	६।३	६।१४	६।१	६।१७	६।४	६।२१	६।७	६।२०	६।६	६।१८	६।५
१०	६।२०	५।५६	६।१७	५।५३	६।२०	५।५६	६।२५	५।५९	६।२४	५।५८	६।२१	५।५७
१६	६।२४	५।४९	६।२१	५।४६	६।२४	५।४९	६।२९	५।५२	६।२९	५।५१	६।२५	५।५०
२२	६।२९	५।४२	६।२६	५।३९	६।२९	५।४२	६।३४	५।४५	६।३३	५।४४	६।३०	५।४३
२८	६।३३	५।३६	६।३०	५।३३	६।३३	५।३६	६।३९	५।३९	६।३८	५।३८	६।३४	५।३७
नवं. ३	६।३८	५।३१	६।३५	५।२८	६।३८	५।३१	६।४४	५।३३	६।४३	५।३२	६।३९	५।३३
९	६।४४	५।२७	६।४०	५।२४	६।४३	५।२७	६।४९	५।२८	६।४८	५।२७	६।४४	५।२८
१५	६।४८	५।२३	६।४६	५।२०	६।४९	५।२३	६।५५	५।२४	६।५४	५।२३	६।५०	५।२५
२१	६।५४	५।२०	६।५१	५।१८	६।५४	५।२१	७।०	५।२२	६।५९	५।२१	६।५५	५।२२
२७	६।५८	५।१९	६।५६	५।१६	६।५९	५।१९	७।५	५।२०	७।४	५।१९	७।०	५।२०
दिसं. ३	७।३	५।१८	७।१	५।१५	७।५	५।१८	७।१०	५।१९	७।९	५।१८	७।५	५।१९
९	७।८	५।१८	७।६	५।१५	७।१०	५।१९	७।१५	५।२०	७।१४	५।१९	७।१०	५।१९
१५	७।१२	५।१९	७।१०	५।१७	७।१४	५।२०	७।१९	५।२१	७।१७	५।२०	७।१४	५।२१
२१	७।१५	५।२२	७।१३	५।१९	७।१७	५।२२	७।२२	५।२३	७।२०	५।२२	७।१७	५।२३
२७	७।१७	५।२५	७।१६	५।२२	७।२०	५।२५	७।२५	५।२६	७।२३	५।२५	७।२०	५।२६
३१	७।१९	५।२८	७।१८	५।२५	७।२२	५।२८	७।२७	५।२९	७।२५	५।२९	७।२२	५।३०

हिमाचल-प्रदेश के अन्य नगरों का सूर्योदयास्त काल—शिमला के सूर्योदयास्त काल में १½ मिनट घटाने से कोटखाई का और १½ मिनट जोड़ने से कालका का. धर्मशाला के सूर्योदयास्त में ३ मि. घटाने से मनाली का और १ मिनट घटाने से पालमपुर का, मण्डी के सूर्योदयास्त में ३ मि. जोड़ने से ऊना का, १ मि. जोड़ने से जोगिन्दर नगर का और २ मि. जोड़ने से हमीरपुर का तथा चम्बा के सूर्योदयास्त में १ मि. जोड़ने से डलहौजी का सूर्योदय एवं सूर्यास्त-काल बन जाता है। तिथ्यादि पंचांग के साथ दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदयास्त काल में से २ मि. घटाने से नाहन का सूर्योदयास्त काल प्राप्त होगा।

सूचना—ऊपर कोष्टक में दिए गए सूर्योदयास्त-काल किरण-वक्री-भवन संस्कार से संस्कृत हैं, और ये सूर्य-बिम्ब के ऊर्ध्व बिन्दु (शीर्ष) के उदयास्त को बतलाते हैं अतः लग्न-साधन के लिए इस कोष्टक से प्राप्त सूर्योदय में ४ मिनट जोड़कर सूर्य-केन्द्रोदयात् इष्ट बनाना चाहिए। तिथ्यादि के साथ दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय में ४ मि. जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पु. अनु उ. भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं.	१	७	०
र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	र.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशाः वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चंद्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. अनु.पू.भा.		
मं.	[illegible]	[illegible]	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	[illegible]	भ्रा.	[illegible]	[illegible]	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	[illegible]	[illegible]	भ.	[illegible]	[illegible]	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	[illegible]	[illegible]	उ.	[illegible]	[illegible]	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	[illegible]	[illegible]	सि.	[illegible]	[illegible]	सं.	१०	[illegible]
उ.	२	०	सि.	[illegible]	[illegible]	सं.	८	०	मं.	१	[illegible]
सि.	२	१०	सं.	[illegible]	[illegible]	मं.	१	०	पि.	[illegible]	[illegible]
सं.	२	२०	मं.	[illegible]	[illegible]	पि.	[illegible]	[illegible]	धा.	[illegible]	[illegible]

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
म. ज्ये. उभा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो उ.फा. पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	अन्तर्दशामासादि
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	नेष्टदशा— पि. भ्रा. उ. सं.
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	[illegible]	[illegible]	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	[illegible]	[illegible]	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

[illegible] नक्षत्र की घटयादि को ६० में से घटाकर [illegible] घटी [illegible] से [illegible] होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। [illegible] और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना ले, [illegible] की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग दें। लब्ध अंक वर्ष, फिर [illegible] को १२ से गुणा करें, [illegible] के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे [illegible] घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। [illegible] होता है। [illegible] दशा के वर्षों में [illegible] दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पृ. भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदयः	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	ग्राह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षमला	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्रप्री.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
	नम्	यशोर्थः	पुष्टिः	दुःखम	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	कष्टम्

॥ देश-भेद से दशानिर्णय ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विशोत्तरी दशा । कृष्णे चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥
अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थ—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है, किन्तु विशेष निर्णय में तथा समय के फल विकास कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्रकी होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा में विचार करना।*

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकीचक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रखकर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्म राशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है। शुभ ग्रहों के वेध से यश सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्षका फल कहे॥

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	२	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशयः		
सू	शु	श	शु	वृ	च	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि.	ल.	प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा.	ल.	प.

सूचना-वेध सिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष मान से ८॥ पल कम है। अतः सूक्ष्म वर्ष प्रवेश कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८॥ से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म- वर्षमानानुसारी इष्ट होगा।

वर्षफल-साधनप्रकार:—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणीसे लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमयके स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जबकि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्ष पत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकार:—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना. यह मुन्था प्रतिदिन [illegible]

अथ हर्षबलम् स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू० १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।११।२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० वृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञान—जिस ग्रह का मित्रादि देखना हैं उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१० वें हों तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३ रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १।७ वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता होतो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में [illegible] बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
० १०	० २०	१ ०	१ १०	१ २०	२ ०	२ १०	२ २०

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गौरजा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनानि
कृ.उ.फा. उ.षा.	रो.ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ.पू.फा. पू.षा.	पुष्य.अ. उ.भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. गु. चं.	र.शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	रा.श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. शु. रा.	रा.	बु. रा.	चं.	बु.शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर १८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धन १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क १८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध.मी.	वृष.तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	ग्रन्थि	विवर	विवर	स्थान

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक मास क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य-रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन ३ दिन या ५ मुहूर्त्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभ मुहूर्त्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके व य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए ॥ सीमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार पश्चिमास्त में प्रथम ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसगारामकूपा-दिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्र प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षीरयात्रां विहाय ॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे-त्सवे	यात्रा[illegible]	लोहपत्रे [illegible]	पापकर्मणि	क्रूर-[illegible]	एषु कर्मसु

भद्रायाँ कार्याकार्यनिर्णयः

वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्ट्या तु सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात् ॥ आवश्यके परिहारः— दिवा-पराद्धंजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
पू.	आ.	उ	न.	ई.	द.	वा.	[illegible]	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५क्रमेण शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्क्षे व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गुदिता अस्तमिते ज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) ॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति ॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवा-नाथे सिंहज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टइति मुहूर्तचिन्तामणौ ॥ नीचराशौ-मकरे च गतो जीवः प्रसस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशस्तु नीचतः ॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे ॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च-वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुम)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलं। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ तारापवादः—पर्याये प्रथम वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिवधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरेः चरमोऽशुभः। वधस्याज्यस्तृतीयोऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है ।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ । शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. । शुभ लग्न—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो ।

चित्रा, पुन, पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं ।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, सक्रान्ति का दिन । सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नों की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा, नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता,पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं ।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें ।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को पु. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है । तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ है ।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है ।

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए ।

मेधाजनन संस्कार— बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें । ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है ।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त— -रिक्ताभा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मू. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है ।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रा. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराध नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्र नक्षत्र तथ शनि और बुधवार त्याज्य हैं । अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त —मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मू. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है । परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए ।

जातकर्म और नामकर्ण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १२ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रा. ह. अश्विनी पुष्य, अ भ. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथ ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिने				
५	५	५	५	७
राज्य	मरण	हलना	स्थान	पीड़ा

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मू. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनो उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है ।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्व. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. र. ध. नक्षत्रों में भौम वार को छोड़कर अन्य वारों में, [illegible] शुभ । दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है । शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करे । इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें ।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकादिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तंत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि.पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तर ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—'यथा-कुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, [illegible] आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपाजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन, हस्त, चि., स्वा., श्र. ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सोने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र; सूय, बुध, चन्द्र बृ., श. ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र.,ध., मू., मृ. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगवाण को छोड़कर मध्याह्न के पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्ण-चंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर [illegible]

योनिनाड्यादिज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. घ्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	१	पू.फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारुण	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु फा.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	१	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारुण	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	म.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारुण	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारुण	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	[illegible]	[illegible]	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मृदंग	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा	चित्रा	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्ववर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषवजनम्—द्वयके तारासुवर्णभष्टरिपुके गोयुग्मस-
बांधुके। रीत्यं कान्त्यमणिकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -८	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ १५	०॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ३+	२६ ४+
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०६१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -०	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १८	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० -११४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	२९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	२९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १२	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२९॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -८	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥ १	२३॥ १	१३॥ १६	१२॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२१	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -८	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -१	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३५	१६॥ ३६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६॥	२७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३६	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१० ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ २५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८॥ ३	२९॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ -४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १६	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१० २६	५ १११२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२१
	पुन ।।।	१८॥ ३	२४॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२२ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -८	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -१	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	२८ ३	२०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	१९॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१६॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२० -२	१३ ३	६ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	१५॥ ४	२१॥ १४	१२ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२३॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ २५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	१० +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ १	[illegible] ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३६२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२६ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	८॥ ३६	१३॥ ६	२३॥	२४॥	१३॥ १	१०॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	२५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -११६	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३५	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	२५॥	२६ ५+	२० -१५	२३ १	२६	२६॥	२७॥	१९॥ ३	१४॥ ३	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३६	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १२४	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १३	९॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ १-
कन्या	उफा ।।।	[illegible] ३५	२१ १	१६ १२	२०॥ +१४	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ १	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १३+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१४ १२	२१	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१९	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	११	१८॥ ६	२९	२०॥ +६	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२५॥	२९॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०३	२६॥ ५+	१८॥ ३५	२०	२१	१३॥ ३	१४ ३	२०	२४॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१८ ३	२६	२६
	चि ।।	[illegible]	[illegible]	१४॥ १	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१४ १	२२ १	२४॥	२२॥	११॥ १	२५॥	२०॥ +१	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३५	१२ ०३	२५॥ ५+	२०	३१	[illegible]	२७	२२ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	२१

[illegible] पृष्ठे

मेलापक सारिणी

वर	राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ॥	२२	१४ २१	२८	२३ १४	१८॥ १९	२०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	११	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १२	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ २५	१२ १९	३ ११६	१२ ६
	स्वा १	२९ २+	२८	१९ ३	११ ३९	१४ १५	२४ -६	२८ ५०	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२७ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	२२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२२	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५५	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४-	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१५ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०२	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२१॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि १	१६॥ ५+	१६॥ १६	१४॥ ३५	१९॥ ३	१३॥ १३	२२॥	१९ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१६ ६	७ ३४	१५ ३४	२८ १	२७ ०	३१॥	२२॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	[illegible] ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ १६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ १	१४ ३६	१५ २६	१२॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६६ ३६	२०॥ ६	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ५५
	ज्ये १	१७ ३४	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ११२१	४ १३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ६	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०३१४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२	१४ २३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१२ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२६॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४	२०	२०॥ ६	१६॥ २३६	१९॥ २६	२५ -१४	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १४६	२४ ५+	[illegible]	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १२	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ २६	१५ ०३२	१३॥ १६	२८॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १६	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१८	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४	१७	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ १
	ध ॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३६१	१८॥ ४२	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१६॥ १६	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ५+	१७ ३५	१८ ३५	२० -१	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१९॥ १४	१८ ४४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१४॥ ४२
	शत १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०॥ ६	२५ ३	२६ -५	२१	२६ ५+	२९॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२८॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	२३	२८ ३०	२९ ०१३	८ १५४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	२०	२०॥ १	२६॥	१२ २२	१५ २३	२१॥	२२॥	२२॥ +४	२३॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९॥ १३४	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१४॥ १४	७ ११४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० -१४	२३॥ -१	२३॥ ३	२९॥	२९॥	२४॥	१४॥ २३	५॥ १३४	१७॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०॥ ३	२३॥ ४	२३॥ ३	२८॥ -२	१३॥ ४२	२५॥ ४	१७॥ ४२	२५॥ +२	३३	२८

[illegible]

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उनपर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषघ्नां कन्यामच्युतविवाहादिशान्ति विधाय चिरयोग्यायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्य वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्य कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएँ—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण-मुहूर्त—उ. ३, रो. मृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़,बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "अस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते पुरोगिषे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण-मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३, अनु. ध. ह. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्या[illegible]

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचंद्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयाद्र्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या, कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरण	४	साधनाहितः

मंत्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सतीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथि. (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. ह. मृ. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो ऽर्कौ धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः एकञ्च गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक [illegible] न करे [illegible] पहले [illegible] और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् [illegible] भी न करे और मुण्डन भी विवाह [illegible] के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर [illegible] शुभ कार्य [illegible]। [illegible] मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में अशौच—[illegible] चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) जाने पर विवाह दिन [illegible] किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरणसे ६ मास, पिता के [illegible] ३ [illegible], पुत्र के मरण से १॥ मास, कुलवालों के [illegible] १० दिन के बाद शान्ति के [illegible] करके [illegible] के बाद करें।

[illegible]

विवाह के [illegible] दिये गये हैं। [illegible] मुहूर्त देखकर और उसी दिन [illegible] चन्द्र गुरु [illegible] [illegible] विवाहलग्न के लिए लिखे गये [illegible] विवाहदिन [illegible] हो तो विवाह नहीं [illegible]। इसी प्रकार [illegible] (मु० चि०) [illegible] [illegible] [illegible] उक्तं [illegible] चेत्॥ (ज्योतिर्निबन्ध ज्यो. नि.)

(बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मधीघनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः। गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्ठगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्ठरविः—४।८।१२
नेष्ठचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ठ गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	[illegible]

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३ भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्धेषरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनि-ष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भमुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ६।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण गड़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लतादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वाँ हुआ यह सूर्य की लतादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लता भी जानें।

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

१. मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा:	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ	अ	कृ	व	ह	ब	रो	म	स	ज
पुन	आ	मृ	श्ले	मृ.	अ	सा	ज्ये	पुन	श	ज्ये
श	ज्य	ज्ये	वि	घ	ध	उषा	ध	श	वि	ध
पूफा	घ	पुष्य	पूभा	पूभा	पुष्य	पूषा	श्ले	वि	उफा	म
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	०	पूषा
मृ.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा

सूर्याक्रान्त नक्षत्र

हर्षण, वघात, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र या स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	आ.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	पूभा.	विशा.	ज्ये.
अभि.	उषा.	पूषा.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	म.	कृ.	पुष्य.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ. फा.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. षा.	उ. षा.	अ.	मृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ध. न.

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूलक्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	धं०	तु०
सिंह०	मि०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का [illegible]

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति ५ कर्म अर्कस्य वर्ज्याः	वार-समयपक्षेन वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे दिवा	त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे संध्ययोः	वर्ज्यम्

१० दग्धातिथिदोष:

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	१	८	७	धनुषा
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियाँ दग्धा होती हैं जो विवाह में वर्जनीय हैं।

लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥ भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणदोषं तथैव च।

लतादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त नवग्रस्थान) कलिङ्गवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च त्यजेत् लत्ताभं त्यजेद् विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभं न तु कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभासौम्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गग। हुत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्॥ मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	आवेष
चं. पाप		०	०	रा.	०	च. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं म. शुभाः लग्नेशः	०	०	०	श.	त्याज्या
चं.	कलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च					चं		चं	विद्धभञ्च				दोषुजौ त्याज्या

लग्नभङ्ग-योगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रकला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तोऽज्जगुरुलमी) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमदवेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं स्वष्टमो राशिरेव च। यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ धन्वन्वादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्याह्वयास्ताश्च राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वौ सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टदोषः कृतोऽपि नीचनवांशके द्युतिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वल्पबलगुणैः सह॥ अपवादान्तरम्। उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगानरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्नाद्याः। सर्वप्रकृत रिष्टौकोऽपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषसञ्चयम्। सूर्य विहाय दैवेन्यः सकलं कलसंगिरः॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद आचार्यों ने लग्न रहित केन्द्र (४।७।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपती
३	६	३	१	१	१	३	३			
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	३	८	८	८		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्।
११			४	४	४	११	११	११	[illegible]	
			५	५	५					
			६	६	८					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	३॥	२	३	३	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ कार्या सदा ग्राम्य विशुद्धलग्नं गोधूलिकं साधु वदन्ति लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग. माघ, फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर वै. वै. में गोओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां वासे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम्। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शीनकाद्याः॥

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानम चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकनाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले जाती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमार्कसंक्रांतिरिक्त्यादौ प्राप्तकालेऽपि ना चरेत्॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३. पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—व्याहे से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १५ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. मू. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागम षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य-सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—जिस दिशा में सूर्य उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है। अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में वृष, कन्या मकर में हो तो दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुंभ में हो तो पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है। ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ॥

प्रथमस्त्रीसंगममुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३. श्र. रे. नक्षत्र रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर-सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और तिरस्कार धिक्कार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्दशाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

नववधूस्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूडीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यवारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषणघटनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अनि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवारे [illegible] भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अनु. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हों, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

अर्थगृहादिक्रयगृहारम्भमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सतिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	१	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	द्रिकरनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी)-मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये सौम्ये वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्मित्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)-प्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्ठा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. आश्ले. रे. एषु. भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा। इसमें संशय नहीं। पहले में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो. कृ. आर्द्रा. घ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो सर्वोत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुर्वेक्षं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौडाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ ६ गर्दभ, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। [illegible] व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमि [illegible] पूर्वक [illegible] एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गढ्ढा [illegible] उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, [illegible] मध्यम, [illegible] हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा [illegible] जल दीखने लगे अथवा मुरड़ी निकली जब तक [illegible] हाथ गहरी [illegible] मनुष्य के बराबर खोदे। [illegible] [illegible] आयु की वृद्धि हो और जो पृथ्वी [illegible] निकले तो धन नाश हो और जो [illegible] मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—[illegible] [illegible] [illegible] गृहारम्भ में [illegible] भाद्रपद और कार्तिक मास [illegible] [illegible] [illegible] कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, [illegible] उत्तरा ३. [illegible] [illegible] [illegible] भूमिशयन से रहित दिनों में [illegible] गृहारम्भ मुहूर्त शुभ [illegible] [illegible] में [illegible] तथा [illegible] शुभ होने पर गृहारम्भ [illegible] मासादि का विचार नहीं करना। गृहारम्भ में [illegible]

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसद्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द. कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असद्

विशेषः—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू.षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुध. वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुखाप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहधननाशः	सम्पत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम् एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे त्रिशून्यशेषभुवि मस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः

अथ चुल्लिचक्रविचारः

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं. बु. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यक [illegible] इन स्थानों में शुभग्रह हो, ३।६।११।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हो, जन्म लग्न ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वें स्थान शुद्ध हो, चन्द्र तारा शुभ हों, और कुम्भ चक्र की शुद्धि हो तो [illegible] कन्या [illegible] पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ [illegible] को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-[illegible] इत्यादि के [illegible] बनवाये हुए नए घर में भी श्रा. का. मार्ग. पौ. मास में [illegible] पुष्य, स्वा. और [illegible] नक्षत्रों में तथा शुभ [illegible] में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

सति राहुमुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्.

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सि. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.पा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हों, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपनलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिवे ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः ।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३ । ५ । ७ । ८। १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १ । २ । ३ । ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्ताविरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः ६ । ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । एवं वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मूहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

॥ श्रीरामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि २४ तक मृत्यु, राजभय, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ शुक्लपक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० म. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चोलोपनीतादयखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले शान्तिककरणे महाविधौ । देवखातभवने सुतोत्पादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्भंगे गृहे वाऽपि विवाद शत्रुविग्रहे । शान्तिकार्ये [illegible] ॥

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह हो कम बचने वाले का ऋणी जानना। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १, ५, ६, ११, १५, तिथि मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा.पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामापष्ठषष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनवज्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भेषु [illegible] रिक्तवारेषु शुभलग्ने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः—[illegible] रौद्रा (आर्द्रा)—[illegible] भूमे संजायते रजः।
[illegible] बीजवापं परित्यजेत् ॥

[illegible]मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. [illegible] सहित नक्षत्रों में शुभ है, [illegible] रिक्तातिथियां और पौष चैत्र को छोड़कर चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है।

[illegible] मृ. पुन. पु. ह. चि. [illegible] नक्षत्र में गौ [illegible] बेचना शुभ है। [illegible], [illegible] ५ तक हानि, [illegible] तक [illegible], २१ तक [illegible], [illegible] तक महालाभ, [illegible] तक वृद्धि, २७ तक भय होता [illegible] वृषभ (बैल) [illegible] महिषी (भैंस) [illegible] समान फल जानें। [illegible] फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस [illegible])

[illegible] (गृहादि आदि) [illegible]							
६	२	४	८	४	४	४	नक्षत्र
[illegible] शुभ	[illegible]	[illegible] नष्ट	[illegible] शुभ	[illegible]	[illegible]	[illegible] शुभ	संख्या फलम्

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. म. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः**—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त।

कृष्ण पक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

मशीन ो चालू करने का मुहूर्त

धनि, अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म-नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्यु-त्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले.म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या।

दिग्द्वारलग्नानि

१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५। ९	मध्यम
४।८।१२	१।५। ९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५। ९	२।६।१०	म० म०

तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प	उ.
चं. श.	सं.[illegible]	गु	शु.बु.	सू.बु.	भौम	मं.	बु.श.	वारः	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा [illegible]सुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे [illegible]। [illegible] वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि [illegible] शनिवारे शुभे [illegible] दोषनाशक ॥२॥

यात्रा में कालज्ञान

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखे नेष्ट पृष्ठे शुभ

योगिनीवासचक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्याह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घटयात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगण दोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिदोषं, यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति। और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। बिजयदशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त मे ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा मे प्रस्थान [illegible] रख देना चाहिए। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो*

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.
३।।	शु.	चं.	का	उ	अ.	रो.	ल.
७।।	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८।।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२।।	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा ससुतस्त्री, गोरीकन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभशकुनानि...वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिंका दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना भैंस पर सवार नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभतथा कष्टप्रद है

राजदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीत	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मित्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
[illegible]	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रामुहूर्तः--चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र.ध. पुष्य भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः---मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू. ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि ; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः स. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है---विशेषः---प्रवेशान्निर्गमस्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावपि ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे.	क.	बु.	वि.	म.	शि.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	बु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श.	श.	रे.	श.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	क.	क.	मि.	वृश्चिक	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चिक	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा.	पौ.	मा.	मा.	पौष	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	चा.	का.	घातमास
वि.	शु.	व.	बु.	धी.	शू.	गं	शुभ.	वै.	वं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	२	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	"
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

[illegible] घातचन्द्र [illegible] और [illegible]

युद्ध, विवाह, यज्ञोपवीत, [illegible] आदि कार्यों में [illegible] की आवश्यकता नहीं है। तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि [illegible] [illegible]

"घाततिथिर्घातवार [illegible] च। [illegible]"

[illegible] दक्षिण निर्देश

[illegible] फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में [illegible] अशुभ [illegible] होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही [illegible] (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। [illegible] के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल पृथक होता है।

अथांगविभागे पल्ली-(छिपकली, कोड़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठ	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वाममणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि---यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म---पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्---छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा-छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाष। छींक दाहिनी द्रव्य बिनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ श्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ श्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे।

अथ शुभ छिक्का---आसने शयने चैवे दाये चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव छिक्काशुभा [illegible] ॥ एक नाक दो छींक। काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में अशुभ शकुन

[illegible] को स्याल। [illegible] के कान। एक सूत्र दो बैल उसार। [illegible] की भी लाव। कहे भड्डरी अशुभ विचार ॥ तीन [illegible] जो [illegible]। सन्मुख आवें जो [illegible] तो निज कारज भंग, जतिहि कुसगुन जानिबे ॥ [illegible] जो अंग, अथवा [illegible] पद।

यात्रा में कालज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट पृष्ठे शुभ	

योगिनीवासचक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्याह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिदोषं, यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति। और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। बिजयदशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त मे ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा मे प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी [illegible] को रख देना चाहिए। [illegible] से तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का महुर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो॰

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.
३॥	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरीकन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभशकुनानि...वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना भैंस पर सवार नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभतथा कष्टप्रद है

राजदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के स्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रामुहूर्तः--चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र.ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः--मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ स्थिर लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि। ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः स. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है--विशेषः--प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावपि॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सिं.	म.	म.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	गु.	शु.	मं.	बुध.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ब.	ब.	मि.	वृश्चिक	वृश्चिक,	मी.	क.	कन्या	वृश्चिक	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	ज्ये.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	शू.	व.	श.	श्री	वृ.	गं	वृध.	वै.	वं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	३	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	"
११	१५	१२	१३	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

युद्ध, विवाह, [illegible] कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा [illegible] शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।

"घाततिथि[illegible] [illegible] यात्रायां [illegible]"

वाम दक्षिण निर्णय

[illegible] पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में [illegible] करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ [illegible] फल होता है। [illegible] पल्लीपात का कहा नहीं [illegible] (गिरगिट) के चढ़ने का [illegible] के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांगविभागे पल्ली-(छिपकली, कोड़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठ	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वाममणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपार्श्वे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि--यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म--पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्--छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा-छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी वास फल हीनी। सन्मुख छींक लड़ाई साप; छींक पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे॥१॥ नीची छींक होय जयकारी; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे।

अथ शुभ छिक्का--आसने शयने दाने पाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्काश्शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

यात्रा में अशुभ शकुन

[illegible] [illegible] की स्यार; [illegible] के काल। एक मूड़ दो हंस लवार। [illegible] सहबरी अशुभ विचार॥ [illegible] की [illegible] बार; सन्मुख आवे जो ली भार। [illegible] भूमि पद; तो निज कारज भंग, अतिहि कुशगुन जानिये॥

सिद्ध होरा मुहूर्त

सूर्य की होरा—टेण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।
चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।
मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकदमा के कार्यों में उत्तम होती है.
बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।
गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।
शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य के लिए शुभ होती है।
शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिश्शास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घन्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन-रात के २४ घन्टों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी यानि एक घन्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घन्टे की होरा समझनी चाहिए।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घन्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्धयर्थ ग्रह-होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.
चं.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.-	बु.	चं.	मु.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	यु.	सू.	शु.	बु	च.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु	बु	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	पू.	शु.	ब.	चं.	श.	बृ.	म.	सू.	श.	बृ.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	श.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	बु.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्धयर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और अठारहवें घन्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे वा तेरहवें अथवा सत्रहवें घन्टे के बाद एक-एक घन्टे तक की गुरु की होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में कार्यों के लिए भी समझकर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन गुरुवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़कर शुक्र की होरा में जाएं तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों को टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्यः नई गद्दी-स्थापना वा नई बही लगाने का शुभ मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़कर शुभ लाभ वा अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादिवारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या०	ति. ५ न. ह.	ति. ६ न. मृ	ति. ७ न. अ	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोगः (अधमतिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९। १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योगः	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथिः	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथिः	४	६	७	२	८	९	७.
हुताशन तिथिः	१२	६	७	५	९	१०	११
रव्या जन्मति	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिकमुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	१२
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	म	वि	आ.	मू.	कृ.	रो.	ह.

अंगस्फुरणफलम्

बच्चों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के शुभ हैं।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आन्त्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	मनुष्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्वं	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	[illegible]वृद्धि		[illegible]

इन्हीं अंगों में तिल, लक्षण, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी उक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। [illegible] के हाथ में तिल या दाग हो तो जय होती है। सामान्य व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	[illegible]	शुभ फल
धूल बर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	भूकम्प निर्घात	[illegible]
पत्थर बर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का वध	धूमकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जलक्षय	उल्टी ऋतु	[illegible]	[illegible]	राजनाश
बिजली टूटे	जल पूर्ण	[illegible]	राजविनाश	[illegible]	राजनाश
दिनअंधेरा	[illegible]	भूडोल	राजाओंमेंविग्रह	[illegible]	प्रजानाश
[illegible]	अकाल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमण्डल	राज्य नाश	[illegible]	[illegible]
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मण्डल	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में [illegible]	
रक्तमंडल	युद्ध हो	[illegible]	बहुत वर्षा	[illegible]	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक [illegible]	[illegible]
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ब्रह्मास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	[illegible]	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यग फलं-विधिश्च । तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदाप्याह--
	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त	विपत्ति	सुख	फलम्	रवौ भौम व्यतिपाते संक्रांतो
तापम्				हानि		सुयोग		विधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोभय	०	पातन	विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न प्रर्वसु

विशेषः--यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्--मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलङ्क करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करना है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्ट कार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

अथकाकवचनफलविचार--काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत। लाभच्छेदस्तथ सौख्य भोजन च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्।

मुष्टिचक्र



अङ्कप्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावे। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।३।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम, क[illegible]

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रखे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, अनेक बालक वृद्ध, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई कलर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में तैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊं, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अथर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना है। बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लाल वस्त्र पहिनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र-कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु-कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महलध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती हुए देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष-परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाय। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। सूखी नदी आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट व मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

सुगम प्रश्न फल विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब श्रद्धापूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रखें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रखी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये--आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रखी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है-- "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहाँ पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट---प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुल रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र कर्णोमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

मन्त्र सिद्ध करने का फल (२०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चिन्त अच्छा होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना मुश्किल से पूर्ण होगी।
५ आरम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

कियाणा लेने का फल (२१)

१ कियाणा लेने से अच्छा लाभ है।
२ कियाणा लेने में लाभ थोड़ा है।
३ कियाणा लेने में हानि है।
४ कियाणा लेने से हानि है, न लो।
५ कियाणा मत लो नुकसान है।
६ कियाणा लेने में लाभ है।
७ कियाणा महंगा होगा।
८ लाभ न होगा मत लो।
९ कियाणा लेने में लाभ होगा।

बाग लगाने का फल (२२)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने से लाभ नहीं।
४ बाग अधिक पैसा का खायेगा।
५ जंगली वस्तु बाग को नष्ट करेगी।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ भ्रमण मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुन विचारके गमन करो लाभ होगा
७ यात्रा पीड़ादायक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ लाभ कम पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साथी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट डालेंगे यह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठहर गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विवाद न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से जय मिले।
८ सुलह हो जायेगी।
९ शत्रु के कारण पश्चात्ताप होगा।

राजा के दर्शन का फल (२३)

१. विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ हुआ चाहता है बैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है।
७. राजा आदर करे जगत् में नाम हो।
८. इस कार्य में मत पड़ो पश्चात्ताप होगा।
९. राजा का दर्शन सफल होगा।

बन्ध-मोक्ष फल २६)

१ खर्च करने से शत्रु छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३ जल्दी छूटेगा देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जायगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रखे, स्वस्थ चित से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, अनेक बालक वृद्ध, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में तैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व झाड़ू, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, आर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चर्बी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लाल वस्त्र पहिनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज़ को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र-कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महलध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती हुए देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझे। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष-परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाय। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। सूखी नदी आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट व मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ग तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

सुगम प्रश्न फल विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये---आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है--- "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहाँ पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट---प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

मन्त्र सिद्ध करने का फल (२०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन्त्र निश्चित सफल होगा।
३ यह साधना ठीक नहीं।
४ साधना सुगमता से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

क्रियाणा लेने का फल (२१)

१ क्रियाणा लेने में अच्छा लाभ है।
२ क्रियाणा लेने में लाभ थोड़ा है।
३ क्रियाणा लेने में हानि है।
४ क्रियाणा लेने में हानि है, न लो।
५ क्रियाणा मत लो नुकसान है।
६ क्रियाणा लेने में लाभ है।
७ क्रियाणा महंगा होगा।
८ लाभ न होगा मत लो।
९ क्रियाणा लेने में लाभ होगा।

बाग लगाने का फल (२२)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक पैसा खा जायेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग साधारण होगा।
८ बाग लगाना कठिन नहीं कुछ होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुन विचारके गमन करो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ादायक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से गवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पता है तो देखो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहाँ कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से लौट गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ यह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण धननाश होगा।

राजा के दर्शन का फल (२९)

१. विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ हुआ चाहता है वैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन से कोई लाभ नहीं है।
७. राजा आदर करे जगत में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो पश्चात्ताप होगा।
९. राजा का दर्शन अफल होगा।

बन्ध-मोक्ष फल २६)

१ खर्च करने से शीघ्र छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३ जल्दी छूटेगा देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जायगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहाँ से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेनी देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की गुंजाइश नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ सट्टे व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

खेती करूं या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को देदी।
७ माल अथवा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोटीआयु का है माल मिलेगा।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को यत्न से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुरव्वत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ बुराई नहीं है।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसेरोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ अलमिट्टी कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन मुकदमा करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रहकी दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

संतान भाग्य में क्या है ? फल (२३)
१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतशांति से होगी।
३ संतान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ नेमव्रत से होगी।
६ गया या पिहोए विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सप्ताह श्रवण से होगी।

धर्म-दीक्षा-फल (२४)
१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो।
३ धर्म करते रोग हो।
४ धर्म से यश बढ़े।
५ धर्म से आकुलता हो।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे।
७ धर्म करते मृत्यु हो।
८ धर्म से वृत्ति उखड़ें।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

मकान बनाने में हानि-लाभ (२५)
१ मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२ अधिक दिनों में पूरा होगा।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो।
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा।
७ इस धरती से कुछ धन मिलेगा।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

कुश्ती लड़ने का फल (२७)
१ प्रभु का ध्यान कर जीतेगा।
२ सावधान, शत्रु प्रबल है।
३ मत लड़, गड़बड़ मचेगा।
४ लड़ाई-झगड़े का भय है।
५ कुश्ती कर, जीतेगा।
६ मत घबड़ा, जीतेगा।
७ जीतने में शत्रु विघ्न करेंगे।
८ तेरे हारने का योग है।
९ विजय होगी।

इच्छा पूरी होगी, कि नहीं ? (२९)
१ इच्छा पूर्ण होगी २ इच्छा पूर्ण होगी
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४ निष्फलता है।
५ देर से होगी।
६ इच्छा पूर्ति में विघ्न।
७ इच्छा पूर्ण होगी।
८ इच्छा पूर्ण न होगी।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

शत्रु दमन होगा या नहीं (२६)
१ तुम्हारा शत्रु दुष्ट है, दमन नहीं होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी निश्चय जीत होगी।
३ तुम्हारी शत्रु द्वारा विशेष हानि है।
४ किसी मित्र की सहायता से भला हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया, क्यों डरते हो ?
६ विश्वास मत करना, घात करेगा।
७ राजा की सहायता से सब भय मिटेगा।
८ दुश्मन के साथ तुम्हारी सुलह होगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्य-नाश होगा।

तबादले का प्रश्न-(३०)
१ तबादला होगा ९ देरी से होगा।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा।
३ तबादले में विघ्न आवे।
४ तबादला अभी नहीं।
५ तबादला होगा।
६ तबादले में देर है।
७ तबादला जरूर होव।
८ अभी ठहरो।

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से पाला पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

दुकान करूं या नहीं ?
१. दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२. दुकान करने से लाभ नहीं।
३. दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४. दुकान से लाभ है, परन्तु खर्च बहुत होगा
५. दुकान मत करो, हानि है।
६. लाभ-हानि समान हैं, न करो।
७. लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८. दुकान में लाभ न होगा।
९. दुकान में लाभ अच्छा होगा।

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालांल्लोकयन् शास्त्रसिद्धान् ।
सकलभरतभूमौ किञ्च पञ्चापदेशे कर-कलनमुहूर्त्तान् संलिखामीह शुद्धान् ॥

सं. २०२६ में विवाहादि मुहूर्त

समयशुद्धि—

(१) शुक्र अस्त—इस वर्ष शुक्र दो बार अस्त होगा । पहिली बार चैत्र प्रविष्टा २३ से २७ (५ से ९ अप्रै. १९६९) तक एवं दूसरी बार पौष प्रविष्टा १४ से फाल्गु. प्रविष्टा ५ (२८ दिसं. १९६९ से १६ फर. १९७०) तक शुक्र अस्त रहेगा ।

(२) गुरु अस्त—आश्वि.. प्रविष्टा ९ से कार्त्ति. प्रविष्टा ५ (२४ सितं. से २० अक्तू. १९६९) तक गुरु अस्त रहेगा ।

(३) आषा. प्रविष्टा २ से ३१ (१५ जून से १४ जुला. १९६९) तक आषाढ़ अधिक मास रहने से शुभ कृत्य नहीं हो सकेंगे ।

यहाँ क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है । सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पञ्चाङ्गकार इसकी [illegible] गणित-प्रक्रिया से [illegible] स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा [illegible] है ।

इन मुहूर्तों में जहाँ युति, वेध, [illegible] आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, वहाँ [illegible] के विवाह मुहूर्त कात्यायन ऋषि के मत से मुहूर्त [illegible] दिए हैं । [illegible] 'कारस्कर गृह्य सूत्र' आदि में इनका निर्देश है । [illegible]

—वि. सं. २०२६ में शुद्ध विवाह मुहूर्त—

वैशा. शु. ३ शनि (वैशा. प्र. ७) रोहि. [illegible] ल. १०,
„ „ ४ रवि (वैशा. प्र. ८) रोहि. [illegible] दि. ल. ३, ४
„ „ „ „ ५ चन्द्र (वैशा. प्र. ९) मृग. [illegible] दि. ल. ३, ४,
धूलिमुख, ९ (च. दा.),
„ „ ९ शनि (वैशा. प्र. १४) मघा [illegible] ल. गोधू., ९,
„ „ १० रवि. (वैशा. प्र. १५) मघा [illegible] दि. ल. ३, ४,
„ „ ११ चन्द्र (वैशा. प्र. १६) उ.फा. [illegible] ल. ९,
„ „ १२ मंगल (वैशा. प्र. १७) उ.फा. [illegible] ल. ३,
„ „ १३ बुध (वैशा. प्र. १८) चित्रा [illegible] ल. धूलि मुख, [illegible]
„ „ १४ गुरु (वैशा. प्र. १९) चित्रा [illegible] दि. ल. ३, ४,

वैशा. शु. १४ गुरु (वैशा. प्र. १९) स्वा. ।।।ऽ श. ऽ रो. ।ऽ।। ल. १० (शु. दा.)
ज्येष्ठ कृ. ४ चन्द्र (वैशा. प्र. २३) मूल ।।।।।।ऽ।। दि. ल. ३ (चं. दा.), गोधू., १०.
„ „ ६ बुध (वैशा. प्र. २५) उ. षा. ऽ चं. ऽ।।।।।।ऽ दि. ल. ४ (चं. दा.),
„ „ ७ गुरु (वैशा. प्र. २६) श्रव. ।।।।ऽ चो. ।ऽ।। दि. ल. ४ (चं.दा.) धूलि मुख, ९,
„ „ ८ शुक्र (वैशा. प्र. २७) धनि ऽ शु. ।।।।ऽऽ।। दि. ल. ४ (१० घं. ४ मि. बाद) चं.दा.) धूलिमुख

ज्येष्ठ शु. १ शनि (ज्ये. प्र. ४) रोहि. ।।ऽ बु. ।।।।।। ल. धूलिमु. '(मं. दा.), १०
„ „ २ रवि (ज्ये. प्र. ५) मृग. ।।।ऽ मं. ऽ नृ ऽ।। दि.ल. ४, धूलिमुख (मं.दा.) रा.ल. ९ (९ घं. ५० मि. बाद (चं.दा.)
„ „ ३ चन्द्र (ज्ये. प्र. ६) मृग. ।।।ऽ मं. ऽ नृ ऽ।। दि.ल. ४ (१० घं. १ मि. तक)
„ „ ८ शनि (ज्ये. प्र. ११) मघा ।।।।।।ऽ।। ल. धूलिम (मं.दा.), ९,
„ „ ९ चन्द्र (ज्ये. प्र. १३) उ.फा. ।।ऽ के. ऽ शु. ।ऽ अग्नि ऽ।। दि. ल. ४, धूलिमु. (मं. दा.) रा.ल. ९, १०
„ „ १३ गुरु (ज्ये. प्र. १६) स्वाती ऽ सू. ।।।ऽ शु.दा. ।।।। दि.ल. ३, ४, ५,
„ „ १४ शुक्र (ज्ये. प्र. १७) अनु. ऽ गु. ।।।ऽ चो. ।ऽ।। ल. ९ (९ घं. ४७ मि. से १० घं. १८ मि. तक)
„ „ १५ शनि)ज्ये. प्र. १८) अनु. ऽ गु. ।।।।।ऽ।। दि.ल. ४, ५,
प्र आषा.कृ. १ रवि. (ज्ये. प्र. १९) मूल ऽ मं. ऽ।।ऽ रो. ।।।। ल. गोधू. (मं. दा.) १०,
„ „ २ चन्द्र (ज्ये. प्र. २०) मूल ऽ मं. ऽ।।।।।।। दि.ल. ५ (१२ घं. ७ मि. तक)
„ „ ५ बुध (ज्ये. प्र. २२) श्रव. ।।।।ऽ अ. ।ऽऽ। दि.ल. ४ (चं.दा.) (१० घं. १५ मि. तक) गो धू. रा. ल. ९ (दिन के १०घं. १५ मि. बादकां. सा.
„ „ ६ गुरु (ज्ये. प्र. २३) धनि ऽ चं. ।।।ऽ अ. ऽ।ऽ। दि.ल. ४ (चं.दा.) (१० घं. १६ मि. तक)
„ „ ९ रवि. (ज्ये. प्र. २६) उ.भा.।।।ऽ के. ऽ चो. ऽऽ। दि. ल. ३, ४, धूलिमुख, (मं.दा) रा. ल. ९, १०,

द्वि. (शुद्ध) आषा. शु. ५ श. (श्राव. प्र. ४) उ.फा. ।।ऽ के. ।ऽ रा. ।ऽऽ।ऽ ल. ३, (४ घं. १ मि. बाद), सिंह लग्न में कर्त्तरी दोष, (५ रेखा)
„ „ ६ र. (श्राव प्र.. ५) हस्त ।।।।ऽ नृ, ।।।ऽ ल. धूलि मु., रा. ल. ३
„ „ १२ श. (श्राव. प्र. ११) मूल ऽ सू. मं. ।।।।।।। ल. धूलिमुख,
श्राव. कृ. २ बुध (श्राव. प्र. १५) धनि. ।।।ऽ बु. ऽ बृ. ऽ नृ. ऽ।।। ल. गोधूलि.
„ „ ४ शुक्र (श्राव. प्र. १७) उ.भा. ।।।।ऽ गु. के. ।।ऽ।। ल. ३
„ „ ५ शनि (श्राव. प्र. १८) उ.भा. ।।।।ऽ गु. के. ।।ऽ।। दि. ल ६ (चं. दा.)
„ „ ९ बुध (श्राव. प्र. २२) रोहि. ऽ बु. ।।।ऽ मं. ऽ अ. ।ऽ।। ल. ३.
„ „ १० गुरु (श्राव. प्र. २३) रोहि. ऽ बु. ।।।ऽ मं. ।।ऽ।। दि.ल. ६ (१० घं. १४ मि. तक)
„ „ १० गुरु (श्राव. प्र. २३) मृग. ।।।।।ऽऽ।। ल. ३ (२ घं. ४५ मि. बाद)
„ „ ११ शुक्र (श्राव. प्र. २४) मृग. ।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। दि.ल. ६, धूलिमु., १२ (गु.दा.)

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०२६)

भाव शु. ५ चन्द्र (भाद्र प्र. ३) स्वाती ।।।।ऽ अ. ।।।। ९. ३, ४,
" " ६ मंगल (भाद्र. प्र. ४) स्वाती ।।।।ऽ अ. ।।।। दि.ल. ६, धूलिमुख,
" " ९ शुक्र (भाद्र. प्र. ७) मूल ।।।ऽ शु. ।ऽ चो ।ऽ।ऽ ल. ३ (चं. दा)
" " १२ रवि (भाद्र प्र. ९) उषा. ऽ सू. ।।।ऽ शु. ।।।।। ल. गो धू. ४ (चं. दा.)
" " १३ चन्द्र (भाद्र. प्र. १०) उ.षा. ऽ सू. ।।।ऽ शु. ऽ रो. ।।।। दि. ल. ६,
" " १४ मङ्गल (भाद्र. प्र. ११) धनि. ।।।।।ऽ।। दि.ल. ९,
भाद्र. कृ. २ शुक्र (भाद्र. प्र. १४) उ.भा. ।।।ऽ गु. ऽ बु. के. ।।।।। दि ल ६ (७ घं. ५९ मि तक) (चं. दा.), गोधूलि.
" " ७ बुध (भाद्र. प्र. १९), रोहि. ऽ शु. ऽ।।।ऽ रो. ।ऽ।। दि. ल. ६, धूलिमु. रा. ल. ३ (१ घं. १६ मि. तक), ४ (२ घं. २८ मि. बाद)
" " ८ गुरु (भाद्र. प्र. २०) रोहि. ऽ शु. ऽ।।।ऽ रो. ।ऽ।। दि. ल. ७, (८ घं. ४२ मि. तक)
" " ८ गुरु (भाद्र. प्र. २०) मृग. ।।।।ऽ मं. ।ऽऽ।। ल. धूलिमुख, ४,
" " ९ शुक्र (भाद्र. प्र. २१) मृग. ।।।।ऽ मं. ।ऽऽ।। दि. ल. ६,
भाद्र. शु. २ शनि (भाद्र. प्र. २९) हस्त ।।ऽ बु. गु. ।।ऽ रो. ।।।। दि. ल. ८ (१२ घं. ३७ मि. तक क्रान्ति साम्य)), धा. ल. ४,
कार्त्ति. कृ. ९ चन्द्र (कार्त्ति. प्र. १९) मघा ऽ शु. ।।।।ऽ रो. ।ऽ।। ल. धूलिमु., ६, वृष में क्रान्ति साम्य
" " १० मंगल (कार्त्ति. प्र. २०) मघा ऽ शु. ।।।।।ऽ।। दि. ल. ८, ९,
कार्त्ति. शु. १ चन्द्र (कार्त्ति. प्र. २६) अनु. ।।।।ऽ चो ।।।। ल. ६,
" " ३ बुध (कार्त्ति. प्र. २८) मूल ऽ गु. ।।।।ऽ रो. ।।।। ल. ६,
" " ११ बुध (मार्ग प्र. ५) उ. भा. ।ऽ।।।।।।। दि. ल. ९, गोधूलि (५ घ. २६ मि. तक)
" " १२ गुरु (मार्ग. प्र. ६) रेव. ।।।।ऽ नृ. ।।।। दि. ल. ९, गोधूलि, रा. ल. ६ (३ घं. २० मि. तक) (चं. दा.)
मार्ग. कृ. १ चन्द्र (मार्ग. प्र. १०) रोहि. ।।।।ऽ सू. ऽ रो ।ऽ।। ल. ६,
" " २ मंगल (मार्ग. प्र. ११) मृग. ।।।।।ऽ।।। ल. ६ (२ घं. ३६ मि. तक)
" " १० गुरु (मार्ग. प्र. २०) हस्त ।।।।।।ऽ।ऽ दि. ल. ९,
" " १२ शनि (मार्ग प्र. २२) स्वा. ।।।।ऽ श. ऽ अ. ।ऽ।। दि.ल. ९, रा. ल. ६ (क्षीणचन्द्र)
माघ शु. १४ शुक्र (फाल्गु. प्र. ९) मघा ।।।ऽ ब. ।ऽ रो. ।ऽ।। ल. ९ (३ घं. २७ मि. बाद)
" " १५ शनि (फाल्गु. प्र. १०) मघा ।।.ऽ बु. ।ऽ रो. ।ऽ।। दि. ल. २,
फाल्गु. कृ. ४ बुध (फाल्गु. प्र. १४) चित्रा ।ऽ।।ऽ मं. ।।ऽ।ऽ दि. ल. २ (श. दा.), गोधू.
" " ७ शनि (फाल्गु. प्र. १७) अनु. ऽ बु. ।।।।ऽऽ।। दि ल. २ (चं. दा.), धूलिमुख, ९, १०
" " ९ चं. (फाल्गु. प्र. १९) मूल ।।।।।ऽऽ।। ल. धूलिमुख,
फाल्गु. शु. २ चन्द्र (फाल्गु. प्र. २६) रेव. ।।।।।ऽ।।। ल. ९, १०,

नोट—ऊपर विवाह मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेल्वे टाईम) के अनुसार यह निदश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें। पिछले वर्ष तक ऐसा निदश घड़ी पलों में या लग्न के अंशा के अनुसार किया होता था परन्तु अब स्टैण्डर्ड टाईम का प्रयोग होने पर सर्वसाधारण को भी यह पता चल सकेगा कि इस लग्न को केवल इतने बजे तक या इतने बजे के बाद ही मुहूर्त्त में स्वीकार किया गया है।

निवेद्यम्— अत्र क्वचित्स्मृतिदृष्टिदोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः ।
भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च वाणवेधं तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहान्तं कली पञ्च विवर्जयेत् ॥

नोट—(१) यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो, तो बारात एक दिन पहले ही पहुँच जानी चाहिए, क्योंकि एक दिन पहिले पहुँच कर सायंकाल तक शान्ति-कृत्य आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी।

(२) विवाहादि मुहूर्त्तों में वाण के विचार व तात्कालिक स्पष्ट-सूर्य के गतांशों पर ही किया जाना शास्त्र-सम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं।

(३) यदि गुरु, शुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, माईयां, पेड़ माष-हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिए।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र—अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा ये चार विवाह के नक्षत्र-विशेष कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिये ग्राह्य हैं। अ[illegible] ऋग्वेदी सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं। प्रमाणार्थ देखिये—पारस्करगृह्य (कात्यायन) —सूत्र—उदगयने आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्।)।१। (त्रिषु उत्तरादिषु)।२। हरिहरभाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदियषां तानि उत्तरादीनि तेषु, कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु—उ. फा. ह., चि., उ. षा., श्र., ध.। उ. भा. रे., अश्विनी।" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णयसागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर विवाह-नक्षत्र-निर्णय में पद व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—'चित्रा-श्रवण-धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि, चत्वारि, तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यं।'

और भी देखिये—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त्त में अग्राह्य है (मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है। ऐसे ही इस नक्षत्र चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्य (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए।

उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार चित्रादि नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त लिखें हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें।

यज्ञोपवीत-मुहूर्त्त सं. २०२६

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में पैदा हुए बालक प्रायः स्वजातियुक्त-गुण ९० प्रतिशत वीर्यगत-प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। यदि यज्ञोपवीतादि-वैदिक संस्कार वर्णोचित आयु एवं शुभ मुहूर्त्त में किए जायें तो उनमें उस वाक्यशक्ति का क्रमशः विकास होता है।

वैशाख शु. ५ चन्द्र (वैशा. प्र. ९) मृग. अभिजिति
ज्येष्ठ कृ. ५ मं. (वैशा. प्र. २४) उ.षा. अभिजिति (सामगानाम्)
ज्येष्ठ शु. ३ चं. (ज्ये. प्र. ६) आर्द्रा, अभिजिति,
प्र. आषा. कृ. २ चं. (ज्ये. प्र. २०) मूल. अभिजिति,
" " " ५ बु. (ज्ये. प्र. २२) श्रव. ल. ४ (१० घं. १५ मि. तक)
फाल्गु. शु. २ चं. (फा. प्र. २६) उ. भा. अभिजिति,
" " ३ मं. (फा. प्र. २७) रेव. (१३ घं. ० प. तक) सामगानाम्

विशेषः—अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर किसी सत्तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। ऋषितर्पण का दिन (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा) भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

—:o:—

द्विरागमन मुहूर्त्त (सं. २०२६)

वैशा शु. ५ चं. (वै. प्र. ९) मृग.
" " ६ बु. (वै. प्र ११) पुन. (घ. २।४०उ.)
" " ७ गु. (वै. प्र. १२) पुन (घ. १०।० या.)
ज्ये. कृ. ६ बु (वै. प्र. २५) उ.षा. (घ. २७।५५ या.)
" " ७ गु. (वै.प्र. २६) श्रव.
" " ८ शु. (वै. प्र. २७) धनि. (प्रातः १० घं. ४ मि. से १२ घं. ५५ मि. तक)
कार्ति. शु. ११ बु. (मार्ग. प्र. ५) उ.भा. (घ. २६।१५ या.)
" " १२ गु. (मार्ग प्र. ६) रेवती
मार्ग कृ. १ चं. (मार्ग. प्र. १०) रोहि. (घ. ५।५ उ.)
" " २ बु. (मार्ग. प्र. १२) मृग. (घ. १४।३६ या.)
मार्ग कृ. ४ शु. (मार्ग. प्र. १४) पुन. (घ. १३।३२ उ.)
" " १० गु. (मार्ग. प्र. २०) हस्त (घ. १२।२ या.)
" " ११ शु. (मार्ग प्र. २१) हस्त (घ. २।३४ या.)
मार्ग शु. १ बु. (मार्ग. प्र. २६) मूल
फाल्गु. कृ. ११ बु. (फा. प्र. २१) उ.षा.
" " १२ गु. (फा. प्र. २२) श्रव.
फाल्गु. शु. २ चं. (फा. प्र. २६) रेव. (घ. १६।४५ उ.)

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिन के अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं।
यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०२६)—

वैशा शु. ५ चं. (वै. प्र. ९) मृग. अभिजित् मुहूर्त्त में
" " ६ बु. (वै. प्र. ११) पुन. ल. ६
" " ७ गु. (वै. प्र. १२) पुन. (१० घ. ० प. तक)
" " [illegible] (वै. प्र. २१) अनु. अभिजिति
ज्ये. कृ. [illegible] (वै. प्र. २५) उ.षा. ल. ६, ३,
" " ६ बु. (वै. प्र. २५) श्रव. अभिजिति
" " ७ गु. (वै. प्र. २६) धनि. अभिजिति
" " ८ शु. (वै. प्र. २७) शत. (घ. १५।१५ तक)
" " ९ श. (वै. प्र. २८) मृग अभिजिति
ज्ये. शु. २ र. (ज्ये. प्र. ५) मृग (घ. १४।१० तक)
" " ३ चं. (ज्ये. प्र. ६) पुन. ल. ३,
" " ५ बुध (ज्ये. प्र. ८) स्वा. अभिजिति,
" " १३ गु. (ज्ये. प्र. १६) अनु. अभिजिति,
" " १५ श. (ज्ये. प्र. १८) [illegible]

प्र आषा. कृ. ६ गु. (ज्ये. प्र. २३) धनि. (घ. १२।१२ तक)
" " ७ शु. (ज्ये. प्र. २४) शत. अभिजिति
फाल्गु. कृ. ७ (फाल्गु. प्र. १७) अनु. ल. २, अभिजित्
" " ८ र. (फा. प्र. १८) अनु. (घ. ३।७ तक)
फाल्गु. शु. २ चं. (फा. प्र. २६) उ.भा. अभिजिति

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सं. २०२६)

ज्ये. कृ. १ श. (वै. प्र. २२) अनु. अभिजित् में
श्राव. कृ. ९ बु. (श्राव. प्र. २५) धनि. ल. ६,
" " [illegible] गु. (श्राव. प्र. २६) शत. (घ. १५।४१ तक)
श्राव. शु. १३ च. (श्राव. प्र. १०) उ.भा. अभिजित् में
[illegible] १५ श. (भाद्र प्र० १२) शत. ल. ६
[illegible] (कार्ति. प्र. १४) उ.षा. अभिजिति,
[illegible] शु. ११ [illegible] (मार्ग. प्र. ६) रेव. अभिजिति,
मार्ग. कृ. २ [illegible] ल. ९,

[गृह-प्रवेश-मुहूर्त्त] (सं०२०२६)

ज्ये. कृ. ८ शु. (वै. प्र. २७) धनि. अभिजिति (पुराने घर में प्रवेश)
" " ९ श. (वै. प्र. २८) शत. (घ. १५।१२ उ.)
ज्ये. शु. ११ बु. (ज्ये. प्र. १५) चित्रा (घ. ३५।१७ उ.)
" " १३ गु. (ज्ये. प्र. १६) स्वा., अभिजित् में (पुराने घर में प्रवेश)
फा. शु. ६ गु. (फा. प्र. ३०) रोहि. अभिजिति, अत्यावश्यके (मासांत)
" " ७ शनि (चै. प्र. १) रो. (घ. ७।५५ या. (संक्रान्ति) अत्यावश्यके

चार स्वयंसिद्ध-मुहूर्त्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।
(२) अक्षय तृतीया (वैशा. शुक्ल तृतीया)

(३) विजयादशमी (आश्विन शुक्ल दशमी)
(४) दीपावली (प्रदोष के समय)

ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें "अणपुच्छ मुहूर्त" कहती है। इनमें कोई भी शुभ कार्य करने के लिए नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

अशुद्ध-विवाह-मुहूर्त (सं० २०२६)

यहां हम अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की सूची दे रहे हैं। साथ २ दोषों का निर्देश किया गया है, ताकि इन मुहूर्त्तों की अशुद्धता का कारण स्पष्ट हो जाए—

. वर्षारम्भ से वैशाख कृ. ११ शनि तक सूर्य मीनस्थ है।

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०२६)—

वैशा. कृ. १२ (संक्रान्ति दिन) क्षीण चन्द्रमा
वैशा. शु. ४ रवि मृग. (लग्नाभाव)
" " १२ मं. हस्त)
" " १३ बु. हस्त) (राहुवेध)
" " १५ शु. स्वा. (व्यतीपात)
ज्ये. कृ. १ श. अनु.) (सूर्यवेध)
" " ३ र. अनु.)
" " ५ मं. उ.षा.)दग्धा, लग्नाभाव)
" " ६ बुध श्रव. (भद्रा, लग्नाभाव)
" " ७ गु. धनि. (लग्नाभाव)
" " १० र. उ.भा.) (राहुयुतिः)
" " ११ चं. उ.भा.)
" " ११ चं. रेव.)
" " १२ मं. रेव.) (केतुवेध, शुक्रयुति)
" " १३ बु. अश्वि. (संक्रान्ति, शनियुति)
ज्ये. शु. २ र. रोहि. (लग्नाभाव)
" " ७ शु. मघा (व्याघात, भद्रा, लग्नाभाव)
" " ८ र. उ.फा. (शु. पाद वेध, केतुयुति लग्नाभाव)
" " ९ चं. हस्त) (राहु वेध)
" " १० मं. हस्त)
" " १० मं. चित्रा (व्यतीपात, भद्रा)
" " ११ बु. चित्रा (तिथिक्षय, व्यतीपात)
" " ११ बु स्वा (लग्नाभाव)
प्र आषा. कृ.३ मं. उ.षा. (क्षीणतिथि, मृत्युवाण)
" " ५ बु. उ.षा. (मृत्युवाण)
" " ६ गु. श्रव. (नक्षत्रान्त)
" " ८ श. उ.भा. लग्नाभाव
" " ९ र.)
" " १० चं. रेव.) केतुवेध
" " ११ मं. अश्वि.)
" " १२ बु. अश्वि) शनि शुक्र युति

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०२६)

आषाढ़ अधिक मास

द्वि. आषा. शु. ३ गु. मघा (मृत्यु. व्यती. चन्द्र कर्त्तरी)
" " " ४ शु. मघा (व्यती. मृत्यु. चं. कर्त्तरी)
" " " ६ र. उ.फा. (दग्धा, सिंह लग्न में कर्त्तरी)
" " " ६ चं. हस्त (सिंह में कर्त्तरी)
" " " ७ मं. चित्रा (राहुवेध)
" " " ९ बु. स्वा. (सिंह में कर्त्तरी)
" " " १०गु. अनु.) (शनिवेध)
" " " ११ शु. अनु.) (भौमयुति)
" " " १३ र. मूल (वैधृति, मृत्यु)
" " " १४ चं. उ.षा. (भद्रा, शुक्रवेध सिंह में कर्त्तरी)
" " " १४ चं. श्रव. (लग्नाभाव)
" " " १५ मं. श्रव. (तिथिक्षय, सिंह में कर्त्तरी)
" " " १५ मं. धनि (क्षीणतिथि बुधवेध, लग्नाभाव)
श्राव. कृ. ५ श. रेव.) (केतुवेध)
" " ६ र. रेव.)
" " ६ र. अश्वि.) (भुजंगपात)
" " ७ चं. अश्वि.)
श्राव. शु. १ गु. मघा (क्षीण चन्द्र)
" " २ शु. उ.फा. (मासान्त)
" " ३ श. उ.फा. (संक्रान्ति)
" " ३ श. हस्त (संक्रान्ति)
" " ४ र. हस्त (भद्रा, मृत्यु, लग्नाभाव)
" " ४ र. चि.) (राहुवेध)
" " ५ चं. चि.) (
" " ७ बु. अनु.) (शनिवेध)
" " ८ गु. अनु.)
" " १० श. मू. (दग्धा, लग्नाभाव)
" " १३ चं. श्रव.) (सूर्यवेध)
" " १४ मं. श्रव.)

श्राव. शु. १५ बु. धनि (मृत्युवाण)
भाद्र. कृ. २ शु. रेव.) (भुजंगपात)
" " ३ श. रेव.) (केतुवेध)
" " ३ श. अश्वि.) (सूर्यवेध)
" " ४ र. अश्वि.)
भाद्र. शु. १ शु उ.फा. (क्षीण चन्द्र, केतुयुति)
" " १ शु. हस्त (लग्नाभाव)
" " ३ र. चित्रा (राहुवेध)
" " ४ चं. स्वा. (मासान्त)
" " ६ बु. अनु. (शनिवेध)
" " ७ गु.मू.)
" " ८ शु. मू.) (भौमयुति, भद्रा)
" " ९ श. उ.षा. (लग्नाभाव)
" " १० र. उ.षा. (चन्द्रकर्त्तरी)

गुरु अस्त

आश्वि. शु. १४ शु. अश्वि.)केतुवेध)
" " १५ श. अश्वि,)
कार्ति. कृ. २ चं. रोहि. (मृत्युवाण)
" " ३ मं. रोहि. (लग्नाभाव भद्रा. परिघार्ध)
" " ३ मं. मृग.) (भौमवेध)
" " ४ बु. मृग.)
" " ११ बु. उ.फा. (मृत्युवाण)
" " ११ गु. उ.फा. (वैधृति)

" " ११ गु. हस्त (दग्धा, लग्नाभाव)
" " १२ शु. हस्त (क्षीण चन्द्र)
" " १२ शु. चित्रा (शु. युति, राहुवेध
कार्ति. शु. २ मं. अनु. (लग्नाभाव)
" " ४ गु. मू. (भद्रा)
" " ५ गु. उ.पा. (मासान्त, भुजंगपात)
" " ६ श. उ.पा.श्रव. (संक्रान्ति)
" " ७ र. श्रव. भौमयुति
" " ७ र. धनि (भद्रा, मृत्यु, लग्नाभाव)
" " ९ मं. उ.भा. (तिथिक्षय)
" " ११ बु. रेव. (लग्नाभाव)
" " १२ गु. अश्वि. (व्यतीपात)
" " १३ शु. अश्वि (केतुवेध)
मार्ग. कृ. २ मं. रोहि. (लग्नाभाव)
" " २ बु. मृग. (मृत्युबाण)
" " ६ र. मघा (भद्रा)

" " ७ चं. मघा (वैधृति)
" " ८ मं. उ.फा. (लग्नाभाव)
" " ९ बु. उ.फा. (रेखा ५)
" " ११ शु. चित्रा (राहुवेध)
मार्ग. शु. १ बु. मू. (भुजंगपात)
" " २ गु. उ.षा. (लग्नाभाव, तिथिक्षय)
" " ४ शु. उ.षा. श्रव. (चन्द्र कर्त्तरी)
" " ५ श. श्रव. (चन्द्र कर्त्तरी)
" " ५ श. धनि. (मृत्युबाण, भौमयुति)
" " ६ र. धनि. (मासान्त, भौमयुति, मृत्यु.)
सूर्य धनःस्थ एवं शुक्रास्त
फाल्गु. कृ. १ र. उ.फा.) (भौमवेध, मृत्युबाण)
" " २ चं. उ.फा.)
" " २ चं. हस्त) (भुजङ्गपात)
" " ३ मं. हस्त)
" " ३ मं. चित्रा (शुक्रवेध, दग्धा, लग्नाभाव)

" " ५ गु. स्वा. (राहुवेध)
" " ६ शु. स्वा. (नक्षत्रान्त)
" " ८ र. अनु. (नक्षत्रान्त)
" " १० मं. उ.षा. (व्यतीपात, मृत्युबाण)
" " ११ बु. उ.षा. (मृत्यु, लग्नाभाव)
" " ११ बु. श्रव. (परिघार्ध)
" " १२ गु. श्रव. (परिघार्ध, क्षीण चन्द्र)
फाल्गु. शु. १ र. उ.भा.)
" " २ चं. उ.भा.) (शुक्रयुति)
" " ३ मं. रेव. (लग्नाभाव)
" " ३ मं. अश्वि. (केतुवेध, शनि-भौम-युति)
" " ४ बु. अश्वि. (भद्रा, केतुवेध, श. भौ. युति)
" " ६ शु. रोहि. (मासान्त)
वर्षान्त तक सूर्य मीनस्थ

——:०:——

शनैश्चर की साढ़ेसाती एवं ढैया का विचार

बृहत्कल्याणी (साढ़ेसाती) साढ़े सात वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से बारहवीं राशि में शनि के आने पर २॥ वर्ष तक सिर पर (चढ़ती), जन्मराशि में आने पर २॥ वर्ष हृदय पर एवं जन्मराशि से दूसरी राशि में आने पर पैरों पर (उतरती) मानी जाती है। लघुकल्याणी (ढैया) अढ़ाई वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से चौथी एवं आठवीं राशि में शनि के आने पर मानी जाती है।

जिसकी जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा [illegible] का [illegible] चल रहा हो उसे शनि की साढ़ेसाती व ढैया का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र शनि [illegible] हों तो साढ़ेसाती व ढैया महान अशुभ, [illegible] एवं रोग [illegible] हानि चिन्ता, धनहानि, [illegible] में विघ्न, रोजगार में [illegible], [illegible] आदि का कारण बनती है। [illegible] के [illegible] और शनिवार के दिन [illegible] करना चाहिए, [illegible] (बतलाया) [illegible] तथा गरीबों को पक्ष में पहले शनिवार [illegible] बांटे या [illegible], [illegible] पर [illegible]। महावीर जी पर सिन्दूर, तेल चढ़ाना भी कल्याणप्रद है।

नोट—जन्म का स्पष्ट चन्द्र जिस राशि के जितने अंश का होता है, [illegible] बारहवीं राशि के तीस ३० अंश पहिले शनैश्चर आने पर [illegible] साढ़ेसाती आरम्भ होती है। इतने ही अंश दूसरी राशि के बाद में समाप्त होती है। [illegible] ढैया का [illegible] है। [illegible] जन्मराशि से ढैया या साढ़ेसाती का विचार [illegible] समाप्ति समझनी चाहिए।

इस वर्ष शनि-महाराज का आकाशीय दृश्य-सूक्ष्म-गणित से अश्विनी-भरणी नक्षत्रों तथा मेष-राशि पर भ्रमण होगा।

मेष में शनि—सं. २०२५ के चैत्र कृ. ३ शुक्रवार (७ मार्च १९६९) को २१ घड़ी ५० पल पर तुला-राशिस्थ चन्द्रमा के समय मेष राशि में प्रवेश करके वर्षभर इसी राशि में रहेंगे। इस वर्ष मेषादि राशियों का साढ़सती ढ्या का सुवर्णादि पाद विचार निम्नलिखित है;—

मेष—साढ़सती हृदय पर, तांबे के पाए, शुभ।
वृष—साढ़सती शिर पर, सुवर्ण के पाए, चिन्ता-प्रद अशुभ।
कन्या—ढैया, चांदी के पाए, कुछ-शुभ।
मकर—ढैया, तांबे के पाए, शुभ।
मीन—साढ़सती पैरों पर उतरती, लोहे के पाए, कष्टप्रद।

—शनि का वास—

जिस दिन से बृहत्कल्याणी (साढ़सती) बठ, उस दिन से गणना द्वारा शनि की छाया का वास निम्नलिखित चक्र से देख शुभाशुभ विचारे।

अवधि	स्थान	फल	अवधि	स्थान	फल
३ मास १० दिन	मुख पर	हानि	१ वर्ष, १ मास, १० दिन	वामभुजा	फल
१ वर्ष, १ मास, १० दिन	दक्षिण भुजा	जयलाभ	१० मास	सिर	शुभ
१० मास	दक्षिणपाद	भ्रमण	३ मास, १० दिन	वामनेत्र	कष्ट
१० मास	वाम पाद	कष्ट	३ मास, १० दिन	दक्षिण नेत्र	सुख
१ वर्ष ४ मास, १० दिन	हृदय	धन, सुख	६ मास, २० दिन।	गुदा	कष्ट

नोट—जिनकी जन्म कुण्डली में शनि शुभ-फलप्रद होगा उनको ही उपरोक्त दक्षिण-ज-इत्यादि स्थानों का जयलाभादि शुभफल प्राप्त होगा, अन्यथा मध्यम ही समझें।

गुरु का शुभाशुभ फल

सं. २०२६ में वर्षारम्भ से ही कन्या का गुरु कातिक-शुक्ल-द्वितीया (११ नवं. १९६९) तक रहेगा। उसके बाद वर्षान्त तक तुला का रहेगा। इसका प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल नीचे लिखे चक्र से जानिए—

ज्योतिषे ग्रहणसारः (पृष्ठ १६ का शेषांश)

ग्रहण-निर्णय (सं० २०२६)

इस वर्ष (सं. २०२६ वि. में) भू मण्डल पर दो सूर्य ग्रहण एवं एक चन्द्र ग्रहण होगा। ये तीनों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) **कंकण सूर्य-ग्रहण** (११ सितंबर सन् १९६९ ई.)—उत्तरी अमेरिका में यह ग्रहण केवल खण्डग्रास के रूप में तथा दक्षिणी अमेरिका में यह कंकण के रूप में भी दिखाई देगा। इस ग्रहण का कंकण रूप अधिकतर पेसिफिक सागर में ही दीखेगा। इस ग्रहण के समय भारत में ११-१२ सितंबर की मध्यरात्रि होगी।

(२) **खण्डग्रास चन्द्र-ग्रहण** (२१ फरवरी १९७० ई.)—यह ग्रहण उत्तरी दक्षिणी अमेरिका, अटलाण्टिक एवं पेसिफिक सागर, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि में देखा जा सकेगा। भा. स्टैं. टा. के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्श १३ घं. ३३ मि. पर एवं मोक्ष १४ घं. २८ मि. पर होगा। इस ग्रहण के समय भारत में दिन होगा—यह इसके स्पर्श-मोक्ष कालों से स्पष्ट है।

(३) **खग्रास सूर्यग्रहण** (७ मार्च १९७० ई०) यह ग्रहण दक्षिणी अमेरिका के उत्तर-पश्चिमी भाग लगभग समस्त उत्तरी अमेरिका और ग्रीनलैण्ड में दृश्य होगा। मैक्सिको, उ. अमरिका के दक्षिण-पूर्वी तट तथा न्यू फाउण्डलैण्ड में इस ग्रहण की खग्रास आकृति देखी जा सकेगी। इस ग्रहण के समय भारत में ७-८ मार्च की मध्यरात्रि होगी।

इन ग्रहणों के अलावा इस वर्ष २-३ अप्रैल की मध्यरात्रि एवं २५-२६ सितम्बर की मध्यरात्रि में चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में प्रवेश करेगा, जिससे चन्द्रमा की प्रभा (चान्दनी) कुछ धूमिल दीखेगी। २७ अगस्त १९६९ ई. को भी चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में प्रवेश करेगा, परन्तु इस समय भारत में दिन होगा।

भारत में इस वर्ष (सं. २०२६ म) कोई ग्रहण नहीं होगा।

कन्या-राशि के गुरु का शुभाशुभ

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम

तुला-राशि के गुरु का शुभाशुभ

मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन.
शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ

गुरु का विशेष-फल—यह देवगुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होते हैं, तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र-बन्धु मिलाप, मानवृद्धि, खुशी, धनलाभ, शुभ-यात्रादि अच्छे फल प्रदान करते हैं और जिन राशि वालों को यह मध्यम होते हैं, उन्हें शुभाशुभ मिले-जुले फल प्रदान करते हैं और जिन राशि वालों को अशुभ-फलप्रद होते हैं, उन्हें धन-मानहानि, व्ययाधिक्य, विद्या व सन्तति की ओर से चिन्ता, वृथा यात्रा, शारीरिक व मानसिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फल होते हैं। शान्त्यर्थ गुरुवार का व्रत, फल दान तथा चिड़ी आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए कच्चे चावल डालना व शिवार्चन करना चाहिये।

—राहु का शुभाशुभ फल—

संवत् २०२६ में वर्षारम्भ से राहु श्रावण कृ. २ बुधवार (३० जुला. सन् (१९६९) तक मीन में रहेगा; उसके बाद वर्षान्त तक कुम्भ में रहेगा। इसका प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल नीचे लिखे चक्र से जानिए—

मीन-राशि के राहु का शुभाशुभ

मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ

कुम्भ-राशि के राहु का शुभाशुभ

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ	अशुभ

राहु का विशेष फल—यह राहु ग्रह जब तक जिस राशि को शुभ-फल-प्रद होते हैं, तब तक उस राशि वालों को प्रिय-मिलन, द्रव्यलाभ, स्वास्थ्य सुख, घर में सन्तोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल देते हैं। जिन राशि वालों को मध्यम होते हैं, उन्हें यदा कदा किंचित शत्रु-भय कुछ हानि, लाभ कम, वृथा कलह द्रव्यचिन्तादि देते हैं और जिन राशि वालों को यह अशुभ होते हैं, उन्हें अकस्मात् हानि, चोट, रोग, भय, खर्च अधिक, मित्र-बन्धु वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देते हैं। शान्त्यर्थ प्रत्येक मास के पहिले बुधवार की रात को तैलपक्व वस्तु गरीबों को दें वा कुत्तों को डालते रहें।



आचार्य विकाशचन्द्र सूरिजी द्वारा प्राप्त जैनपर्व निर्णय

वीर संवत् २४९५-९६ आत्म-संवत् ७३-७४ शाके १८९१ विक्रम संवत् २०२६

सन् १९६९-७०	तिथि	तारीख
श्री वृद्धिविजय (बूटेराय) जी म. का स्वर्ग दिन और श्री विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म. का जन्म दिन	चैत्र सुद १ बुध	ता. १९-३-६९
" सिद्धचक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र सुद ७ मङ्गल	ता. २५-३-६९
" महावीर स्वामी का जन्मदिन (जयंति)	चैत्र सुद १३ सोम	ता. ३१-३-६९
" आंबिल ओली पूर्ण-चैत्र पूर्णिमा-गिरि. का मेला	चैत्र सुद १५ बुध	ता. २-४-६९
" अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा	वैशाख सुद ३ शनि	ता. १९-४-६९
" विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म. का स्व. दिन	ज्येष्ठ सुद ८ रवि	ता. २५-५-६९
" चौमासी अट्ठाई प्रारंभ	द्वि. आषाढ सुद ७ सोम	ता. २१-७-६९
" चौमासी चौदस	द्वि. आषाढ सुद १४ सोम	ता. २८-७-६९
" चौमासी अट्ठाई सम्पूर्ण	द्वि. आषाढ सुद १५ मंगल	ता. २९-७-६९
" नेमिनाथ भगवान का जन्मदिन	श्रावण सुद ५ सोम	ता. १८-८-६९
" पर्युषणपर्व अट्ठाई प्रारंभ	भाद्रपद वद १२ सोम	ता. ८-९-६९
" कल्पसूत्र गृहस्थापना रात्रि जागरण	" " १४ बुध	ता. १०-९-६९
" कल्पसूत्र वाचना प्रारंभ	" " ३० गुरु	ता. ११-९-६९
" महावीर जन्म वांचन	भाद्रपद सुद १ शुक्र	ता. १२-९-६९
" संवत्सरी पर्व	" सुद ४ सोम	ता. १५-९-६९
" जगद्गुरु विजयहीरसूरि स्वर्गदिन	" सुद ११ सोम	ता. [illegible]
" युगवीर आ. श्री विजयवल्लभ सूरि स्वर्गदिन	आसो. वद [illegible] शनि	ता. [illegible]

सन् १९६९-७०	तिथि	तारीख
श्री सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	आसो. सुद ७ शुक्र	ता. १७-१०-६९
" सिद्धचक्र आंबिल ओली सपूर्ण	" सुद १५ शनि	ता. २५-१०-६९
" महावीर प्रभु निर्वाण दिवाली पर्व	कार्तिक वद ३० रवि	ता. ९-११-६९
" गौतम स्वामी केवल ज्ञान वीर संवत २४९६	कार्तिक सुद १ सोम	ता. १०-११-६९
" भाइ दूज श्री विजय वल्लभ सूरि जन्म-दिन	कार्तिक सुद २ मंगल	ता. ११-११-६९
" ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	" सुद ५ शुक्र	ता. १४-११-६९
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	" " ६ शनि	ता. १५-११-६९
" चौमासी चौदस	" " १४ शनि	ता. २२-११-६९
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा हस्तिनापुर-शौरीपुर का मेला	" " १५ रवि	ता. २३-११-६९
" मौन एकादशी (१५० कल्याणक दिन)	मागसर सुद ११ शुक्र	ता. १९-१२-६९
" पोष दसमी श्री पार्श्वनाथ जन्म दिन	पोष बदी १० शनि	ता. ३-१-७०
" मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन	माघ बदी १३ बुध	ता. ४-२-७०
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	फागुण सुद ८ रवि	ता. १५-३-७०
" चौमासी चौदस	" सुद १४	ता. २२-३-७०
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कांगड़ा तीर्थ मेला	" सुद १५ सोम	ता. २३-३-७०
" ऋषभदेव जन्मदिन वर्षीतप की शुरुआत	चैत्रवदी ८ सोम	ता. ३०-३-७०

पता—मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहरनगर दिल्ली-७

हमारे यहाँ मिलने वाली संस्कृत-हिन्दी पुस्तकों का सूचीपत्र

कर्मकाण्ड

क्रम स०	पुस्तक का नाम	मूल्य-रु० पैसे
१	अर्कविवाह-भाषाटीका	०-२४
२	अग्निष्टोम पद्धति-आध्वर्य पद्धति औद्गात्र	९-००
३	अन्त्यकर्मदीपक-नित्यानन्द	४-००
४	आचारादर्श-यजुर्वेदियों के आह्निक	१-५०
५	आचारार्क (ऋग्वेदीय)-खुला पत्रा	१-७५
६	आदर्शपूजा सरोज	३-५०
७	आधानपद्धति-वामन शास्त्री	३-००
८	आह्निककर्म सूत्रावली-बम्बई	४-८०
९	आह्निक सूत्रावली-(शुक्ल यजुर्वेदीय) बम्बई	६-००
१०	आर्याभिविनय-अजमेर	०-४०
११	आर्यविधानम्-दो भाग	२०-००
१२	[illegible] शान्तिप्रयोग	५-००
१३	उपनयन पद्धति-भाषाटीका	१-८०
१४	उपाकर्म पद्धति-(माध्यन्दिन) मूल	१-५०
१५	उपनयन पद्धति-भा० टी०-पं० विद्याधर दत्त	०-३५
१६	[illegible]	१-५०
१७	[illegible] निर्णयविधि—खुला पत्रा	१-५०
१८	[illegible] श्राद्ध प्रयोग-([illegible])	०-५०
१९	और्ध्वदैहिक [illegible]	४-००
२०	कर्मठगुरु—[illegible] [illegible] [illegible]	[illegible]
२१	कर्म[illegible]	[illegible]
२२	कर्मकाण्ड-प्रकाशिका-[illegible]	०-३५
२३	कर्मप्रदीप—[illegible] परिशिष्ट	[illegible]
२४	कलशप्रतिष्ठा-पूजाविधि	०-२५
२५	कातीय तर्पण पद्धति	०-२५
२६	कातीयेष्टि दीपक-(दर्शपौर्णमास पद्धति)	२-००
२७	कात्यायनी शान्ति	०-५०
२८	कृत्यशिरोमणि—तुफानी शर्मा	४-००
२९	कृत्यसार समुच्चय-श्री अमृतनाथ शर्मा	२-१०
३०	कृत्यसारसमुच्चय (अमृतनाथ) पं०गंगाधर	५-००
३१	कृपाराममीमांसा भा० टी०	०-६४
३२	कूपोत्सर्ग	०-२०
३३	गणपतिपूजा होम	०-२५
३४	गयाश्राद्धपद्धति-भाषाटीका सहित	१-५
३५	गायत्रीपूजा पद्धति	०-२५
३६	गोत्रावलि	०-४०
३७	गोदान	०-२०
३८	गौडीय श्राद्धप्रकाश महानिबन्ध-खुला पत्रा	९-६०
३९	गौरीशंकर गुटका	३-००
४०	हयज्ञप्रयोग	१-००
४१	ग्रहशान्तिप्रयोग	३-००, ५-००
४२	ग्रहशान्ति भा. टी. बम्बई	१-५०
४३	चूडाकरण पद्धति-(माध्यन्दिनी शाखा)	०-२५
४४	छान्दोगाह्निक	०-७५
४५	तुलसीपूजा पद्धति	०-१५
४६	तुलसीविवाह विधि	०-३७
४७	दशकर्मपद्धति-भाषाटीका	२-४०
४८	दशकर्मपद्धति-पं० जनार्दन पांडे मूल	८-००
४९	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन—	०-३०
५०	दुर्गापूजा—श्यामापूजा पद्धति	०-७५
५१	दुर्गापूजा[illegible]	२-८०
५२	[illegible] शान्ति	०-५०
५३	[illegible] अर्पणविधि	०-५५
५४	[illegible] विधान पद्धति-मूल-[illegible]	०-७०
५५	नारायणबली-भाषाटीका	०-६०
५६	नित्यकर्मपद्धति-भाषाटीका	०-५०
५७	नित्यकर्म प्रयोग-गोरखपुर	०-५५
५८	नित्यकर्म प्रयोगमाला-श्री चतुर्थीलाल	२-४०
५९	नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय-(यजुर्वेदीय)	५-५०
६०	पंचदेवतापूजन	०-२०
६१	पंचमगल	०-४०
६२	पंचरत्नविवाहपद्धति—फलाहारी	२-००
६३	पञ्चयज्ञ-भाषा टीका समेत	०-६०
६४	पार्थिव पूजन विधान-भा० टी०	०-३५
६५	पितृकर्म निर्णय-पं० त्रिलोकनाथ	३-००
६६	पुनर्विवाह पद्धति-मूल	०-४०
६७	पूतना शांति-भा० टी०	०-६२
६८	पौरोहित्य कर्मसार	१-६५
६९	प्रयोगरत्न-नारायण भट्टी—ऋग्वेदीय	३-५०
७०	प्रेतमञ्जरी-भा० टी०	२-५०, १-५०
७१	ब्रह्मकर्म समुच्चय-हिरण्यकेशीय (१८८)	८-००
७२	भारतीयव्रतोत्सव	३-००
७३	मंगलाष्टक शाखोच्चार	०-५०
७४	महालक्ष्मी पूजापद्धति-भाषाटीका	१-२५
७५	मूलशान्ति विधि	०-६०
७६	यज्ञोपवीतपद्धति-भा० टी०	१-५०, ०-७५
७७	यज्ञोपवीत मीमांसा	१-२५
७८	यजुःशाखीय कर्मकाण्ड प्रदीप	८-००
७९	रामार्चन पद्धति	०-५०
८०	रामनवमी पूजा	०-५०
८१	लघुपूजानुष्ठान	०-५६
८२	लक्ष्मी पूजन प्रयोग	१-००
८३	वर्षकृत्य दो भाग	११-००
८४	वर्षकृत्य दीपक-प० नित्यानन्द	१०-००
८५	वरदगणेशपूजा	०-२५

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

वार्षिकव्रतरत्नावली ४-०० (price partly unclear)
७ वास्तु पूजा पद्धति—गृहप्रवेश ०-७५
८ वास्तु शान्ति प्रयोग ०-९०
९ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह ३-००
० वास्तुरत्नावली २-५०
१ वासिष्ठी हवन पद्धति—हिन्दी टीका ०-७५, ०-९०
२ विनयपद्यपंचाशिका ०-५०
३ विवाहपटल ०-५०
४ विवाह पद्धति—चतुर्थीलाल भा० टी० १-१२
५ विवाह पद्धति—भैयाराम कृत भा० टी० २-००
६ विवाह पद्धति—आर्यसमाज ०-७५
७ विवाह पद्यावली—भाषा टीका सहित १-८०
८ विवाहसोपाङ्गविधि भा० टी० ३-६०
९ विश्वकर्मा पूजापद्धति ०-५०
०० विष्णु पूजा ०-३५
०१ विज्ञप्ति रत्नावली—अन्वयार्थ सहित १-२०
०२ व्रत परिचय २-२५
०३ व्रतोद्यापन प्रकाश ४-५०
०४ शांतिप्रकाश—चतुर्थीलाल ७-८०
०५ शिलान्यास पद्धति ०-६०
०६ शिवार्चन पद्धति १-५०
१०७ शुद्धि प्रदीप-प्रायश्चित्त कृत्य ३-००
१०८ शूद्र दशगात्र एकादशाह—वृषोत्सर्ग ०-५०
१०९ शूद्र पार्वण—एकोद्दिष्ट पद्धति वायुनन्दन मिश्र ०-३०
११० श्राद्धप्रयोगदीपिका १-२५
१११ श्राद्धपारिजात रुद्रदत्त ३-७५
११२ श्राद्धविवेक—रुद्रधर २-५०
११३ षोडश-संस्कार-विधि—सनातन भाषाटीका ५-००
११४ सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी ०-२०
११५ सन्ध्योपासन-सातवलेकर १-५०
११६ सन्ध्या—यजुर्वेदीय मूल ६पं. भा. टी. ०-१२
११७ सन्ध्या-(शु० यजुर्वेदीय) तर्पण भा० टी० ०-२५
११८ सपिण्डी निर्णयेष्टिका ०-५०
११९ सपिण्डीकल्पलतिका १-२५
१२० संस्कारविधि (सनातन) श्रीकण्ठ उपाध्याय ६-००
१२१ संस्कार दीपक—हर्षनाथ ७-००

१२२ संस्कारदीपक—तीन भाग, नित्यानन्द पर्वतीय १८-००
१२३ संस्कारपद्धति—भास्कर शास्त्री संशोधित ३-७५
१२४ संस्कारविधि—श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित १-२५
१२५ सर्वदेवप्रतिष्ठा—गोपालदत्त १-००
१२६ सर्वदेवप्रतिष्ठा प्रकाश ५-४०
१२७ सर्वपूजा ०-५०, ०-३१
१२८ सरस्वती पूजा ०-२५
१२९ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति—तुलादान पद्धति सहित ०-२०
१३० स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा ०-२५
१३१ साधन चंद्रिका १-७५
१३२ स्मार्त्तोल्लास—शिवप्रसाद ३ भाग ५-१२
१३३ सामवेदोपाकर्मप्रयोग १-२५
१३४ सामवेद श्राद्धप्रयोग १-२५
१३५ हिन्दु धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ ३-००
१३६ हिन्दुओं के व्रतपर्व और त्योहार—जयप्रताप ६-००
१३७ हरदीमातृपूजा ०-२०
१३८ त्रिकाल संध्या—यजुर्वेदीय ०-१९ ऋग्वेदीय ०-३७
१३९ त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति—वायुनन्दन १-००

धर्मशास्त्र

१४० अग्निहोत्रचन्द्रिका—वामन शास्त्री दिवशातपाष्य ४-२५
१४१ आङ्गिरसस्मृति—ए० एन० कृष्णाअयंगर १२-००
१४२ अद्विनीयान मीमांसा—श्री वेंकटाचल शास्त्री २-४०
१४३ अहिर्बुध्न्य संहिता २ भाग ४०-००
१४४ अशौचनिर्णय ०-२५, ०-५०
१४५ आचारार्क—बम्बई २-१०
१४६ आचारादर्श—बम्बई १-५०
१४७ आचारभूषण—(त्र्यम्बक) हिरण्यकेश्याह्निक ६-५०
१४८ आचारमयूख—(नीलकंठ भट्ट विरचित) १-२५
१४९ आपस्तम्बीयधर्मसूत्र—मूल, पाठभेद, टिप्पणी ३-००
१५० आचारेन्दु—त्र्यम्बक विरचित ६-००
१५१ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल ३-००
१५२ उद्वाहतत्त्व—रघुनंदन ५-६२
१५३ कर्मविपाक भाषाटीका ४-००
१५४ कात्यायन मतसंग्रह—नारायणचन्द्र २-८१

१५५ कालतत्त्व विवेचन, दो भाग ७-५०
१५६ कालमाधवकारिका—(माधवाचार्य प्रणीत) ०-७५
१५७ कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण ३-६०
१५८ कालविवेक ५-२५
१५९ कुण्डमंडपसिद्धि ०-५०
१६० कृत्यकल्पतरु—लक्ष्मीधर विरचित ९ खंड १५९-००
ब्रह्मचारिकांड १५ रु० गृहस्थकांड १५ रु० नियतकाल २२रु० श्राद्ध १८-०० व्रत २० ० तीर्थविवेचन १२ रु० शुद्धि १२ रु० राजधर्म १५ रु० व्यवहार ३०-००
१६१ कृत्यरत्नाकर—श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६-००
१६२ क्यों (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य दो भाग २०-००
१६३ गदाधरपद्धति आचार सार ४-५०
१६४ गौतम धर्मसूत्र—मिताक्षरा ४-५०
१६५ गौतम धर्मसूत्र भा० टी० १०-००
१६६ गृहस्थ रत्नाकर—चण्डेश्वर ५-२५
१६७ चतुर्विंशतिमत संग्रह—भट्टोजिदीक्षित संकलित ६-००
१६८ जयसिंह कल्पद्रुम—मूलमात्र बम्बई १४-४०
१६९ जातिभास्कर—भाषाटीका बम्बई ९-६०
१७० टोडरानन्द—(सर्ग सौख्य, अवतार सौख्य) प्रथम १०-०
१७१ तिथ्यर्क-दिवाकरकृत—तिथियों के निर्णय आदि २-००
१७२ तिथिचिन्तामणि ०-७५
१७३ तिथिनिर्णय—भट्टोजि दीक्षित ३-००
१७४ तीर्थचिन्तामणि—वाचस्पति मिश्र ३-७५
१७५ दत्तकमीमांसा—नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५-५०
१७६ दर्शपूर्णमास प्रकाश—भाष्यवृत्ति दीपिका १०-००
१७७ दानक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द २-२५
१७८ दानचंद्रिका—मूल १-४०
१७९ दानखण्ड (चतुर्वर्गचिंतामणि) २५-००
१८० दानदीपिका—भाषाटीका ०-५०
१८१ दानमयूख—(नीलकंठ भट्ट) मूल ३-००
१८२ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भाग सम्पूर्ण ३०-००
१८३ दायभाग—भा. टी. १-५०
१८४ दीक्षाप्रकाशिका—श्री विष्णुभट्ट विरचित १-००
१८५ धर्मकल्पद्रुम—स्वा० दयानन्दकृत सनातनधर्म का सत्युत्तम ग्रन्थ १ से ८ भाग तक २५-००

२०८ शब्दकोश—जगन्नाथ शास्त्री संगृहीत ४-००

१८६ धर्मकोष—व्यवहार कांड व्यवहार मातृका ८०-००
१८७ धर्म कोष संस्कारकाण्ड प्रथम भाग ४५-००
१८८ धर्मतत्त्व निर्णय—(वासुदेव शास्त्री) पूना १-००
१८९ धर्मतत्त्वनिर्णय परिशिष्ट—(वासुदेव शास्त्री) १-२५
१९० धर्म प्रदीप—मूलमात्र २-४०
१९१ धर्मविज्ञान ३ भाग सनातनधर्म १५-००
१९२ धर्मशास्त्र का इतिहास तीन भाग—काणे हिन्दी ६५-००
१९३ धर्मशास्त्र व्याख्यान—श्रीधर १-५०
१९४ धर्मसिन्धु—हिन्दी टीका बम्बई १४-४०
१९५ धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पत्रसंग्रह १०-००
१९६ धर्मानुबन्धि श्लोकचतुर्दशी १-००
१९७ धार्मिक विमर्श समुच्चय—(नरहरि शास्त्री) ३-५०
१९८ नवरात्र प्रदीप—नंद पंडित २-००
१९९ नारदस्मृति बंगला ४-००
२०० निर्णयसिन्धु—मूलमात्र ६-०० टिप्पणी सहित ९-००
२०१ नित्याचार पद्धति ५-२५
२०२ नित्याचार प्रदीप १२-७५
२०३ नीतिमयूख—नीलकंठ भट्ट प्रणीत १-२५
२०४ नृसिंह प्रसाद दलपतिराज विरचित ४भाग ११-००
२०५ पश्वालम्भ मीमांसा—वामन शास्त्री विरचित-मूल १-०
२०६ पंचरात्ररक्षा—वेदान्तदेशिक २०-००
२०७ पाकयज्ञ प्रकाश ४-००
२०८ पाराशर स्मृति—भा० टीका १-५०
२०९ पुरुषार्थ चिन्तामणि—पूना ९-०० बम्बई ५-००
२१० पुरुषार्थ सुधानिधि १४-००
२११ प्रायश्चित्त [illegible]—भा० टी० १-५०
२१२ प्रायश्चित्त मयूख २-००
२१३ प्रायश्चित्त प्रकाश बम्बई १-००
२१४ प्रायश्चित्त प्रकरण ६-००
२१५ प्रायश्चित्त[illegible] २-५०
२१६ बीस स्मृतियाँ भा. टी. १४-००
२१७ बौधायन धर्मसूत्र—गोविन्द कृत विवरण २०-००
२१८ ब्राह्मण सर्वस्व २८-[illegible]
२१९ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—हिन्दी टीका सहित १२-००
२२० मदन महार्णव—(कर्मविपाक के ऊपर) २६-००
२२१ मदनरत्नप्रदीप—मदनसिंहदेव तीन भाग ६-५०

२२२ मनुस्मृति— हिन्दी टीका काशी ५-०० बंबई ७-२०
२२३ मनुस्मृति—हिन्दी टीका सहित १-४अध्याय २-५०
२२४ मनुस्मृति—मेधातिथि बंगला में २४-५०
२२५ मनुस्मृति—(द्वितीयाध्याय) सं० हि० टीका ०-७५
२२६ मांसतत्त्वविवेक ०-७५
२२७ यज्ञतत्त्व प्रकाश—चिन्नस्वामी ४-००
२२८ यतिधर्मसंग्रह—(विश्वेश्वर सरस्वती) २-७५
२२९ याज्ञवल्क्यस्मृति आचाराध्याय भा. टीका ४-००
२३० याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्कटीका १९-५०
२३१ याज्ञवल्क्य-स्मृति—मिताक्षरा हिं. टीकासंपूर्ण २०-००
२३२ याज्ञवल्क्य स्मृति—मिताक्षरा तथा टीका बंबई १०-००
२३३ याज्ञवल्क्यस्मृति—बालम्भट्टी व्यवहाराध्याय ३३-००
२३४ राजधर्म कौस्तुभ—(अनन्तदेव) अंग्रजी भूमिका २०-००
२३५ वर्षक्रियाकौमुदी ५-२५
२३६ वसन्तोत्सवनिर्णय ०-२५
२३७ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १-००
२३८ विधान पारिजात (अनन्तदेव) १५-००
२३९ विधानमाला—नृसिंह भट्ट शंकर ६-००
२४० विवादचिन्तामणि—मूल ३-००
२४१ विवादरत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६-००
२४२ विष्णु स्मृति मूल १०-००
२४३ विष्णुस्मृति—सटीक दो भाग ६०-००
२४४ वीरमित्रोदय—पूजाप्रकाश १६-००
२४५ वीरमित्रोदय—संस्कारपरिभाषा २-२५
२४६ वीरमित्रोदय—आह्निक प्रकाश २४-००
२४७ वीरमित्रोदय लक्षणप्रकाश २८-००
२४८ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश १८-००
२४९ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ६-००
२५० वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश १५-००
२५१ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ९-००
२५२ वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश १२-००
२५३ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण ३०-००
२५४ व्यवहारप्रकाश [illegible] प्रथम भाग १२-००
२५५ व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल १-७५
२५६ व्यवहारमयूख (श्रीनीलकंठ) पी० वी० काणे १०-००
२५७ व्यवहारमाला—पूना १-५०

२५८ [illegible]नाथ शास्त्री संगृहीत ४-००
२५९ व्रतरत्नाकर ९-००
२६० व्रतराज—हिन्दी टीका सहित सजिल्द १९-२०
२६१ व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि ३-००
२६२ शास्त्रतत्त्वनिर्णय—नीलकंठ कृत ५-००
२६३ शवसूतकोचक प्रकरण ५-६२
२६४ शुद्धिकौमुदी ३-७५
२६५ शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल १-००
२६६ शूद्राचार शिरोमणि, दो भाग ३-००
२६७ श्राद्ध कल्पलता—नन्द पंडित ९-००
२६८ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविंदानन्द प्रणीत ५-२५
२६९ श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट्ट ५-००
२७० श्राद्धप्रयोग दीपिका १-२५
२७१ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल १-५९
२७२ श्राद्धमञ्जरी—बापूभट्ट विरचित ३-००
२७३ षडशीति—(आदित्याचार्य) शुद्धिचन्द्रिका टीका ६-००
२७४ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती ३-५०
२७५ सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में भा.टी. २०-००
२७६ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १-२५
२७७ समय मयूख—नीलकंठ—मूल २-००
२७८ संस्कारपद्धति—पूना ३-७५
२७९ संस्कारमयूख १-५०
२८० संस्कार रत्नमाला—दो भाग संपूर्ण पुना १८-५०
२८१ संस्कार गणपति—श्री रामकृष्णप्रणीत २५-००
२८२ सर्वशिरोमणि सिद्धान्तसार ४-५०
२८३ सूरिसर्वस्व अपूर्ण २-२५
२८४ स्मृतिचंद्रिका—देवनभट्ट १५-५०
२८५ संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त ३-५०
२८६ स्मृति समुच्चय—(२७ स्मृतियों का संग्रह) ७-५०
२८७ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २-५०
२८८ स्मृतिसारोद्धार—श्री विश्वम्भर त्रिपाठी कृत १०-००
२८९ हारलता २-२५
२९० हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ ३-००
२९१ हिन्दू संस्कार—(हिन्दी)—डा० राजबली पांडे १६-००
२९२ मिताक्षरा? [illegible]—शंकर शास्त्री विरचित ४-५०
२९३ त्रिस्थली सेतु—तीर्येन्दु शेखर मोक्ष विचार १-५०
२९४ त्रिस्थली सेतु—नारायण भट्ट प्रणीत ५-५०

महापुराण-उपपुराण

२९५ अग्निपुराण मूल—उपाध्याय २०-००
२९६ अग्निपुराण भाषाटीका २ भाग १४-००
२९७ अग्निपुराण—मूल मात्र संपूर्ण पूना १०-००
२९८ अग्निपुराण विषयानुक्रमणी—भट्टाचार्य ९-००
२९९ आदि पुराण—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ५-४०
३०० कल्कि पुराण—भा० टी० पुराना जीर्ण २-००
३०१ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १८-००
३०२ काशी खण्ड—भाषा टीका खुला पत्रा २४-००
३०३ अष्टादशपुराणव्यवस्था १-००
३०४ काशीयात्रा ०-५०
३०५ केदारकल्प ४-५०
३०६ केदार खंड—मूल बम्बई १२-००
३०७ कृष्णस्य शांति प्रयासः २-००
३०८ कूर्मपुराण १०-००
३०९ गरुड़ पुराण—सम्पूर्ण मूल बुक साइज ४-००
३१० गरुड़ पुराण— उपाध्याय मूल १०-००
३११ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा०टी० खुला ३-५०
३१२ गरुड़ पुराण—सारोद्धार संस्कृत िका २-७५
३१३ देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप १०-००
३१४ देवी भागवत मूल—गुटका ८-००
३१५ देवी भागवत—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४८-००
३१६ देवी भागवत भा० टी० खुला—काशी ३२-००
३१७ धर्माकूतम् त्र्यम्बकराय मखिना ६-००
३१८ „ सुन्दरकाड ४-००
३१९ „ अरण्यकांड ४-००
३२० पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०-००
३२१ पुराण कथा कौमुदी भाषा १०-००
३२२ पुराण काव्यस्तोत्र संग्रह ५-००
३२३ पुराणेतिहाससंग्रह ७-५०
३२४ पुराणदिग्दर्शन १०-००
३२५ पुराण विमर्श—बलदेव उपाध्याय २०-००
३२६ पुराण संहिता—आलमंदार संहिता आदि १२-८०
३२७ पुराण विषयानुक्रमणिका—राजनीति १५-००
३२८ पुराणविषयानुक्रमणिका विश्वेश्वरानंद ६-००
३२९ पुराणों में गुजरात—गुजराती ५-००
३३० प्रेमसुधा सागर—भागवत दशम स्कन्ध हिन्दी ४-००
३३१ प्रेमसागर—भाषा बम्बई ३-६०
३३२ पौराणिक कथायें २-५०
३३३ ब्रह्मवैवर्तपुराण-मूल बुकसाइज पूना २ भाग १४-२५
३३४ ब्रह्मोत्तर खंड—भा० टी० ४-२०
३३५ भविष्य पुराण—मूल बुक साइज ३०-००
३३६ भूदेवचरित २-५०
३३७ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९-००
३३८ भागवत मूल गुटका गोरखपुर ४-००
३३९ भागवत-अन्वितार्थ प्रकाशिका ४८-००
३४० भागवत—संचूर्णिका सं० टीका बम्बई खुला ३०-००
३४१ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४-००
३४२ भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४-००
३४३ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २४-००
३४४ भागवत-सरस्वती भाषा टीका काशी ३५-००
३४५ भागवत—भा० टी० बुकसाइज दो भाग—२५-००
३४६ भागवत—सामयिकी भा०टी०—पं० रामतेज १५-००
३४७ भागवत १० टीका ७ स्कन्ध ३००-००
३४८ भागवत श्लोकानुक्रमणिका ७-००
३४९ भागवत सुधा सागर—केवल भाषा १०-००
३५० भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी०खुला बम्बई १२-००
३५१ भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी० खुला काशी ८-००
३५२ भागवत—एकादशस्कन्ध भा०टी०खुला ४-८०
३५३ भागवत—एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी ६-५०
३५४ भागवत—राधश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत १०-५०
३५५ भागवत कथा— पं० राममूर्ति ११-२५
३५६ भूदेवचरित २-५०
३५७ मत्स्यपुराण—केवल हिन्दी— रामप्रताप २०-००
३५८ मल्ल पुराण १०-००
३५९ मार्कण्डेय पुराण भा. टी. २ भाग बरेली १४-००
३६० मार्कण्डेय पुराण भा० टी० खुला १८-००
३६१ मार्कण्डेय पुराण एक सांस्कृतिक अध्ययन ८-५०
३६२ „ एक अध्ययन ४-५०
३६३ महाभागवत—देवी ३-००
३६४ युगपुराण २-००
३६५ रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराण) मोटा अक्षर २-१०
३६६ रामाश्वमेध—भाषा ५-५०
३६७ रामाश्वमेध—भा० टी० खुला पत्रा १३-२०
३६८ ललितोपाख्यान मूल खुला ४-२०
३६९ वामनपुराण—संशोधित संस्करण १२५-००
३७० वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १४-४०
३७१ वायुपुराण—केवल भाषा पं० रामप्रतापशास्त्री १२-००
३७२ विष्णुधर्मोत्तर पुराण—मूल खुला पन्ना २१-६०
३७३ विष्णुधर्मोत्तर—तीसरा कांड चित्र प्रकरण ४०-००
३७४ विष्णुपुराण भा. टी. २ भाग १४-००
३७५ विष्णु पुराण विषयसूची ५-००
३७६ शिवपुराण मूल सम्पूर्ण गुटका १०-००
३७७ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २४-००
३७८ शिवपुराण मूल खुला पत्रा बंबई २१-६०
३७९ शिवपुराण भा. टी. गुटका बरेली १२-७५
३८० शिवपुराण भा० टी० बम्बई खुला पत्रा ६०-००
३८१ शिवभारत—संस्कृत २-२५
३८२ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९-००
३८३ सुखसागर—(भागवत) सरल भाषा सचित्र २०-००
३८४ सुखसागर—मध्यम १६-००
३८५ शुकसुधासागर—मोटा अक्षर रंगीन चित्र २०-००
३८६ सौरपुराण—मूल पूना ४-५०
३८७ स्कन्द महापुराण बुक साइज.
(नागर और प्रभास खंड छोड़कर) ९०-००
३८८ हरिवंशपुराण सटीक खुला २४-००
३८९ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला काशी ३२-००
३९० हरिवंश का सांस्कृतिक विवेचन ४-५०
३९१ हरिवंश पुराण—भाषा सम्पूर्ण लखनऊ १६-००
३९२ हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १४-४०

रामायण-महाभारत

३९३ अद्भुतरामायण—भा० टी० २-४०
३९४ अध्यात्मरामायण भा. टी. बम्बई १२-००

३९५ आनद रामायण भा०टी० १६-००
३९६ आर्य संगीत महाभारत ५-००
३९७ आर्यसंगीत रामायण-भाषा ५-००
३९८ इतिहास गुरु खालसा ६-००
३९९ कम्बर और तुलसी ६-७५
४०० कम्ब रामायण दो भाग २०-५०
४०१ गर्ग संहिता प्रथम भाग—बुक साइज १०-००
४०२ गर्ग संहिता—मूल-खुला १३-२०
४०३ जै. अश्वमेध भा. टी. गोरखपुर ६-००
४०४ जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ५-१०
४०५ जैमिनी अश्वमेध—भा० टी० खुला १३-२०
४०६ जैमिनी अश्वमेध—भाषा ४-२०
४०७ नासिकेतोपाख्यान-हिन्दी टीका सहित १-५०
४०८ बालरामायण-संस्कृत ०-७५
४०९ ब्रजविहार ५-४०
४१० ब्रजविलास ८-४०
४११ बृहद्भजनरत्नावली भाषा ४-८०
४१२ भक्तमाल नाभाजी ४-२०
४१३ भक्तमाला-भाषा १०-००
४१४ भक्तमाला-संस्कृत खुला पत्रा ६-००
४१५ भक्तमाल रामरसिकावली १४-४०
४१६ भजनरामायण ०-५०
४१७ भारत सार-केवल भाषा ८-४०
४१८ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका २-४०
४१९ महाभारत-मूल-संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में २६-५०
४२० महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण १००-००
४२१ महाभारत—[illegible] १२-००
४२२ महाभारत—शान्ति पर्व गुटाई-सातवलेकर १०-००
४२३ महाभारत-केवल हिन्दी मोटा टाइप १०भाग २०-००
४२४ महाभारत-[illegible] १२-००
४२५ [illegible] सटीक [illegible] १०-००
४२५अ महाभारत [illegible] ३-५०
४२६ मूल रामायण—[illegible] सं० हि० ०-७५
४२७ महाभारत कोष ४०-००
४२८ रामायणचरित्र ५-००
४२९ रामकथा—का. बुल्के [illegible] २०-००

४३० रामचरितमानस मूल काशीराज ६-५०
४३१ रामचरितमानस मूल गुटका ०-९०
४३२ „ भा. टी. गोरखपुर ८-५०
४३३ रामचरितमानस भा. टीका विजया टी० ३०-००
४३४ रामायणकालीन संस्कृति-हिन्दी ६-००
४३५ रामायण कालीन समाज-हिन्दी ६-००
४३६ रामायण-तुलसी भा. टी. ज्वालाप्रसाद ३०-००
४३७ „ „ मध्यम १६-८०
४३८ रामाश्वमेध—मूल खुलापत्रा ५-१०
४३९ रामाश्वमेध-भा० टी० खुला पत्रा बम्बई १३-२०
४४० रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ५-४०
४४१ रास पञ्चाध्यायी भा० टी० १०-००
४४२ रंगनाथ रामायण ६-५०
४४३ रुक्मिणी मंगल ४-८०
४४४ वाल्मीकि रामायण—मूल गुटका ९-६०
४४५ वाल्मीकि रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर २०-४०
४४६ वाल्मीकि रामायण-मूल स्थूलाक्षर मद्रास १३-००
४४७ वाल्मीकि रामायण मूल गोरखपुर ९-००
४४८ वाल्मीकि रामायण शुद्ध मूल व लकाड ५५-००
४४९ वाल्मीकि अरण्यकांड शुद्ध मूल ५५-००
४५० „ „ अयोध्याकांड ११०-००
४५१ „ „ किष्किन्धाकांड ५५-००
४५२ वाल्मीकि रामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा ७२-००
४५३ „ बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ७२-००
४५४ वाल्मीकि रामायण—कनक व्या. अयोध्या कांड २ ११-५०
४५५ वाल्मीकि रामायण-कनक व्या. अरण्यकांड ११-००
४५६ वाल्मीकि रामायण—पं० ज्वालाप्रसाद कृत भा० टी० खुला बम्बई ४८-०० काशी पं. रामतेज ४०-००
४५७ वाल्मीकि रामायण—भाषा टीका द्वारका प्रसाद २४-००
४५८ वाल्मीकि रामायण-बालकांड-पं०सातवलेकर ६ ००
४५९ वाल्मीकि रामायण—अयोध्याकांड-भा.टी. १२ ००
४६० वाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर ६ ००

४६१ वाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड-सातवलेकर ६-००
४६२ वाल्मीकि रामायण-युद्धकांड२भाग सातवलेकर१२-०
४६३ वाल्मीकि रामायण-उत्तरकांड सातवलेकर ६-००
४६४ वाल्मीकि रा०-सुन्दरकाण्ड-मूल गु० बम्बई ३-००
४६५ वाल्मीकि रामायण-सुन्दर कांड-मूल-खुला ४-२०
४६६ वाल्मीकि रा०-सुन्दरकांड भा०टी०रामतेज ३-००
४६७ वाल्मीकि रामायण-केवल भाषा मोटा बम्बई ३०-००
४६८ „ केवल भाषा १३-००
४६९ वाल्मीकि रामायण कोष २०-००
४७० वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन १६-००
४७१ विजयादशमी—सातवलेकर ०-५०
४७२ ज्ञानदीपिका—भीष्म पर्व व्याख्या २-००
४७३ ज्ञानदीपिका—सभापर्व व्याख्या २-००

व्रत, कथा, माहात्म्य आदि

४७४ अनन्त व्रत कथा-भा० टी० ०-५०
४७५ अन्नपूर्णा व्रत कथा-भा० टी० ०-४०
४७६ अक्षय नवमी व्रत कथा-भा० टी० ०-२०
४७७ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
४७८ एकादशी माहात्म्य-भा० टी० ४-००, ३-००
४७९ एकादशी माहात्म्य केवल भाषा १-५०
४८० कृष्ण जन्माष्टमी-भा० टी० ०-५०
४८१ कार्तिक माहात्म्य-भा० टी० ४-००, ३-००
४८२ कार्तिक माहात्म्य-३५ अध्याय क्षेमंकारी ४-५०
४८३ काशी केदार माहात्म्य-भा० टी० १-००
४८४ गणेश संकट चतुर्थी मूल ०-७५
४८५ गया माहात्म्य—गया पद्धति सहित हिन्दी टीका २-१०
४८६ नन्दनषष्ठी-सूर्यषष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०-५०
४८७ चान्द्रायण व्रत कथा-हिन्दी टीका सहित ०-५०
४८८ चित्रगुप्त व्रतकथा ०-५०
४८९ जीवत्पुत्रिका-व्रतकथा-भा० टी० ०-५०
४९० ज्येष्ठमासमाहात्म्य-भा० टी० ३-००
४९१ पुरुषोत्तम माहात्म्य-भा० टी० अधिक मास ४-८०

४९२ पौषमाहात्म्य मूल ०-७५
४९३ फाल्गुणमाहात्म्य मूल १-५०
४९४ बुधाष्टमी व्रतकथा ०-३५
४९५ बहुलाव्रत कथा ०-५०
४९६ भीष्मपञ्चक कथा १-००
४९७ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
४९८ महालक्ष्मी व्रतकथा—भा० टी ०-५०
४९९ महाशिवरात्रिमाहात्म्य—भा० टी० १-००
५०० माघ माहात्म्य-भा० टी० ४-००
५०१ माघभादों गणेश चतुर्थी ०-५०
५०२ मुक्ताभरणसप्तमी-भा० टी० ०-५०
५०३ रविषष्ठी व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
५०४ रामनवमी व्रतकथा ०-५०
५०५ वट सावित्री व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
५०६ वामन द्वादशी व्रत कथा ०-५०
५०७ व्यतीपात कथा—भा० टी० ०-५०
५०८ वैशाख माहात्म्य—भा० टी० ५-००
५०९ शनि प्रदोष-पक्ष प्रदोष व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
५१० सप्तवार व्रत कथा ०-५०
५११ श्रावण मास माहात्म्य—भा० टी० ४-००
५१२ सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०-२५
५१३ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा०टी० ०-७५
५१४ सत्यनारायण-भा०टी०५ अध्याय ०-६२
५१५ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०-५०
५१६ सोमवती अमावस्या कथा—भा० टी० ०-५०
५१७ सोलह सोमवार कथा ०-५०
५१८ हरितालिकाव्रतकथा ०-५०
५१९ हलषष्ठी व्रतकथा ०-२५

वेदान्त

(शंकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५२० अच्युत लेखमाला-विद्वानों के लेख हिन्दी २-००
५२१ अणुभाष्य-(वल्लभाचार्य) टीका सहित ६-२५
५२२ अणुभाष्य सटीक ३०-५०
५२३ अद्वैत तत्त्वसुधा दो भाग ५५-००
५२४ अद्वैतदीपिका २ भाग २५-००
५२५ अद्वैत पचरत्न ०-५६
५२६ अद्वैतरत्नरक्षण—मधुसूदन ०-७५
५२७ अद्वैतरत्नाकर ०-६०
५२८ अद्वैत विद्यातिलक १-२५
५२९ अद्वैत वेदान्तविद २-००
५३० अद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रह ०-७५
५३१ अद्वैतसिद्धि-(मधुसूदन सरस्वती) सटीक ३०-००
५३२ अद्वैतसिद्धि सिद्धान्तसार ७-५०
५३३ अद्वैतामोद-वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३-००
५३४ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०-४५
५३५ अध्यात्म विकास १-५०
५३६ अध्यात्मविद्योपदेश ०-४०
५३७ अनुभव प्रकाश-(बनानाथकृत) हिन्दी पद्योंमें २-२५
५३८ अपरोक्षानुभूति-भा० टी० बम्बई ०-९०
५३९ अपरोक्षानुभूति-हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०-२५
५४० अभिलाष सागर—भाषा ४-८०
५४१ आत्मतत्त्व विवेक १२-५०
५४२ आत्मतत्त्वविवेक-शंकरमिश्र १५-००
५४३ आत्मप्रबोध १-००
५४४ आत्मबोध प्रकरण-दिनेशचन्द्र ५-६२
५४५ आत्मबोध-(शंकराचार्य) अन्वय-भाषार्थसहित ०-६०
५४६ आनन्दामृत वर्षिणी-स्वामी आनन्दगिरि भाषा २-४०
५४७ आभोग-कल्पतरु व्याख्या २०-००
५४८ ओंकारमहिमाप्रकाश-(ऊंकार से वर्षी नर) १-५०
५४९ उपदेश साहस्री-(शंकराचार्य प्रणीत) भा०टी० २-००
५५० उपासना ०-७५
५५१ कायपरिशुद्धि-वासुदेव शास्त्री प्रणीत २-००
५५२ कौशल्यगीतावली २ भाग १-२५
५५२अ क्रियासार—नीलकण्ठ ३ भाग १८-५०
५५३ क्रम दीपिका—केशव भट्ट ७-५०
५५४ खंडन खण्ड खाद्य-भा. टी. ८-००
५५५ ख्याले फकीर १०-००
५५६ गूढार्थ दीपिका १२-००
५५७ चतुर्विंशत्युपनिषत्सारसंग्रह भाषा ४-८०
५५८ चद्रकान्त-(वेदान्त) भाषा ३ भागों में १०-००
५५९ चैतन्य चरितावली-५ भाग सचित्र
५६० जयतीर्थस्तुति १-७५
५६१ जीवन्मुक्तिविवेक —मराठी ८-००
५६२ ढाई हजार अनमोल बोल-हिन्दी
५६३ तत्त्वचिन्तामणि-भा० टी० जयदयाल ६-५०
५६४ तत्त्वदीपन २४-००
५६५ तत्त्वप्रकाशिका व्याख्या १५-०
५६६ तत्त्वबोध शंकराचार्य भा०टी० ०-६०
५६७ तत्त्व सन्दर्भ-भा०टी० १-५०
५६८ तत्त्वसार-सव्याख्या ६-००
५६९ दहरविद्याप्रकाश ०-७५
५७० दासबोध-भाषा ३-५०
५७१ दृष्टान्तदर्पण भाषा २-५०
५७२ दृष्टान्त दीपक २-००
५७३ दृष्टान्त मंजूषा-भाषा स्वा० परमानन्द २-४०
५७४ दृष्टान्तसागर १०-५०
५७५ द्वैतनिर्णय सिद्धान्तसंग्रह १-००
५७६ नयद्युमणि मेघनादनी ९-७५
५७७ नवधा भक्ति-हिन्दी ०-१५
५७८ नारदभक्तिसूत्र १-००
५७९ निर्भय विलास-भाषा पद्य ३-००
५८० न्यायचंद्रिका-स्वरूपानंद १८-७५
५८१ नैष्कर्म्य सिद्धि—मराठी टीका २-००
५८२ न्यायभास्करखंडन ३-००
५८३ न्यायरत्नदीपावली ११-२५
५८४ पंचकोशविवेक १-५०
५८५ पंचदशी पीतांबरी भा. टी. ८-००
५८६ पंचदशी—सटीक ४-८०, ६-५०
५८७ पंचपादिका विवरण सटीक २८-७५
५८८ पचप्रक्रिया—सर्वस्व २-९१
५८९ पंचीकरण सटीक ३-००
५९० पंचीकरण—केवल भाषा ३-००
५९१ पद्यावली—रूपगोस्वामी २-६०
५९२ परतत्त्वभ्रमनिरासनक्षत्रमाला १-२५

६६३ भगवन्नाम माहात्म्य-(रघुनाथ यति) सटीक २-७५

५९३ परमार्थ पत्रावली—भाषा जयदयाल १-५०
५९४ परमार्थ भूषण २५-००
५९५ परमार्थसार ०-५०
५९६ पक्षपात रहित—अनुभव प्रकाश स्वा. विशुद्धानन्द ९-६०
५९७ पारसमणि पारस भागका सरल हिन्दी अनुवाद ६-००
५९८ प्रकरणपञ्चक—श्री शंकराचार्य भा० टी० ०-७५
५९९ प्रकटार्थ विवरण दूसरा भाग ७-८८
६०० प्रणवकल्प—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) ३-००
६०१ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—सदानन्द व्यासकृत ५-००
६०२ प्रस्थान भेद—मधुसूदन सरस्वती कृत ०-२५, ०-३१
६०३ प्रपञ्चपरिजात ३-४०
६०४ प्रस्थानरत्नाकर—पुरुषोत्तमजी ६-००
६०५ प्रश्नोत्तरसागर —योगानंद ४-००
६०६ प्राणतत्त्व १-५०
६०७ प्राणसंगली—श्री गुरुनानक साहिब कृत टिप्पणी ८-००
६०८ प्रेमपत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १-२५
६०९ प्रेमयोग—वियोगी हरि हिन्दी १-७५
६१० प्रेमदर्शन—भा० टी० (भक्तिसूत्र) ०-५०
६११ बिल्वदल दो भाग ५-००
६१२ बोधसार—नरहरि ३०-००
६१३ बोधसार—भाषा १०-००
६१४ बृहदारण्यकवार्तिकसार सटीक २०-००
६१५ बृहदारण्यक वार्तिकसार—भा० टी० दो भाग १२-००
६१६ ब्रह्मविद्याभरण—(निम्बार्काचार्य) ३-००
६१७ [illegible]—भा० टी० २-२०
६१८ ब्रह्म सिद्धान्त—टी० मधुसूदन १२-००
६१९ [illegible] २४-००
६२० ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य ३-५०
६२१ [illegible] २४-००
६२२ [illegible] २२-००
६२३ [illegible] ६-५०
६२४ [illegible] २-५०
६२५ [illegible] ३-५०
६२६ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—[illegible] ६-००
६२७ ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री [illegible] ३-००

६२८ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—(ब्रह्मतत्त्वप्रकाशिका) सदाशिवेन्द्र ०-०
६२९ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति—श्री रामानन्दप्रणीत १-२५
६३० ब्रह्मसूत्रवृत्ति—मिताक्षरा ७-००
६३१ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—शंकर शिष्य प्रणीत अद्वैत मंजरी १-००
६३२ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्यार्थ रत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६-७५
६३३ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—हरिदीक्षित कृत ३-७५
६३४ ब्रह्मसूत्र—ब्रह्मामृतवर्षिणी ६-७५
६३५ ब्रह्मसूत्र भा. टी. वीरमणि दो भाग ३०-००
६३६ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्य भाषानुवाद १०-००
६३७ ब्रह्मसूत्र—मराठी टीका महित ३ भाग में ३६-००
६३८ ब्रह्मसूत्र—विद्योदय उदयवीर भा.टी. २०-००
६३९ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य आनंदगिरि केवल दूसरा भाग ९-००
६४० ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य सत्यानन्द भा.टी १६-००
६४१ ब्रह्मसूत्रवृत्ति व्रजनाथ ५-००
६४२ ब्रह्मसूत्र दीपिका ६-००
६४३ ब्रह्मसूत्र—सुषमा हनुमानदास ४-००
६४४ ब्रह्मसूत्र द्वैताद्वैतदर्शन ९-००
६४५ ब्रह्मसूत्र भूमिका श्री गोपीनाथ १-००
६४६ ब्रह्मसूत्र और वैष्णवभाष्य १-२५
६४७ ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन १०-००
६४८ ब्रह्मसूत्रसिद्धान्तमुक्तावली ३-७५
६४९ ब्रह्मसंकीर्तन—डागरीवेदान्त ८-२५
६५० बोधैक्यसिद्धि—अच्युतराय सटीक ६-००
६५१ भक्तिचंद्रिका १०-२०
६५२ भक्ति चन्द्रिका—शांडिल्य सूत्र व्या० दूसरा १-५०
६५३ भक्ति चन्द्रिका—भाषा पद्यात्मक—गणेश सिंह १-००
६५४ भक्ति निर्णय—(अनन्तदेव) तथा नाम माहात्म्य ०-६२
६५५ भक्तिप्रकाश—पौराणिक—भा० टी० गोपालदास २-४.
६५६ [illegible] माला—(नारायण तीर्थकृत) १-२५
६५७ भक्तिरसामृतसिन्धु—भा. टी. २५-००
६५८ भक्ति रसायन भा. टी. ३-००
६५९ [illegible] ०-३५
६६० [illegible] २-००
६६१ [illegible] २०-००
६६२ [illegible] टीका ०-७५

६६३ [illegible]—(रघुनाथ यति) सटीक २-७५
६६४ भगवच्चर्चा—हनुमान दास पोद्दार—६ भाग सादा ५-००
६६५ भामती—(ब्रह्मसूत्रशंकरभाष्यव्याख्या) वाचस्पति ४-००
६६६ भावरसामृत—बोधप्रकाश स्वा० गुलाबसिंह ०-७०
६६७ भेदरत्न १-५०
६६८ मणिरत्नमाला भा. टी. ३-००
६६९ मध्वतन्त्र मुख मर्दन—अप्पय दीक्षित विरचित २-५०
६७० मध्वतन्त्रमुखमर्दन—अप्पय दीक्षित कृत १-५०
६७१ मध्व मुखालंकार—वनमालि मिश्र विरचित १-५०
६७२ मध्व मंत्र रत्नाकर—टी० आर० कृष्णाचार्य ६-२५
६७३ महावाक्य १-५०
६७४ महावाक्यरत्नावली— ०-५०
६७५ महावाक्यविवरण—भा० टी० १-३५
६७६ यतीन्द्रमत दीपिका—श्रीनिवासदास प्रकाश व्या.स. २-०
६७७ यतीन्द्रमत दीपिका—सटिप्पण ०-५५
६७८ युक्तिप्रकाशभाषा २-००
६७९ योगवासिष्ठ—भा० टी० चतुर्थ पांचवां १०-०० ,-००
६८० योगवासिष्ठ—भाषा—२ भाग में बम्बई ३०-००
६८१ योगवासिष्ठ—मराठी प्रथम भाग ७-००
६८२ योगवासिष्ठ कथा १५-००
६८३ लघुयोगवासिष्ठ—वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित ८-०
६८४ लोक परलोक सुधार—भाषा ५ भाग ३-००
६८५ वाक्यवृत्ति—शंकराचार्यप्रणीत—विश्वेश्वर टी० ०-७५
६८६ वाक्यवृत्ति भा० टी० १-१२
६८७ वाक्यसुधा—भा. टी. १-५०
६८८ विचारचन्द्रोदय—पीताम्बरी भाषा बम्बई ९-६०
६८९ विचारचन्द्रोदय—स्वा० निगमानन्द सरल हिन्दी २-००
६९० विचार माला—स्वा० गोविन्द दास सटीक २-४०
६९१ विचारसागर—निगमानन्द ७-५०
६९२ विचारसागर—संस्कृत में १५-००
६९३ विचारसागर—पीतांबरी १२-३०
६९४ विचारसागर—हनुमानदास ३-००
६९५ विघ्नभंजन ६-००
६९६ विवरणप्रमेयसंग्रह ८-५०
६९७ विवरणप्रमेयसंग्रह—(विद्यारण्य) हिन्दीटीका ६-५०

६९८ विवरणोपन्यास—रामानन्द ६–००
६९९ विवरणादि प्रस्थान विमर्श १–००
७०० विवेकचूडामणि ०–४०
७०१ विवेक चिन्तामणि–मराठी ६–७५
७०२ विवेकमकरन्द—वासुदेव यतीन्द्र ३–००
७०३ विषवाक्य दीपिका ६–००
७०४ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०–२५
७०५ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला–पं० सुदर्शनाचार्य १–००
७०६ विष्णु तत्त्व दीपिका २–२५
७०७ वेदान्त कल्पलतिका ५–००
७०८ वेदान्त कौमुदी–रामाद्वयाचार्य प्रणीत ११–५०
७०९ वेदान्त छन्दावली–५ भाग–भोले बाबा हिन्दी ३–५०
७१० वेदान्तदर्शन–भा० टी० श्रीराम शर्मा ४–००
७११ वेदान्तदीपिका २–५०
७१२ वेदान्ततत्त्वविवेक–नृसिंहाश्रम १७–००
७१३ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५–००
७१४ वेदान्तडिण्डिम ०–७५
७१५ वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९–००
७१६ वेदान्तप्रदीप ७–५०
७१७ वेदान्तप्रदीपिका २–४०
७१८ वेदान्त परिभाषा सटीक ३–००
७१९ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४–००
७२० वेदान्तपरिभाषा–हिन्दी टीका १०–००
७२१ वेदान्त प्रबोध २–००
७२२ वेदान्तबालबोधिनी ०–८८
७२३ वेदात रत्न मजूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ६–००
७२४ वेदान्तरत्नावली भाषा ०–५०
७२५ वेदान्तरहस्य भाषा १–००
७२६ वेदांतसार–जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
७२७ वेदान्तसार भा. टी नरेन्द्र २–५०
७२८ वेदान्तसार रामानुज–सटिप्पण २–५०
७२९ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली–हिन्दी टीका सहित ०–७५
७३० वेदान्त सिद्धान्त संग्रह–वनमाली कृत ९–००
७३१ वेदात सूत्र मुक्तावलि–ब्रह्मानंद सरस्वती–पूना ३–५०
७३२ वेदांतसंज्ञा–भा० टी० १–००

७३३ वेदान्तस्तोत्र संग्रह १–००
७३४ वेदार्थसंग्रह ५–५०
७३५ वैयासिक न्यायमाला ४–००
७३६ वृत्ति प्रभाकर–निश्चलदास भाषा ८–४०
७३७ वृत्ति प्रभाकर–स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६–००
७३८ शंकरदिग्विजय भा. टी. १३–५०
७३९ शांकरग्रन्थावलि–६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६–५०
७४० शांकरग्रन्थावलि–दशोपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा भगवद्गीता ३ भाग में ११–७५
७४१ शांकर पादभूषण–रघुनाथ सूरि–दो भाग १२–५०
७४२ शंकराचार्यकृत–प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२–५०
७४३ शिवतत्त्वरत्नाकर ११–००
७४४ शिवस्तोत्रावली भा० टी० १०–००
७४५ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड ५–००
७४६ श्रीभाष्य—सटीक संपूर्ण २८–१२
७४७ श्रीभाष्य हिन्दी प्रथम अधिकरण ९–००
७४८ श्रीभाष्य प्रकाशिका–श्री निवासाचार्य ६–५०
७४९ श्रीभाष्यवार्तिक ६–००
७५० श्री सुबोधिनी–श्री वल्लभाचार्य ९–००
७५१ श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर ४–२०
७५२ श्रुत्यत कल्पवल्ली–पुरुषोत्तमदास ६–००
७५३ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ९–००
७५४ संक्षेप शारीरिक–अन्वयार्थ काशिका व्याख्या १३–००
७५५ संक्षेप शारीरिक–सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ १३–५०
७५६ संक्षेप शारीरिक १०–००
७५७ सदाचार १–१२
७५८ सनत्सुजातीय–शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक २–००
७५९ सनत्सुजातीय भा. टी. २–००
७६० सन्तवचनामृत १–२५
७६१ साधन संग्राम–भागीरथ जी ६–५०
७६२ साधनापथ–शिवोमप्रकाश १–००
७६३ सत्संग के बिखरे मोती–भाषा ०–७५
७६४ स्तुतिकुसुमांजलि भा. टी. १५–००
७६५ सारसंग्रह–गौड़ वैष्णवसिद्धान्तग्रंथ रूपकविराज ६–००
७६६ सारुक्तावली–(भाषा) ०–३५, ०–७५

७६७ सिद्धान्तकल्पवल्ली ०–७५
७६८ सिद्धान्तदर्शन–विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २–०
७६९ सिद्धान्त बिन्दु–वासुदेव अभ्यंकर सं ०टी० ७–००
७७० सिद्धान्त बिन्दु–भा० टीका सहित २–७५
७७१ सिद्धान्तलेश संग्रह–भा० टी० ६–००
७७२ सिद्धान्तसिद्धाञ्जन–रत्नतूलिका सहित १७–००
७७३ सुन्दर विलास बम्बई ३–३०
७७४ सूतसंहिता–तात्पर्य दीपिका सहित ९–००
७७५ सूतसंहिता ३ भाग १७–२५
७७६ सूत्रार्थामृतलहरी ३–२५
७७७ स्वानंदानुभव ०–६२
७७८ स्वानुभवादर्श ६–००
७७९ हरिभक्ति रसामृतसिन्धु भा.टी. ९–५०
७८० हरिहराद्वैत भूषण ६–६२
७८१ ज्ञानमाला–भाषा ०–४०
७८२ ज्ञान वैराग्यछन्दावली २–२५
७८३ ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वा० परमानंद भाषा २–४०

तंत्र, मंत्र

७८४ अनुष्ठान प्रकाश–चतुर्थी लाल विरचित खुला १४–४०
७८५ अष्टसिद्धि–हिन्दी टीका सहित १–६२
७८६ इन्द्रजाल भाषा ४–०
७८७ उच्छिष्ट गणपति २–१०
७८८ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १–७५
७८९ उड्डीश तन्त्र–भाषा टीका १–००
७९० कर्पूरादिस्तोत्र–विमलानन्द स्वामी ४–००
७९१ कलिविलासतंत्र ४–५०
७९२ कामकला विलास–पुण्यानंद विरचित सटीक १–२५
७९३ कामरत्न–हिन्दी भाषा ६–००
७९४ कुलार्णवतंत्र ३–५०
७९५ कौलोपनिषद् ४–५०
७९६ क्रम दीपिका–केशव भट्ट कृत काशी ९–००
७९७ क्रियोड्डीशतंत्र १–५०
७९८ गायत्री तन्त्र–भाषभाष्य समेत १–००

१–२५ ८७१ सौन्दर्य लहरी–लक्ष्मीधर व्याख्या–भास्कर भाष्य ३–७५
२–२५

७९९ गायत्रीरहस्य १-५०
८०० गायत्रीपुरश्चरण ४-००
८०१ गायत्रीपूजापद्धति-(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०-२५
८०२ चिद्गगन चन्द्रिका- महाकवि कालिदास १-४०
८०३ जयाख्यसंहिता ५०-००
८०४ तत्त्वनिधि-कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ८-४०
८०५ तन्त्रसार-कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत ३-००
८०६ तंत्रसार संग्रह-(विषनारायणीय) सव्याख्या १५-२५
८०७ तंत्राभिधान ५-६२
८०८ तंत्रालोक-अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में ३९-००
८०९ तांत्रिक पंचांग १-००
८१० तारिणी पारिजात ४-००
८११ त्रिपुरारहस्य-माहात्म्य खंड १२-००
८१२ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड ९-००
८१३ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड हिं. टीका १३-००
८१४ दत्तात्रेय तंत्र-भा० टी० १-००
८१५ दुर्गा पञ्चाङ्ग-मूल-मातृप्रसाद पाण्डेय १-२५
८१६ दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धति ०-७५
८१७ दुर्गा सप्तशती-गुटका-मूल ०-७५
८१८ दुर्गा सप्तशती-गुटका निर्णयसागर २-७५
८१९ दुर्गा-गीता प्रेस भा० टी० १-००
८२० दुर्गा सप्तशती-[illegible] २-५०
८२१ दुर्गा सप्तशती-मूल बम्बई खुला १-५० जिल्द ८-००
८२२ दुर्गा सप्तशती-भाषा टीका सहित १-००, २-५०
८२३ दुर्गा सप्तशती-पंडित [illegible] भाषा टीका २-८०
८२४ [illegible]-हिन्दी टीका सहित ३-००
८२५ [illegible] ६-००
८२६ [illegible] ३-००
८२७ [illegible] १५-००
८२८ [illegible] १-४०
८२९ [illegible] १-६०
८३० [illegible] ४-८०
८३१ [illegible] ४-५०
८३२ [illegible] ३-५०
८३३ [illegible]-भा० टी० ०-५०
८३४ महामृत्युञ्जय [illegible]-मातृप्रसाद पाण्डेय १-२५

८३५ महात्रिपुरसुन्दरीपूजाकल्प [illegible]
८३६ मातृका भेद तंत्र १२-००
८३७ मंत्रकौमुदी-देवनाथ मूल ६-००
८३८ मंत्रमहोदधि-सटीक खुला १०-८०
८३९ मंत्ररामायण-सटीक २-४०
८४० मालिनी विजय तन्त्र-आगम शास्त्र ३-५०
८४१ माहेश्वर तन्त्र-श्री कृष्णप्रियाचार्य ९-००
८४२ मृगेन्द्रतन्त्र-विद्यापाद-योगपाद व्याख्या १-००
८४३ मृगेन्द्रागम १८-००
८४४ मंत्र और मातृकाओं का रहस्य १६-००
८४५ मंत्र सिद्धि का उपाय २-५०
८४६ मंत्रविद्या १-८०
८४७ मंत्रचिन्तामणि १-६०
८४८ योगिनीतन्त्र-हिन्दी टीका सहित ८-४०
८४९ योगिनीहृदय-दीपिका व्याख्या १०-००
८५० रत्नगोत्र विभागमहायानोत्तरतन्त्र ८-००
८५१ रौरव आगम १८-००
८५२ रुद्रयामलतंत्र १-२०
८५३ ललित सहस्रनाम-मूल मात्र बम्बई ०-५०
८५४ ललितास्तवमणिमाला-बम्बई ०-५०
८५५ लक्ष्मीतन्त्र-पाञ्चरात्र ३०-००
८५६ वंध्यातंत्र ०-५५
८५७ वामकेश्वरीमत विवरण-जयरथ कृत १-००
८५८ शतरत्नसंग्रह ३-४०
८५९ शारदा तिलक सटीक १५-००
८६० श्रीविद्या खड्गमाला १-००
८६१ श्रीविद्या नित्याह्निकम् ५-७५
८६२ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी व्या. ३-४०
८६३ श्रीविद्यासपर्यापद्धति ६-२५
८६४ षट्चक्रनिरूपण ०-७५
८६५ शाबर तंत्र ३-००
८६६ साबर तन्त्र-(सेवड़े का जादू) भाषा ३-००
८६७ [illegible]-क्षेमराज कृत व्याख्या सात भाग १६-५०
८६८ [illegible] २५-००
८६९ सौन्दर्य लहरी-[illegible] विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी ५-००
८७० सौन्दर्य लहरी-[illegible] अनु. [illegible] अमरीका ५५-२५
८७१ सौन्दर्य लहरी-लक्ष्मीधर व्याख्या-भास्कर भाष्या ३-७५
८७२ सौन्दर्यलहरी (आनन्दलहरी) २-२५
८७३ सौभाग्य लक्ष्मी-भाषा टीका सहित १-२०
८७४ संक्षिप्त तान्त्रिक आह्निक ४-५०
८७५ हंसविलास-हंसमिट्ठू कृत १२-०
८७६ ज्ञानार्णव तंत्र-मूलमात्र पूना २-००
८७७ ज्ञानसंकलिनी तंत्र ०-५०

स्तोत्र

८७८ अन्नपूर्णा स्तोत्र ०-१५
८७९ अपराजिता स्तोत्र ०-२०
८८० आदित्य हृदय ०-६०
८८१ आदित्यहृदय-मोटा अक्षर ०-५०
८८२ आदित्यहृदय-छोटा अक्षर ०-३४
८८३ आदित्यहृदय -नवग्रह सहित ०-९०
८८४ आनन्दलहरी स्तोत्र-डिण्डिमभाष्य, सटीक २-२५
८८५ आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तो ०-२०
८८६ आरतीसंग्रह-भाषा ०-२५
८८७ आलबदार स्तोत्र ०-१५
८८८ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०-१०
८८९ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०-१२
८९० कर्पूरस्तवराज ०-४०
८९१ कंठाभरण हिं. अनु. ०-३२
८९२ कमलनेत्र स्तोत्र ०-१५
८९३ कालिकासहस्रनाम ०-५०
८९४ कालीकवच ०-१०
९५ कुञ्जिकास्तोत्र ०-२५
८९६ गंगालहरी-मूल ०-१५
८९७ गंगालहरी-अमृतलहरी ०-२५
८९८ गंगालहरी-पीयूषलहरी सं० टीका ०-५०
८९९ गंगालहरी-भाषा टीका ०-६०
९०० गजेन्द्रमोक्ष-भाषा टीका ०-२५
९०१ गणपतिस्तोत्र-गणेशमहिम्न ०-२०
९०२ गणेशकवच ०-१२
९०३ गणेशमहिम्न स्तोत्र ०-१०

विवरणोपन्यास—रामानन्द ६-००
विवरणादि प्रस्थात विमर्श १-००
विवेकचूडामणि ०-४०
विवेक चिन्तामणि—मराठी ६-७५
२ विवेकमकरन्द—वासुदेव यतीन्द्र ३-००
३ विषवाक्य, दीपिका ६-००
४ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०-२५
५ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला—पं० सुदर्शनाचार्य १-००
६ विष्णु तत्त्व दीपिका २-२५
०७ वेदान्त कल्पलतिका ५.००
०८ वेदान्त कौमुदी—रामाद्वयाचार्य प्रणीत ११-५०
०९ वेदान्त छन्दावली—५ भाग—भोले बाबा हिन्दी ३-५०
१० वेदान्तदर्शन—भा० टी० श्रीराम शर्मा ४-००
११ वेदान्तदीपिका २-५०
१२ वेदान्ततत्त्वविवेक—नृसिंहाश्रम १७-००
१३ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५-००
१४ वेदान्तडिण्डिम ०-७५
१५ वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९-००
१६ वेदान्तप्रदीप ७-५०
१७ वेदान्तप्रदीपिका २-४०
७१८ वेदान्त परिभाषा सटीक ३-००
७१९ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४-००
७२० वेदान्तपरिभाषा—हिन्दी टीका १०-००
७२१ वेदान्त प्रबोध २-००
७२२ वेदान्तबालबोधिनी ०-८८
७२३ वेदात रत्न मजूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ६-००
७२४ वेदान्तरत्नावली भाषा ०-५०
७२५ वेदान्तरहस्य भाषा १-००
७२६ वेदांतसार—जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २-५०
७२७ वेदान्तसार भा. टी नरेन्द्र २-५०
७२८ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २-५०
७२९ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—हिन्दी टीका सहित ०-७५
७३० वेदान्त सिद्धान्त संग्रह—वनमाली कृत ९-००
७३१ वेदात सूत्र मुक्तावलि—ब्रह्मानंद सरस्वती—पुना ३-५०
७३२ वेदांतसंज्ञा—भा० टी० १-००
७३३ वेदान्तस्तोत्र संग्रह १-००
७३४ वेदार्थसंग्रह ५-५०
७३५ वैयासिक न्यायमाला ४-००
७३६ वृत्ति प्रभाकर—निश्चलदास भाषा ८-४०
७३७ वृत्ति प्रभाकर—स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६-००
७३८ शंकरदिग्विजय भा. टी. १३-५०
७३९ शांकरग्रन्थावलि—६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६-५०
७४० शांकरग्रन्थावलि—दशोपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा भगवद्गीता ३ भाग में ११-७५
७४१ शाकर पादभूषण—रघुनाथ सूरि—दो भाग १२-५०
७४२ शंकराचार्यकृत—प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२-५०
७४३ शिवतत्त्वरत्नाकर ११-००
७४४ शिवस्तोत्रावली भा० टी० १०-००
७४५ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड ५-००
७४६ श्रीभाष्य—सटीक संपूर्ण २८-१२
७४७ श्रीभाष्य हिन्दी प्रथम अधिकरण ९-००
७४८ श्रीभाष्य प्रकाशिका—श्री निवासाचार्य ६-५०
७४९ श्रीभाष्यवार्तिक ६-००
७५० श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९-००
७५१ श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर ४-२०
७५२ श्रुत्यत कल्पवल्ली—पुरुषोत्तमदास ६-००
७५३ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ९-००
७५४ संक्षेप शारीरिक—अन्वयार्थ काशिका व्याख्या १३-००
७५५ संक्षेप शारीरिक—सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ १३-५०
७५६ संक्षेप शारीरिक १०-००
७५७ सदाचार १-१२
७५८ सनत्सुजातीय—शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक २-००
७५९ सनत्सुजातीय भा. टी. २-००
७६० सन्तवचनामृत १-२५
७६१ साधन संग्राम—भागीरथ जी ६-५०
७६२ साधनापथ—शिवोमप्रकाश १-००
७६३ सत्संग के बिखरे मोती—भाषा ०-७५
७६४ स्तुतिकुसुमांजलि भा. टी. १५-००
७६५ सारसंग्रह—गौड़ वैष्णवसिद्धान्तग्रंथ रूपकविराज ६-००
७६६ सारुक्तावली—(भाषा) ०-३५, ०-७५
७६७ सिद्धान्तकल्पवल्ली ०-७५
७६८ सिद्धान्तदर्शन—विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २-०
७६९ सिद्धान्त बिन्दु—वासुदेव अभ्यंकर सं० टी० ७-००
७७० सिद्धान्त बिन्दु—भा० टीका सहित २-७५
७७१ सिद्धान्तलेश संग्रह—भा० टी० ६-००
७७२ सिद्धान्तसिद्धाञ्जन-रत्नतूलिका सहित १७-००
७७३ सुन्दर विलास बम्बई ३-२०
७७४ सूतसंहिता—तात्पर्य दीपिका सहित ९-००
७७५ सूतसंहिता ३ भाग १७-२५
७७६ सूत्रार्थामृतलहरी ३-२५
७७७ स्वानंदानुभव ०-६२
७७८ स्वानुभवादर्श ६-००
७७९ हरिभक्ति रसामृतसिन्धु भा.टी. ९-५०
७८० हरिहराद्वैत भूषण ६-६२
७८१ ज्ञानमाला—भाषा ०-४०
७८२ ज्ञान वैराग्यछन्दावली २-२५
७८३ ज्ञानवैराग्य प्रकाश—स्वा० परमानंद भाषा २-४०

तंत्र, मंत्र

७८४ अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थी लाल विरचित खुला १४-४०
७८५ अष्टसिद्धि—हिन्दी टीका सहित १-६२
७८६ इन्द्रजाल भाषा ४-०
७८७ उच्छिष्ट गणपति २-१०
७८८ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १ ७५
७८९ उड्डीश तन्त्र—भाषा टीका १-००
७९० कर्पूरादिस्तोत्र—विमलानन्द स्वामी ४-००
७९१ कलिविलासतंत्र ४-५०
७९२ कामकला विलास—पुण्यानंद विरचित सटीक १-२५
७९३ कामरत्न—हिन्दी भाषा ६-००
७९४ कुलार्णवतंत्र ३-५०
७९५ कौलोपनिषद् ४-५०
७९६ क्रम दीपिका—केशव भट्ट कृत काशी ९-००
७९७ क्रियोड्डीशतंत्र १-५०
७९८ गायत्री तन्त्र—भाषभाष्य समेत १-००

 मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

सौन्दर्य लहरी—लक्ष्मीधर व्याख्या—भास्कर भाष्य ३-७५

१-५०
७९९ गायत्रीरहस्य ४-००
८०० गायत्रीपुरश्चरण
८०१ गायत्रीपूजापद्धति–(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०-२५
८०२ विद्वगन चन्द्रिका– महाकवि कालिदास ३-४०
८०३ जयाख्यसंहिता ५०-००
८०४ तत्त्वनिधि–कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ८-४०
३-००
८०५ तन्त्रसार–कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत १५-२५
८०६ तंत्रसार संग्रह–(विपनारायणीय) सव्याख्या ५-६२
८०७ तंत्राभिधान
८०८ तंत्रालोक–अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में ३९-००
८०९ तांत्रिक पंचांग १-००
८१० तारिणी पारिजात ४-००
८११ त्रिपुरारहस्य–माहात्म्य खंड १२-००
८१२ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड ९-००
८१३ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड हि. टीका १३-००
८१४ दत्तात्रेय तंत्र–भा० टी० १-००
८१५ दुर्गा पञ्चाङ्ग–मूल–मातृप्रसाद पाण्डेय १-२५
८१६ दुर्गापूजा–श्यामापूजापद्धति ०-७५
८१७ दुर्गा सप्तशती–गुटका–मूल ०-७५
८१८ दुर्गा सप्तशती–गुटका निर्णयसागर २-७५
८१९ दुर्गा–गीता प्रेस भा० टी० १-००
८२० दुर्गा सप्तशती–[illegible] २-५०
८२१ दुर्गा सप्तशती–मूल [illegible] १-५० जिल्द ४-००
८२२ दुर्गा सप्तशती–भाषा टीका सहित १-००, २-५०
८२३ दुर्गा सप्तशती–[illegible] भाषा टीका २-४०
८२४ दुर्गा सप्तशती–[illegible] हिन्दी [illegible] सहित ३-००
८२५ [illegible] हिन्दी [illegible] ६-००
८२६ [illegible] कृत [illegible] ३-००
८२७ [illegible] १५-००
८२८ [illegible] १-५०
८२९ [illegible] ३-६०
८३० [illegible] ४-५०
८३१ [illegible] ८-००
८३२ [illegible] ३-५०
८३३ [illegible] ०-५०
८३३ [illegible]–भा० टी० [illegible]
८३४ [illegible]–मातृप्रसाद पाण्डेय १-२५

८३५ महात्रिपुरसुन्दरीपूजा कल्प १२-००
८३६ मातृका भेद तंत्र ६-००
८३७ मंत्रकौमुदी–देवनाथ मूल १०-८०
८३८ मंत्रमहोदधि–सटीक खुला २-४०
८३९ मंत्ररामायण–सटीक ३-५०
८४० मालिनी विजय तन्त्र–आगम शास्त्र ९-००
८४१ माहेश्वर तन्त्र–श्री कृष्णप्रियाचार्य १-००
८४२ मृगेन्द्रतन्त्र–विद्यापाद-योगपाद व्याख्या १८-००
८४३ मृगेन्द्रागम १६-००
८४४ मंत्र और मातृकाओं का रहस्य २-५०
८४५ मंत्र सिद्धि का उपाय १-८०
८४६ मंत्रविद्या १-६०
८४७ मंत्रचिन्तामणि ८-४०
८४८ योगिनीतन्त्र–हिन्दी टीका सहित १०-००
८४९ योगिनीहृदय–दीपिका व्याख्या ८-००
८५० रत्नगोत्र विभागमहायानोत्तरतन्त्र १८-००
८५१ रौरव आगम १-२०
८५२ रुद्रयामलतंत्र ०-५०
८५३ ललित सहस्रनाम–मूल मात्र बम्बई ०-५०
८५४ ललितास्तवमणिमाला–बम्बई ३०-००
८५५ लक्ष्मीतन्त्र–पाञ्चरात्र ०-५५
८५६ वंध्यातंत्र १-००
८५७ वामकेश्वरीमत विवरण–जयरथ कृत ३-४०
८५८ शतरत्नसंग्रह १५-००
८५९ शारदा तिलक सटीक १-००
८६० श्रीविद्या खड्गमाला ५-७५
८६१ श्रीविद्या नित्याह्निकम् [illegible] सार्थबोधिनी व्या. ३-४०
८६२ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड ६-२५
८६३ श्रीविद्या[illegible]पद्धति ०-७५
८६४ षट्चक्रनिरूपण ३-००
८६५ [illegible] तंत्र भाषा ३-००
८६६ [illegible] तन्त्र–(बंगाल का जादू) [illegible] व्याख्या सात भाग १६-५०
८६७ [illegible] तंत्र–[illegible] कृत २५-००
८६८ [illegible] विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी ५-००
८६९ [illegible] अमरीका ५५-२५
८७० [illegible]

८७१ [illegible] व्याख्या–भास्कर भाष्य ३-७५, २-२५
८७२ सौन्दर्यलहरी (आनंदलहरी) १-२०
८७३ सौभाग्य लक्ष्मी–भाषा टीका सहित ४-५०
८७४ संक्षिप्त तान्त्रिक आह्निक १२-०
८७५ हंसविलास–हंसमिट्ठू कृत २-००
८७६ ज्ञानार्णव तंत्र–मूलमात्र पूना ०-५०
८७७ ज्ञानसंकलिनी तंत्र

स्तोत्र

०-१५
८७८ अन्नपूर्णा स्तोत्र ०-२०
८७९ अपराजिता स्तोत्र ०-६०
८८० आदित्य हृदय ०-५०
८८१ आदित्यहृदय–मोटा अक्षर ०-३४
८८२ आदित्यहृदय–छोटा अक्षर ०-१०
८८३ आदित्यहृदय –नवग्रह सहित २-२५
८८४ आनन्दलहरी स्तोत्र—डिण्डिमभाष्य, सटीक ०-२०
८८५ आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तो ०-२५
८८६ आरतीसंग्रह–भाषा ०-१५
८८७ आलबदार स्तोत्र ०-१०
८८८ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०-१२
८८९ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०-४०
८९० कपूरस्तवराज ०-३१
८९१ कंठाभरण हि. अनु. ०-१५
८९२ कमलनेत्र स्तोत्र ०-५०
८९३ कालिकासहस्रनाम ०-१०
८९४ कालीकवच ०-२५
८९५ कुञ्जिकास्तोत्र ०-१५
८९६ गंगालहरी–मूल ०-२५
८९७ गंगालहरी—अमृतलहरी ०-५०
८९८ गंगालहरी–पीयूषलहरी सं० टीका ०-१०
८९९ गंगालहरी–भाषा टीका ०-२५
९०० गजेन्द्रमोक्ष–भाषा टीका ०-२०
९०१ गणपतिस्तोत्र–गणेशमहिम्न ०-१२
९०२ गणेशकवच ०-१०
९०३ गणेशमहिम्न स्तोत्र

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

६९८ विवरणोपन्यास—रामानन्द ६-००
६९९ विवरणादि प्रस्थान विमर्श १-००
७०० विवेकचूडामणि ०-४०-
७०१ विवेक चिन्तामणि—मराठी ६-७५
७०२ विवेकमकरन्द—वासुदेव यतीन्द्र ३-००
७०३ विषयवाक्य, दीपिका ६-००
७०४ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०-२५
७०५ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला—पं० सुदर्शनाचार्य १-००
७०६ विष्णु तत्त्व दीपिका २-२५
७०७ वेदान्त कल्पलतिका ५-००
७०८ वेदान्त कौमुदी—रामाद्वयाचार्य प्रणीत ११-५०
७०९ वेदान्त छन्दावली—५ भाग—भोले बाबा हिन्दी ३-५०
७१० वेदान्तदर्शन—भा० टी० श्रीराम शर्मा ४-००
७११ वेदान्तदीपिका २-५०
७१२ वेदान्ततत्त्वविवेक—नृसिंहाश्रम १७-००
७१३ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५-००
७१४ वेदान्तडिण्डिम ०-७५
७१५ वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९-००
७१६ वेदान्तप्रदीप ७-५०
७१७ वेदान्तप्रदीपिका २-४०
७१८ वेदान्त परिभाषा सटीक ३-००
७१९ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४-००
७२० वेदान्तपरिभाषा—हिन्दी टीका १०-००
७२१ वेदान्त प्रबोध २-००
७२२ वेदान्तबालबोधिनी ०-८८
७२३ वेदान्त रत्न मञ्जूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ६-००
७२४ वेदान्तरत्नावली भाषा ०-५०
७२५ वेदान्तरहस्य भाषा १-००
७२६ वेदांतसार—जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २-५०
७२७ वेदान्तसार भा. टी नरेन्द्र २-५०
७२८ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २-५०
७२९ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—हिन्दी टीका सहित ०-७५
७३० वेदान्त सिद्धान्त संग्रह—वनमाली कृत ९-००
७३१ वेदात सूत्र मुक्तावलि—ब्रह्मानंद सरस्वती—पूना ३-५०
७३२ वेदांतसंज्ञा—भा० टी० १-००
७३३ वेदान्तस्तोत्र संग्रह १-००
७३४ वेदार्थसंग्रह ५-५०
७३५ वैयासिक न्यायमाला ४-००
७३६ वृत्ति प्रभाकर—निश्चलदास भाषा ८-४०
७३७ वृत्ति प्रभाकर—स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६-००
७३८ शंकरदिग्विजय भा. टी. १३-५०
७३९ शांकरग्रन्थावलि—६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६-५०
७४० शांकरग्रन्थावलि—दशोपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा भगवद्गीता ३ भाग में ११-७५
७४१ शांकर पादभूषण—रघुनाथ सूरि—दो भाग १२-५०
७४२ शंकराचार्यकृत—प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२-५०
७४३ शिवतत्त्वरत्नाकर ११-००
७४४ शिवस्तोत्रावली भा० टी० १०-००
७४५ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड ५-००
७४६ श्रीभाष्य—सटीक संपूर्ण २८-१२
७४७ श्रीभाष्य हिन्दी प्रथम अधिकरण ९-००
७४८ श्रीभाष्य प्रकाशिका—श्री निवासाचार्य ६-५०
७४९ श्रीभाष्यवार्तिक ६-००
७५० श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९-००
७५१ श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर ४-२०
७५२ श्रुत्यत कल्पवल्ली—पुरुषोत्तमदास ६-००
७५३ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ९-००
७५४ संक्षेप शारीरिक—अन्वयार्थ काशिका व्याख्या १३-००
७५५ संक्षेप शारीरिक—सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ १३-५०
७५६ संक्षेप शारीरिक १०-००
७५७ सदाचार १-१२
७५८ सनत्सुजातीय—शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक २-००
७५९ सनत्सुजातीय भा. टी. २-००
७६० सन्तवचनामृत १-२५
७६१ साधन संग्राम—भागीरथ जी ६-५०
७६२ साधनापथ—शिवोमप्रकाश १-००
७६३ सत्संग के बिखरे मोती—भाषा ०-७५
७६४ स्तुतिकुसुमांजलि भा. टी. १५-००
७६५ सारसंग्रह—गौड़ वैष्णवसिद्धान्तग्रंथ रूपकविराज ६-००
७६६ सारस्वतावली—(भाषा) ०-३५, ०-७५
७६७ सिद्धान्तकल्पवल्ली ०-७५
७६८ सिद्धान्तदर्शन—विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २-०
७६९ सिद्धान्त बिन्दु—वासुदेव अभ्यंकर सं० टी० ७-००
७७० सिद्धान्त बिन्दु—भा० टीका सहित २-७५
७७१ सिद्धान्तलेश संग्रह—भा० टी० ६-००
७७२ सिद्धान्तसिद्धाञ्जन—रत्नतूलिका सहित १७-००
७७३ सुन्दर विलास बम्बई ३-३०
७७४ सूतसंहिता—तात्पर्य दीपिका सहित ९-००
७७५ सूतसंहिता ३ भाग १७-२५
७७६ सूत्रार्थामृतलहरी ३-२५
७७७ स्वानंदानुभव ०-६२
७७८ स्वानुभवादर्श ६-००
७७९ हरिभक्ति रसामृतसिन्धु भा.टी. ९-५०
७८० हरिहराद्वैत भूषण ६-६२
७८१ ज्ञानमाला—भाषा ०-४०
७८२ ज्ञान वैराग्यछन्दावली २-२५
७८३ ज्ञानवैराग्य प्रकाश—स्वा० परमानंद भाषा २-४०

तंत्र, मंत्र

७८४ अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थी लाल विरचित खुला १४-४०
७८५ अष्टसिद्धि—हिन्दी टीका सहित १-६२
७८६ इन्द्रजाल भाषा ४-०
७८७ उच्छिष्ट गणपति २-१०
७८८ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १ ७५
७८९ उड्डीश तन्त्र—भाषा टीका १-००
७९० कर्पूरादिस्तोत्र—विमलानन्द स्वामी ४-००
७९१ कलिविलासतंत्र ४-५०
७९२ कामकला विलास—पुण्यानंद विरचित सटीक १-२५
७९३ कामरत्न—हिन्दी भाषा ६-००
७९४ कुलार्णवतंत्र ३-५०
७९५ कौलोपनिषद् ४-५०
७९६ क्रम दीपिका—केशव भट्ट कृत काशी ९-००
७९७ क्रियोड्डीशतंत्र १-५०
७९८ गायत्री तन्त्र—भाषभाष्य समेत १-००

७९९ गायत्रीरहस्य १-५०
८०० गायत्रीपुरश्चरण ४-००
८०१ गायत्रीपूजापद्धति–(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०-२५
८०२ चिद्गगन चन्द्रिका– महाकवि कालिदास १-४०
८०३ जयाख्यसंहिता ५०-००
८०४ तत्त्वनिधि–कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ८-४०
८०५ तन्त्रसार–कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत ३-००
८०६ तंत्रसार संग्रह–(विषनारायणीय) सव्याख्या १५-२५
८०७ तंत्राभिधान ५-६२
८०८ तंत्रालोक–अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में ३९-००
८०९ तांत्रिक पंचांग १-००
८१० तारिणी पारिजात ४-००
८११ त्रिपुरारहस्य–माहात्म्य खंड १२-००
८१२ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड ९-००
८१३ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड हि. टीका १३-००
८१४ दत्तात्रेय तंत्र–भा० टी० १-००
८१५ दुर्गा पञ्चाङ्ग–मूल–मातृप्रसाद पाण्डेय १-२५
८१६ दुर्गापूजा–श्यामा पूजापद्धति ०-७५
८१७ दुर्गा सप्तशती–गुटका–मूल ०-७५
८१८ दुर्गा सप्तशती–गुटका निर्णयसागर २-७५
८१९ दुर्गा–गीता प्रेस भा० टी० १-००
८२० दुर्गा सप्तशती–[illegible] २-७०
८२१ दुर्गा सप्तशती–मूल बम्बई गुटका ३-५० जिल्द ८-००
८२२ दुर्गा सप्तशती–भाषा टीका सहित ३-००, २-५०
८२३ दुर्गा सप्तशती–[illegible] रामेश्वर भाषा टीका २-४०
८२४ दुर्गा सप्तशती–[illegible] टीका सहित ३-००
८२५ [illegible]–[illegible] हिन्दी टीका सहित १-००
८२६ [illegible]–[illegible] कृत व्याख्या के साथ १-००
८२७ [illegible] १५-००
८२८ [illegible] १-५०
८२९ [illegible] १-६०
८३० बृहत् [illegible] मूल [illegible] तथा [illegible]
८३१ [illegible]
८३२ [illegible] ०-५०
८३३ [illegible]–भा० टी० १-५०
८३४ महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग–मातृप्रसाद पाण्डेय

८३५ महात्रिपुरसुन्दरीपूजाकल्प १-२५
८३६ मातृका भेद तंत्र १२-००
८३७ मंत्रकौमुदी–देवनाथ मूल ६-००
८३८ मंत्रमहोदधि–सटीक खुला १०-८०
८३९ मंत्ररामायण–सटीक २-४०
८४० मालिनी विजय तन्त्र–आगम शास्त्र ३-५०
८४१ माहेश्वर तन्त्र–श्री कृष्णप्रियाचार्य ९-००
८४२ मृगेन्द्रतन्त्र–विद्यापाद–योगपाद व्याख्या १-००
८४३ मृगेन्द्रागम १८-००
८४४ मंत्र और मातृकाओं का रहस्य १६-००
८४५ मंत्र सिद्धि का उपाय २-५०
८४६ मंत्रविद्या १-८०
८४७ मंत्रचिन्तामणि १-६०
८४८ योगिनीतन्त्र–हिन्दी टीका सहित ८-४०
८४९ योगिनीहृदय–दीपिका व्याख्या १०-००
८५० रत्नगोत्र विभागमहायानोत्तरतन्त्र ८-००
८५१ रौरव आगम १८-००
८५२ रुद्रयामलतंत्र १-२०
८५३ ललित सहस्रनाम–मूल मात्र बम्बई ०-५०
८५४ ललितास्तवमणिमाला–बम्बई ०-५०
८५५ लक्ष्मीतन्त्र–पाञ्चरात्र ३०-००
८५६ वंध्यातंत्र ०-५५
८५७ वामकेश्वरीमत विवरण–जयरथ कृत १-००
८५८ शतरत्नसंग्रह ३-४०
८५९ शारदा तिलक सटीक १५-००
८६० श्रीविद्या खड्गमाला १-००
८६१ श्रीविद्या नित्याह्निकम् ५-७५
८६२ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी व्या. ३-४०
८६३ श्रीविद्या[illegible]पद्धति ६-२५
८६४ षट्कर्मनिरूपण ०-७५
८६५ शाबर तंत्र ३-००
८६६ शाबरि तन्त्र–(लेखड़े का जादू) भाषा ३-००
८६७ [illegible] तंत्र–क्षेमराज कृत व्याख्या सात भाग १६-५०
८६८ सोमशम्भुपद्धति २५-००
८६९ सौन्दर्य लहरी–[illegible] विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी ५-००
८७० सौन्दर्य लहरी–अंग्रेजी अनु. सचित्र अमरीका ५५-२५

८७१ सौन्दर्य लहरी–लक्ष्मीधर व्याख्या–भास्कर भाषा ३-७५
८७२ सौन्दर्यलहरी (आनंदलहरी) २-२५
८७३ सौभाग्य लक्ष्मी–भाषा टीका सहित १-२०
८७४ संक्षिप्त तान्त्रिक आह्निक ४-५०
८७५ हंसविलास–हंसमिट्ठू कृत १२-०
८७६ ज्ञानार्णव तंत्र–मूलमात्र पूना २-००
८७७ ज्ञानसंकलिनी तंत्र ०-५०

स्तोत्र

८७८ अन्नपूर्णा स्तोत्र ०-१५
८७९ अपराजिता स्तोत्र ०-२०
८८० आदित्य हृदय ०-६०
८८१ आदित्यहृदय–मोटा अक्षर ०-५०
८८२ आदित्यहृदय–छोटा अक्षर ०-३४
८८३ आदित्यहृदय –नवपद सहित ०-९०
८८४ आनन्दलहरी स्तोत्र—डिण्डिमभाष्य, सटीक २-२५
८८५ आपदुद्धारकवटुकभैरवस्तव ०-२०
८८६ आरतीसंग्रह–भाषा ०-२५
८८७ आलवदार स्तोत्र ०-१५
८८८ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०-१०
८८९ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०-१२
८९० कर्पूरस्तवराज ०-४०
८९१ कंठाभरण हि. अनु. ०-३१
८९२ कमलनेत्र स्तोत्र ०-१५
८९३ कालिकासहस्रनाम ०-५०
८९४ कालीकवच ०-१०
८९५ कुञ्जिकास्तोत्र ०-२५
८९६ गंगालहरी–मूल ०-१५
८९७ गंगालहरी—अमृतलहरी ०-२५
८९८ गंगालहरी–पीयूषलहरी सं० टीका ०-५०
८९९ गंगालहरी–भाषा टीका ०-१०
९०० गजेन्द्रमोक्ष–भाषा टीका ०-२५
९०१ गणपतिस्तोत्र–गणेशमहिम्न ०-२०
९०२ गणेशकवच ०-१२
९०३ गणेशमहिम्न स्तोत्र ०-१०

९०४ गणेशसहस्रनामावली ०-५०
९०५ गणेशाष्टक ०-०६
९०६ गायत्री रामायण ०-०६
९०७ गायत्री स्तोत्र ०-१५
९०८ गोपाल सहस्रनाम-मूल ०-५०, ०-७५
९०९ गोपाल सहस्रनाम-भा० टी० ०-७५
९१० गोपाल सहस्रनामावली ०-५०
९११ चर्पटपंजरी ०-१५, भा० टी० योगानंद १-५०
९१२ चतुःश्लोकी भागवत ०-१३
९१३ तुलसी कवच ०-२०
९१४ दत्तात्रेय सहस्रनामावली ०-५०
९१५ दत्तात्रेयसहस्रनाम० ०-४०
९१६ दत्तात्रेयस्तोत्र ०-२०
९१७ दक्षिणामूर्तिस्तोत्र ०-१५
९१८ देवीपुष्पांजली स्तोत्र ०-१२
९२९ देवी सहस्रनामावली ०-५०
९२० देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र ०-१२
९२१ दुर्गाकवच ०-२५
९२२ नर्मदाष्टक ०-२०
९२३ नवग्रह स्तोत्र विष्णुपंजर ०-२०
९२४ नृसिंहसहस्र नाम ०-६०
९२५ नवग्रहस्तोत्र-यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित १-००
९२६ नारायण कवच ०-२५
९२७ बगुलामुखी स्तोत्र ०-१५
९२८ ब्रह्मज्ञानावली ०-०६
९२९ बटुक भैरव सहस्रनाम ०-५६
९३० बृहत्स्तोत्ररत्नाकर-मोटा अक्षर काशी ४-५०
९३१ " " बम्बई ४-२०
९३२ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर सचित्र गुटका केवल दो भाग ८-००
९३३ भुवनेश्वरी महास्तोत्र ३-७५
९३४ मृतसंजीवनी ०-२०
९३५ मृत्युञ्जय स्तोत्र ०-१२
९३६ महाकालशनिमृत्युंजय ०-२०
९३७ महामृत्युंजय जपविधि ०-२५
९३८ महाविद्यास्तोत्र ०-१५
९३९ महालक्ष्मीस्तोत्र ०-२०

९४० महालक्ष्मीकवच ०-१०
९४१ महिम्नस्तोत्र-मधुसूदनी टीका ०-६२
९४२ राम महिमत्र ०-२०
९४३ राम सहस्रनाम ०-२०
९४४ रामस्तवराज ०-३७
९४५ रामरक्षास्तोत्र ०-१५
९४६ रामपटल ०-६०
९४७ राधिकासहस्रनाम ०-१२
९४८ रेणुकासहस्रनाम ०-३५
९४९ ललितासहस्रनाम स्तोत्र ०-७५, ०-५०
९५० ललितास्तवमणिमाला ०-५०
९५१ लक्ष्मीस्तोत्र ०-१५
९५२ लक्ष्मी सहस्रनाम ०-२५
९५३ विष्णु सहस्रनाम मूल ०-१५ ०-५०, ०-४४
९५४ " नामावली ०-५०
९५५ " भा. टी. १-००
९५६ वेंकटेश्वराष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र ०-०६
९५७ शनिस्तोत्र ०-१५
९५८ शिवकवच ०-२५
९५९ शिवस्तोत्र ०-१५
९६० शिवस्तोत्रावली भा. टी. १०-००
९६१ शिवताण्डव स्तोत्र ०-२०
९६२ शिवताण्डव भाषा टीका ०-१९
९६३ शिवापराधक्षमापन स्तोत्र ०-१२
९६४ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०-२०
९६५ " " भाषाटीका ०-२०
९६६ शिवसहस्रनाम मूल ०-६५
९६७ शिवसहस्रनाम भा० टी० ०-६
९६८ शिवसहस्रनामावली ०-५०
९६९ शीतलाष्टक ०-१०
९७० संतानगोपालस्तोत्र ०-२५
९७१ सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०-१५
९७२ सीतासहस्रनाम ०-१०
९७३ सूर्यद्वादशस्तवी ०-२०
९७४ स्तोत्रार्णव १०-३०
९७५ स्तोत्ररत्नावली ०-५०

९७६ स्तवसार्वभौम ०-२५
९७७ स्तोत्रसमाहार ३-५०
९७८ सूर्यकवच ०-१२
९७९ सूर्यसहस्रनामावली ०-५०
९८० हनुमत्कवच ०-२५
९८१ हनुमान चालीसा ०-२०
९८२ हनुमत्सहस्रनाम ०-२०
९८३ हरिहरस्तोत्र २-००

अच्युत ग्रन्थमाला

९८४ भगवन्नामकौमुदी-श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं० ०-७५
९८५ शुल्बसूत्र-(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट) ०-३७
९८६ खण्डन खण्ड खाद्य हिन्दी टीका सहित ८-००
९८७ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि-सदानन्द व्यास सटीक ५-००
९८८ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रंथ २-००
९८९ परमार्थसार-सटीक-श्रीपतञ्जलि कृत ०-५०
९९० प्रमपत्तन-श्री रसिकोत्तमकृतं सटीक १-२५
९९१ काशीकेदारमाहात्म्य-ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत भा.टी. ३-०
९९२ सिद्धान्तबिन्दु-श्रीमधुसूदन भाषानुवाद २-७५
९९३ प्रकरणपञ्चक-श्री शंकराचार्य भा० टी० ०-७५
९९४ विवरण प्रमेय संग्रह-श्रीविद्यारण्यमुनि भा०टी ६-५०
९९५ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली-श्री सदाशिवेन्द्र भा.टी. ०-७५
९९६ बृहदारण्यकवार्तिकसार-दो भागों में भा.टी. १२-००
९९७ अच्युतलेखमाला-महात्माओं के सुन्दर लेख २-००
९९८ षट्सन्दर्भ-तत्त्वसन्दर्भ-व्याख्याद्वयोपेतः १-५०
९९९ योगवासिष्ठ भा.टी. चतुर्थ १०-०० पंचम—८-००
१००० भागवत एकादशस्कन्ध भा.टी. दो भाग ६-५०
१००१ शिवस्तुति-श्री गोकुलनाथ सटीक, हि. टी. ०-६२
१००२ सिद्धान्तलेशसंग्रह-हिन्दी अनुवादसहित ६-००
१००३ स्तुतिकुसुमांजलि-हिन्दी टीका सहित १५-००

ज्योतिष

१००४ अंकविद्या—श्रीगोपेशकुमार ओझा ४-००

१००५ अखंडभाग्योदय दर्पण—भगवानदास ३-००
१००६ अंगविज्जा–प्राकृत भाषा में–मु.पुण्यविजय जीसं. २१-०
१००७ अर्घ मार्तण्ड–राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कुराली वालों की अभूतपूर्व पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित। १२-००
१००८ अर्घ प्रकाश–भा० टी० ०-७२
१००९ अथर्ववेदीय ज्योतिष १-००
१०१० आर्यभट्टीय—सं. तथा हि. टीका ८-००
१०११ आर्या सप्तति ०-५०
१०१२ अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञान १३-००
१०१३ अहिबल चक्र–हिन्दी टीका सहित ०-२५
१०१४ करण कौस्तुभ–कृष्णदैवज्ञ ०-७५
१०१५ करणप्रकाश ३-००
१०१६ करणोत्तम २-२५
१०१७ करलक्षण–सामुद्रिक–भाषाटीका ०-७५
१०१८ कर्मविपाक–नक्षत्रचरणगत भा० टी० ४-००
१०१९ कालचक्र डो. रामचंद कपूर ३-००
१०२० कुट्टाकारशिरोमणि–(देवराज) सं. व्याख्या १-००
१०२१ केरलीय प्रश्नरत्न–भाषा टीका १-२०
१०२२ केरलीय जातक पद्धति–भाषा टीका २-७५
१०२३ [illegible] २-५०
१०२४ खेट कौतुक ०-२५
१०२५ [illegible] ३-००
१०२६ [illegible] की नाग पूना ८-७५
१०२७ [illegible]–भाषा टीका ०-२५
१०२८ ग्रहगोचर–[illegible] ०-२५
१०२९ [illegible] मीमांसा ५-२०
१०३० [illegible] १-१५
१०३१ [illegible] ६-००
१०३२ [illegible] ५-००
१०३३ [illegible] १-२५
१०३४ [illegible]–हिन्दी टीका १-५०, ४-२०
१०३५ [illegible] सुधाकर द्वि. ६-००
१०३६ [illegible] २-१०
१०३७ [illegible] पर इसके बढ़िया ग्रन्थ आज तक नहीं छपा १०-००
१०३८ चमत्कारचिन्तामणि–भाषाटीका ०-७५

१०३९ चलनकलन प्रश्नोत्तर ०-७५
१०४० चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द १-५०
१०४०(अ) चलराशिकलन २-६५
१०४१ जन्मपत्र के फार्म (तीन का सेट) ०-१९
१०४२ जन्मपत्रिका बुकफार्म ०-७०
१०४३ जन्मपत्रदीपक १-५०
१०४४ जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका १-२५
१०४५ जयपाहुड–निमित्त शास्त्र–प्राकृत ६-६०
१०४६ जातकचंद्रिका १-५०
१०४७ जातक पारिजात–संस्कृत तथा हिंदी टीका १२-००
१०४८ जातक शिरोमणि–भाषा टीका ४-२०
१०४९ जातकाभरण–भाषाटीका ६-००, ४-००
१०५० जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १-०, ०-७५
१०५१ जातकसंग्रह १-८०
१०५२ जैन सामुद्रिक—चारग्रन्थ २०-००
१०५३ जैमिनीय पद्यामृत १-५०
१०५४ जैमिनीय सूत्र–संस्कृत हिन्दी टीका २-००
१०५५ ज्योतिषकल्पद्रुमभाषा ३-१०
१०५६ ज्योतिष की पहुंच १०-००
१०५७ ज्योतिषजगत्– पं० दुर्गादत्त, ज्योतिष सीखने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ २-५०
१०५८ ज्योतिष गणित फलितज्ञान अजीतमल ३-५०
१०५९ ज्योतिषतत्त्व विवेक ३-००
१०६० ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त ०-३०
१०६१ ज्योतिषरत्नमाला—संस्कृत १२-००
१०६२ ज्योतिषरत्नाकर–देवकीनंदन प्रथम भागनटे १२-००
१०६३ ज्योतिषविज्ञान–विशुद्धानन्द ६-००
१०६४ ज्योतिषविज्ञान १२-००
१०६४[अ] ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्त्व केदारदत्त ३-००
१०६५ ज्योतिषशास्त्रसोपान २-००
१०६६ ज्योतिष सर्वसंग्रह–भाषा टीका २-५०
१०६७ ज्योतिष सिद्धान्तसंग्रह–संस्कृत ६-००
१०६८ ज्योतिर्विज्ञानम्–संस्कृत ९-००
१०६९ ताजिकनीलकण्ठी–[illegible] सं० तथा हिन्दी ४-५०
१०७० ताजिकनीलकण्ठी–सं० टीका [illegible] ९-००
१०७१ ताजिक नीलकण्ठी–भाषा टीका बम्बई ४-२०
१०७२ तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका ०-५०

१०७३ तिथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ ०-८७
१०७४ तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम १-५०
१०७५ दयाविलास–महन्तदयाराम जी ४-००
१०७६ दीपिका–शुद्धदीपिका–भाषा टीका ४-२०
१०७७ देवकेरलम् ३ भाग १३-७५
१०७८ दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका १-००
१०७९ दैवज्ञाभरणम्–संस्कृत ६-२५
१०८० द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा० टी० ०-१२
१०८१ दृक्सिद्ध पंचांग निर्माण पद्धति ६-०२
१०८२ दृग्गणित ५-००
१०८३ धराचक्र–भाषा टीका ०-३५
१०८४ धराभ्रम—सुधाकर द्वि. ०-३७
१०८५ नरपतिजयचर्या–सं० टीका ५-१५
१०८६ नष्टजन्मांगदीपिका–पंचांगदीपिका ०-३७
१०८७ नन्हिदत्त पंचविंशतिका ०-१३
१०८८ पद्मकोश–भाषा टीका ०-५०
१०८९ पद्यपंचाशिका ०-५०
१०९० परमसिद्धान्त ज्योतिष ८-४०
१०९१ पत्रीमार्गप्रदीपिका–वर्षदीपक भाषाटीका २-७०
१०९२ परवलयक्षेत्र ०-५०
१०९३ पल्लीपवन कारिका ०-२५
१०९४ पंचांगमंजूषा–भाषा टीका ०-७५
१०९५ पंचांगविज्ञान ०-५०
१०९६ पंचवर्षीय मानवपंचांग ३-००
१०९७ प्रतिभाबोधक ०-५७
१०९८ प्रश्नचण्डेश्वर–भाषा टीका १-५०
१०९९ प्रश्नज्ञानप्रदीप–भाषा टीका १-८०
११०० प्रश्नभूषण–संस्कृत हिन्दी टीका ०-७५
११०१ प्रश्न वैष्णव–भाषा टीका १-२०
११०२ प्रश्नशिरोमणि ४-२०
११०३ प्रश्नांकचूड़ामणि ०-२५
११०४ प्रस्तारचक्र–भाषाटीक ०-१५
११०५ फलित संग्रह–रामयत्न भाषाटीका १-००
११०५(क) फलित मार्त्तण्ड–पं. मुकुन्दवल्लभ फलित के उपर महत्त्व का ग्रन्थ १२-००
११०६ बीजगणित–संस्कृत–हिन्दी टीका ८-००
११०७ बीजगणित–भास्करीय ३-००

१९०८ बीजपल्लवम् ३-७५
११०९ बृहज्जातक-भाषाटीका ३-५०, ४-२०
१११० बृहज्जातक-नौका सं. टीका ३-६०
११११ बृहज्ज्योतिषसार-भाषा टीका ४-५०
१११२ बृहत्पाराशरहोरा पूर्वार्द्ध मूल उत्तरार्द्धभा.टी १४-४०
१११३ बृहत्संहिता भाषा टीका ९-००
१११४ बृहत्-होडाचक्रविवरण-भाषाटीका ०-५०
१११५ बृहदवकहोडाचक्र भा० टी० बम्बई ०-३०, १-२०
१११६ बृहद्यवनजातक-भाषाटीका ३-००
१११७ बृहद्वास्तुमाला ३-००
१११८ भङ्गीविभंगीकरण २-००
१११९ भद्रबाहुसंहिता-मूलमात्र ५-७५ भा.टी. ८-००
११२० भविष्यफलभास्कर-भाषाटीका ४-२०
११२१ भारतीय कुण्डली विज्ञान-हिन्दी ४-५०
११२२ भारतीय ज्योतिष नेमीचन्द्र ८-००
११२३ भारतीय ज्योतिष-(दीक्षित) मराठी का हिन्दी ८-००
११२४ भावकुतूहल भा०टी० २-४०
११२५ भावप्रकाश-भाषा टीका १-२५
११२६ भावफलाध्याय-भाषा टीका ०-५०
११२७ भुवनदीपक-सं० हिन्दी टीका ०-९०
११२८ भृगुसंहिता मथुरा ५०-००
११२९ भृगु सूत्र ०-८५
११३० भृगुसंहिता पद्धति भाषा १०-००
११३१ महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या २-००
११३२ महाभास्करीयम्-भास्कराचार्य सटीक ११-००
११३३ महासिद्धान्त ९-००
११३४ मानसागरी-भाषा टीका काशी ८-००
११३५ मुहूर्तकल्पद्रुम-विट्ठलदीक्षित ०-७५
११३६ मुहूर्त चिन्तामणि-पीयूषधारा ५-००
११३७ मुहूर्तचिन्तामणि-भाषा टीका बम्बई ३-००
११३८ मुहूर्तमार्तण्ड-भाषा टीका ३-००
११३९ मुहूर्तसंग्रहदर्पण-भाषा टीका ४-२०
११४० मुहूर्तमंजरी ०-७०
११४१ मेघमाला-मड्डली ०-६०
११४२ यन्त्रराजरचना १-७५
११४३ यन्त्रराज-यन्त्रशिरोमणि (महेन्द्र) २-००

११४४ याजुष ज्योतिष २-००
११४५ योगिनी जातक-भाषा टीका ०-५०
११४६ रत्नगर्भाचक्र-भाषाटीका ०-२०
११४७ रत्नद्योत ०-७५
११४८ रत्नदीपिका-रत्नशास्त्र प्राचीन २-२५
११४९ रमलगुलजार-केवल हिन्दी ४-८०
११५० रमलनवरत्न-भाषा टीका २-०० २-२०
११५१ रमलरहस्य-संस्कृत मूल १०-८०
११५२ रविसिद्धांतमंजरी १-००
११५३ लग्नचन्द्रिका-भाषाटीका १-८०
११५४ लग्नरत्नाकर-भाषाटीका ०-४०
११५५ लग्नवाराही-भाषा टीका ०-२०
११५६ लघुजातक-भाषा टीका १-२०
११५७ लघुपाराशरी-भाष्य दीवान रामचन्द्र कपूर कृत
अनेक परिशिष्ट, व्याख्या। सारणियां ८-००
११५८ लघुपाराशरी-भा० टी० ०-६७, १-२५
११५९ लघुभास्करीय-(भास्कराचार्य, सटीक २-००
११६० लघुभास्करीय-शंकर विवरण २-००
११६१ लघुमानस-परमेश्वर व्याख्या ०-७५
११६२ लीलावती-विवरण व्याख्या दो भाग ४-७५
११६३ लीलावती सटीक १४-००
११६४ लीलावती-भा० टी० ४ ००
११६५ लोहगोलखंडन तथा लोहगोलसमर्थन २-००
११६६ वटेश्वर सिद्धांत-भा. टी. ३०-००
११६७ वनमाला-भाषा टीका ०-७५
११६८ वर्षचन्द्रप्रकाश-चंद्रदत्त पं० तकृत १-००
११६९ वर्षयोगसमूह-भा० टी० १-५०
११७० वाशिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ट) ४-२०
११७१ वास्तुमाणिक्यरत्नाकर ३-००
११७२ वास्तुरत्नाकर ४-००
११७३ वास्तुरत्नावली-सं० हि० दोनों टीका २-५०
११७४ वाक्यकरण—सटीक १३-५०
११७५ वाराही (बृहत्) संहिता भा. टी. ६-६०
११७६ विचित्ररहस्य २-००
११७७ विमण्डलवक्रविचार ३-००
११७८ विवाहवृन्दावन-सं० हि० टीका ३-००

११७८ (क) विश्वकर्मविद्याप्रकाश ०-५०
११७९ विश्वकर्मप्रकाश-भाषा टीका ३-००
११८० विश्वहितम् १-५०
११८१ वेङ्कटेश्वर शताब्दी पञ्चांग ३६-००
११८२ वृन्दावली-भा० टी० ०-६०
११८३ शकुनविचार ०-२५
११८४ शकुन विज्ञान—हीरालाल ४-५०
११८५ शम्भुहोराप्रकाश-भाषाटीका ५-८०
११८६ शिवजातक-भाषाटीका ०-२०
११८७ शिशुबोध-भाषाटीका ०-६५
११८८ शीघ्रबोध-भाषाटीका १-२०
११८९ शुद्धिदीपिका-भाषा टीका ४-२०
११९० षट्पंचाशिका-सं० हि० टीका ०-५०
११९१ सचित्रज्योतिष शिक्षा प्रथम ज्ञानखंड ९-००
११९२ समरसार-सं० हिन्दी टीका २-१०
११९३ सरल रेखा गणित १-००
११९४ सर्वतोभद्रचक्र-भाषा टीका १-५०
११९५ सर्वार्थचिन्तामणि-भाषा टीका ७-२०
१०९६ सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका ३-६०
११९७ सामुद्रिकलक्षण संस्कृत ६-९०
११९८ सिद्धान्तसार्वभौम ५-००
११९९ सिद्धान्ततत्त्वविवेक १२-५०
१२०० सिद्धान्तदर्पण २-५०
१२०१ सिद्धान्तशिरोमणि-वासनाभाष्यसमेत २ भाग ४५-००
१२०२ सिद्धान्त शिरोमणि-प्रभा-वासना प्रथमभाग ५-००
१२०३ सिद्धान्तशिरोमणि-ग्रहगणिताध्याय दो भाग ६-५०
१२०४ सिद्धान्त शिरोमणि-गोलाध्याय-वासना ८-७५
१२०५ सिद्धान्तशेखर-(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग २४-३७
१२०६ सुगम ज्योतिष-गोपेशकुमार ओझा ६-००
१२०७ सूर्यग्रहण—डा. कृष्णचन्द्र द्विवेदी १२-००
१२०८ सूर्यसिद्धान्त—सटीक हि. टी. ६-००
१२०९ सूर्य सिद्धान्त सटीक ४-००
१२१० स्त्रीजातक-हिन्दी टीका ३-००
१२११ हनुमान ज्योतिष-भाषा टीका ०-७५
१२१२ हस्तरेखाविज्ञान गोपेश कुमार १२-००
१२१३ हस्तसामुद्रिक शास्त्र ६-००

१२१४ हायनबोध ०-७२
१२१५ हायनग्रन्थ ६-००
१२१६ हायनरत्न—मूलवुला पत्रा ४-२०
१२१७ होराभ्रप्रायानणय २-२५
१२१८ होराशास्त्र—प्रथम भाग (वाराहमिहिर) २५-००

चिकित्सा

१२१८(क) अंगूर के गुण उपयोग ०-७५
१२१९ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य १५-०० १०-००
अगद तंत्र—तीन भाग ०-७५
१२२० अगदतन्त्र—रमानाथ द्विवेदी २-५०
१२२१ अचार चटनी और मुरब्बा ०-७५
१२२२ अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी १-००
१२२३ अञ्जननिदान हिन्दी टीका २-००
१२२४ अनुपानदर्पण—हिन्दी टीका
१२२५ अनुभूतयोगविन्लास,के-दोभाग डा गणपतिसिंह ९-००
१२२६ अनुभूतयोगचिन्तामणि—अमोलकचन्द्र १२-००
१२२७ अनुभूतयोग प्रकाश—गणपति सिंह ६-२५
१२२८ अनुभूतयोगावली १-५०
१२२९ अपना इलाज आप करो १-२५
१२३० अभिनव विकृति विज्ञान—रघुवीर २२-००
१२३१ अ० शरीर क्रियाविज्ञान—प्रियव्रतशर्मा १०-००
१२३२ [illegible] १५-००
१२३३ अमृतसागर ११-००
१२३४ [illegible] (रोग) मूत्रविज्ञान ०-५०
१२३५ [illegible] के गुण उपयोग १-२५
१२३६ [illegible] टीका [illegible]
१२३७ [illegible] भा. टी. ८-००
१२३८ [illegible] हिन्दी [illegible]
१२३९ [illegible] सटीक २-५०
१२४० [illegible] ५-००
१२४१ [illegible] ४-००
१२४२ [illegible] हिन्दीटीका [illegible] १५-००
१२४३ [illegible] हिन्दी [illegible]
१२४४ [illegible] का अचूक इलाज २-२५

१२४५ आत्मसर्वस्व ६-३०
१२४६ आदर्श आहार—डा० एस० सी० दास १-२५
१२४७ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११-००
१२४७(क) आदिशास्त्र अर्थात रतिशास्त्र १-८०
१२४८ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान—आशानंद प्र.भाग १० ०
१२४९ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—श्री धर्मदत्तजी एलोपैथिक संपूर्ण चिकित्सा पर इससे बढ़िया ग्रन्थ आजतक नहीं छपा ३६-००
१२५० आनंदकंद संस्कृत ११-५०
१२५१ आपके बच्चे की खुराक ३-३७
१२५२ आपरेशन तथा चीरफाड़ का दुष्परिणाम ०-५०
१२५३ आम्र के गुण १-५०
१२५४ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा २-७५
१२५५ आयुर्वेद का इतिहास—सूरमचन्द्र ८-००
१२५६ आयुर्वेद का इतिहास—अत्रिदेव छोटा ५-००
१२५७ आयुर्वेद का इतिहास—बडा अत्रिदेव ११-००
१२५८ आयुर्वेद चिन्तामणि—(निघण्टु) ५-४०
१२५९ आयुर्वेद प्रदीप—राजकुमार द्विवेदी १२-००
१२६० आयुर्वेद विज्ञानसार—हिंदी टीका २-००
१२६१ आयुर्वेद प्रकाश भा० टी० १२-५०
१२६२ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १-२५
१२६३ आयुर्वेदीयक्रियाशरीर—रणजीतराय १४-२०
१२६४ आयुर्वेदीय परिभाषा १ २५
१२६५ आयुर्वेदीयमंत्र शस्त्रपरिचय १ ७५
१२६६ आयुर्वेदादर्शसंग्रह २-००
१२६७ आरोग्य के अमूल्य साधन (स्वमूत्र) ३-५०
१२६८ आरोग्य प्रकाश—रामनारायण ४-००
१२६९ आरोग्य [illegible] १-००
१२७० [illegible]विज्ञान २-००
१२७१ [illegible] ०-६०
१२७२ [illegible]—हिन्दी डा सुरेशप्रसाद ४ ००
१२७३ [illegible] ४-५०
१२७४ [illegible] विज्ञान ३-१०
१२७५ [illegible] ५-१०
१२७६ इंजेक्शन—डा० सुरेशप्रसाद १-००
१२७७ इंजेक्शन—[illegible] ११ ००

१२७८ इजक्शन तत्त्व प्रदीप—गणपतिसिंह ९-०६
१२७९ इन्द्रायणगुणविधान—हिन्दी ०-५०
१२८० इलाजलगुर्बा—यूनानी इलाज ३-६०
१२८१ उपयोगी नुस्खे, तरकीबें ३-००
१२८२ उपवास से लाभ १-५०
१२८३ एक औषधिगुण विधान—गणपति सिंह १-८०
१२८४ एकौषधिचिकित्सा ४-००
१२८५ एनीमा और कथेटर—डा० सुरेशप्रसाद ०-३७
१२८६ एलन्स की नोट्स ५-५०
१२८७ एलोपैथिक गाईड—ले० डा० रामनाथ वर्मा, ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह इसका सातवांसंस्करण भी प्रायः समाप्त है। परिवर्धित संस्करण १३ ००
१२८८ एलोपैथिक निघंटु—अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—ले० डा० रामनाथ वर्मा परिवर्धित पंचमसंस्करण १२ ००
१२८९ एलोपैथिक पाकेट गाईड—ड० सुरेश ३ ००
१२९० एलोपैथिक पाकेट प्रेस्काइबर ५-००
१२९१ एलोपैथिक पेटन्ट मेडिसिन—अयोध्यानाथपाठक ५-००
१२९२ एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा २-००
१२९३ एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—शिवदयाल १२ ७५
१२९४ एलोपैथिक मिक्सचर २ ५०
१२९५ एलोपैथिक योगरत्नाकर—डा० रामनाथ १३ ००
१२९६ एलोपैथिक सफल औषधियां ४-००
१२९७ औपसर्गिक रोग दो भाग २२-००
१२९८ औषध गुणधर्म विवेचन २ ००
१२९९ औषधिगुणधर्म विवेचन—कालेडा बोगला ४-५०
१३०० कफ परीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन) डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत १-२५
१३०१ कब्ज या कोष्ठबद्धता १-०० ०-७५
१३०२ कल्पपांचकप्रयोग ०-३०
१३०३ कम्पाउण्डर्स गाइड—द्वारकाप्रसाद ३-००
१३०४ कम्पाउन्डरी शिक्षा ५-०० ८-००
१३०५ करिकल्पलता—छन्दोबद्ध हानियों की चिकित्सा ३-००
१३०६ कषाय कल्पना विज्ञान १-५०

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

१३०७ काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र २-००
१३०८ कामरत्न-नित्यनाथ हिन्दी टीका ६-००
१३०९ कामसूत्र-वात्स्यायन प्रणीत यशोधर कृत जयमगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २४-००
१३१० कामसूत्र—भा० टी० देवदत्त जयमंगला १६-००
१३११ कद्दू के गुण उपयोग ०-६२
१३१२ कायचिकित्सा-गंगासहाय २५-००
१३१३ „ रामरक्षपाठक २५-००
१३१४ कायचिकित्सा परिचय-द्वारकानाथ २०-००
१३१५ कालज्ञान-हि० टी० ०-६०
१३१६ काश्यप संहिता-(बृ०) भा० टी० १६-००
१३१७ कुल्लियात-हकीम दलजीतसिंह १-२५
१३१८ केलिकुतूहल-मूल संस्कृत ले० म म पं० मथुरा प्रसाद दीक्षितकृत संस्कृत में २-००
१३१९ कोकसार-वैद्यक नारायण प्रसाद ६-००
१३२० कौमारभृत्य-रघुवीरशरण ८-००
१३२१ क्वाथ मणिमाला १-५०
१३२२ क्लीनिकल मेडिसिन-एम. बी. बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक् ज्ञान कराने वाला हि०भा० में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्तद्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५-००
१३२३ गंगयतिनिदान-सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६-००
१३२४ गदनिग्रह हिन्दी प्रथम भाग १५-००
१३२५ गर्भरक्षा तथा शिशुपालन -डा० मु० स्वरूप ४-५०
१३२६ गाजर गुण उपयोग ०-७५
१३२७ गर्भस्थ शिशु की कहानी २-००
१३२८ गांव के पौधे १-००
१३२९ गांवों में औषधरत्न-३ भाग में १०-००
१३३० गुणविज्ञान जगन्नाथ २-५०
१३३१ गुलरगुण विकास-(आरोग्यप्रकाश) १-००
१३३२ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग-श्रीमहेन्द्रनाथ १-००
१३३३ गुलाब के गुण १-००
१३३४ गुणों की पिटारी -परमानन्द २-४०
१३३५ घर का वैद्य-अमोलकचन्द्र शुक्ल ६-००
१३३६ घरेलू डाक्टर-चार डाक्टरों द्वारा ४-००
१३३७ घरेलू सस्ती दवाएं ३-००
१३३८ घीक्वार (गवार फल) के गुण उपयोग २-००
१३३९ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १-४०
१३४० चक्रदत्त—भा० टी० बम्बई ८-१०
१३४१ चर्याचन्द्रोदय—हिन्दी टीका ५-००
१३४२ चरक—मूल बंबई ८-००
१३४३ चरकसंहिता-चक्रपाणिकृत आयुर्वेददीपिका २८-००
१३४४ चरकसंहिता-आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिंदी अनुवाद सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा। ३०-००
१३४५ चरक संहिता का अनुशीलन २-००
१३४६ चरक का निर्माण-काल २-००
१३४७ चर्मरोग चिकित्सा—नारायणसिंह ५-००
१३४८ चारुचिकित्सा—उत्तरार्द्ध २-५०
१३४९ चिकित्सा चन्द्रोदय—ले० हरिदास वैद्य सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ५८-००
१३५० चिकित्सातत्त्वदीपिका महावीर प्रसाद पाण्डेय दो भाग १८-५०
१३५१ चिकित्सातत्त्वप्रदीप-दो भाग १८-५०
१३५२ चिकित्सांजन-हिन्दी १-५०
१३५३ चिकित्साव्यवहार विज्ञान ०-५०
१३५४ चिकित्सातिलक श्रीनिवास ९-२५
१३५५ चिकित्सामंजरी ५-००
१३५६ चिकित्सादर्श ३ भाग १८-००
१३५७ छाछ के गुण उपयोग ०-७५
१३५८ चौखंबा चिकित्सा विज्ञानकोश २०-००
१३५९ जटिल रोगों की सफल चिकित्सा २-००
१३६० जन्मनिरोध-सचित्र ६-००
१३६१ ज्वरचिकित्सा—श्रीमहेन्द्रनाथ २-७५
१३६२ ज्वरतिमिरनाशक—भाषा टीका २-००
१३६३ जीवनतत्त्व १-५०
१३६४ ज्वरविज्ञान—(हि०) ३-५०
१३६५ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २-००
१३६६ टोटका चिकित्सा अमोलकचन्द्र ०-७५
१३६७ डाक्टरी गाइड ४-००
१३६८ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा-(एलोपैथी, तथा होमियो) (हि०) ५-४०
१३६९ डाक के गुण और उपयोग ०-७५
१३७० तात्कालिक चिकित्सा १-२०
१३७१ तंदुरुस्त कैसे रहें ३-००
१३७२ तापमान—राजकुमार ०-२५
१३७३ तीमारदारी ०-७५
१३७४ तुलसी चिकित्सा विधान— ०-३७
१३७५ तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०-७५
१३७६ तुलसी के गुण, उपयोग ३-००
१३७७ तरबूज के गुण उपयोग ०-६२
१३७८ दांतों का डाक्टर २-५०
१३७९ दही के गुण उपयोग २-५०
१३८० दीर्घायु १-२५
१३८१ दुग्धगुण उपयोग २-००
१३८२ दुग्धचिकित्सा—महेन्द्रनाथ ४-००
१३८३ दूब से सर्व रोगों के इलाज १-००
१३८४ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १३-००
१३८५ देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ०-७५
१३८६ दोष कारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १-००
१३८७ द्रव्यगुण मंजूषा २-००
१३८८ द्रव्यगुण भा. टी. २-४०
१३८९ द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य यादवजी विक्रमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक ४-००
१३९० धतूरागुण विधान— १-१२
१३९१ धनिया के गुण उपयोग ०-५०
१३९२ धात्री विज्ञान २-५०
१३९३ घृतगुण तथा उपयोग १-००
१३९४ धन्वंतरी पूजा कथादर्श ०-७५
१३९५ नपुंसकचिकित्सा व यौवन गुप्त ३-००
१३९६ नपुंसकामृतार्णव २-१०

१३९७ नमक के गुण उपयोग ०-५०
१३९८ नव्यपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १-७५
१३९९ नवीन चिकित्सा पद्धति १-२५
१३९० नव्यचिकित्सा विज्ञान-डा० मु० स्वरूप १६-००
१४०१ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान—ले०—डाक्टर मुकुन्द स्वरूप वर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषय को बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ८-००
१४०२ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि० ०-७५
१४०३ नाड़ीतत्त्वदर्शन—नाड़ी विज्ञान की रहस्यपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक—ले० श्री सत्यदेव वशिष्ठ ५-००
१४०४ नाडीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी २-५०
१४०५ नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०-५०, ०-३५
१४०६ नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हि० ०-३५
१४०७ नाड़ीज्ञानदर्पण—हिन्दी टीका ०-५०
१४०८ नाड़ीचक्र—मूल ३-५०
१४०९ नागरसर्वस्व ५-१०
१४१० निघंटु [illegible]—त्रिवेदी १०-००
१४११ [illegible] उपयोग ०-७५
१४१२ [illegible] संग्रह १-२५
१४१३ [illegible] गुटिका संग्रह [illegible]
१४१४ [illegible] १-२५
१४१५ [illegible] ०-[illegible]
१४१६ नीम के गुण उपयोग १-२५
१४१७ [illegible] चिकित्सा ०-[illegible]
१४१८ [illegible] विज्ञान [illegible] ४-००
१४१९ [illegible]चिकित्सा—[illegible] ११-२५
१४२० [illegible] १-००
१४२१ [illegible] १-००
१४२२ [illegible] १-००
१४२३ [illegible] विज्ञान—[illegible] दास ४-००
१४२४ [illegible] १-००
१४२५ [illegible]—हि० [illegible] १-८०

१४२६ पथ्यापथ्यनिरूपण ०-७५
१४२७ पदार्थविज्ञान—वागीश्वर ८-००
१४२८ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद २-५०
१४२९ पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०-७५
१४३० पर्यायमुक्तावली संस्कृत ५-५०
१४३१ पशुचिकित्सा— २-००, ३-६०
१४३२ पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६-००
१४३३ पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १-३५
१४३४ पर्यायरत्नमाला—माधवकर ६-००
१४३५ पाचन प्रणाली के रोग—महेन्द्रनाथ २-२५
१४३६ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटेरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत दूसरा भाग ३०-००
१४३७ पीपल गुणविधान—अब्दुल्ला ०-७५, ०-५०
१४३८ पुरुष गुप्तरोग चिकित्सा १-२५
१४३९ पुरुषविज्ञान—जगन्नाथ ७-००
१४४० पेटेन्ट प्रेस्काइबर पाकेट-डा० रमानाथ ५-००
१४४१ पेटेन्ट अदवियात-बंसल ६-००
१४४२ पैसे पैसे के चुटकुले ४-००, ३-००
१४४३ प्रत्यक्षशरीरकोष-श्री सेनगुप्त ८-००
१४४४ प्रमाणविज्ञान—जगन्नाथ २-५०
१४४५ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी १-१२
१४४६ प्रत्यक्षशरीर हिन्दी दो भाग २५-००
१४४७ प्रयोग पुष्पावली १-२५
१४४८ प्रतापकंठाभरण १-५०
१४४९ प्रसूतिविज्ञान—रमानाथ द्विवेदी १०-००
१४५० प्रारंभिक जीव विज्ञान—टंडन ४-४०
१४५१ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय १-००
१४५२ प्रारम्भिक उपचार-गणेशदत्त १-००
१४५३ प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४-५०
१४५४ प्रारम्भिक भौतिकी-निहालकरण ५-५०
१४५५ प्रारम्भिक रसायन-वृन्दावनसहाय ४-५०
१४५६ प्राकृतिक चिकित्सा-अमोलकचन्द्र ५-००
१४५७ प्राकृतिक जीवन की ओर -मोदी ३-००
१४५८ प्रारंभिक उपचार १-००
१४५९ प्रारंभिक स्वास्थ्य ०-३७
१४६० प्रतिष्ठा औषधि ०-५०

१४६१ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा ०-३५
२-५०, १-००
१४६२ फलसंरक्षण २-७५
१४६३ फलाहार चिकित्सा—महेंद्रनाथ २-५०
१४६४ फिटकरी— २-५०
१४६५ फिटकरी गुण उपयोग १-५०
१४६६ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा ३-००
१४६७ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग १-००
१४६८ बबूल गुण उपयोग ०-८८
१४६९ बरगद ०-७५
१४७० बादाम के गुण उपयोग ०-४०
१४७१ बस्तिशलाका प्रवेश ४-००
१४७२ बायोकेमिक चिकित्सा-सुरेश प्रसाद
१४७३ बायोकेमिक पाकेट गाइड-डा० सुरेशप्रसाद हि० १-००
१४७४ बायोकेमिक रिपर्टरी ८-००
१४७५ बांसा के गुण उपयोग १-२५
१४७६ बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान ६-५०
१४७७ बालतन्त्र-(कल्याण वैद्य विरचित) ३-००
१४७८ बालरोग चिकित्सा ५-००
१४७९ बोपदेव शतक ०-८७
१४८० बीसवी शताब्दी की औषधियां ८-००
१४८१ बुखार का अचूक इलाज ०-७५
१४८२ बुढ़ापा और उससे बचने का उपाय १-५०
१४८३ बूढ़ों का आरोग्य ५-००
१४८४ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २-५०
१४८५ बृहन्निघंटुरत्नाकर हि० टी० चतुर्थ भाग ९-६०
१४८६ बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचम भाग ११-२०
छठा भाग १४-४०
१४८७ " " १६-२५
१४८८ बृहद्योगतरंगिणी त्रिमल्लभट्ट १२-००
१४८९ बृहद् रसराज सुन्दर हिन्दी ६-००
१४९० भारतीय जड़ी-बूटी डा० गनपतसिंह १-५०
१४९१ भारतीय रस पद्धति-अत्रिदेव ०-७५
१४९२ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद
१४९३ भावप्रकाश-पं० लालचन्दजी कृत अद्वितीय हिंदी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु २०-००
१४९४ भावप्रकाशनिघण्टु-सटिप्पण मूल १-५०
१४९५ भावप्रकाशनिघण्टु—आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो०बा० १५८६), दिल्ली ७

कृत ललिताभंकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित ८-००

१४९६ भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा १-००

१४९७ भिषक्कर्मसिद्धि २०-००

१४९८ भूलोक में अमृत ०-५०

१४९९ भलसंहिता—मूल १०-००

१५०० भैषज्यसंहिता ४-५०

१५०१ भैषज्यकल्पना—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त १-७५

१५०२ भैषज्यकल्पना विज्ञान ५-००

१५०३ भैषज्यरत्नावली—अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२-००

१५०४ भोजन कुतूहल संस्कृत ४-००

१५०५ भारत भैषज्यरत्नाकर दूसरा, पांचवां १८-००

१५०६ मदनपाल निघंटु—भाषा टीका बंबई ४-८०

१५०७ मधुचिकित्सा विधान ०-५०

१५०८ मधुगुण उपयोग २-५०

१५०९ मर्मविज्ञान—ले० श्रीरामरक्ष पाठक ३-५०

१५१० मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा—एलोपैथिक ३-००

१५११ मलेरिया—श्री मनमोहन बूप—मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २-२५

१५१२ मलेरिया और मोतीझरा १-२५

१५१३ मलेरिया और कालाजार १-७५

१५१४ महामारी विवेचन—हिन्दी टीका सहित ०-७५

१५१५ माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट—डा० एम०एल० गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपथिक चिकित्सा २०-००

१५१६ मानव शरीर रचना विज्ञान दो भाग १४-००

१५१७ मानव शरीर रचना प्रथम भाग (ग्रे एनाटमी के आधार पर) डा. मुकुन्द स्वरूप ३०-००

१५१८ माधव निदान—सटिप्पण १-५०

१५१९ माधवनिदान—मधुकोष आतंकदर्पण ७-००

१५२० माधवनिदान—मधुकोष सं० टीका तथा मधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं० दीनानाथ कृत संपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८-००

१५२१ माधवनिदान—मधुकोष तथा विद्योतनी १४-००

१५२२ माधवनिदान—माधवी हिन्दी टी० २-५०

१५२३ माधव निदान—मधुकोष मनोरमा हिन्दी ६-००

१५२४ माधवनिदान—पं० दत्तराम चौबे ६-००

१५२५ माधवनिदान—सर्वांगसुन्दरी भा. टी. ४-५०

१५२६ मानव शरीर दीपिका ६-००

१५२७ मानसिक आरोग्य ४-००

१५२८ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र—बलवन्त सिंह कृत २-१०

१५२९ मिक्सचर (एलोपैथिक) २-५०

१५३० मिट्टी चिकित्सा ०-७५

१५३१ मोटापा दूर करने के उपाय १-००

१५३२ मुकलावा बहार ६-००

१५३३ मूली के गुण उपयोग ०-७०

१५३४ मेंहदी के गुण ०-७०

१५३५ मेघविनोद—श्रीमेघमुनिप्रणीत—सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज—दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६-००

१५३६ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा ४-००

१५३७ यूनानी चिकित्सा विधि—अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी है। शरीरपरिचय सहित हिंदी ५-००

१५३८ यूनानी चिकित्सासागर—लेखक हकीम मन्साराम—इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमाये हुए नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०-०

१५३९ योगचिकित्सा—अत्रिदेव ३-५०

१५४० योगचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित ४-८०

१५४१ योगरत्नाकर—मूल संस्कृत ६-००, ७-५०

१५४२ योगरत्नाकर भा० टी० १८-००

१५४३ योगतरंगणी ६-००

१५४४ रक्तविक्षेप या ब्लडप्रेशर ०-७५

१५४५ रतिमंजरी ०-४०

१५४६ रतिरत्न प्रदीपिका—मूल १-००

१५४७ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह— कालेडा बोगला वालों का प्रथम भाग १०-०० तथा दूसरा ६-००

१५४८ रसतरंगिणी—लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्रनाथ जी के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्दजी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण है सफेद कागज पर छपा। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं। सभी जगह पाठ्यग्रन्थ है १०-००

१५४९ रसचिकित्सा ६-००

१५५० रस प्रदीप ०-६०

१५५१ रसायनतन्त्र ०-३०

१५५२ रसकौमुदी १-००

१५५३ रसशास्त्र—अत्रिदेव ७-००

१५५४ रसशास्त्रप्रवेशिका २-००

१५५५ रसतत्त्वविवेचन ३-५०

१५५६ रसहृदयतन्त्र—भाषा टीका ५-००

१५५७ रसरत्नसमुच्चय—मूलसंस्कृत ३-००

१५५८ रसरत्नसमुच्चय—पं, धर्मानंद जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००

१५५९ रसराजमहोदधि—सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ९-६०

१५६० रसादिपरिज्ञान—जगन्नाथ प्रसाद २-५०

१५६१ रसाध्याय—संस्कृत टीका सहित १-००

१५६२ रसामृत—ले० वै० यादव जी विक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित।

यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य-
ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म,
पिष्टि, रसयोग आदि के ठीक निर्माण में
उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा
गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
१५६३ रसायनखंड–नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०-७५
१५६४ रसायनसार–ले० श्यामसुन्दराचार्य ८-००
१५६५ रसायन और वाजीकरण २-००
१५६६ रसार्णव–नाम रसतन्त्र–सटिप्पण ३-००
१५६७ रसोपनिषत् प्रथम भाग ५-००
१५६८ रसेन्द्रपुराण–प० रामप्रसाद कृत ८-४०
१५६९ रसेन्द्रसारसंग्रह–भाषाटीका ३-००, ७-२० ६-००
१५७० राजनिघंटु संहिता–धन्वन्तरीयनिघंटु ९-५०
१५७१ राजवल्लभनिघंटु–हिन्दी टीका ३-००
१५७२ राजयक्ष्मा श्री द्वारकानाथ १-००
१५७३ राजमार्तण्ड २-५०
१५७४ राजमृगाङ्क २-६६
१५७५ राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह १-५०
१५७६ रीठा गुणविज्ञान ०-८८
१५७७ रोगार्थनिश्चय शिवनाथ १२-७५
१५७८ रोगिविज्ञान [illegible] १४-००
१५७९ रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास ५-००
१५८० [illegible] ३-००
[illegible] रोगी की सेवा और पथ्य–डा० [illegible] ३-००
[illegible] रोगी परीक्षाविधि–श्री [illegible] ६-००
[illegible] रोगी पथ्य विधान–[illegible] १-५०
[illegible] ६-००
[illegible] [illegible]
[illegible] ०-६२
[illegible] के गुण उपयोग [illegible]
१५८८ [illegible] [illegible]
१५८९ [illegible] ४०-००
१५९० वर्मा [illegible] ४०० रोगों का
[illegible] चिकित्सा। [illegible]
[illegible] उपयोगी। डा०
[illegible] के लिये [illegible]
रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति नया सं, १२-००
१५९१ विटेमिन्स २-२५
१५९२ लोहसर्वस्व २-००
१५९३ बसवराजीयम्–दो भाग भाषा ८-५०
१५९४ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि० टी, २-१०
१५९५ बोपदेवशतक ०-८५
१५९६ वादिखंड धातुखंड ३-००
१५९७ विषविज्ञान–अगदतन्त्र १-७५
१५९८ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ४-२०
१५९९ वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्तकृत संस्कृत व्या. १०-००
१६०० वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ८-२०
१६०१ वृषकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा–– ३-५०
१६०२ वैद्यकीय सुभाषितावली–ड० मेहता २-००
१६०३ वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा०टी०बंबई१-८०. १-५०
१६०४ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिन्दी टीका १-२५
१६०५ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई ३-००
१६०६ वैद्यमनोत्सव–हिन्दी (नैनसुख) ०-६०
१६०७ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ६-००
१६०८ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत. भाषा टीका १-२०
१६०९ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट्ट ३-९०
१६१० वैद्यचन्द्रोदय १-००
१६११ वैद्यकलाधर १-८०
१६१२ वैद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका २-१०
१६१२(क) वैद्यावतंस भा० टी० १-५०
१६१३ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ५-००
१६१४ व्याधिविज्ञान–डा० आशानन्द। रोगों के ज्ञान
के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित
छठा संस्करण दो भाग २०-००
१६१५ व्रणशोथचिकित्सा ३-००
१६१६ व्रणोपचारपद्धति ०-५०
१६१७ [illegible] चिकित्सा २-२५
१६१८ शल्यप्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप ५-५०
१६१९ [illegible] वैद्यरत्नावली १०-६२
१६२० शरीरक्रिया–[illegible] १२-००
१६२१ शरीर[illegible]विज्ञान ०-७५
१६२२ शहद के गुण उपयोग ०-५०
१६२३ शर्बत विज्ञान २-५०
१६२४ शल्य प्रदीपिका डा० मुकुन्दस्वरूप १५-००
१६२५ शार्ङ्गधरसंहितामूल अंजन निदानसहित गुटका २-००
१६२६ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं० व्याख्या ८-००
१६२७ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४-००
१६२८ शार्ङ्गधर संहिता–भाषाटीका ५-००
१६२८(क) " " दुर्गादत्त १०-००
१६२९ शालिग्रामौषधि शब्दसागर ५-४०
१६३० शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८-००
१६३१ शालाक्यतन्त्र–श्री रमानाथ द्विवेदी ९-००
१६३२ शिलाजीत विज्ञान ०-७५
१६३३ शिवनाथसागर हिन्दी–डा० शिवनाथ ८-४०
१६३४ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १-५०
१६३५ शीतला परिहार ३-००
१६३६ शुभसन्ततियोग प्रकाश–हिन्दी टीका ३-००
१६३७ शुद्ध आयुर्वेद गाईड–श्री अत्रिदेव कृत। आयुर्वेद की
प्रैक्टिस करने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ५-००
१६३८ संस्कार विधि विमर्श ३-००
१६३९ संक्रामक रोग विज्ञान ६-००
१६४० संतरा गुण उपयोग–हिन्दी ०-५०
१६४१ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधु की
चुटकी ५-००
१६४२ सत्यानाशी गुणविधान ०-७५
१६४३ सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय १२-००
१६४४ सचित्र क्लीनिकल पैथालोजी १०-०
१६४५ सचित्र नेत्ररोग विज्ञान–डा० शिवदयाल ८-००
१६४६ सरल प्राकृतिक चिकित्सा ३-००
१६४७ सरलशरीर विज्ञान १-५०
१६४८ सरलचिकित्साविज्ञान १-२५
१६४९ सेब के गुण उपयोग ०-५०
१६५० सिद्धान्तनिदान दो भाग संस्कृत १४-००
१६५१ सिद्धपरीक्षापद्धति–प्रथमखण्ड कालेडा बोगला ८-००
१६५२ सिद्धभैषज्यसंग्रह–युगलकिशोर गुप्त ८-००
१६५३ सिद्धरसायन–मोरे वैद्यरत्न हि० ५-००
१६५४ सुश्रुतसंहिता–मूलशल्य परिचायक परिशिष्ट १०-००
१६५५ सुश्रुतसंहिता–कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी

अनुवाद तथा पं० लालचन्दजी-कृत परिवर्द्धित १८-००
१६५६ सुश्रुत-सूत्रनिदान-घाणेकर १२-००
" " केवल सूत्र ९-००
१६५७ सामान्य शल्यविज्ञान १२-००
१६५८ सुश्रुतसंहिता-(शारीरस्थान) डा० जे०डी०घार्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५-००
१६५९ सुश्रुतसंहिता-केवलशारीरस्थान-डा० घाणेकर १५-०
१६६० सूचीवेध-राजकुमार २-५०
१६६१ सूचीवेधविज्ञान-आचार्य श्री रमेशचन्द्र । इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १.००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७-५०
१६६२ संक्षिप्त औषध परिचय १-२५
१६६३ सौंफ के गुण तथा उपयोग १-२५
१६६४ सौश्रुती-रामनाथ द्विवेदी १०-००
१६६५ स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां २-००
१६६६ स्वास्थ्य विवेचन —शिवकुमार ५-००
१६६७ स्वास्थ्य और सद्वृत्त २-००
१६६८ स्वाभाविक भोजन ०-७५
१६६९ स्वास्थ्य कैसे पाया १-५०
१६७० स्टेथ्रस्कोप नाड़ी परीक्षा-जोशी ०-७५
१६७१ स्वप्नदोषविज्ञान-सरल हिन्दी २-००
१६७२ स्वर्णाक्षीरी गुण विधान ०-७५
१६७३ स्वस्थवृत्त समुच्चय-राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ७-००
१६७४ स्वास्थ्य रक्षा-ले० श्री हरिदास वैद्य ६-००
१६७५ स्वास्थ्य विज्ञान-ले० डा० घाणेकर ७-५०
१६७६ स्वास्थ्यविज्ञान-अजमेर १-२५
१६७७ स्वास्थ्य संहिता-श्रीनानकचन्द हिं० २-५०
१६७८ स्त्रीचिकित्सा-हिन्दी टीका सहित ०-६०
१६७९ स्त्री रोग विज्ञान-डा० रमानाथ १-५०
१६८० हमारे भोजन की समस्या-रामअवध १-५०
१६८१ हमारे भोजन की समस्या-अत्रिदेव १-७५
१६८२ हमारी आंखें-अग्रवाल ४-००
१६८३ हमें क्या खाना चाहिए १-२५
१६८४ हल्दी के गुण तथा उपयोग ०-८८
१६८५ हस्त्यायुर्वेद-पाल्काप्य मुनि विरचित ११-००
१६८६ हारीत संहिता-हिन्दी टीका १०-२०
१६८७ होमियो पारिवारिक चिकित्सा ९-००
१६८८ होम्योपैथी के सिद्धांत २-५०
१६८९ होम्यो पाकेट गाईड १-००
१६९० होम्यो थाइसिस चिकित्सा ०-[illegible]०
१६९१ होम्यो टाइफाइड चिकित्सा [illegible]-७५
१६९२ होम्यो गृहचिकित्सा २-५०
१६९३ होम्योमैटेरिया मेडीका ४-२५
१६९४ होम्यो इंजक्शन चिकित्सा १-७५
१६९५ होमियो भषज्यलक्षण संग्रह २५-००
१६९६ हिन्दी मैटेरिया मेडिकाहोमियो केवलदूसराभाग ०-८०
१६९७ हिक्मतप्रकाश ४-२०
१६९८ हितोपदेशवैद्यक ३-६०
१६९९ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा ०-७५
१७०० हींग के गुण ३-००
१७०१ हरीतक्यादिनिघंटु ७-२०
१७०२ त्रिदोष परिज्ञान ३-५०
१७०३ त्रिफला गुण १-००
१७०४ त्रिदोषविज्ञान ४-००
१७०५ त्रिशति ३-००
१७०६ ज्ञानभैषज्यमंजरी ०-७५



फलित मार्तण्ड

(लेखक—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र)

इस ग्रन्थ में फलादेश कथन का वह अनुभूत अचूक मार्ग दिल खोलकर लिखा गया है, जिन्हें फलितजीवी ज्योतिषी वर्षों सेवा करने पर भी नहीं बतलाते। लेखक ने ३० वर्षों के अनुभव में जो योग ठीक उतरे और अन्य प्राच्य आचार्यों व महान् ज्योतिर्विदों के ग्रन्थों में जो वर्तमान में सत्य सिद्ध हुए हैं, उन योगों को ही इस ग्रन्थ में अपने अनुभूत फलादेश के गुप्त संकेतों के साथ लिखा है। जिन ग्रह योगों के फल में कुछ भी व्यभिचार दृष्टिगोचर हुआ है, (क्योंकि सम्प्रति प्रचलित कई ग्रन्थों के योग फल बहुधा ठीक नहीं मिलते) उसे इस ग्रन्थ में नहीं लिखा गया है, इस प्रकार यह ग्रन्थ ज्योतिष के फलित विषय पर ३० वर्ष के अनन्तर किया गया एक गम्भीर अनुसंधान है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने जो इन्द्र, वरुण (हर्षल, नेपच्यून) नामक ग्रहों की गवेषणा की है; उनका फलादेश भी जहां तहां ठीक उतरा वह भी लिखा है, ग्रन्थ अपने विषय का बेजोड़ है।

ग्रन्थ में प्रत्येक श्लोक की मार्मिक व्याख्या हिन्दी भाषा में दी गई है, व्याख्या की शैली और विषय लेखन शैली इतनी सुन्दर, सरल और व्यवस्थित है कि ज्योतिष का एक साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी आसानी से फलित ज्योतिष का अच्छा ज्ञाता बन जाता है, और पूछने वाले की आयु भर के अचूक, अद्भुत फल बताकर चकित करने में समर्थ हो जाता है, और इस अर्थकरी विद्या से पूरा लाभ उठा सकता है। किं बहुना—जिस ज्योतिषी के पास यह ग्रन्थ होगा वह इज्जतपूर्वक अपना जीवन निर्वाह करता हुआ धन-धान्य से युक्त रहेगा। इसमें सन्देह नहीं। फलित ज्योतिष के प्रेमी पाठक ज्योतिर्विद तथा अन्य लोग भी जितनी जल्दी हो, लिख कर इस ग्रन्थ को प्राप्त कर लें।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १२) है।

हमारे अत्यन्त उपयोगी आयुर्वेद के प्रकाशन

अष्टांग हृदय : पं. लालचन्द्र वैद्य कृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित। सम्पूर्ण। बड़े आकार के ८४० पृष्ठ, पक्की कपड़े की जिल्द। मूल्य सिर्फ १५ रु०

आयुर्वेद चिकित्सा मार्ग दर्शिका (आयुर्वेदिक गाइड) : आयुर्वेद की अनेक पुस्तकों के रचयिता अत्रिदेव विद्यालंकार। यह रचना शुद्ध आयुर्वेद-प्रणाली से चिकित्सा करने वाले प्रत्येक वैद्य के लिए मार्ग-प्रदर्शक है। वैद्यों को सदैव पास रखने वाली पुस्तिका का मूल्य सिर्फ ५ रु०

गंगयति निदान : मूल लेखक जैन यति गंगाराम : अनुवादक श्री नरेन्द्रनाथ शास्त्री। पृष्ठ सं. ६०६। सरल हिन्दी में हर रोगों का निदान दिया गया है। मूल्य ६.००

चरक संहिता : श्री जयदेव विद्यालंकार कृत। बड़े आकार में १२३३ पृष्ठ। दो जिल्दों में, अत्यन्त प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद सहित मूल्य ३० रु०। इसकी उपयोगिता इसी से प्रमाणित हो जाती है कि थोड़े समय में ही इसके सात संस्करण हो गए हैं।

चिकित्सा तत्त्व दीपिका : पं. महावीर प्रसाद पाण्डेय। इसके चिकित्सा विषयक ज्ञान, रोगों के सम्प्राप्ति लक्षण, साध्यासाध्यता, उपक्रम तथा प्रयोग उपयोगी और सारगर्भित आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों से लेकर सरल भाषा में दिए गए हैं। मूल्य दो भागों का १८.५० रु०

द्रव्य गुण विज्ञान (पूर्वार्द्ध) सुप्रसिद्ध आचार्य यादव जी कृत सरल हिन्दी में आयुर्वेद के छात्रों की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पृष्ठ सं. १८० मूल्य ४.००

नाड़ी दर्शन : श्री [illegible] वैद्य। पृ. सं. १७२। इसमें सरल हिन्दी में चरक, सुश्रुत तथा आधुनिक विज्ञान पर आधारित नाड़ी संबंधित सभी विषयों पर संपूर्ण प्रकाश डाला गया है। मूल्य [illegible]

भाव प्रकाश : (सम्पूर्ण) : [illegible] भाषा टीका सहित। टीकाकार पं. लालचन्द्र जी वैद्य। बड़े आकार के [illegible] पृष्ठ। [illegible] रु०। हिन्दी अनुवाद द्वारा इस विशाल ग्रंथको पढ़कर साधारण [illegible] [illegible] का इलाज कर सकता है।

भाव प्रकाश [illegible] (हरीतक्यादि)। पं. विश्वनाथ द्विवेदी कृत [illegible] टीका सहित। पृ. सं. [illegible] [illegible]

को लेकर सरल और सुबोध हिन्दी में सर्व-साधारणके लाभार्थ तैयार किया गया है। अपनी उपयोगिता के कारण ही कुछ ही समय में इसके छः संस्करण हो गए हैं। मूल्य ५ रु०

भैषज्य रत्नावली : मू. ले. गोविन्द दास : नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा परिवर्धित तथा संशोधित अनु. जयदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८४० पृष्ठ। परिवर्धित तथा संशोधित सातवां संस्करण। मूल्य १२.०० रु०

मेघ विनोद : मेघ मनि प्रणीत : सौदामिनी भाषाभाष्य। भाष्यकर्ता श्री नरेन्द्रनाथ शास्त्री। ६५० पृष्ठ, तृतीय सं.। हर प्रकार की बीमारी के ऊपर अनुभव से आजमाए बढ़िया तथा सस्ते नुस्खे जो सभी जगह आसानी से उपलब्ध हैं, दिये गये हैं। मूल्य ६ रु०

रस तरंगिणी : मूल ले. पं. सदानन्द। पं. हरिदत्त शास्त्री कृत संस्कृत टीका तथा पं. धर्मानन्द जी द्वारा हिन्दी अनुवाद। इसमें स्वर्ण, ताम्र, वंग, लौह, सीसा, पारद, गंधकादि का व्यापक तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। अपनी विशेषता के कारण ६ संस्करण हाथोंहाथ निकल गए। मूल्य १०.००

रसरत्न समुच्चय : श्री धर्मानन्द जी द्वारा विस्तृत हिन्दी टीका तथा अत्रिदेव विद्यालंकार द्वारा संशोधित। बड़े आकार के ५६६ पृष्ठ। भारतीय रस शास्त्र-संबंधी अनुपम ग्रंथ। मूल्य १० रु०

रसामृत : यादव जी त्रिकम जी। रस शास्त्र के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए सरल से सरल तरीके से लिखा गया एक मार्गदर्शक ग्रंथ। मूल्य ५.०० रु०

राजयक्ष्मा : सी. द्वारकानाथ : आयुर्वेदीय सम्बोधपरक प्रबंध मूल्य १.००

सुश्रुत संहिता : सम्पूर्ण : अनु० अत्रिदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८२० पृष्ठ : प्रस्तुत पुस्तक आयुर्वेद का अत्यन्त प्राचीनतम शल्य चिकित्सा परक ग्रन्थ है जिसमें आठों अंगों का विवरण शल्य कर्म को प्रधानता देकर किया गया है प्रथम मूल देकर उसका सरल एवं प्रांजल हिन्दी भाषा में अनुवाद दिया गया है। मूल्य १८ रु०

वैद्यावतंस : लोलिम्बराज प्रणीत : पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका १.५०

सुश्रुत संहिता : शारीर स्थान : डा. जे. डी. शर्मा। आयुर्वेदिक शारीरशास्त्र पर उठाई गई शंकाओं का वैज्ञानिक समाधान। मूल्य ५.००

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

अत्यन्त उपयोगी एलोपैथिक तथा यूनानी के प्रकाशन

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान : एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक : ४९६ पृष्ठ आशानन्द पञ्चरत्न '(प्रथम भाग)'। इसमें एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा संबंधी विषयों का तुलनात्मक रूप से रोगों का निदान एवं सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा भी साथ-साथ दी गई है। एतावत आविष्कृत एन्टी बायटिक्स औषधियों और इंजेक्शनों का भी समावेश है। मू. १०.००

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र : (A Text Book of Modern Medicine) : धर्मदत्त वैद्य : १५०० पृष्ठ : एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा का ज्ञान कराने के लिए आधुनिकतम आविष्कारों के साथ हर रोगों के कारण, लक्षण, चिकित्सा विस्तार के साथ दिया गया है। मूल्य ३६.०० रु०

कफ परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : विकृति विज्ञान का ज्ञान कराने वाला हिन्दी में प्रथम ग्रंथ। १३ चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। श्लेष्मा की भौतिक, रासायनिक और अणवीक्षणीय परीक्षा पद्धति का विस्तृत वर्णन है। मूल्य १.२५ रु०।

क्लीनिकल मेडिसिन : अत्रिदेव गुप्त : दो भाग। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक शैवल की 'क्लीनिकल मेडिसिन', मजूमदार की 'बेड साइड मेडिसन,' और चेम्बरलेन की 'क्लिनिक' आदि प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर आयर्वेदीय संहिताओं के तुलनात्मक बहुमूल्य उद्धरणों के साथ भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया सर्वोत्तम ग्रंथ। मूल्य २५.०० रु०

नव्य-जन-स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य विज्ञान : डा. मुकुन्द स्वरूप वर्मा : पृ. सं. ४३२ : प्रस्तुत पुस्तक में जन-स्वास्थ्य-संबंधी सभी प्रश्नों पर विचार किया गया है और स्वास्थ्य के प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है।

मलेरिया : मनमोहन धूप : मलेरिया रोग के कारण, भेद और विकास के वर्णन के साथ-साथ अचूक चिकित्सा भी बतलाई गई है। मलेरिया चिकित्सा में नवीनतम औषधियों का उपयोग तथा उनके गुण दोष का भी उल्लेख किया गया है।

मानव शरीर रचना : मुकुन्द स्वरूप वर्मा। ग्रे के एनाटमी आदि ग्रन्थों के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण पर लिखी गई आयर्वेदिक तथा मेडिकल कालेजों के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ। पहला भाग ३० रु०

पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान : (दूसरा भाग) : राम सुशील सिंह। बड़े आकार के १०२८ पृष्ठ। इसमें अधिक से अधिक एलोपैथिक, आयर्वेदिक तथा यूनानी द्रव्यों का विस्तृत, सचित्र, तुलनात्मक एवं सभी दृष्टि से ऐसा सर्वांगीण हृदयग्राही एवं उदबोधक विवरण दिया गया है जो अंग्रेजी व किसी अन्य भाषा में किसी एक ही मेटीरिया मेडिका में उपलब्ध नहीं है। मूल्य ३०.०० रु०

यूनानी चिकित्सा विधि : (यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया) हकीम मनसाराम शुक्ल : हकीम अजमल खां, उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों का संग्रह। साथ ही साथ इसमें प्रत्येक रोगों का खुलासा तथा पथ्य भी दिया गया है। मूल्य ५.००

यूनानी चिकित्सा सागर : हकीम मनसाराम शुक्ल : प्रस्तुत पुस्तक में संसार प्रसिद्ध हकीम अजमल खां तथा अन्य प्रसिद्ध हकीमों के सभी गुप्त नुस्खों का संग्रह। मूल्य १४ रु०

वर्मा एलोपैथिक गाइड : रामनाथ वर्मा : पृ. सं. ७२०। एलोपैथिक प्रणाली से शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों, उनके कार्य, रचना, रक्त संचार, नाड़ी परीक्षा, पाखाना, मूत्रादि परीक्षा, विटामिन्स, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न मार्ग, इंजेक्शन, मुख्य-मुख्य रोग और अनुभूत नुस्खे, नवीनतम औषधियों तथा चिकित्सा संबंधी आविष्कार, औषधियों के गुण दोष, प्रयोग, उपचार आदि दिए गए हैं। इसकी लोक-प्रियता इसी से साबित होती है कि इसके अब तक सात संस्करण हाथोंहाथ निकल गए। मूल्य १३.००

वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर : रामनाथ वर्मा : पृ. सं. ७००। इस पुस्तक में डाक्टरी चिकित्सा में नित्य प्रयोग में आने वाले आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के समग्र नुस्खों, योगों, पेटेन्ट, साधारण औषधियों तथा इन्जेक्शनों का संग्रह है। मूल्य १३.००

व्याधि विज्ञान : आशानन्द पञ्चरत्न : दो भागों में पृ. सं. ११००। निदान-विषयक इस अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ में पाश्चात्य एवं पौर्वात्य मतानुसार चिकित्सा, तुलनात्मक अध्ययन वैद्य बन्धुओं तथा एलोपैथिक डाक्टरों के लिए समान रूप से उपयोगी है। मू. २० रु०

सूचीवेध विज्ञान : रमेशचन्द्र वर्मा : इसमें शरीर विज्ञान, रोग और जीवाणुओं का विस्तृत परिचय, विशोधन कार्य, इंजेक्शन लगाने की संपूर्ण विधियों और सूचीवेध से होने वाले उपद्रव तथा उनकी चिकित्सा के साथ १००० से अधिक इंजेक्शनों का भी विस्तृत वर्णन है। मूल्य ७.५० रु.

हिन्दी माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट : ए.एल. गुजराल : लेखक ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी भाषा-भाषी विद्यार्थियों को एलोपैथिक चिकित्सा के नवीनतम आविष्कारों तथा आधुनिकतम चिकित्सा प्रणाली से परिचित कराया है। मूल्य २० रु०

हृदय परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : हृदय की व्याधियों और आधुनिक प्रणाली तथा उपकरणों से उनकी परीक्षा का विस्तृत वर्णन, चित्रों सहित विषय को अच्छी तरह समझाया गया है। मूल्य २.००

मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

ज्योतिष संबंधी अनुपम प्रकाशन

श्री गोपेश कुमार ओझा के अद्वितीय ग्रंथ

अंकविद्या (ज्योतिष)

अंकविद्या (ज्योतिष) : क्राउन आठ पेजी, सं० २०० । अंग्रेजी में अंकविद्या पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं पर हिन्दी में इनका पूर्ण अभाव है, यद्यपि इसका ज्ञान भारतवर्ष में अनादि काल से चला आ रहा है । ज्योतिष के अन्तर्गत 'अंक' से फलादेश करने की पद्धति शुद्ध भारतीय है । इसी कारण अंक विद्या के मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों को अनेक संस्कृत तथा अंग्रेजी के ग्रंथों से संग्रह कर यह पुस्तक तैयार की गई है । इसमें जन्म की अंग्रेजी तारीख से जीवन के शुभाशुभ वर्ष, दिन, घंटे आदि निकालने के जो सुगम सिद्धान्त बताए गए हैं उन्हें साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य भी समझकर लाभ उठा सकता है । अंक से प्रश्न-विचार तथा जन्मकुण्डली एवं हस्तरेखा से अंकविद्या का सामंजस्य ऐसा विषय है जो प्रत्येक ज्योतिषी और ज्योतिष प्रेमी को जानना आवश्यक है । कम पढ़ा-लिखा भी व्यक्ति इस पुस्तक के द्वारा [illegible] द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवनभर के शुभाशुभ तथा स्वभाव आदि बता सकता है । मूल्य सिर्फ ४ रु०

सुगम ज्योतिष प्रवेशिका

सुगम ज्योतिष प्रवेशिका : क्राउन आठ पेजी पृष्ठ सं. ३३४ । प्राचीन विचार के [illegible] आज है पर आजक- नवयुवक पढ़ा-[illegible] ज्योतिष में [illegible] । परन्तु यह शास्त्र संस्कृत के दुरूह [illegible] ज्योतिष की ओर आकृष्ट हो रहा है । [illegible] के लिए [illegible] है । अनुवादित ग्रंथों जैसी ग्रंथों में [illegible] अनेक शास्त्रों का मंथन कर उनका सुगमता [illegible] २—जातक विचार, [illegible] सार संग्रह प्रस्तुत किया गया है । [illegible] हिन्दी [illegible] विचार, ३—प्रश्न विचार और [illegible] हिन्दी में [illegible] । पुस्तक नहीं थी जिसमें इन चारों विषयों के [illegible] सके प्रामाणिकता के लिए [illegible]

नवीन दिए गए हैं और सभी विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है । वैताल शास्त्रीजी के विचार भी दिए गए हैं । लाववार्य सारिणी भी जो अब तक हिन्दी में दृष्टिगोचर नहीं थी दी गई है । इसकी सहायता से एक साधारण ज्योतिष का ज्ञान रखनेवाला भी एक दिन में ही ५० जन्म कुण्डलियां शुद्ध-शुद्ध तथा प्रामाणिक तैयार कर धन तथा यश दोनों साथ-साथ कमा सकता है । मूल्य सिर्फ ६ रु०

हस्त रेखा विज्ञान

हस्त रेखा विज्ञान : क्राउन आठ-पेजी, पृष्ठ स. ५६० । हस्तरेखा शास्त्र पर, हस्त-रेखा तथा शरीर-लक्षण संबंधी संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत में मिलती सभी पुस्तकों के गंभीर अध्ययन के बाद ही यह पुस्तक लिखी गई है । इसमें हस्त रेखा के सभी विषयों पर भारतीय तथा पाश्चात्य मत के आधार पर बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है । विषय को सुस्पष्ट करने के लिए अनेक चित्र तथा भाषा को सरल और रोचक रखा गया है । हाथ की बहुत-सी सूक्ष्म और जटिल रेखाओं को समझाने का बड़ा परिश्रम किया गया है । इसका सबसे महत्त्व पूर्ण खण्ड शरीर लक्षण है जिसमें कोई ऐसा अंग उपांग नहीं छोड़ा गया है जिसकी पूरी जानकारी न दी गई हो । स्थान-स्थान पर संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से प्रमाण देकर उपा-देयता और भी बढ़ा दी गई है । इस अकेले पुस्तक के अध्ययन और मनन से, साधारण पाठक भी अच्छा ज्योतिषी थोड़े समय में ही हस्त रेखा का पूर्ण ज्ञाता बनकर आशातीत लाभान्वित हो सकता है । मूल्य १२ रु० मात्र ।

फल दीपिका

फल दीपिका : अभी तक ज्योतिष में फलित पर बहुत ही कम पुस्तकें लिखी गई हैं जिससे लोगों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था । गणित आदि करना बहुत ही कठिन कार्य है, पर इस पुस्तक से सर्वसाधारण व्यक्ति भी फलित ज्योतिष का अच्छा ज्ञाता हो सकता और पूछने वाले की आयु-भर के अचूक अद्भुत फल बताकर पूरा लाभ [illegible] सकता है । पुस्तक प्रेस में है और शीघ्र ही प्रकाशित होगी ।

ज्योतिष के प्रकांड विद्वान श्री चन्द्रदत्त पंत के अद्‌भुत ग्रंथ

चन्द्र हस्त विज्ञान

चन्द्र हस्त विज्ञान : पृष्ठ सं. १०००, चित्र सं. लगभग १२०० : प्रस्तुत पुस्तक में हस्त-रेखा के साथ-साथ ग्रह योगों की दृष्टि से संपूर्ण जीवन वृत्तान्त आधुनिक ढंग पर द्वादश ग्रह-योगों के आधार पर, भाग्य, हृदय, मस्तिष्क, आयु, स्वास्थ्य, विवाह, संतान आदि रेखाओं के सम्मिलित सहयोग से यश, कीर्ति, नौकरी, धन-सम्पत्ति, संतान, अकल्पित लाभ, प्रेम की सफलता आदि घटनाओं का वर्णन इतनी सरल भाषा में किया गया है कि साधारण साक्षर व्यक्ति भी इसको पढ़कर अच्छे-अच्छे ज्योतिषियों के समान भूत, भविष्य और वर्तमान सभी बातों को बता सकता है। इसमें १२०० चित्र प्रत्येक प्रकार की रेखाओं का यथेष्ट ज्ञान करा देते हैं। पुस्तक और हाथ खोल लीजिए। चित्र के अनुसार रेखाएं मिलाते चले जाएँ और सभी बातें सही-सही बताते जाएँ। इसमें उंगली के पोरुओं और नाखूनों से लेकर हथेली सहित मणिबंध तक आनेवाले सभी रेखाओं के पर्वत चित्रों, बिन्दुओं, त्रिभुजों, वर्गों, जाल कन्दुक, पद्म, त्रिशूल, शंख, चक्र आदि सभी का यथासम्भव वर्णन बड़े ही अनुभव के साथ किया गया है। हस्तरेखा पर हिन्दी में आज तक अन्य ऐसी कोई पुस्तक नहीं छपी है। मूल्य २०रु. मात्र।

वर्ष चन्द्र प्रकाश

जन्म चन्द्र प्रकाश : इस पुस्तक में भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों ही पद्धतियों का समन्वय करके प्रत्येक ग्रह, भाव लग्नादि का स्पष्ट वर्णन, ग्रह गोचर, दशा, महा दशा, अन्तर्दशा, तथा अन्य सभी दशाएं प्रत्येक नक्षत्र के अनुसार गिनकर लिख दी गई हैं। लग्न स्पष्ट, ग्रह-स्पष्ट, भाव-स्पष्ट आदि बनाने की बहुत ही सरल रीति दी गई है। शुद्धा, मुक्त, सर्वभाग्य, भाग्य, प्रस्तार, गुलिक सावन, षष्ठी प्रमाण, चन्द्र स्पष्ट, चन्द्रगति, षट्‌वर्गी, नवांश, द्वादशांश, त्रिशांश, सप्तांश आदि सभी बातों को बनाने की रीति दी गई है। प्रत्येक राशि को ध्यान में रखकर प्रत्येक लग्न की उसके मित्र, शत्रु भयादि ग्रहों की दृष्टि का पूर्ण ध्यान रखकर किस भाव का स्वामी किस स्थान पर किस ग्रह से युक्त है उसका पूर्ण विवरण भृगुसंहिता पद्धति के अनुसार स्पष्ट लिखा गया है। जन्मपत्र अपने हाथ में रखिए, जिस भाव का फल देखना हो उस प्रकरण को खोल लीजिए इससे आरोग्य, धन, पराक्रम, मकान, विद्या, संतान, शत्रु, मित्र, स्त्री, आयु, मित्र, भाग्य, लाभ, हानि आदि का पूरा विवरण जान लीजिए। ऐसी जानकारी अन्य किसी भी पुस्तक में उपलब्ध नहीं हो सकती। मूल्य १ रु०

प्रश्न चन्द्र प्रकाश

प्रश्न चन्द्र प्रकाश : प्रश्न ही ज्योतिष शास्त्र का मुख्य अंग है। इससे जिसका जन्म-पत्र है या नहीं है उनकी प्रत्येक बातों का—कार्य सिद्धि, परीक्षा परिणाम, नौकरी, विवाह, संतान, रोग, चोरी गई वस्तु, मुकदमा, खोया हुआ धन या व्यक्ति, यात्राएं, खेतीबारी, क्रय-विक्रय, आदि सभी प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक के द्वारा प्राप्त हो जाएँगे। पुस्तक प्रेस में है।

अंक चन्द्र प्रकाश

अंक चन्द्र प्रकाश : अपनी जन्म तिथि अंग्रेजी के हिसाब से, किसी भी स्थान पर, कोई भी व्यक्ति, अपना भूत, वर्तमान और भविष्य जानकर त्रिकालज्ञ हो सकता है। इस पुस्तक से प्रत्येक महीने की समस्त तारीखें १ से लेकर ९ संख्या तक, समस्त संसार के व्यक्तियों के भाग्योदय, उत्थान, पतन, स्वास्थ्य, रोग, निदान, चिकित्सा, स्वभाव, प्रकृति, शिक्षा, पेशा, चरित, प्रेम, विवाह, संतान, यात्राएं आदि आदि की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकता है। पुस्तक प्रेस में है।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

दीवान रामचन्द्र कपूर की पुस्तकें

लघुपाराशरी भाष्य

लघुपाराशरी भाष्य : डिमाई आक्टेवा : पृष्ठ स. ४०० । काल चक्र दशा सहित : भारतीय फलित ज्योतिष की विंशोत्तरी दशापद्धति के प्रामाणिक ग्रंथ उड्डदाय-प्रदीप का भाष्य है । इसमें श्लोकों का अनुवाद तो है ही पर बहुत-सी ऐसी सामग्री समाविष्ट की गई है जिससे विषय के समझने में पूर्ण सहायता प्राप्त होती है । आवश्यकतानुसार सारणियां भी दी गई हैं जो श्लोकों के साथ ही साथ हैं जिससे अध्ययन के साथ ही सारणियों भी उपलब्ध रहें । प्रस्तुत पुस्तक में ग्रहों का योगज फल दिया गया है और उसके जानने के लिए क्लिष्ट श्लोक हैं अतः उन्हें सरल बनाने की दृष्टि से परिशिष्ट हैं । परिशिष्ट की योगावली के द्वारा सरलता से ग्रहों की दशा तथा अन्तर फल ज्ञात हो जाता है । साथ ही इसको और भी उपयोगी बनाने के लिए सविस्तार, सोदाहरण, ससारणी, फलित ज्योतिष संबंधी जिज्ञासाओं के उत्तर आदि सभी बातें दी गई हैं । मूल्य ८ रु०

कालचक्र

कालचक्र : फलित ज्योतिष में अनेक [illegible] पद्धतियां हैं । उनमें चार प्रसिद्ध हैं : विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी और कालचक्र । इन चारों की दशा का आधार चन्द्रनक्षत्र है । कालचक्र दशा भी चन्द्रनक्षत्र की दशा है । यह दशा प्रत्येक चन्द्र नक्षत्र के प्रत्येक चरण से आरम्भ होती है । इस दशा का [illegible] तथा दशा आनयन की रीति बृहत्पाराशर होराशास्त्र तथा [illegible] में है पर कोई ऐसी टीका नहीं थी जिसके आधार पर सही फल [illegible] किया जा सके । [illegible] से अनेक कुण्डलियों पर कालचक्र दशा का प्रयोग किया और [illegible] प्रसंग में उपयोगी [illegible] । [illegible] लेखक ने [illegible] टीका मात्र ही नहीं [illegible] अपने अनुभव तथा उदाहरण भी दिए हैं । मूल्य २.५०

अन्य उपयोगी ज्योतिष के ग्रंथ

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

सचित्र ज्योतिष शिक्षा: प्रारम्भिक ज्ञान खण्ड : बी० एल० ठाकुर । डिमाई आठ पेजी : पृष्ठ सं० ३०० । इस पुस्तक के अध्ययन से ज्योतिषसम्बन्धी बहुत-सी महत्वपूर्ण मुख्य बातें ज्ञात हो जाती हैं जैसे किसी का जन्म सम्वत, मास, पक्ष, दिन, समय आदि न ज्ञात हो तो केवल कुण्डलीचक्र को ही देखकर सभी बातें बताई जा सकती हैं या बिना पंचांग के तिथि, नक्षत्र, करण, वार, सूर्य, चन्द्र, स्पष्ट आदि किस प्रकार बताए जा सकते हैं समझाया गया है और अनन्त वर्षों की जंत्री देकर जंत्री बनाने की युक्ति भी बताई गई है । अंत में फलित संबंधी मुख्य-मुख्य बातें बताई गई हैं । मूल्य ९ रु०

इसके अन्य खण्ड—फलित खंड, वर्षफल खड, गणित खंड, प्रश्न खंड, मुहूर्त खण्ड और संहिता खण्ड—प्रेस में हैं ।

ज्योतिष-जगत

ज्योतिष जगत : दुर्गादत्त शर्मा । यह पुस्तक सुबोध भाषा में वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है । प्रत्येक विषय को बड़े सरल तरीके से समझाया गया है जिससे साधारण व्यक्ति भी ज्योतिष का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है । इसमें नक्षत्र, योग, करण, राशि-चक्र, स्थिति, प्राच्य एवं पाश्चात्य, नाम तथा चिह्न, नक्षत्रों द्वारा राशिचक्र का विभाजन, १२ राशि परिचय, ग्रह परिभाषा, गुण स्वभाव के आधार पर प्रकार, प्रभाव, अवस्थाएं, ग्रह परिचय, द्वादशभाव, संज्ञा, विभिन्न नाम तथा उनके विचारणीय विषय, सूर्य आदि सभी ग्रहों को द्वादशभावस्थ फल, जन्म लग्न फल; १२ राशियों का पृथक्-पृथक् लग्न फल—जैसे जातक का स्वभाव एवं प्रकृति सम्भावित व्यवसाय, मित्र, पत्नी, लग्न, भाग्योन्नति, कारक ग्रह एवं मारक ग्रह, संभावित रोग, उदाहरणार्थ कुंडली, द्वादशभाव फलविचार आदि सभी विस्तार से जो भी संभावित फल हो सकते हैं पृथक्-पृथक् भाव दिए गए हैं । मूल्य २.५० रु.

मोतीलाल बनारसीदास [illegible] । पुस्तक [illegible] बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो०बा० १५८६), दिल्ली-७

गणित प्रवेशिका

गणित प्रवेशिका : केदारदत्त जोशी : संस्कृत भाषा भाषी छात्रों एवं विद्वानों को गणित विद्या की ओर अभिरुचि पैदा करने की सुगम विधि से लिखी गई है। संस्कृत के गणित सूत्रों को भी विशेष स्थल पर उद्धरण रूप में दिया गया है जिससे अनुसंधान कार्यों में प्राची और प्रतीची की तुलनात्मक अध्ययन में दिग्देश की अनुभूति होगी। मूल्य १ रु०

ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्व

ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्व : केदार दत्त जोशी : भविष्य ज्ञान के लिए फलित ज्योतिष की अनेकविध सारणियों में स्वर-विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र की एक सर्वमान्य पद्धति है जिसमें मनुष्य के नाम के अनुसार भविष्य का ज्ञान किया गया है। इस ग्रंथ में ज्योतिष के सरलतम विधि सारणियों को दृष्टिपथ में रखते हुए उसके विभिन्न अंगों के उपांगों के विश्लेषण किए गए हैं। इसमें तीन विभाग हैं। प्रथम में स्वर साधन की पृष्ठ भूमि एवं उदाहरण स्वरूप दिए गए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों के आधार पर उसकी प्रक्रियाओं का तर्क-सम्मत विश्लेषण, परिचय, दूसरे विभाग में प्रमाण स्वरूप दिए गए उक्त सभी ३० या इससे भी अधिक व्यक्तियों के नामों के सभी स्वर उनके साधन तथा कारण कार्य संबंध को स्पष्ट किया गया है। साथ ही साथ इस संबंध में शंकाओं का समाधान भी किया गया है। तृतीय भाग में भारत, नेपाल, चीन और पाकिस्तान चार राष्ट्रों तथा भारत की राजधानी दिल्ली आदि के भविष्य का फलाफल दिया गया है अंत में दो परिशिष्ट भी हैं जिनमें मानव जीवन के साथ ज्योतिष के संबंध और ज्योतिष शास्त्र की अटूट परम्परा का भी परिचय कराया गया है। मूल्य ३ रु०

शकुन विज्ञान

शकुन विज्ञान : हीरालाल दूगड़। पृष्ठ सं० २८८। शकुन विद्या विशारदों का यह अनुभव है कि शुभाशुभ कर्मों के विपाक से प्रति क्षण प्रत्येक मानव जो शुभाशुभ फल भोगता है उसे शकुन द्वारा पहले ही जान सकता है। पश्चात् धार्मिक अनुष्ठानों से अशुभ का प्रतिकार और शुभ का परिष्कार कर सुख सम्पत्ति से समृद्ध हो सकता है। इसलिए शकुन विद्या आज भी प्रकाश स्तम्भ बनी हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने शकुन प्रदीप, शकुन शास्त्र तथा वास्तु निर्माण के सम्बन्ध में विद्वतापूर्वक लिखा है। भाषा इतनी सरल है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इसे समझ सकता है। इसके पढ़ने से आने वाले शुभाशुभों का आपको पूर्व ही ज्ञान हो जाता है और आप उससे लाभान्वित हो जाते हैं। परीक्षा के समय अगर आने वाले प्रश्नों का ज्ञान परीक्षार्थियों को हो जाता है तो उनके लिए वरदान हो जाता है वैसे ही प्रस्तुत पुस्तक जीवन परीक्षा के पूर्व ही प्रश्नोत्तर सहित सर्वसाधारण के लिए एक अनुपम देन है। मूल्य ४-५० रु० जिल्द वाली ५-००

ज्योतिष रहस्य

ज्योतिष रहस्य : श्री जगजीवनदास कृत छप रहा है। शीघ्र मिलेगा।

दशाफलविचार

दशाफलविचार : श्री जगजीवनदास कृत नाम से स्पष्ट है। मूल्य १-५०

(अन्य सभी प्रकार की ज्योतिष की पुस्तकों के लिए हम लोगों को लिखें। ज्योतिष-संबंधी सभी पुस्तकें संस्कृत हिन्दी में हम लोगों के यहां उपलब्ध हैं।)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

ज्योतिष-कार्यालय के नियम

श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाये जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, संतान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, [illegible] दुःख-सुख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार [illegible] भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछने वालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक समय और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर अन्दाज तथा पैदा [illegible] लिख भेजना चाहिए। जन्मपत्र की फीस [illegible] तक। वर्षफल ५ रु० से ५० रु० तक। टेवा २५० रु०। [illegible] (कुण्डली मिलान) प्रत्येक की फीस ५ रु०। [illegible] (अफ्रीका, चीन, बर्मा, जापान, अमरीका आदि) में पैदा हुए [illegible] टेवा बनाने की फीस १० रु०। आयुर्निर्णय [illegible] २५ रु० से १०० रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी [illegible] आधी फीस [illegible] हिन्दी (राष्ट्रभाषा) में होना [illegible] टिकट या जवाबी पत्र भेजना चाहिए। [illegible] पत्र-व्यवहार करें।

[illegible] कभी-कभी जाते हैं। [illegible]

[illegible]

[illegible] सिद्ध हो चुकी है। [illegible]

[illegible] रु० डाकखर्च पृथक्।

पुत्रवती—[illegible] सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है। मूल्य [illegible] रु० [illegible]

सिद्धांजन—इस सिद्ध अंजन से [illegible] धुन्ध, जाला, फूला, मोतिया बिन्द, [illegible] नेत्र जलना, पड़बाल, [illegible] आदि [illegible] मूल्य १.२५ रु० तोला। डाकखर्च पृथक्। [illegible]

निर्माता—[illegible]

मिलने का पता—मैनेजर श्रीमार्तण्ड [illegible]

पो० [illegible] जि० रोपड़ (पंजाब)

कर्मठ-गुरु

श्री पं० मुकुन्द वल्लभ जी द्वारा कृत

कर्मठ गुरु नामक ग्रन्थ धार्मिक जनता के लिए सब प्रकार से उपयोगी [illegible] है। इस ग्रन्थ को पढ़कर साधारण संस्कृतज्ञ व्यक्ति भी सभी प्रकार के [illegible] कराने में [illegible] विद्वानों के समक्ष संकोच का अनुभव नहीं करता। [illegible] विद्वान् लेखक के द्वारा अनुभूत [illegible] इसमें लिखे हैं। यही कारण है, कि कर्मकाण्ड के विद्वान् इस ग्रन्थ को [illegible] में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। यदि आप धार्मिक-जनता के [illegible] कर्मकाण्ड के क्षेत्र में [illegible] होना चाहते हैं तो कर्मठ गुरु को [illegible] प्राप्त करके पढ़ें।